वीर सेवा मन्दिर
दिल्ली

★

क्रम संख्या ४२७८
काल नं० २२१ गुप्त
खण्ड

वीर सेवा मंदिर पुस्तकालय

क्रम नं० 4878

२१, दरियागंज, देहली

प्रद्युम्न-चरित

(आदि कालिक हिन्दी काव्य)

रचयिता:—कवि सधारु

प्राक्कथन लेखक

डा० माताप्रसाद गुप्त, एम० ए०, डी० लिट्०

रीडर, हिन्दी विभाग,

इलाहाबाद विश्वविद्यालय

*

सम्पादक

पं० चैनसुखदास न्यायतीर्थ

कस्तूरचंद कासलीवाल शास्त्री एम० ए०,

वीर सेवा मन्दिर पुस्तकालय

क्रम नं० 4578

२१, दरियागंज, देहली

प्रकाशक

केशरलाल बख्शी

मंत्री प्रबन्धकारिणी कमेटी

दि० जैन अ० क्षेत्र श्री महावीरजी

महावीर भवन, सवाई मानसिंह हाईवे

जयपुर

प्राप्ति स्थान:—
जैन साहित्य शोध संस्थान
मंत्री कार्यालय
महावीर भवन सवाई मानसिंह हाईवे
जयपुर

प्रथम संस्करण : जनवरी १६६०
मूल्य ४)

मुद्रक :—
अजन्ता प्रिन्टर्स
जयपुर

प्रकाशकीय

हिन्दी भाषा की प्राचीन रचना 'प्रद्युम्नचरित' को पाठकों के हाथों में देते हुये मुझे प्रसन्नता हो रही है। इस ग्रंथ की हस्तलिखित प्रति सर्व प्रथम हमें ४-५ वर्ष पूर्व जयपुर के बधीचन्दजी के मन्दिर के शास्त्रभण्डार की सूची बनाते समय प्राप्त हुई थी। इसके पश्चात् शास्त्रभण्डार कामा (भरतपुर) में भी इस ग्रंथ की एक प्रति मिल गयी। क्षेत्र को प्र० का० कमेटी ने ग्रंथ की उपयोगिता को देखते हुये इसके प्रकाशन का निश्चय कर लिया।

प्रद्युम्न चरित दि० जैन अ० क्षेत्र श्रीमहावीरजी की ओर से संचालित जैन साहित्य शोध-संस्थान का आठवां प्रकाशन है। इस पुस्तक के पूर्व क्षेत्र की ओर से राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों की ग्रंथ सूची के ३ भाग, प्रशस्ति संग्रह, सर्वार्थ सिद्धिसार आदि खोज पूर्ण पुस्तकों का प्रकाशन किया जा चुका है। इन पुस्तकों के प्रकाशन से भारतीय साहित्य एवं विशेषतः जैन साहित्य की कितनी सेवा हो सकी है इसका तो विद्वान एवं रिसर्च स्कालर्स ही अनुमान लगा सकते हैं लेकिन अपभ्रंश एवं हिन्दी साहित्य के इतिहास से सम्बन्धित पुस्तकें जिनका अभी ५-७ वर्षों में ही प्रकाशन हुआ है उनमें जैन विद्वानों द्वारा लिखी हुई पुस्तकों का उल्लेख देखकर तथा हमारे यहां साहित्य शोध-संस्थान के कार्यालय में आने वाले खोज प्रेमी विद्वानों की संख्या को देखते हुये हम यह कह सकते हैं कि क्षेत्र की ओर से जो ग्रंथ सूचियां, प्रशस्ति संग्रह एवं अनुपलब्ध साहित्य से सम्बन्धित लेख आदि प्रकाशित हुये हैं उनसे साहित्यिक जगत् को पर्याप्त लाभ पहुंचा है।

यद्यपि हमारा प्रमुख ध्यान राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों की ग्रंथ सूचियां तैयार करवाकर उन्हें प्रकाशित कराने की ओर है लेकिन हम चाहते हैं कि ग्रंथ सूची प्रकाशन के साथ साथ भण्डारों में उपलब्ध होने वाली अज्ञात एवं महत्वपूर्ण सामग्री का भी प्रकाशन होता रहे। अब तक साहित्य शोध संस्थान की ओर से राजस्थान के ७० से भी अधिक ग्रंथ भण्डारों की सूचियां तैयार की जा चुकी हैं तथा उनमें उपलब्ध अज्ञात एवं महत्वपूर्ण रचनाओं का या तो परिचय लिया जा चुका है अथवा उनकी पूरी प्रतिलिपियां उतार कर संग्रह कर लिया गया है। ये प्राकृत, अपभ्रंश, संस्कृत एवं हिन्दी भाषा की रचनायें हैं। इन भण्डारों में हमें अपभ्रंश एवं हिन्दी की सबसे अधिक सामग्री मिलती है। अपभ्रंश का विशाल

साहित्य जो हमें प्राप्त हुआ है उसका अधिकांश भाग जयपुर, अजमेर एवं नागौर के भण्डारों में उपलब्ध हुआ है। इस प्रकार हिन्दी की १३-१४ वीं शताब्दी तक की प्राचीनतम रचनायें भी हमें इन्हीं भण्डारों में उपलब्ध हुई हैं। संवत् १३५४ में निबद्ध रल्ह कवि कृत जिनदत्त चोपई इनमें उल्लेखनीय रचना है जो अभी १ वर्ष पूर्व ही कासलीवालजी को जयपुर के पाटोदी के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में उपलब्ध हुई थी।

हम राजस्थान के सभी ग्रंथ भण्डारों की चाहे वह छोटा हो या बड़ा ग्रंथ सूची प्रकाशित कराना चाहते हैं। इससे इन भण्डारों में उपलब्ध विशाल साहित्य तो प्रकाश में आ ही सकेगा किन्तु ये भंडार भी व्यवस्थित हो जावेंगे तथा उनकी वास्तविक संख्या का पता लग जावेगा। किन्तु हमारे सीमित आर्थिक साधनों को देखते हुये इस कार्य में कितना समय लगेगा यह कहा नहीं जा सकता। फिर भी हम इस कार्य को कम से कम समय में पूर्ण करना चाहते हैं। यदि साहित्यिक यज्ञ के इस मुख्य कार्य में हमें समाज के विद्वानों एवं दानी सज्जनों का सहयोग मिल जावे तो हम इस ग्रंथ सूची प्रकाशन के सारे कार्य को ५-७ वर्ष में ही समाप्त करना चाहते हैं।

ग्रंथ सूची का चतुर्थ भाग जिसमें करीब ६ हजार हस्तलिखित ग्रंथों का विवरण रहेगा प्रायः तैयार है तथा उसे शीघ्र ही प्रकाशनार्थ प्रेस में दिया जाने वाला है इसके अतिरिक्त १३ वीं शताब्दी की हिन्दी रचना जिनदत्त चौपई का भी सम्पादन कार्य प्रारम्भ कर दिया गया है और आशा की जाती है उसे भी हम इसी वर्ष पाठकों के हाथों में दे सकेंगे।

अन्त में प्रद्युम्न चरित के सम्पादन एवं प्रकाशन में हमें श्री कस्तूरचन्दजी कासलीवाल एम. ए. शास्त्री एवं पं० अनूपचन्दजी न्यायतीर्थ आदि जिन २ विद्वानों का सहयोग मिला है मैं उन सभी का आभारी हूं। राजस्थान के प्रसिद्ध विद्वान् श्री चैनसुखदासजी सा० न्यायतीर्थ, अध्यक्ष जैन संस्कृत कालेज का हमें जो ग्रंथ सम्पादन में पूर्णसहयोग मिला है उनका मैं विशेष रूप से आभारी हूं। पंडितजी साहब से हमें साहित्य सेवा की सतत प्रेरणा मिलती रहती है। क्षेत्र की ओर से संचालित इस जैन साहित्य शोध संस्थान की स्थापना भी आप ही की प्रेरणा का फल है। पुस्तक का प्राक्कथन लिखने में प्रयाग विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डा० माताप्रसादजी गुप्त ने जो कष्ट किया है उसके लिये मैं उनका हृदय से आभार प्रकट करता हूं तथा आशा करता हूं कि भविष्य में भी हमें उनका ऐसा ही सहयोग मिलता रहेगा।

जयपुर
ता० १०-८-५६

केशरलाल बख्शी

प्राक्कथन

हिन्दी साहित्य का प्रारम्भ कब से होता है, यह उसके इतिहास का सबसे अधिक विवादपूर्ण विषय रहा है। पहले कुछ विद्वानों का मत था कि पुंड या पुष्य हिन्दी का आदि कवि था जो आठवीं या नवीं शती में हुआ था किन्तु उसकी कोई रचना प्राप्त नहीं थी। इधर अपभ्रंश के एक सर्वश्रेष्ठ कवि पुष्पदन्त की रचनाओं के प्रकाश में आने पर अनुमान किया जाने लगा है कि पुष्य नाम के जिस कवि का हिन्दी के आदि कवि के रूप में उल्लेख होता रहा है, वह कदाचित् पुष्पदन्त था। किंतु पिछले ५०–६० वर्षों की खोज में पुष्पदन्त ही नहीं अपभ्रंश के चार दर्जन से अधिक कवियों की रचनाएं प्रकाश में आई हैं। प्रश्न यह उठता है कि इस अपभ्रंश साहित्य को हिन्दी साहित्य से पृथक स्थान मिलना चाहिए या इसे पुरानी हिन्दी का साहित्य ही मान लेना चाहिए।

इस प्रश्न का उत्तर देने के लिये हमें भाषा के इतिहास की ओर मुड़ना पड़ता है। भारतीय भाषाओं पर जिन विद्वानों ने कार्य किया है, उनका मत है कि बंगला, मराठी, गुजराती आदि की भांति हिन्दी भी एक आधुनिक भारतीय आर्य-भाषा है। इसकी विभिन्न बोलियां उन उन क्षेत्रों में बोली जाने वाली अपभ्रंशों से विकसित हुई है, और अन्य आधुनिक भारतीय भाषाओं की भांति हिंदी की विभिन्न बोलियों की भी कुछ विशषताएं हैं जो उन्हें उनके पूर्ववर्ती अपभ्रंशों से अलग करती है। उनका यह भी मत है कि समस्त अपभ्रंशों को मध्य कालीन भारतीय आर्य भाषाओं में स्थान मिलना चाहिए क्योंकि उनकी सामान्य प्रवृत्तियां मध्यकालीन भारतीय भाषाओं की हैं।

किन्तु यहां पर यह भी जान लेना आवश्यक होगा कि बोलचाल की भाषाएं एकदम नहीं बदलती हैं, उनमें धीरे धीरे परिवर्तन होता चलता है और ऊपर मध्य कालीन और आधुनिक आर्य भाषाओं में जिस प्रकार का अन्तर बताया गया है, वह क्रमशः उपस्थित होता है। अतः काफी लंबे समय तक ऐसा रहा होगा कि अपभ्रंश के विशिष्ट तत्व धीरे-धीरे समाप्त हुए होंगे और आधुनिक भारतीय भाषाओं के विशिष्ट तत्व अंकुरित होकर पल्लवित हुए होंगे। इसलिए जिस साहित्य में अपभ्रंश और आधुनिक आर्य भाषाओं दोनों के तत्व मिलते हैं उन्हें कहां रक्खा जाए, यह प्रश्न बना ही रहता है, भले ही हम सिद्धान्ततः यह मानलें कि अपभ्रंश–

साहित्य को हिंदी साहित्य से अलग स्थान मिलना चाहिए। यह सन्धिकालीन साहित्य परिमाण में कम नहीं है। इसका सर्व श्रेष्ठ व्यावहारिक उत्तर कदाचित् यही है कि इसे दोनों साहित्यों की सम्मिलित सम्पत्ति माना जाए। इसे उतना ही ह्रासकालीन अपभ्रंश का साहित्य माना जाए जितना इसे आधुनिक भाषाओं के प्रादुर्भाव काल का। और विद्वानों का यह कर्तव्य है कि इस संधिकालीन साहित्य को शेष समस्त अपभ्रंश साहित्य से भाषा तत्वों के आधार पर अलग करके इसे सूची बद्ध करें, तभी हमारे साहित्य के इतिहास के इस महत्वपूर्ण प्रश्न का उचित रीति से समाधान हो सकता है कि उसका प्रारंभ कब से होता है।

यदि इस संधिकालीन साहित्य का अनुशीलन किया जावे तो यह सुगमता से देखा जा सकता है कि इसके निर्माण में सबसे बड़ा हाथ जैन विद्वानों और महात्माओं का रहा है, और वस्तुत: साहित्य में इनका इतना बड़ा योग रहा है जो कि इस संधिकाल से पूर्व निर्मित हुआ था। इतना ही नहीं विभिन्न मात्राओं में आधुनिक आर्य भाषाओं के मिश्रण के साथ जैन विद्वान और महात्मा सत्रहवीं शती तक बराबर अपभ्रंश में रचनाएँ करते आ रहे हैं। अभी अभी जैन कवि पं० भगवतीदास कृत 'मइंकलेहचरिउ' (मृगांकलेखाचरित) नाम की रचना मेरे देखने में आई है* जो विक्रमीय अठारहवीं शती की रचना है। इसलिए यह प्रकट है कि अपभ्रंश के साहित्य की श्रीवृद्धि में जैन कृतिकारों का योग असाधारण रहा है। जब अपभ्रंश बोलचाल की भाषा नहीं रह गई थी और उसका स्थान आधुनिक आर्य भाषाओं ने ले लिया था, उसके बाद भी सात आठ शताब्दियों तक जैन कृतिकारों ने अपभ्रंश की जो सेवा की, वह भारतीय साहित्य के इतिहास में एक ध्यान देने की वस्तु है। इससे उनका अपभ्रंश के प्रति एक धार्मिक अनुराग सूचित होता है ; इसलिए यदि परिनिष्ठित अपभ्रंश और संधिकालीन अपभ्रंश का सबसे महत्वपूर्ण अंश हमें जैन विद्वानों और कवियों की कृतियों के रूप में मिलता है तो आश्चर्य न होना चाहिये।

किंतु एक कारण और भी इस बात का है जो इस साहित्य के कृतिकारों में जैन कवियों और महात्माओं का बाहुल्य दिखाई पड़ता है। वह यह है कि जैन धर्मावलंबियों ने अपने साहित्य की बड़ी निष्ठा पूर्वक सुरक्षा की है। अपभ्रंश तथा संधियुग का जितना भी भारतीय साहित्य प्राप्त हुआ है, उसका सर्व प्रमुख अंश जैन भंडारों से ही प्राप्त हुआ है, इसलिए उस साहित्य में यदि जैन कृतियों का बाहुल्य हो तो उसे स्वाभाविक ही मानना चाहिए और इसके प्रमाण प्रचुरता से मिलते हैं कि अपभ्रंश और संधि युग में साहित्य-रचना अनेक जैनेतर कवियों ने

*इस ग्रंथ के संपादक श्री कस्तूरचंद कासलीवाल की कृपा से प्राप्त।

की है; उदाहरणार्थ 'प्राकृत 'पैंगल'* में उदाहरणों के रूप में संकलित अधिकतर छन्द जैनेतर कवियों के प्रतीत होते हैं; हेमचन्द्र द्वारा उदाहृत तथा जैन प्रबंधकारों द्वारा उद्धृत+ छंदों में भी एक बड़ी संख्या जैनेतर कृतियों के छंदों की लगती है। बौद्ध सिद्धों की रचनाएं तो सर्व विदित ही हैं। इसलिए यह मानना पड़ेगा कि इन दोनों युगों का जैनेतर साहित्य भी बहुत था और उसकी खोज अधिकाधिक की जानी चाहिए।

कुछ पूर्व तक जैन भंडारों में प्रवेश असंभव-सा था, किंतु अब अनेक भांडारों ने अपने संग्रहों को दिखाने के लिए प्रवेश की व्यवस्था कर दी है। उधर उनके संग्रह को सूचीबद्ध करने का भी एक व्यवस्थित आयोजन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी, जयपुर के शोध-विभाग द्वारा प्रारंभ हुआ है, जिसके अन्तर्गत राजस्थान के जैन भण्डारों की पोथियों के विवरण संकलित और प्रकाशित किए जा रहे हैं। इस खोज कार्य में अनेकानेक अपभ्रंश, संधिकालीन हिंदी तथा आदि-कालीन हिंदी की रचनाओं का पता लगा है, जिससे हिंदी साहित्य के बहुत से परमोज्वल रत्न प्रकाश में आने लगे हैं। इन्हीं में से एक सबसे उज्वल और मूल्यवान रत्न सधारु कृत प्रद्युम्न चरित है। इसकी रचना विभिन्न पाठों के अनुसार सं० १३११, १४११ और १५११ में हुई है, किन्तु गणना के अनुसार सं० १४११ की तिथि ठीक आती है, इसलिये वही इसकी वास्तविक रचना तिथि है। इस समय के आस-पास की निश्चित तिथियों की रचनाएं इनी-गिनी हैं, और जो हैं भी, इतने अधिक निश्चित रूप और पाठ की ओर भी कम है। आकार में यह रचना चउपई छंदों की एक सतसई है और काव्य दृष्टि से भी बड़े महत्व की है। इसलिये इस रचना की खोज से हिन्दी साहित्य के आदिकाल की निश्चित श्री वृद्धि हुई है। यह बड़े हर्ष की बात है कि श्री पं० चैनसुखदास न्यायतीर्थ तथा श्री कस्तूरचन्द कासलीवाल शास्त्री द्वारा इसका सम्पादन करा कर अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी, जयपुर के शोध-विभाग ने इसके प्रकाशन की व्यवस्था की है। उसकी इस सेवा के लिये हिन्दी जगत् को अतिशय क्षेत्र का आभार मानना चाहिए।

श्री पं० चैनसुखदास तथा श्री कासलीवाल ने इसका सम्पादन बड़े ही परिश्रम और योग्यता के साथ किया है। उन्होंने इसकी सर्वोत्तम कृतियों का उपयोग सम्पादन में करते हुए उन सब के पाठान्तर विस्तारपूर्वक इस संस्करण में दिये हैं

---

* सम्पादक—चन्द्रमोहन घोष, प्रकाशक—एशियाटिक सोसाइटी बंगाल, कलकत्ता।

+ देखो, हेमचन्द्र का प्राकृत व्याकरण, मेरुतुङ्ग का प्रबन्ध चिन्तामणि तथा मुनिजिन विजय द्वारा सम्पादित—पुरातन प्रबन्ध संग्रह।

जिनकी सहायता से इस रचना का पाठ निर्धारण पाठानुसंधान की आधुनिक प्रणाली पर भी करने में पर्याप्त सहायता मिलेगी फिर उन्होंने हिन्दी में अर्थ भी सम्पूर्ण रचना का दिया है। हिन्दी की प्राचीन कृतियों का सन्तोषजनक रूप से अर्थ लगाना एक अत्यन्त कठिन कार्य है, कारण यह है कि उसके लिये आवश्यक कोषों का अत्यन्त अभाव है। हिन्दी के सबसे बड़े और सबसे मूल्यवान कोष 'हिन्दी शब्द सागर से ऐसे ग्रन्थों का अर्थनिर्धारण में कोई सहायता नहीं मिलती। पुरानी हिन्दी का भाषात्मक अध्ययन भी अभी तक नहीं हुआ है, यह भी खेद का विषय है। ऐसी दशा में किसी भी पुरानी हिन्दी कृति का अर्थ देना स्वतः एक कष्ट साध्य कार्य हो जाता है। सम्पादकों ने रचना का यथासम्भव ठीक-ठीक अर्थ लगाने का प्रशंसनीय प्रयास किया है। उन्होंने रचना की समीक्षा भी विभिन्न दृष्टियों से उसकी भूमिका में की है। इससे सभी प्रकार के पाठकों को, रचना को और उसके महत्व को समझने में सहायता मिलेगी। अतः मैं सम्पादकों को इस सम्पादन के लिये हृदय से बधाई देता हूं। वे इस ग्रन्थमाला से अनेक नव-प्राप्त प्राचीन हिन्दी की रचनाओं का सम्पादन करना चाहते हैं। मेरी यही शुभकामना है कि वे अपने संकल्प को पूरा करने में सफल हों।

इस संस्करण में पाठ-निर्धारण के लिये वे आधुनिक पाठानुसन्धान की प्रणाली का आश्रय नहीं ले सके हैं अन्यथा पाठ कुछ और अधिक प्रामाणिक हो सकता था। आशा है कि वे इसके अगले संस्करण में इस अभाव की पूर्ति करेंगे।

प्रयाग — माताप्रसाद गुप्त

३१–६–५६.

प्रस्तावना

प्रद्युम्न चरित का हमें सर्व प्रथम परिचय देने का श्रेय स्व० रायबहादुर डा० हीरालाल को है, जिन्होंने 'सर्व रिपोर्ट' सन् १९२३-२४ में इसका उल्लेख किया था। इसके पश्चात् श्री बाबू कामताप्रसाद अलीगंज (एटा) द्वारा लिखित "हिन्दी जैन साहित्य का संक्षिप्त इतिहास" नामक पुस्तक से इसका परिचय प्राप्त हुआ, किन्तु उन्होंने अपनी उक्त पुस्तक में इसका उल्लेख वीर सेवा मन्दिर देहली के मुख-पत्र 'अनेकान्त' में प्रकाशित एक सूचना के आधार पर किया था और इस सूचना में इसे गद्य की रचना बतलाया था। इसी पुस्तक के प्राक्कथन में डा० वासुदेवशरण अग्रवाल ने उसे गद्य ग्रन्थ मान कर शीघ्र प्रकाशित करने का अनुरोध किया था। श्री अगरचन्द नाहटा बीकानेर को जब उक्त पुस्तक पढ़ने को मिली तो उसे देखने पर उन्हें पता चला कि 'प्रद्युम्न-चरित' गद्य रचना न होकर पद्य रचना है एवं उसका रचना संवत् १४११ है। इसके बाद नाहटाजी का जयपुर से प्रकाशित 'वीरवाणी' पत्र के वर्ष १ अङ्क १०-११ (सन् १९४७) में "सं० १६८८ का लिखित प्रद्युम्न-चरित्र क्या गद्य में है ?" नामक लेख प्रकाशित हुआ जिसमें उन्होंने ग्रन्थ के सम्बन्ध में संक्षिप्त किन्तु वास्तविक परिचय दिया और लेख के अन्त में निम्नलिखित परिणाम निकाला :—

"उपर्युक्त पद्यों से स्पष्ट है कि कवि का नाम रायरच्छ नहीं, पर साधारु या सधारु था। वे अगरोवह से उत्पन्न अग्रवाल जाति के शाह महराज (महाराज नहीं) एवं गुणवती के पुत्र थे। इनका निवास स्थान सम्भवतः रायरच्छ था। इसे ही सूची कर्ता ने रायरच्छ पढ़ कर इसे ग्रन्थकर्ता का नाम बतला दिया है। नगवर सन्त पाठ अशुद्ध है सम्भवतः र व शब्द को आगे पीछे लिख दिया है। शुद्ध पाठ नगर बसन्त होना चाहिए। सबसे महत्वपूर्ण सूचना प्रति से रचना काल की मिली है। अभी तक सम्वत् १४११ की इतनी स्पष्ट रचना ज्ञात नहीं है इस दृष्टि से इसका बड़ा महत्व है।"

इसके पश्चात् प्रद्युम्न चरित के महत्व को प्रकाश में लाने अथवा उसके प्रकाशन पर किसी का ध्यान नहीं गया। इधर हमारा राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों की ग्रन्थ सूचियां तैयार करने का पुनीत कार्य चल ही रहा था।

सन् १९५४ में जयपुर के बधीचन्दजी के मन्दिर के शास्त्र भण्डार की सूची बनाने के अवसर पर उसी भण्डार में हमें 'प्रद्युम्न-चरित' की भी एक प्रति प्राप्त हुई। जयपुर के उक्त भण्डार की ग्रन्थ सूची बनाने का काम जब पूरा हो गया तो इस पुस्तक के सम्पादक श्री कासलीवाल और श्री अनूपचन्द न्यायतीर्थ को भरतपुर प्रान्त के जैन ग्रन्थ भण्डारों को देखने के लिये जाना पड़ा और कामां (भरतपुर) के दोनों ही मन्दिरों के शास्त्र भण्डरों में 'प्रद्युम्न-चरित' की एक एक प्रति और भी उपलब्ध हो गई लेकिन जब इन दोनों प्रतियों को परस्पर में मिलाया गया तो पाठ भेद एवं प्रारम्भिक पाठ विभिन्नता के अतिरिक्त रचना काल में भी १०० वर्ष का अन्तर मिला। अग्रवाल पंचायती मन्दिर वाली प्रति में रचना सम्वत् १३११ दिया हुआ है किन्तु यह प्रति अपूर्ण, फटी हुई एवं नवीन है। भाषा की दृष्टि से भी वह नवीन मालूम होती है। खंडेलवाल पंचायती मन्दिर वाली प्रति में रचना काल सम्वत् १४११ दिया हुआ है तथा वह प्राचीन भी है। इसी प्रति का हमने सम्पादन कार्य में 'क' प्रति के नाम से उपयोग किया है।

इसी बीच में नागरी प्रचारिणी सभा की ओर से रीवां में हिन्दी ग्रन्थों के शोध का कार्य प्रारम्भ किया गया और सभा के साहित्यान्वेषक को वहीं के दि० जैन मन्दिर में इस ग्रन्थ की एक प्रति प्राप्त हुई, जिसका संक्षिप्त परिचय 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' देहली में प्रकाशित हुआ। पर इस लेख से भी 'प्रद्युम्न-चरित' के सामान्य महत्व के अतिरिक्त कोई विशेष परिचय नहीं मिला। साहित्यान्वेषक महोदय ने लिखा है कि "इसके कर्ता गुण सागर (जैन) आगरा निवासी सम्वत् १३११ में हुए थे" लेखक ने इस रचना को ७०१ वर्ष पहले की बताया। ग्रन्थ का वही नाम देख कर हमने उसका आदि अन्त का पाठ भेजने के लिये श्री रघुनाथजी शास्त्री को लिखा। हमारे अनुरोध पर नागरी प्रचारिणी सभा ने रीवां वाली प्रति का आदि अन्त का पाठ भेजने की कृपा की। इसके कुछ दिन पश्चात् ही क्षेत्र के अनुसन्धान विभाग को देखने के लिये श्री नाहटाजी का आगमन हुआ और वे रीवां वाली प्रति का आदि अन्त का भाग अपने साथ ले गये। तदनंतर नाहटाजी का प्रद्युम्न-चरित पर एक विस्तृत एवं खोजपूर्ण लेख 'हिन्दी अनुशीलन' वर्ष ६ अङ्क १-४ में 'सम्वत् १३११ में रचित प्रद्युम्न-चरित्र का कर्ता' शीर्षक प्रकाशित हुआ।

इसके बाद इस रचना को श्री महावीर क्षेत्र की ओर से प्रकाशित कराने का निश्चय किया गया। दो प्रतियां तो हमारे पास पहिले ही से थीं और दो प्रतियां श्री नाहटाजी द्वारा प्राप्त हो गई। नाहटाजी द्वारा प्राप्त इन

दो प्रतियों में से एक प्रति देहली के शास्त्र भण्डार की है और दूसरी सिंघी ओरिन्टियल इन्स्टीट्यूट उज्जैन के संग्रहालय की है। इन चारों प्रतियों का संक्षिप्त परिचय निम्न प्रकार है :—

(१) यह प्रति जयपुर के श्री बधीचन्दजी के दि० जैन मन्दिर के शास्त्र भण्डार की है। इस प्रति में ३४ पत्र हैं। पत्रों का आकार ११½ × ५½ इञ्च का है। इस प्रति का लेखन काल सम्वत् १६०५ आसोज बुदी ३ मंगलवार है। प्रति प्राचीन एवं स्पष्ट है। इसमें पद्यों की संख्या ६८० है। इस संस्करण का मूलपाठ इसी प्रति से लिया गया है। लेकिन प्रकाशित संस्करण में पद्यों की संख्या ७०१ दी गई है। इसका मूल कारण यह है कि वस्तुबंध छंद के साथ प्रयुक्त होने वाली प्रथम चौपई को भी लिपिकार अथवा कवि ने उसी पद्य में गिन लिया है इसी से पद्यों की संख्या कम हो गई। इस प्रति के अतिरिक्त अन्य सभी प्रतियों में वस्तुबंध के पश्चात प्रयुक्त होने वाली चौपई छंद को भिन्न छंद माना है तथा उसकी संख्या भी अलग ही लगाई गई है। प्रस्तुत पुस्तक में १७ वस्तुबंध छंदों का प्रयोग हुआ है इसलिये १७ चौपई तो वे बढ़ गईं, शेष ४ छंदों की संख्या लिखने में गल्ती होने के कारण बढ़ गई हैं, इसलिये इस संस्करण में ६८० के स्थान में ७०१ संख्या आती है। कहीं कहीं चौपई छंद में ४ चरणों के स्थान पर ६ चरणों का भी प्रयोग हुआ है।

(२) दूसरी प्रति ('क' प्रति)

यह प्रति कामां (भरतपुर) के खण्डेलवाल जैन पंचायती मन्दिर के शास्त्र भण्डार की है जिसकी पत्र संख्या ३२ है तथा पत्रों का आकार १० × ४½ इञ्च है। इसकी पद्य संख्या ७१६ है, लेकिन ७०० पद्य के पश्चात् लिपिकार ने ७०१ संख्या न लिख कर ७१० लिख दी है इसलिये इसमें पद्यों की कुल संख्या वास्तव में ७०७ है। प्रति में लेखन काल यद्यपि नहीं दिया है, किन्तु यह प्रति भी प्राचीन जान पड़ती है और सम्भवत: १७ वीं शताब्दी या इससे भी पूर्व की लिखी हुई है। इस प्रति में २३ वें पत्र से २८ वें पत्र तक अर्थात् मध्य के ६ पत्र नहीं हैं।

(३) तीसरी प्रति ('ख' प्रति)

यह प्रति देहली के सेठ के कूंचे के जैन मन्दिर के भण्डार की है, जो वहां के साहित्य सेवी ला० पन्नालाल अग्रवाल की कृपा से नाहटाजी को प्राप्त हुई थी। यह प्रति एक गुटके में संग्रहीत है। गुटके में इस रचना के ७२ पत्र हैं। प्रति की लिपि स्पष्ट तथा सुन्दर है। इस प्रति में पद्यों की संख्या

७१४ है जो मूल प्रति से १३ अधिक हैं। यह सम्वत् १६४८ जेठ सुदी १२ गुरुवार को हिसार नगर में दयालदास द्वारा लिखी गई थी। पांडे प्रह्लाद ने इसकी प्रतिलिपि की थी। इसकी लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है :—

संवत् १६४८ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ल पक्षे १२ द्वादश्यां गुरुवासरे श्री साहजहा राज्ये श्री हिसार नगर मध्ये लिखितं दयालदासेन लिखापितं पांडे पहिलाद। शुभमस्तु।

(४) चौथी प्रति ('ग' प्रति)

यह प्रति सिंधिया ओरिन्टियल इन्स्टीट्यूट उज्जैन के संग्रहालय की है। इस प्रति में ७१३ छंद हैं। इसका लेखनकाल संवत् १६३४ आसोज बुदी ११ आदित्यवार है। इस प्रति को राजगच्छ के उपाध्याय विनयसुन्दर के प्रशिष्य एवं भक्तिरत्न के शिष्य नवरत्न ने अपने पढ़ने के लिये लिखा था। पाठ भेदों में इस प्रति को 'ग' प्रति कहा गया है।

इसमें प्रारम्भ से ही चौबीस तीर्थकरों को नमस्कार किया गया है जब कि अन्य तीन प्रतियों में ८ वें पद्य से (ख प्रति में ७ वें पद्य से) नमस्कार किया गया है। मंगलाचरण के प्रारम्भ के १२ पद्य निम्न प्रकार हैं—

रिषभ अजित संभौ जिनस्वामि, कम्मनि नासि भयो शिवगामी।
अभिनंदनदेउ सुमति जगईस, तीनि वार तिन्ह नामउ सीस ॥ १ ॥

पद्मप्रभ सुपास जिणदेव, इन्द फनिंद करहि तुम्ह सेव।
चन्द्रप्रभ आठमउ जिणिंद, चिन्ह धुजा सोहइ वर चन्दु ॥ २ ॥

नवमउ सुविधि नवहु भवितासु, सिद्ध सरुपु मुकति भयो भासु।
सीतल नाथ श्रेयांस जिणंदु, जिण पूजत भवो होइ आनंद ॥ ३ ॥

वासपूज्य जिणधर्म सुजाण, *भवियण कमल देव तुम्ह भाणु।
चक्र भवनु साई संसारु, स्वर नरकउ सु उलंघण हारु ॥ ४ ॥

विमलनाथ जउ निर्म्मलबुधि, तजि भउ पार लही सिव सिद्धि।
सो जिण अनंतु बारंबार, अष्ट कर्म्म तिणि कीन्हे छार ॥ ५ ॥

जउ रे धर्म्म धम्मधुरवीर, पंच सुमति वर साहस धीर।
जैरे सति तजी जिणि रीस, भवीयण संति करउ जगईस ॥ ६ ॥

कंथु अरह चक्कवइ नरिंद, निज्जंर कम्मं भयो सिव इन्द।
जोति सरुपु निरंजण कारु, गजपुर नयरी लेवि अवतारु ॥ ७ ॥
मल्लिनाथ पंचेन्द्री मल्ल, चउरासी लक्ष कियो निसल्ल।
जउरे मुनिसुव्रत मुनि इंद, मन मर्दन वीसवे जिनंद ॥ ८ ॥
जउरे नामि गुण ग्यांन गंभीर, तीन गुपति वर साहसधोर।
निलोपल लंछन जिनराज, भवियण वहु परिसारइ काज ॥ ९ ॥
सोरीपुरि उपनउ वरवीरु, जादव कुल मंडण गंभीरु।
जाउरे जिणवर नेमि जिणंद, रतिपति राइ जिण पूनिमचंदु ॥१०॥
आससेन नृप नंदनवीर, दुष्ट विघन संतोषण धीर।
जाउरे जिणवर पास जिणंद, सिरफन छत्र दीयो धरणिंद ॥११॥
मेर सिखर पूरव दिसि जाइ, इन्द्र सुर त्रिभुवन राइ।
कंचन कलस भरे जल क्षीर, ढालहि सीस जिणेसर वीर ॥१२॥

उक्त ४ प्रतियों के अतिरिक्त जब नवम्बर सन् ५८ के प्रथम सप्ताह में श्री नाहटाजी जयपुर आये तो उन्होंने 'प्रद्युम्न-चरित' की एक और प्रति का जिक्र किया और उसे हमारे पास भेज दिया। यद्यपि इस प्रति का पाठ भेद आदि में अधिक उपयोग नहीं किया जा सका, किन्तु फिर भी कुछ सन्देहास्पद पाठ इस प्रति से स्पष्ट हो गये। यह प्रति भी प्राचीन है तथा संवत् १६६६ श्रावण बुदी ६ आदित्यवार की लिखी हुई है। प्रति में २७ पत्र हैं तथा इनका १०½ × ४½ इञ्च का आकार है। इसमें पद्य सख्या ७०१ है। इस प्रति की विशेषता यह है कि इसमें रचना काल सम्वत् १३११ भादवा सुदी ५ दिया हुआ है। इसके अतिरिक्त मूल प्रति के प्रारम्भ में जो विस्तृत स्तुति खण्ड है वह इस प्रति में नहीं है। प्रति के प्रारम्भ में ६ पद्य निम्न प्रकार है।

अठदल कमल सरोवरि वासु, कासमीरि पुरियउ निवासु।
हंसि चडी करि वीणा लेइ, कवि सधारु सरसै पणवेइ ॥ १ ॥
पणमावती दंडु करि लेइ, ज्वालामुखी चक्केसरि देइ।
अंबाइणि रोहणि जो सारु, सासण देवि नवइ साधारु ॥ २ ॥

स्वेत वस्त्र पदमासणि लीण, करहिं आलवणि बाजहि वीण।
आगमु जाणि देइ बहुमती, पुणु पणावौं देवी सुरस्वती ॥ ३ ॥
जिण सासण जो विघन हरेइ, हाथि लकुटि ले आगै होइ।
भवियहु दुरिय हरइ असरालु, आगिवाणि पणावउ खितपालु ॥ ४ ॥
संवत् तेरहसइ होइ गए, ऊपरि अधिक एयारह भए।
भादव सुदि पंचमि जो सारु, स्वाति नक्षत्रु सनीश्चरु वारु ॥ ५ ॥

वस्तुबंध:—

णविवि जिणवर सुद्ध सुपवित्तु

नेमीसरू गुणनिलउ, स्याम वणु सिवएवि नंदणु।
चउतीसह अइसइ सहिउ, कमकणी घण माण मद्दणु।
हरिवंसह कुल तिलउ, निजिय नाह भवणासु।
सासइ सुह पावहं हरणु, केवलणाण पसु ? ॥ ६ ॥

विभिन्न भाषाओं में प्रद्युम्न के जीवन से सम्बन्धित रचनायें:—

प्रद्युम्न कुमार जैनों के १६६ पुण्य पुरुषों में से एक हैं। इनकी गणना चौबीस कामदेवों (अतिशय रूपवान) में की गई है। यह नवमें नारायण श्री कृष्ण के पुत्र थे। यह चरमशरीरी (उसी जन्म से मोक्ष जाने वाले) थे। इनका चरित्र अनेक विशेषताओं को लिये हुए होने के कारण आकर्षणों से भरा पड़ा है। मनुष्य का उत्थान और पतन एवं मानव-हृदय की निर्बलताओं का चित्रण इस चरित्र में बहुत ही खूबी से हुआ है और यही कारण है कि जैन वाङ्मय में प्रद्युम्न के चरित्र का महत्वपूर्ण स्थान है। न केवल पुराणों में ही प्रसंगानुसार प्रद्युम्न का चरित्र आया है अपितु अनेक कवियों ने स्वतन्त्र रूप से भी इसे अपनी रचना का विषय बनाया है।

प्रद्युम्न का जीवन चरित्र सर्व प्रथम जिनसेनाचार्य कृत 'हरिवंश पुराण' के ४७ वें सर्ग के २० वें पद्य से ४८ वें सर्ग के ३१ वें पद्य तक मिलता है। फिर गुणभद्र के उत्तर पुराण में, स्वयम्भू कृत रिट्ठणेमिचरिउ (८ वीं शताब्दी) में, पुष्पदन्त के महापुराण (६-१० वीं शताब्दी) में तथा धवल के हरिवंश पुराण (१० वीं शताब्दी) में वह प्राप्त होता है। इन रचनाओं

में से प्रथम दो संस्कृत एवं शेष अपभ्रंश भाषा की हैं। उक्त पुराणों के अतिरिक्त संस्कृत, अपभ्रंश एवं हिन्दी में प्रद्युम्न के जीवन से सम्बन्धित जो स्वतन्त्र रचनायें मिलती हैं उनके नाम निम्न प्रकार हैं :—

क्र० सं०	रचना का नाम	कर्ता का नाम	भाषा	रचना काल
१.	प्रद्युम्नचरित्र	महासेनाचार्य	संस्कृत	११वीं शताब्दी
२.	पज्जुण्णकहा	सिंह अथवा सिद्ध	अपभ्रंश	१३वीं शताब्दी
३.	प्रद्युम्नचरित	कवि सधारु	हिन्दी	सं० १४११
४.	प्रद्युम्नचरित्र	भ० सकलकीर्ति	संस्कृत	१५वीं शताब्दी
५.	प्रद्युम्नचरित्र	रइधू	अपभ्रंश	१५वीं शताब्दी
६.	प्रद्युम्नचरित्र	सोमकीर्ति	संस्कृत	सं० १५३०
७.	प्रद्युम्न चौपई	कमलकेशर	हिन्दी	स० १६२६
८.	प्रद्युम्नरासो	ब्रह्मरायमल्ल	हिन्दी	स० १६२८
९.	प्रद्युम्नचरित्र	रविसागर	संस्कृत	सं० १६४५
१०.	शाम्बप्रद्युम्न रास	समयसुन्दर	राजस्थानी	सं० १६५९
११.	प्रद्युम्नचरित्र	शुभचन्द्र	संस्कृत	१७वीं शताब्दी
१२.	प्रद्युम्नचरित्र	रतनचन्द्र	संस्कृत	सं० १६७१
१३.	प्रद्युम्नचरित्र	मल्लिभूषण	सस्कृत	१७वीं शताब्दी
१४.	प्रद्युम्नचरित्र	वादिचन्द्र	सस्कृत	१७वीं शताब्दी
१५.	शाम्बप्रद्युम्न रास	ज्ञानसागर	हिन्दी	१७वीं शताब्दी
१६.	शाम्बप्रद्युम्न चौपई	जिनचन्द्र सूरि	हिन्दी	१७वीं शताब्दी
१७.	प्रद्युम्नचरित्र	भोगकीर्ति	संस्कृत	——
१८.	प्रद्युम्नचरित्र	जिनेश्वर सूरि	संस्कृत	——
१९.	प्रद्युम्नचरित्र	यशोधर	संस्कृत	——
२०.	प्रद्युम्नचरित्र भाषा	—	हिन्दी गद्य	——
२१.	प्रद्युम्नप्रबन्ध	देवेन्द्रकीर्ति	हिन्दी	सं० १७२२
२२.	प्रद्युम्नरास	मायाराम	हिन्दी	सं० १८१८
२३.	शाम्बप्रद्युम्न रास	हर्षविजय	हिन्दी	सं० १८४२
२४.	प्रद्युम्नप्रकाश	शिवचन्द	हिन्दी	सं० १८७९
२५.	प्रद्युम्नचरित	बख्तावरसिंह	हिन्दी गद्य	सं० १९१४

उक्त रचनाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि स्वतन्त्र रूप से महासेनाचार्य (११ वीं शताब्दी) के संस्कृत 'प्रद्युम्न-चरित्र' एवं सिंह कवि के अपभ्रंश पज्जुण्णकहा (१३ वीं शताब्दी) के पश्चात् हिन्दी में

सर्व प्रथम रचना करने का श्रेय कवि सधारु को है। इसी रचना के पश्चात् संस्कृत और हिन्दी में प्रद्युम्न के जीवन पर २३ रचनायें लिखी गई। इससे विद्वानों एवं कवियों के लिये प्रद्युम्न का जीवन चरित्र कितना प्रिय था, इसका स्पष्ट पता लगता है।

प्रद्युम्न चरित की कथा—

द्वारका नगरी के स्वामी उन दिनों यादव-कुल-शिरोमणि श्री कृष्णजी थे। सत्यभामा उनकी पटरानी थी। एक दिन उनकी सभा में नारद ऋषि का आगमन हो गया। श्री कृष्ण ने तो उनका आदर सत्कार कर अपने सभा भवन से उन्हें विदा कर दिया, पर जब वे सत्यभामा का कुशल-क्षेम पूछने उसके महल में गये तो उसने उनका कोई सम्मान नहीं किया। इससे ऋषि को बड़ा क्रोध आया और अपमान का बदला लेने की ठान ली। वे सत्यभामा से भी सुन्दर किसी स्त्री का कृष्णजी के साथ विवाह करने की सोचने लगे। बहुत खोज करने पर उन्हें रुक्मिणी मिली, किन्तु उसका विवाह शिशुपाल से होना तय हो चुका था। नारद ने वहां से लौट कर श्रीकृष्णजी से रुक्मिणी के सौन्दर्य की खूब प्रशंसा की और अन्त में उसके साथ विवाह करने का प्रस्ताव रखा। श्री कृष्ण बड़े खुश हुए। उन्होंने बलराम को साथ लेकर छलपूर्वक रुक्मिणी का हरण कर लिया। रथ में बिठाने के पश्चात् उन्होंने रुक्मिणी को छुड़ाने के लिये सभी प्रतिपक्षी योद्धाओं को ललकारा। शिशुपाल सेना लेकर श्रीकृष्ण से लड़ने आ गया। दोनों में घमासान युद्ध हुआ। अन्त में शिशुपाल मारा गया और श्रीकृष्ण रुक्मिणी को लेकर द्वारका की ओर चले। मार्ग में विवाह सम्पन्न कर श्रीकृष्ण द्वारका पहुँच गये। नगर में खूब उत्सव मनाये गये। रुक्मिणी के विवाह के बाद बहुत समय तक श्री कृष्णजी ने सत्यभामा की कोई खबर न ली। इससे सत्यभामा को बड़ा दुःख हुआ। सत्यभामा के निवेदन करने पर श्री कृष्णजी ने उसकी रुक्मिणी से भेंट कराई। सत्यभामा और रुक्मिणी ने बलराम के सामने प्रतिज्ञा की कि जिसके पहिले पुत्र होगा वह पीछे होने वाले पुत्र की माता के बालों का अपने पुत्र के विवाह के समय मुण्डन करा देगी।

दोनों रानियों के एक ही दिन पुत्र उत्पन्न हुए। दोनों के दूतों ने जब यह सन्देश श्रीकृष्ण को जाकर कहा तब रुक्मिणी के पुत्र प्रद्युम्न को बड़ा पुत्र माना गया किन्तु उसको जन्म लेने की छठी रात्रि को ही धूमकेतु नामक असुर हरण कर लेगया और पूर्व भव के बैर के कारण उसे वन में एक शिला के नीचे दबा कर चला गया। उसी समय विद्याधरों का राजा

कालसंवर अपनी प्रिया कञ्चनमाला के साथ विमान द्वारा उधर से जारहा था। उसने पृथ्वी पर पड़ी हुई भारी शिला को हिलते देखा। शिला को उठाने पर उसे उसके नीचे एक अत्यधिक सुन्दर बालक दिखाई दिया। तुरन्त ही उसने उस सुन्दर बालक को उठा लिया और अपनी स्त्री को दे दिया। कालसंवर ने नगर में पहुँचने के बाद उस बालक को अपना पुत्र घोषित कर दिया।

उधर रुक्मिणी पुत्र वियोगाग्नि में जलने लगी। उसी समय नारद ऋषि का वहां आगमन हुआ। जब उन्होंने प्रद्युम्न के अकस्मात् गायब होने के समाचार सुने तो उन्हें भी दुख हुआ। रुक्मिणी को धैर्य बंधाते हुए नारद ऋषि प्रद्युम्न का पता लगाने विदेह क्षेत्र में केवली भगवान् के समवसरण में गये। वहां से पता लगाकर वे रुक्मिणी के पास आये और कहा कि १६ वर्ष बाद प्रद्युम्न स्वयं सानन्द घर आ जायेगा।

कालसंवर के यहां प्रद्युम्न का लालन पालन होने लगा। पांच वर्ष की आयु में ही उसे विद्याध्ययन एवं शस्त्रादि चलाने की शिक्षा ग्रहण करने के लिए भेजा गया। थोड़े ही समय में वह सर्व विद्याओं में प्रवीण हो गया। कालसंवर के प्रद्युम्न के अतिरिक्त ५०० और पुत्र थे। राजा कालसंवर का एक शत्रु था राजा सिंहरथ जो उसे आये दिन तंग किया करता था। उसने अपने ५०० पुत्रों के सामने उस सिंहरथ राजा को मार कर लाने का प्रस्ताव रखा पर किसी पुत्र ने कालसंवर के इस प्रस्ताव को स्वीकार करने की हिम्मत नहीं की। केवल प्रद्युम्न ने इसे स्वीकार किया और एक बड़ी सेना लेकर सिंहरथ पर चढ़ाई करदी। पहिले तो राजा सिंहरथ प्रद्युम्न को बालक समझ कर लड़ने से इन्कार करता रहा, पर बार बार प्रद्युम्न के ललकारने पर लड़ने को तैयार हुआ। दोनों में घोर युद्ध हुआ और अन्त में विजयश्री प्रद्युम्न को मिली। वह राजा सिंहरथ को बांधकर अपने पिता कालसंवर के सामने ले आया। कालसंवर अपने शत्रु को अपने अधीन देखकर प्रद्युम्न से बड़ा खुश हुआ और उसे युवराज पद दिया एवं इस प्रकार उन ५०० पुत्रों का प्रधान बना दिया।

इस प्रतिकूल व्यवहार के कारण सब कुमार प्रद्युम्न से द्वेष करने लगे एवं उसे मारने का उपाय सोचने लगे। उन सब कुमारों ने प्रद्युम्न को बुलाया और उसे वन-क्रीड़ा के बहाने वन में ले गये। अपने भाइयों के कहने से प्रद्युम्न जिन मन्दिरों के दर्शनार्थ सर्व प्रथम विजयगिरि पर्वत पर चढ़ा, पर वहां उसने फुंकार करता हुआ एक भयंकर सर्प देखा। प्रद्युम्न तुरन्त ही उस डरावने सर्प से भिड़ गया तथा उसकी पूंछ पकड़ कर उसे जमीन पर दे

मारा इसे देखकर वह सर्प यक्ष रूप में प्रद्युम्न के सामने आकर खड़ा हो गया और वीर प्रद्युम्न को प्रसन्न होकर १६ विद्यायें दी। फिर प्रद्युम्न दूसरी काल गुफा में गया। वहां के रक्षक कालासुर दैत्य को हरा कर वहां से चंवर छत्र प्राप्त किया। तीसरी गुफा में जाने पर उसे एक भयावह नाग से लड़ना पड़ा। किन्तु उस नाग ने भी हार मानली एवं भेंट स्वरूप नागशय्या, पावड़ी, वीणा और अन्य तीन विद्यायें दीं। जब प्रद्युम्न उन कुमारों के साथ एक सरोवर के पास पहुंचा तो उन्होंने उसे स्नान करने को कहा। पहिले तो उस सरोवर के रक्षक प्रद्युम्न को सरोवर में प्रवेश करते देख कर बड़े क्रुद्ध हुए पर अन्त में बलवान जानकर मकर पताका प्रदान की। इस प्रकार प्रद्युम्न जहां भी गये वहां से ही उन्हें अच्छी २ भेंटें मिलती रहीं इतना ही नहीं, एक वन में उन्हें एक रती नामकी सुन्दर कन्या भी मिली, जिससे उनने विवाह कर लिया।

इस प्रकार जब वह अनेक विद्याओं का लाभ लेकर कालसंवर के पास आया तब वह उस पर बड़ा खुश हुआ। इस अवसर पर वह अपनी माता कञ्चनमाला से भी मिलने गया। उस समय वह प्रद्युम्न के रूप और सौंदर्य को देखकर उस पर मुग्ध हो गई और उससे प्रेम-याचना करने लगी। प्रद्युम्न को इससे बड़ी ग्लानि हुई और वह जैसे तैसे अपना पीछा छुड़ाकर अपना कर्तव्य निश्चित करने के लिए वन में किसी मुनि के पास गया और उनका पथ प्रदर्शन चाहा। प्रद्युम्न ने अपनी चतुरता से कञ्चनमाला से तीन विद्यायें ले ली। कञ्चनमाला ने अपनी इच्छा पूरी न होने एवं तीनों विद्याओं के छिन जाने पर स्त्री चरित्र फैलाया और प्रद्युम्न पर दोषारोपण किया। उसने अपना अङ्ग प्रत्यङ्ग विकृत कर लिया। कालसंवर यह सब जानकर बड़ा दुखी और क्रोधित हुआ। उसने अपने ५०० पुत्रों को बुलाकर प्रद्युम्न को मारने के लिए कहा। कुमार पिता की बात सुन कर बड़े खुश हुए। वे प्रद्युम्न को बुला कर वन में ले गये किन्तु उसे आलोकिणी विद्या द्वारा अपने भाइयों के इरादे का पता लग गया और उसे बड़ा क्रोध आया। उसने सभी कुमारों को नागपाश से बांधकर एक शिला के नीचे दबा दिया।

कालसंवर यह वृत्तान्त जानकर बड़ा कुपित हुआ। वह एक बड़ी सेना लेकर प्रद्युम्न से लड़ने चला। प्रद्युम्न ने भी विद्याओं के द्वारा मायामयी सेना एकत्रित करदी। दोनों ओर से भीषण युद्ध हुआ। प्रद्युम्न के आगे कालसंवर नहीं ठहर सका। तब कालसंवर अपनी प्रिया कञ्चनमाला के पास तीनों विद्यायें लेने के लिए दौड़ा किन्तु जब उसे यह ज्ञात हुआ कि प्रद्युम्न पहिले से ही विद्याओं को छल कर ले गया है तो उसे कञ्चनमाला के सारे भेद का

पता लग गया। फिर भी कालसंवर प्रद्युम्न से युद्ध करने के लिए आगे बढ़ा इतने में ही नारद ऋषि वहां आगये। उन्होंने जो कुछ कहा उससे सारी स्थिति बदल गई और युद्ध बन्द हो गया। इससे कालसंवर को बड़ी प्रसन्नता हुई और प्रद्युम्न ने भी सब कुमारों को बन्धन मुक्त कर दिया।

कालसंवर से आज्ञा लेकर प्रद्युम्न ने नारद ऋषि के साथ द्वारका नगरी के लिए विमान द्वारा प्रस्थान किया। मार्ग में हस्तिनापुर पड़ा। वहां दुर्योधन की कन्या उदधि कुमारी का सत्यभामा के पुत्र भानुकुमार के साथ विवाह होने के लिए अभिषेक हो रहा था। नारद द्वारा यह जानकर कि उदधि कुमारी प्रद्युम्न की मांग है वह भील का भेष धारण कर उन लोगों में मिल गया और उदधि कुमारी को बलपूर्वक छीन कर ले गया। प्रद्युम्न उस कन्या को विमान में बैठा कर द्वारका की ओर चल पड़ा। द्वारका पहुंच कर नारद ने वहां के विभिन्न महलों का उसे परिचय दिया।

जब चतुरंगिणी सेना के साथ आते हुए भानुकुमार को देखा तब प्रद्युम्न विमान से उतरा और उसने एक बूढ़े विप्र का भेष बना लिया। एक मायामय चंचल घोड़ा अपने साथ ले लिया। घोड़े को देखकर भानु का मन ललचाया। उसने विप्र से उसका मूल्य पूछा। विप्र ने घोड़े का इतना मूल्य मांगा जो भानु को उचित नहीं लगा। भानुकुमार विप्र के कहने पर घोड़े पर चढ़ा और घोड़े को न संभाल सकने के कारण गिर पड़ा जिसे देखकर सारे लोग हंसने लगे। जब बलदेवजी ने विप्र भेषधारी प्रद्युम्न से ही घोड़े पर चढ़ने को कहा तो वह बहुत भारी बन गया और घोड़े पर चढ़ाने के लिए प्रार्थना करने लगा। दस बीस योद्धा भी उसे उठाकर घोड़े पर न चढ़ा सके तो भानुकुमार स्वयं उसे उठाने आगे आया। तब वह भानु के गले पर पैर रखकर चढ़ गया और आकाश में उड़ गया।

पुनः प्रद्युम्न ने अपना रूप बदलकर दो मायामय घोड़े बनाये। उन मायामय घोड़ों को उसने राजा के उद्यान में छोड़ दिया। घोड़ों ने राजा के सारे उद्यान को चौपट कर दिया। इसके पश्चात् उसने दो बन्दर उत्पन्न किये जिन्होंने सत्यभामा की बाड़ी को नष्ट भ्रष्ट कर दिया। जब भानुकुमार बाड़ी में आया तो मायामय मच्छर उत्पन्न कर उसे बाड़ी से भगा दिया। इतने में ही प्रद्युम्न को मार्ग में आती हुई कुछ स्त्रियां मिलीं, जो मंगल गीत गा रही थीं। उनको भी उसने रथ में घोड़े और ऊंट जोड़ कर रास्ते में गिरा दिया। इसके बाद वह एक ब्राह्मण का रूप धारण कर लाठी टेकता हुआ सत्यभामा की बावड़ी पर गया और कमंडलु में जल मांगने लगा। पानी भरने से मना

करने पर वह बड़ा क्रोधित हुआ। उसने बावड़ी की रक्षा करने वाली दासियों के केश मूंड लिये। जल सोखिणी विद्या द्वारा उसने बावड़ी का सारा पानी सुखा दिया तथा कमंडलु में भर लिया और फिर नगर के चौराहे पर उस कमंडलु के पानी को उंडेल दिया जिससे सारे बाजार में पानी ही पानी हो गया।

इसके पश्चात् प्रद्युम्न मायामय मेंढा बना कर वसुदेव के महल पर पहुँचा। वसुदेव मेंढे से लड़ने लगे। वे मेंढे से लड़ने के शौकीन थे। मेंढे ने वसुदेव की टांग तोड़ कर उन्हें भूमि पर गिरा दिया। फिर प्रद्युम्न वहां से सत्यभामा के महल पर जाकर भोजन-भोजन चिल्लाने लगा। सत्यभामा ने उसे आदर से भोजन कराया, पर उस भेषधारी ब्राह्मण ने सत्यभामा का जितना भी सामान जीमन के लिये लिया था सभी चट कर दिया और फिर भी भूखा ही बना रहा। इसके पश्चात् उसने एक और कौतुक किया कि जो कुछ उसने खाया था वह सब वमन कर उसका आंगन भर दिया। इससे सत्यभामा बड़ी दुखी एवं तिरस्कृत हुई।

इसके बाद वह ब्रह्मचारी का भेष धारण कर अपनी माता रुक्मिणी के महल में गया। रुक्मिणी अपने पुत्र के आगमन की प्रतीक्षा में थी क्योंकि केवली कथित उसके आने के सभी चिह्न दिखाई दे रहे थे। इतने में ही उसने एक ब्रह्मचारी को आता हुआ देखा। रुक्मिणी ने उसे सत्कारपूर्वक आसन दिया। वह ब्रह्मचारी बड़ा भूखा था, भोजन की याचना करने लगा। प्रद्युम्न की माया से रुक्मिणी को घर में कुछ भी भोजन नहीं मिला तो उसने नारायण के खा सकने योग्य लड्डू उस ब्रह्मचारी को परोस दिये। इन अत्यन्त गरिष्ठ सारे लड्डुओं को उसे खाते देख कर रुक्मिणी को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसकी बातचीत से उसको सन्देह हुआ कि सम्भवतः वही उसका पुत्र हो। जब सचाई जानने के लिए माता बहुत बेचैन हो गई तब अकस्मात् प्रद्युम्न अपने असली सुन्दर रूप में प्रकट हो गया और उसे देख कर माता की प्रसन्नता का पार न रहा।

सत्यभामा की दासियां जब पूर्व प्रतिज्ञा के अनुसार रुक्मिणी के केश लेने आईं तो प्रद्युम्न ने उन्हें भी विकृत कर दिया। इस समाचार को सुन कर बलभद्र बड़े कुपित हुए और रुक्मिणी के पास आये। प्रद्युम्न विक्रिया से अपना स्थूलकाय ब्राह्मण का रूप बना कर महल के द्वार के आगे लेट गया। बलभद्र ने बड़ी कठिनता से उसे हटा कर महल में प्रवेश किया, पर इतने में ही प्रद्युम्न ने सिंह रूप धारण किया और बलभद्र का पैर पकड़ कर

अखाड़े में डाल दिया। फिर उसने माता को उस विमान में ले जाकर बैठा दिया जहां नारद और उदधि कुमारी बैठे थे।

इसके पश्चात् प्रद्युम्न ने मायामयी रुक्मिणी की बांह पकड़ कर उसे श्रीकृष्ण की सभा के आगे से ले जाते हुए ललकारा कि यदि किसी वीर में सामर्थ्य हो तो वह श्रीकृष्ण की रानी रुक्मिणी को छुड़ा कर ले जावे। फिर क्या था, सभा में बड़ी खलबली मच गई और शीघ्र ही युद्ध की तैयारी होने लगी। श्रीकृष्ण अपने अनेक योद्धाओं को साथ लेकर रणभूमि में आ डटे किन्तु प्रद्युम्न ने सभी योद्धाओं को मायामय नींद में सुला दिया। इससे श्रीकृष्ण बड़े क्रोधित हुए और प्रद्युम्न को ललकार कर कहने लगे कि वह रुक्मिणी को वापस लौटा कर ही अपने प्राणों की रक्षा कर सकेगा। किन्तु वह कब मानने वाला था। आखिर दोनों में युद्ध होने लगा। श्रीकृष्ण जी जो भी वार करते उसे प्रद्युम्न अविलम्ब काट देता। इस तरह दोनों वीरों में भयंकर लड़ाई हुई। जब श्री कृष्ण कुपित होकर निर्णायक युद्ध करने को तैयार होने लगे तो नारद वहां आ गये और दोनों का परस्पर में परिचय करवाया। प्रद्युम्न श्रीकृष्ण के पैरों में गिर गया और श्रीकृष्ण ने आनन्द विभोर होकर उसका सिर चूम लिया। प्रद्युम्न ने अपनी मोहिनी माया को समेटा और सारी सेना उठ खड़ी हुई। घर घर तोरण द्वार बांधे गये तथा सौभाग्यवती स्त्रियों ने मंगल कलश स्थापित कर नगर प्रवेश पर उनका अभूतपूर्व स्वागत किया। इस तरह यह कार्यक्रम बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। फिर प्रद्युम्न का राज्याभिषेक का महोत्सव हुआ, तब कालसंवर और कंचनमाला को भी बुलाया गया। इसके पश्चात् प्रद्युम्न का विवाह बड़े ठाठ बाट से किया गया। सत्यभामा ने अपने पुत्र भानुकुमार का विवाह भी सम्पन्न किया। वे सब बहुत दिनों तक सुखपूर्वक जीवन की सुविधाओं का उपभोग करते रहे।

कुछ समय पश्चात् शंबुकुमार का जीव अच्युत स्वर्ग से श्री कृष्ण की सभा में आया और एक अनुपम हार देकर उनसे कहने लगा कि जिस रानी को आप यह हार देंगे उसी की कूंख से उसका जन्म होगा। श्रीकृष्ण यह हार सत्यभामा को देना चाहते थे, किन्तु प्रद्युम्न ने अपनी विद्या के बल से जामवन्ती का रूप सत्यभामा का सा बना कर श्री कृष्ण को धोखे में डाल दिया और वह हार उसके गले में डलवा दिया। इसके बाद जामवन्ती और सत्यभामा दोनों के क्रमशः शंबुकुमार और सुभानुकुमार नाम के पुत्र हुए। दोनों साथ साथ ही वृद्धि को प्राप्त हुए। जब वे बड़े हुए तो एक दिन दोनों

कुमारों ने जुआ खेला और शंबुकुमार ने सुभानुकुमार की सारी सम्पत्ति जीत ली।

जब समयानुसार सुभानुकुमार का विवाह हो गया तो रुक्मिणी ने अपने भाई रूपचन्द के पास कुण्डलपुर प्रद्युम्न एवं शंबुकुमार को अपनी कन्या देने के लिये दूत भेजा, किन्तु रूपचन्द ने प्रस्ताव स्वीकार करने के स्थान पर दूत को बुरा भला कहा और यादव वंश के साथ कभी सम्बन्ध न करने की प्रतिज्ञा प्रकट की। रुक्मिणी यह जान कर बहुत दुखी हुई। प्रद्युम्न को भी बड़ा क्रोध आया। प्रद्युम्न भेष बदल कर कुण्डलपुर गया तथा युद्ध में रूपचन्द को हरा कर उसे श्री कृष्ण के पैरों पर लाकर डाल दिया। अन्त में दोनों में मेल हो गया और रूपचन्द ने अपनी पुत्रियां दोनों कुमारों को भेंट कर दी।

प्रद्युम्न कुमार ने बहुत वर्षों तक सांसारिक सुखों को भोगा। एक दिन वह नेमिनाथ भगवान के समवसरण में पहुँचा। वहां केवली के मुख से द्वारका और यादवों के विनाश का भविष्य सुना तो उसे संसार एवं भोगों से विरक्ति हो गई। माता-पिता के बहुत समझाने पर भी उसने न माना और जिन-दीक्षा ले ली। तपश्चरण कर प्रद्युम्न ने घातिया कर्मों को नाश किया और केवल ज्ञान प्राप्त कर आयु के अन्त में सिद्ध पद को प्राप्त किया।

प्रद्युम्न चरित की कथा का आधार एवं उसके विभिन्न रूपः—

जैन चरित काव्यों एवं कथाओं के मुख्यतः दो आधार हैं—एक महापुराण तथा दूसरा हरिवंश पुराण। आगे चल कर इन्हीं दो पुराणों की धारायें विभिन्न रूपों में प्रवाहित हुई हैं। प्रद्युम्न चरित की कथा जिनसेनाचार्य कृत हरिवंश पुराण से ली गई है। यद्यपि कवि ने अपनी रचना में इसका कोई उल्लेख नहीं किया है, किन्तु जो कथा प्रद्युम्न के जीवन के संबंध में हरिवंश पुराण में दी हुई है। उसी से मिलता जुलता वर्णन प्रद्युम्न चरित में मिलता है। दोनों कथाओं में केवल एक ही स्थान पर उल्लेखनीय विरोध है। हरिवंश पुराण में रुक्मिणी पत्र भेज कर श्रीकृष्ण को अपने वरण के लिये बुलाती है जबकि प्रद्युम्न चरित में नारद के अनुरोध पर श्रीकृष्ण विवाह के लिये जाते हैं।

गुणभद्राचार्य कृत उत्तरपुराण (महापुराण का उत्तरार्द्ध) में प्रद्युम्न चरित की कथा संक्षेप रूप में दी गई है, इसलिये उसमें नारद का श्रीकृष्ण

की सभा में आगमन, सत्यभामा द्वारा नारद को सम्मान न देना, नारद द्वारा सत्यभामा का मानमर्दन करने का संकल्प, श्री कृष्ण द्वारा रुक्मिणी हरण एवं शिशुपाल वध, प्रद्युम्न का मुनि के पास जाना आदि घटनाओं का कोई उल्लेख नहीं है। प्रद्युम्न चरित में कंचनमाला द्वारा प्रद्युम्न को तीन विद्याओं का देना लिखा है जबकि उत्तरपुराण के अनुसार प्रद्युम्न ने इससे प्रज्ञप्ति नाम की विद्या लेकर उनकी सिद्धि की थी।

महाकवि सिंह द्वारा रचित अपभ्रंश भाषा के काव्य पज्जुण्णकहा* (१३ वीं शताब्दी) और प्रस्तुत प्रद्युम्न चरित की कथा में भी साम्य है। केवल पज्जुण्णकहा में प्रत्येक घटना का विस्तृत वर्णन करने के साथ-साथ प्रद्युम्न के पूर्वभवों का भी विस्तृत वर्णन किया गया है जबकि प्रद्युम्न चरित में इनका केवल नामोल्लेख है। इसके अतिरिक्त 'पज्जुण्णकहा' की कथा श्रेणिकराजा द्वारा प्रश्न पूछे जाने पर गौतम गणधर द्वारा कहलाई गई है किन्तु सधारु कवि ने मंगलाचरण के पश्चात् ही कथा का प्रारम्भ कर दिया है।

महासेनाचार्य कृत संस्कृत प्रद्युम्न चरित ११ वीं शताब्दी की रचना है। रचना १४ सर्गों में विभाजित है। पज्जुण्णकहा की तरह घटनाओं का इसमें भी विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है इसमें और प्रद्युम्न चरित्र की कथा में पूर्णतः साम्य है।

इसी प्रकार हेमचन्द्राचार्य कृत 'त्रिषष्ठिशलाकापुरुषचरित' में प्रद्युम्न के जीवन की जो कथा दी गई है उसमें और सधारु कवि द्वारा वर्णित कथा में भी प्रायः समानता है।

प्रद्युम्न का जीवन जैन साहित्यकों के लिये ही नहीं किन्तु जैनेतर साहित्यिकों के लिये भी आकर्षण की वस्तु रहा है। विष्णु पुराण के पंचम अंश के २६ वें तथा २७ वें अध्याय में रुक्मिणी एवं प्रद्युम्न की जो कथा दी हुई है, वह निम्न प्रकार है :—

रुक्मिणी कुण्डिनपुर नगर के भीष्मक राजा की कन्या थी। श्री कृष्ण ने रुक्मिणी के साथ और रुक्मिणी ने कृष्ण के साथ विवाह करने की इच्छा प्रकट की, किन्तु भीष्मक ने शिशुपाल को रुक्मिणी देने का निश्चय कर लिया। इस कारण विवाह के एक दिन पूर्व ही श्री कृष्ण ने रुक्मिणी का हरण कर लिया और इसके बाद उसके साथ उसका विधिवत् विवाह सम्पन्न

* आमेर शास्त्र भण्डार जयपुर में इसकी हस्तलिखित प्रति सुरक्षित है।

हुआ। काल क्रम से रुक्मिणी के प्रद्युम्न पुत्र उत्पन्न हुआ। इसे जन्म लेने के छठे दिन ही शम्बरासुर ने हर लिया और उसे लवण समुद्र में डाल दिया। समुद्र में उस बालक को एक मत्स्य ने निगल लिया। मछेरों ने उस मत्स्य को अपने जाल में फांस लिया और शम्बर को भेंट कर दिया। जब शम्बर की स्त्री मायावती उस मछली का पेट चीरने लगी तो वह बालक उसमें से जीवित निकल आया। इतने में ही वहां नारद ऋषि आये और रानी को सारी घटना सुना दी। मायावती उस बालक पर मोहित हो गई और उसका अनुरागपूर्वक पालन किया। उसने उसे सब प्रकार की माया सिखा दी। जब प्रद्युम्न को अपनी पूर्व घटना का पता चला तो उसने शम्बरासुर को लड़ने के लिये ललकारा और उसे युद्ध में मार दिया तथा अन्त में मायावती के साथ द्वारका के लिये रवाना हो गया। जब वह वहां पहुँचा तो रुक्मिणी उसे पहिचान न सकी, किन्तु नारद ऋषि के आने पर सारी घटना स्पष्ट हो गई। कुछ दिनों पश्चात् प्रद्युम्न ने रुक्मी की सुन्दरी कन्या को स्वयंवर में ग्रहण किया तथा उससे अनिरुद्ध नामक महापराक्रमी पुत्र उत्पन्न हुआ।

उक्त कथा और प्रद्युम्न चरित्र में निम्न प्रकार से साम्य एवं असाम्य है :—

साम्य—(१) प्रद्युम्न को श्री कृष्ण एवं रुक्मिणी का पुत्र मानना।

(२) जन्म के छठी रात्रि को ही असुर द्वारा अपहरण।

(३) नारद ऋषि द्वारा रुक्मिणी को आकर सारी स्थिति समझाना।

(४) रुक्मी की पुत्री से प्रद्युम्न का विवाह।

असाम्य—प्रद्युम्न को शम्बरासुर द्वारा समुद्र में डाल देना तथा वहां उसे मत्स्य द्वारा निगल जाना और फिर उसी के घर जाकर मत्स्य के पेट से जीवित निकलना, मायावती का मोहित होना और बालक प्रद्युम्न का पालन करना और अन्त में युवा होने पर शम्बरासुर को मार कर मायावती से विवाह करना।

कथाओं के साम्य और असाम्य होने पर भी इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि भारतीय वाङ्मय में प्रद्युम्न का चरित लोकप्रिय एवं आकर्षण की वस्तु रहा है।

बौद्ध साहित्य में प्रद्युम्न का उल्लेख है या नहीं और यदि है तो किस रूप में है साधनाभाव के कारण इसका पता हम नहीं लगा सके।

कवि का परिचय

रचना के प्रारम्भ में कवि ने सरस्वती को नमस्कार करते हुए अपना नामोल्लेख 'सो सधार पणमइ सरसुति' इस प्रकार किया है। इसलिये कवि का नाम 'सधार' होना चाहिए, किन्तु अनेक स्थलों पर सधारु' नाम भी दिया हुआ है। अन्य प्रतियों में भी अधिकांश स्थलों पर 'सधारु' नाम आया है इसलिये कवि का नाम 'सधारु' ही ठीक प्रतीत होता है। +कवि ने अपने जन्म से अग्रवाल जाति को विभूषित किया था। इनकी माता का नाम सुधन था जो गुण वाली थी। पिता का नाम साह महराज था, अन्य प्रतियों में साहु महराज एवं समहराइ भी मिलता है। वे एरच्छ नगर में रहते थे। एरच्छ नगर के नाम एरछ, एरिछि, एलच, एयरच्छ एवं एरस के पाठान्तर भेद से भी मिलते हैं। किन्तु इन सब में मूल प्रति वाला एरच्छ ही अधिक ठीक ज्ञात पड़ता है। इस नगर का उत्तर प्रदेश में होना अधिक सम्भव है। डा० वासुदेवशरण अग्रवाल ने भी जैन सन्देश आगरा के एक लेख में इसकी पुष्टि की है। नाहटाजी ने इस नगर को मध्य प्रदेश में होना माना है जो ठीक मालूम नहीं होता। उस समय उस नगर में बहुत से श्रावक लोग रहते थे जो दशलक्षण धर्म का पालन करते थे।

अपना परिचय देने के पश्चात् कवि ने लिखा है कि जो भी प्रद्युम्न चरित को पढ़ेगा वही मरने के पश्चात् स्वर्ग में देवता के रूप में उत्पन्न होगा तथा अन्त में मुक्ति रूपी लक्ष्मी को प्राप्त करेगा। जो मनुष्य इसका श्रवण करेगा उसके अशुभ कर्म स्वयमेव दूर हो जायेंगे। जो मनुष्य इसको दूसरों को सुनावेगा उस पर प्रद्युम्न प्रसन्न होंगे। इसके अतिरिक्त इस ग्रन्थ को लिखाने वाले, लिखने वाले, पढ़ाने वाले सभी लोगों को अपार पुण्य की प्राप्ति होना लिखा है, क्योंकि प्रद्युम्न का चरित पुण्य का भण्डार है। अन्त में कवि ने अपनी लघुता प्रदर्शित करते हुए कहा है कि वह स्वयं कम बुद्धि वाला है तथा अक्षर मात्रा का भेद नहीं जानता, इसलिये छोटी बड़ी मात्रा

\+ महसामी कउ कीयउ बखाणु, तुम पज्जुन पायउ निरवाणु।
अगरवाल की मेरी जात, पुर अगरोए मुहि उतपाति ॥
सुधणु जणणी गुणवइ उर धरिउ, सा महराज घरह अवतरिउ।
एरछ नगर वसंते जानि, सुणिउ चरित मइ रचिउ पुराणु ॥
सावयलोय वसहि पुर माहि, दह लक्षण ते धर्म्म कराहि।
दस रिस मानइ दुतिया भेउ, भावहि चितइ जिणेसरु देउ ॥

के लिये अथवा अक्षरों के कम अधिक प्रयोग के लिये पहिले ही पण्डित वर्ग से वह क्षमा याचना करता है।

रचना काल :—

अब तक प्रद्युम्न चरित्र की जितनी प्रतियां उपलब्ध हुई हैं उन सभी प्रतियों में एकसा रचना काल नहीं मिलता है। इन प्रतियों में रचना काल के तीन सम्वत् १३११, १४११ एवं १५११ मिलते हैं। यहां हमें यह देखना है कि इन तीनों सम्वतों में कौनसा सही सम्वत् है। विभिन्न प्रतियों में निम्न प्रकार से रचना काल का उल्लेख मिलता है:—

(१) अग्रवाल पंचायती मन्दिर कामां, जैन मन्दिर रीवां एवं आत्मानन्द जैन सभा अम्बाला की प्रतियों में सम्वत् १३११ लिखा हुआ है।

(२) बधीचन्दजी का जैन मन्दिर जयपुर, खण्डेलवाल पंचायती मन्दिर कामां, जैन मन्दिर देहली और बाराबंकी वाली प्रतियों में रचना सम्वत् १४११ दिया हुआ है।

(३) सिंधिया ओरिएंटल इन्स्टीट्यूट उज्जैन वाली प्रति में सम्वत् १५११ दिया हुआ है।

सम्वत् १३११ वाले रचना काल के सम्बन्ध में जो पाठ है, वह निम्न प्रकार है :—

संवत् तेरहसै हुइ गये ऊपर अधिक इग्यारा भये।
भादौ सुदि पंचमी दिन सार, स्वाति नक्षत्र जनि सनिवार।

उक्त पद्य के अनुसार प्रद्युम्न चरित्र सम्वत् १३११ भादवा सुदी ५ शनिवार स्वाति नक्षत्र के दिन पूर्ण हुआ था।

सम्वत् १४११ वाला रचना काल जो ४ प्रतियों में उपलब्ध होता है, निम्न प्रकार है :—

सरसकथा रसु उपजइ घणउ, निसुणहु चरितु पजूसह तणउ।
संवत् चौदहसै हुइ गए, ऊपर अधिक इग्यारह भए।
भावव दिन पंचइ सो सारु, स्वाति नक्षत्र सनीश्चर वारु ॥१२॥

जयपुर वाली प्रति

सरसकथा रस उपजइ घणउ, निसुणउ चरित पज्जउवन तणउ ।
संवत् चउदसइ इग्यार, ऊपरि अधिक भई ग्यार ।
भादव सुदि नवमी जे सार, स्वाति नक्षत्र सनीचर वार ।
देवलोक आणोत्तर सार, हरिवंश आव्याउ वंश सधार ॥१२॥

खण्डेलवाल जैन पंचायती मन्दिर कामां

उक्त पद्यों में जयपुर वाली प्रति में सम्वत् १४११ भाद्रपद मास पंचमी शनिवार स्वाति नक्षत्र एवं कामां वाली प्रति में सम्वत् १४११ भादवा सुदी ६ शनिवार स्वाति नक्षत्र रचना काल दिया हुआ है । दोनों प्रतियों में तिथियों के अतिरिक्त शेष बातें समान हैं ।

इसी प्रकार उज्जैन वाली प्रति में निम्न पाठ है :—

संवत् पंचसइ हुई गया, गरहोतराभि अरु तह भया ।
भादव वदि पंचमि तिथि सारु, स्वाति नक्षत्र सनीस्चरवारु ॥

इसके अनुसार 'प्रद्युम्न चरित' की रचना सम्वत् १५११ भादवा बुदी ५ शनिवार स्वाति नक्षत्र के दिन पूर्ण हुई थी ।

इस प्रकार सभी प्रतियों में भाद्रपद मास शनिवार एवं स्वाति नक्षत्र इन तीनों का एक-सा उल्लेख मिलता है । इसलिये यह तो निश्चित है कि प्रद्युम्न चरित की रचना भाद्रपद मास एवं शनिवार के दिन हुई थी । किन्तु रचना सम्वत् कौनसा है, यह हमें देखना है । तीनों रचना सम्वतों में सम्वत् १५११ वाला रचना काल तो सही प्रतीत नहीं होता है क्योंकि प्रथम तो यह सम्वत अभी तक एक ही प्रति में उपलब्ध हुआ है । इसके अतिरिक्त 'पंचसइ' पाठ स्वयं भी गलत है इससे पन्द्रह सौ का अर्थ नहीं निकलता इसलिये सम्वत् १५११ वाले पाठ को सही मानना युक्ति संगत नहीं है । सम्वत् १३११ वाला पाठ जो अभी तक ३ प्रतियों में मिला है, उसके सम्बन्ध में भी हमारा यही मत है कि गुण सागर नामक किसी विद्वान् ने सम्वत चौदहसै के स्थान पर तेरहसइ पाठ परिवर्तित कर दिया तथा 'सुणिउ चरित मइ रचिउ पुराण' के स्थान पर इस रचना का कर्ता स्वयं बनने के लोभ से प्रेरित होकर 'गुण सागर यह कियो बखान' पाठ बदल दिया । इसके अतिरिक्त इस कवियशः प्रार्थी ने आरम्भ के जिन पद्यों में सधारु का नाम था उनके स्थान पर नये ही मंगलाचरण के पद्य जोड़ दिये ।

अब रहा सम्वत् १४११ का रचना काल। इस रचना सम्वत् के सम्बन्ध में सभी विद्वान् एक मत हैं। श्री नाहटाजी ने प्रद्युम्न चरित के रचनाकाल का विवेचन करते हुए लिखा है [1] कि संवत् १४११ वाला पाठ सही है किन्तु उनका कहना है कि बदी पंचमी, सुदी पचमी और नवमी इन तीन दिनों में स्वाति नक्षत्र नहीं पड़ता। डा० माताप्रसाद जी ने गणित पद्धति के आधार पर जो तिथि शुद्ध करके भेजी है वह संवत् १४११ भादवा सुदी ५ शनिवार है। सर्वे रिपोर्ट के निरीक्षक रायबाहदुर स्व० डा० हीरालाल ने अपनी रिपोर्ट [2] में लिखा है कि संवत १४११ भादवा बुदी ५ शनिवार का समय ठीक मालूम देता है। लेकिन उनका भी बुदि का उल्लेख नवीन गणना पद्धति के अनुसार ठीक नही बैठता है। इसलिए उक्त सभी दलीलों के आधार पर संवत् १४११ भादवा सुदी ५ शनिवार वाला पाठ ही सही मालूम देता है। प्रद्युम्न चरित में जो 'भादव दिन पंचमी सो सारु' पाठ है उसके स्थान पर संभवतः मूल पाठ 'भादव सुदी पंचमी सो सारु' यही होना चाहिये।

प्रद्युम्नचरित के पूर्व का हिन्दी साहित्य

हिन्दी के सुप्रसिद्ध विद्वान् पं० रामचन्द्र शुक्ल ने दस वीं शताब्दी से लेकर चौदहवीं शताब्दी तक के काल को हिन्दी साहित्य का आदिकाल माना है। शुक्लजी ने इस काल की अपभ्रंश और देशभाषा—काव्य की १२ पुस्तकें इतिहास में विवेचनीय मानी है। इनके नाम ये हैं (१) विजयपाल रासो (२) हम्मीर रासो (३) कीर्त्तिलता (४) कीर्तिपताका (५) खुमानरासो (६) वीसलदेवरासो (७) पृथ्वीराजरासो (८) जयचन्द्रप्रकाश (९) जयमयंक जय चन्द्रिका (१०) परमाल रासो (११) खुशरों की पहेलियां और (१२) विद्यापति पदावलि। उनके मतानुसार इन्हीं बारह पुस्तकों को दृष्टि से आदि काल का लक्षण निरुपण और नामकरण हो सकता है। इनमें से अन्तिम दो तथा 'वीसलदेवरासो' को छोड़कर शेष सब ग्रंथ वीर रसात्मक हैं। अतः आदिकाल का नाम वीरगाथा काल ही रखा जा सकता है।

किन्तु शुक्लजी ने हिन्दी साहित्य के आदिकाल के जिस रूप का

---

१. हिन्दी अनुशीलन वर्ष ६ अंक १–४

२. He wrote the work in Samvat 1411 on Saturday 5th of the dark of Bhadva month which on calculations regularly Corresponds to Saturday the 9th August 1354 A. D.

Search Report 1923-25 P-17.

निर्देश किया है वह सही नहीं जान पड़ता। उससे हिन्दी के विद्वान् यथा राहुल सांकृत्यायन, डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी आदि भी सहमत नहीं हैं। जिन बारह रचनाओं के आधार पर शुक्लजी ने हिन्दी का आदिकाल निर्धारित किया था उनमें से अधिकांश रचनायें विभिन्न विद्वानों द्वारा परवर्ती काल की सिद्ध कर दी गयी हैं। डा० द्विवेदी का कहना है [1] कि दसवीं से चौदहवीं शताब्दी तक का काल जिसे हिन्दी का आदिकाल कहते हैं भाषा की दृष्टि से अपभ्रंश के बढाव का ही काल है। इसी अपभ्रंश के बढ़ाव को कुछ लोग उत्तरकालीन अपभ्रंश कहते हैं और कुछ लोग पुरानी हिन्दी। इसी प्रकार जब से राहुलजी ने जैन कवि स्वयम्भु के पउमचरिय (जैन रामायण) को हिन्दी भाषा का आदि महाकाव्य घोषित किया है तब से हिन्दी भाषा का प्रारम्भिक काल ११ वीं शताब्दी से आरम्भ न होकर ८ वीं शताब्दी तक चला गया है। हिन्दी भाषा के इन प्रारम्भिक वर्षों में हिन्दी पहिले अपभ्रंश के रूप में (जिसका नाम प्राचीन हिन्दी अधिक उचित होगा) जन साधारण के सामने आयी और फिर शनैः शनैः अपने वर्तमान स्वरूप को प्राप्त किया। इसलिये अब हमें हिन्दी साहित्य की सीमा को अधिक विस्तृत करना पड़ेगा। हिन्दी के इन ६०० वर्षों में (७०१ से १३०० तक) अपभ्रंश साहित्य प्रचुरमात्रा में लिखा गया और वह भी पूर्ण रूप से साहित्यिक दृष्टिकोण से। वास्तव में अपभ्रंश साहित्य के महत्व को यदि आज से ५० वर्ष पूर्व ही समझ लिया जाता तो सम्भवतः हिन्दी साहित्य का प्रारम्भिक इतिहास दूसरी तरह ही लिखा गया होता। लेकिन डा० शुक्ल तथा श्यामसुन्दरदास आदि हिन्दी इतिहास के विद्वानों का अपभ्रंश साहित्य की ओर ध्यान नहीं गया।

हिन्दी भाषा की इन प्रारम्भिक शताब्दियों में यद्यपि सभी धर्मों के विद्वानों ने रचनायें की थी, किन्तु प्राचीन हिन्दी भाषा का अधिकांश साहित्य जैन विद्वानों ने ही लिखा है। महाकवि स्वयम्भू के पूर्व भी अपभ्रंश साहित्य कितना समृद्ध था यह 'स्वयम्भू छन्द' में प्राकृत एवं अपभ्रंश के ६० कवियों के उद्धरणों से अच्छी तरह जाना जा सकता है।

अब यहां ८ वीं शताब्दी से १४ वीं शताब्दी तक होने वाले कुछ प्रमुख कवियों का परिचय दिया जा रहा है :—

८ वीं शताब्दी के प्रारम्भ में योगेन्दु हुये जिन्होंने अपभ्रंश भाषा में 'परमात्म प्रकाश' एवं 'योगसार दोहा' की रचना की। दोनों ही आध्यात्मिक विषय की उच्चकोटि की रचनायें है।

---

१ हिन्दी साहित्य का आदिकाल (डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी)

वर्तमान उपलब्ध कवियों में स्वयम्भू अपभ्रंश के पहिले महा कवि हैं जिनकी रचनायें उपलब्ध होती हैं। 'पउमचरिय', 'रिट्ठणेमिचरिउ' तथा 'स्वयम्भू छन्द' इनकी प्राप्त रचनाओं में तथा 'पंचमीचरिउ' अनुपलब्ध रचनाओं में से हैं। 'स्वयम्भू' अपने समय के ही नहीं किन्तु अपने बाद होने वाले कवियों में भी उत्कृष्ट भाषा शास्त्री थे। इनके काव्यों में घटना बाहुल्य के वर्णन के साथ-साथ काव्यत्व का सर्वत्र माधुर्य्य दृष्टिगोचर होता है। स्वयम्भू युग प्रधान कवि थे, इनने अपने काव्यों की रचना सर्वथा निडर होकर की थी। इसके बाद के सारे अपभ्रंश एवं बहुत कुछ अंशों में हिन्दी साहित्य पर भी इनकी वर्णन शैली का पूर्णतः प्रभाव पड़ा है।

१० वीं शताब्दी में होने वाले कवियों में देवसेन, रामसिंह, पुष्पदन्त, धवल, धनपाल एवं पद्मकीर्ति के नाम उल्लेखनीय हैं। मुनि रामसिंह देवसेन के बाद के विद्वान् हैं। डा० हीरालालजी ने 'पाहुड दोहा' की प्रस्तावना में इन्हें सन् ९३३ और ११०० के बीच का अर्थात् सम्वत् १००० ई० के लगभग का विद्वान् माना है। रामसिंह स्वयं मुनि थे, इसलिये इन्होंने साधुओं को सम्बोधित करते हुए ग्रन्थ रचना की है। इनका 'पाहुड दोहा' रहस्यवाद एवं अध्यात्मवाद से परिपूर्ण है। १५ वीं शताब्दी में कबीर ने जो अपने पदों द्वारा उपदेश दिया था, वही उपदेश मुनि रामसिंह ने अपने 'पाहुड दोहा' द्वारा प्रसारित किया था।

देवसेन १० वीं शताब्दी के दोहा साहित्य के आदि विद्वान् कहे जा सकते हैं। 'सावयधम्म दोहा' इन्हीं की रचना है, जिसे इन्होंने सम्वत् ९९० के लगभग मालवा प्रान्त की धारा नगरी में पूरा किया था। महाकवि स्वयम्भू की टक्कर के अथवा किन्हीं बातों में तो उनसे भी उत्कृष्ट पुष्पदन्त हुए जिन्होंने 'महापुराण', जसहरचरिउ' एवं 'णायकुमारचरिउ' की रचना की। इनमें प्रथम प्रबन्ध-काव्य एवं शेष दोनों खण्ड काव्य कहे जा सकते हैं। महापुराण अपभ्रंश का श्रेष्ठ काव्य है। पुष्पदन्त अलौकिक प्रतिभा सम्पन्न थे। उनकी प्रतिभा उनके काव्यों में स्थान-स्थान पर देखी जा सकती है। धनपाल कवि ने 'भविसयत्तकहा' की रचना की थी। कवि का जन्म धक्कड़ वैश्य वंश में हुआ था। कवि को अपनी विद्वत्ता पर अभिमान था, इसलिये एक स्थानपर इन्होंने अपने आपको सरस्वती पुत्र भी कहा है। १२२ संधियों और १८ हजार पद्यों में पूर्ण होने वाला 'हरिवंशपुराण' धवल कवि द्वारा इसी शताब्दी में रचा गया था। धवल के इस काव्य की भाषा प्रांजल और प्रवाह-पूर्ण है। स्थान-स्थान पर अलंकारों की छटा पाठक के मन को मोह लेती

है। इसमें अनेक रसों का संमिश्रण बड़े आकर्षक ढङ्ग से हुआ है। पद्मकीर्ति ने अपने 'पासणाहचरिउ' को सम्वत् ६६६ में समाप्त किया। भाषा साहित्य की दृष्टि से यह काव्य भी उल्लेखनीय है।

११ वीं शताब्दी में होने वाले कवियों में वीर, नयनन्दि, कनकामर आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। महाकवि वीर का यद्यपि एक ही काव्य 'जम्बूसामीचरिउ' उपलब्ध होता है। किन्तु उनकी यह एक ही रचना उनके पाण्डित्य एवं प्रतिभा को प्रकट करने के लिये पर्याप्त है। 'जम्बूसामीचरिउ' वीर एवं शृङ्गार रस का अनोखा काव्य है। नयनन्दि ने अपने काव्य 'सुदंसण चरिउ' को सम्वत् ११०० में समाप्त किया था। ये अपभ्रंश के प्रकांड विद्वान् थे। इसीलिये इन्होंने 'सुदंसणचरिउ' में महाकाव्यों की परम्परा के अनुसार पुरुष, स्त्री एवं प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन किया है। बाण एवं सुबन्धु ने जिस क्लिष्ट एव अलंकृत पदावली का संस्कृत गद्य में प्रयोग किया था नयनन्दि ने भी उसी तरह का प्रयोग अपने इस पद्य काव्य में किया है। विविध छन्दों का प्रयोग करने में भी यह कवि प्रवीण थे। इन्होंने अपने काव्य में ५५ प्रकार के छन्दों का प्रयोग किया है। सकलविधिनिधान काव्य में अपने से पूर्व होने वाले ४० से अधिक कवियों के नाम इन्होंने गिनाये हैं, जिनमें सस्कृत अपभ्रंश दोनों ही भाषाओं के कवि हैं। कनकामर द्वारा निबद्ध 'करकण्डु चरिउ' भी काव्यत्व की दृष्टि से उत्कृष्ट काव्य है। इसका भाषा उदात्त भावों से परिपूर्ण एवं प्रभाव गुणयुक्त है। इसी शताब्दी में होने वाले धाहिल का 'पउमसिरिचरिउ' एवं अब्दुल रहमान का 'सन्देशरासक' भी उल्लेखनीय काव्य है।

१२ वीं शताब्दी में होने वाले मुख्य कवियों में श्रीधर, यशःकीर्ति, हेमचन्द, हरिभद्र, सोमप्रभ, विनयचन्द आदि के नाम गिनाये जा सकते हैं। हेमचन्द्राचार्य अपने समय के सर्वाधिक प्रतिभा सम्पन्न विद्वान् थे। संस्कृत एवं प्राकृत भाषा के साथ साथ अपभ्रंश भाषा के छन्दों को भी उन्होंने अपने 'छन्दानुशासन' में उद्धृत किया गया है।

१३ वीं और १४ वीं शताब्दी में अपभ्रंश साहित्य के साथ साथ हिन्दी साहित्य का भी निर्माण होने लगा। इसी शताब्दी में पं० लाखू ने 'जिणयत्त चरिउ' जयमित्रहल ने 'वड्ढमाणकव्व' कवि सिंह ने 'पज्जुहण चरिउ' आदि काव्य लिखे। १४ वीं शताब्दी में धर्मसूरि का 'जम्बूस्वामीरास', रल्ह का जिणदत्त चउपई' (संवत १३५४) वेल्ह का 'चउवीसी गीत' (संवत् १३७१) भी उल्लेखनीय रचनायें है। इनमें सबसे महत्वपूर्ण हिन्दी की रचना

जिणदत्त चउपई है जिसे रल्ह कवि ने संवत् १३५४ में समाप्त किया था। ५५० से भी अधिक चउपई एवं अन्य छन्दों में निबद्ध यह रचना भाषा साहित्य की दृष्टि से ही नहीं किन्तु काव्यत्व की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। अपभ्रंश से हिन्दी में शनैः शनैः शब्दों का किस तरह परिवर्तन हुआ, यह इस काव्य से अच्छी तरह जाना जा सकता है। यद्यपि कवि ने इस काव्य में अपभ्रंश शब्दों का भी पर्याप्त प्रयोग किया है किन्तु उनका जिस सुन्दरता से प्रयोग हुआ है उससे वे पूर्णतः हिन्दी भाषा के शब्द मालूम पड़ते हैं। वास्तव में १३ वीं और १४ वीं शताब्दी हिन्दी भाषा की साहित्यिक रचनायें प्रयोग करने के लिये महत्वपूर्ण समय था।

पं० मोतीलाल मेनारिया ने 'राजस्थानी भाषा और साहित्य' में संवत् १०४५ से १४६० तक की रचनाओं के सम्बन्ध में लिखा है—"इस युग के साहित्य सृजन में जैन मतावलंबियों का हाथ विशेष रहा है। कोई पचास के लगभग जैन साहित्यकारों के ग्रन्थों का पता लगा है।* परन्तु जैन विद्वानों का यह मधुर साहित्य जितना भाषा की दृष्टि से महत्वपूर्ण है उतना साहित्य की दृष्टि से नहीं है यद्यपि साहित्यिक सौन्दर्य भी इसमें यत्र-तत्र दृष्टिगोचर होता है।

मेनारियाजी की निम्न सूची से स्पष्ट है कि हिन्दी की नींव ११ वीं शताब्दी में रख दी गई थी और उसको जैन विद्वानों ने मजबूत बनाया था।

१. कुछ महत्वपूर्ण नाम ये हैं—धनपाल (सं० १०८१), जिनवल्लभसूरि (सं० ११६७) पल्ह (११७०), वादिदेवसूरि (सं० ११८४), वज्रसेनसूरि (सं० १२२५), शालिभद्रसूरि (सं० १२४१), नेमिचन्द्र भण्डारी (सं० १२५६), आसगु (सं० १२५७), धर्म (सं० १२६६), शाह रयण और भत्तउ (सं० १२७८), विजयसेनसूरि (सं० १२८८), राम (सं० १२८६), सुमतिगणि (१२६०), जिनेश्वरसूरि (१२७८-१३३१), अभयतिलक (सं० १३०७), लक्ष्मीतिलक (सं० १३११-१७), सोममूर्ति (सं० १२६०-१३३१), जिनपद्मसूरि (सं० १३०६-२२), विनयचन्द्रसूरि (१३२५-५३), जगडु (सं० १३३१), संग्रामसिंह (सं० १३३६), पद्म (सं० १३५८), जयशेखरसूरि (सं० १३६०-६२), प्रज्ञातिलकसूरि (सं० १३६३), वस्तिग (सं० १३६८), गुणाकरसूरि (सं० १३७१), अंबदेवसूरि (१३७१), फेरु (१३७६), धर्मकलश (सं० १३७७), सारमूर्ति (१३६०), जिनप्रभसूरि (१३६०-६०), सोलण (१४ वीं शताब्दी), राजशेखर सूरि (सं० १४०५), जयानंदसूरि (सं० १४१०), तरुणप्रभसूरि (१४११), विनयप्रभ (१४१२), जिनोदयसूरि (१४१५), ज्ञानकलश (१४१५), पृथ्वीचन्द (सं० १४२६), जिनरत्न सूरि (सं० १४३०), मेरुनन्दन (सं० १४३२), देवसुन्दरसूरि (सं० १४४०), साधुहंस (सं० १४४५)।

जैन विद्वानों की लोक भाषायें लिखने में रुचि होने के कारण इन्होंने हिन्दी को प्रारम्भ से ही अपनाया और उसमें अधिक से अधिक साहित्य लिखने का प्रयास किया।

प्रद्युम्न चरित का समकालीन हिन्दी साहित्य

अब हमें प्रद्युम्न चरित के समकालीन साहित्य पर (सं १४०० से लेकर १४२५ तक लिखे गये) विचार करना है और देखना है कि इस समय लिखे गये हिन्दी साहित्य और प्रद्युम्न चरित में कितनी समानता है।

हिन्दी साहित्य के इतिहास में १५ वीं शताब्दी के प्रथम पाद की रचनाओं का उल्लेख नहीं के बराबर हुआ है। उसमें महाराष्ट्र के साधु नामदेव की स्फुट रचनाओं का उल्लेख अवश्य किया गया है। इसके अतिरिक्त 'राजस्थानी भाषा और साहित्य' में १५ वीं शताब्दी के प्रथम पाद के जिन कवियों का नामोल्लेख हुआ है उसमें केवल एक कवि शार्ङ्गधर आते हैं। किन्तु उनकी जिन दो रचनाओं के नाम हम्मीर रासो तथा हम्मीर काव्य— गिनाये गये हैं वे भी मूल रूप में उपलब्ध नहीं होती हैं। हां, उनकी इन रचनाओं के कुछ पद्य इधर उधर जाकर मिलते हैं। शार्ङ्गधर के जो पद्य मिले हैं उन पर अपभ्रंश का पूर्ण प्रभाव है। एक पद्य देखिये—

पिंधउ दिढ सएाह वाह उप्पर पक्खर दइ ।
बंधु समदि रण धसउ हम्मीर वअरण लइ ॥
उड्डल णह पह भमउ खग्ग रिउसोसहि डारउ।
पक्खर पक्खर ठेल्लि पेल्लि पव्वअ अप्फालउ ॥
हम्मीर कज्जु जज्जल भणह कोहाणल मुहमह जलउ ।
सुलताण सीस करवाल दइ तज्जि कलेवर दिअ चलउ ।

श्री मनारियाजी ने जिन जैन कवियों के नाम गिनाये हैं उनमें राजशेखरसूरि (१४०५), जयानंदसूरि (१४१०), तरुणप्रभसूरि (१४११), विनयप्रभ (सं० १४१२), जिनोदय सूरि (१४१५), सधारु कवि के समकालीन आते हैं। किन्तु एक तो इन कवियों की स्फुट रचनाओं के अतिरिक्त कोई बड़ी रचना नहीं मिलती दूसरे जो कुछ इन्होंने लिखा है वह प्राचीन हिन्दी (अपभ्रंश) से पूर्णतः प्रभावित है। विनयप्रभ कृत गौतमरासा का एक पद्य देखिये—

नयण वयण कर चरणि जिण वि पंकज जलि पाडिय।
तेजिहि तारा चंद सूर आकासि भयाडिय ॥

इसलिये यह कहा जा सकता है कि सधारु कवि अपने समय के अकेले हिन्दी कवि हैं; जिन्होंने इस प्रकार का प्रबन्ध काव्य, लिखने का प्रयास किया था।

हिन्दी साहित्य में प्रद्युम्न चरित का स्थान :

'प्रद्युम्न चरित' हिन्दी भाषा में अपने ढंग का अकेला काव्य है। वह पुरानी हिन्दी एवं नवीन हिन्दी काव्यों की मध्य की कडी को जोडने वाला एक श्रेष्ठ काव्य कहा जा सकता है। चउपई, एवं वस्तुबंध–छन्द में लिखा जाने वाला यह यद्यपि पहिला काव्य नहीं है किन्तु साहित्यिक दृष्टि से देखा जाय तो इसे प्रथम स्थान मिलना चाहिये। आगे चलकर जिन हिन्दी कवियों ने अपनी रचनाओं में चौपई छन्द को मुख्य स्थान दिया है उन पर अधिकांश रूप से जैन रचनाओं का प्रभाव है। चउपई छन्द क्या कवि और क्या पाठक दोनों के लिये ही प्रिय सिद्ध हुआ है।

प्रद्युम्न चरित को काव्य की दृष्टि से किस श्रेणी में रखा जा सकता है यह विचारने की वस्तु है। काव्य के साधारणतः दो भेद किये जाते हैं प्रथम 'प्रबन्ध–काव्य' दूसरा 'मुक्तक काव्य'। प्रबन्ध–काव्य के फिर तीन भेद हैं : महाकाव्य, खंड काव्य एवं चंपू काव्य। इसमें से प्रद्युम्न चरित मुक्तक काव्य तो हो नहीं सकता इसलिये यह अवश्य ही प्रबन्ध काव्य है। डा० रामचन्द्र शुक्ल ने जायसी ग्रंथावली पृष्ठ ६६ प्रबन्ध काव्य का जो लक्षण दिया है वह निम्न प्रकार है—

"प्रबन्ध काव्य में मानव जीवन का पूर्ण दृश्य होता है। उसमें घटनाओं की संबद्ध शृंखला और स्वाभाविक क्रम के ठीक ठीक निर्वाह के साथ साथ हृदय को स्पर्श करने वाले, उसे नाना भावों का रसात्मक अनुभव कराने वाले प्रसंगों का समावेश होना चाहिये। इति वृत मात्र के निर्वाह से रसानुभव नहीं कराया जा सकता। उसके लिये घटना चक्र के अन्तर्गत ऐसी वस्तुओं और व्यापारों का प्रतिबिंबवत चित्रण होना चाहिये जो श्रोता के हृदय में रसात्मक तरंगें उठाने में समर्थ हो। अतः काव्य में घटना का कहीं तो संकोच करना पड़ता है और कहीं विस्तार।"

प्रद्युम्न चरित में डा० रामचन्द्र शुक्ल का प्रबन्ध-काव्य वाला लक्षण ठीक बैठता है। इसमें घटनाओं का शृंखलाबद्ध क्रम है, नाना भावों का रसात्मक अनुभव कराने वाले प्रसंगों का समावेश है। इन सबके अतिरिक्त यह काव्य के श्रोताओं के हृदय में रसात्मक तरंगें उठाने में भी समर्थ है। इसलिये प्रद्युम्नचरित को निश्चित रूप से प्रबन्ध-काव्य कहा जा सकता है।

प्रद्युम्नचरित ६ सर्गों में विभक्त है उसमें विरह, मिलन, युद्ध वर्णन, नगर वर्णन, प्रकृति-वर्णन एवं इन सबके अतिरिक्त मायावी विद्याओं का वर्णन मिलता है। उसका नायक १६६ पुण्य पुरुषों में से एक है। वह अतिशय पुण्यवान् एवं कलाओं का धारी है। वह धीरोदात्त प्रकृति का नायक है।

काव्य के प्रवाह को स्थिर एवं प्रभावोत्पादक रखने के लिये अवान्तर कथाओं का होना भी प्रबन्ध काव्य के लिये आवश्यक है। अवान्तर कथाओं से पात्रों का चरित निखर जाता है और वे पाठकों को अपनी ओर अधिक आकृष्ट कर लेती हैं। प्रस्तुत काव्य में रुक्मिणी-हरण तथा नारद के विदेह क्षेत्र में जाने की घटना, सिंहरथ युद्ध वर्णन, उदधिकुमारी का अपहरण, भानुकुमार के विवाह का वर्णन, सुभानु तथा शंबुकुमार का द्यूत-वर्णन आदि कथायें आयी हैं। इनसे 'प्रद्युम्न चरित' के काव्यत्व की उत्कृष्टता में वृद्धि हुई है।

पूरे काव्य में घात-प्रतिघात खूब चला है। पाठकों का ध्यान किञ्चित् भी दूसरी ओर न बँट सके; इसलिये कवि ने अपने काव्य में ऐसे प्रसंगों को पर्याप्त स्थान दिया है। स्वयं नायक के जीवन में ही आश्चर्यकारी घटनाओं का बाहुल्य है। धूमकेतु असुर द्वारा उसको शिला के नीचे दबाया जाना, फिर कालसंवर द्वारा उसका बचाया जाना, उसे गुफाओं के दिखाने के बहाने अनेक विपत्तियों में फंसाना, किन्तु उसका अनेक विद्याओं के लाभ के साथ वापिस सुरक्षित निकल आना, सिंहरथ के साथ युद्ध में विजय-श्री का प्राप्त होना, स्वयं कालसंवर एवं फिर द्वारका में श्रीकृष्ण के साथ भयंकर युद्ध होना एवं उसमें भी विजय लक्ष्मी का मिलना आदि कितने ही प्रसंग उपस्थित होते हैं। जब पाठकों को नायक को विपत्ति में फंसा हुआ देखकर पूर्ण सहानुभूति होती है और जब वह वहां से विजय के साथ निरापद लौटता है तो पाठक प्रसन्नता से भर जाते हैं।

'प्रद्युम्न चरित' एक सुखान्त काव्य है। इसका नायक लौकिक एवं अलौकिक ऐश्वर्य को प्राप्त करने एवं भोगने के पश्चात् जिन दीक्षा धारण कर मोक्ष लक्ष्मी को प्राप्त करता है। जैन लेखकों के प्रायः सभी काव्य सुखान्त हैं; क्योंकि अपने काव्यों द्वारा सामान्य जन में घुसी हुई बुराइयों को दूर करने का उनका लक्ष्य रहता है।

इस काव्य में खलनायक अथवा प्रतिनायक का स्थान किसको दिया जावे यह भी विचारणीय प्रश्न है। पूरे काव्य में कितने ही पात्रों का चरित्र चित्रित किया गया है; जिनमें श्रीकृष्ण, रुक्मिणी, सत्यभामा, सुभानुकुमार, नारद, कालसंवर सिंहरथ, रूपचंद आदि के नाम विशेषतः उल्लेखनीय हैं।

खलनायक नायक का जन्म जात प्रतिद्वंद्वी होता है। उसका चरित्र उज्ज्वल न होकर दूषित एवं नायक प्रत्यनीक होता है। वह अपने कार्यों के द्वारा सदा ही नायक को परेशान करता रहता है। पाठकों को उससे कदापि सहानुभूति नहीं होती किन्तु 'प्रद्युम्न चरित' में उक्त बातें किसी भी पात्र के साथ घटित नहीं होतीं। पूरे काव्य में प्रद्युम्न का सत्यभामा, भानुकुमार, सिंहरथ, रूपचंद, कालसंवर और उसके पुत्रों के अतिरिक्त कभी किसी से विरोध नहीं होता। यही नहीं सिंहरथ एवं रूपचंद से भी कोई उसका विरोध नहीं था। उनके साथ इसका युद्ध तो केवल घटना विशेष के कारण हुआ है। अब केवल दो पात्र बचते हैं जिनमें प्रद्युम्न का जन्म जात तो नहीं; किन्तु अपनी माता रुक्मिणी के कारण विरोध हो गया था। इनमें सत्यभामा को तो स्त्री पात्र होने के कारण खलनायक का स्थान किसी भी अवस्था में नहीं दिया जा सकता। अब केवल भानुकुमार बचते हैं; किन्तु भानुकुमार ने प्रद्युम्न के साथ कभी कोई विरोध किया हो अथवा लड़ाई लड़ी हो ऐसा प्रसंग पूरे काव्य में कहीं नहीं आया; हां इतना अवश्य हुआ है कि प्रद्युम्न अपने असली रूप में प्रकट होने के पहिले तक द्वारका में विभिन्न रूपों में उपस्थित होता रहा और सत्यभामा और भानुकुमार को अपनी विद्याओं के सहारे छकाता रहा। भानुकुमार सत्यभामा का पुत्र था और सत्यभामा प्रद्युम्न की माता रुक्मिणी की सौत थी। इसी कारण प्रद्युम्न का भानुकुमार के साथ सौमनस्य नहीं था। भानुकुमार की मांग-उदधिकुमारी से प्रद्युम्न ने विवाह कर लिया था इसका कारण भी यही था और इसीलिये उसने दो अवसरों पर उन्हें नीचा दिखाया था। किन्तु इससे भानुकुमार को खलनायक सिद्ध नहीं किया जा सकता। नायक से विरोध एवं युद्ध होने के कारण ही किसी को खलनायक की कोटि में कैसे लिया जा सकता है। प्रद्युम्न का युद्ध तो अपना कौशल दिखलाने के लिये श्रीकृष्ण

के साथ भी हुआ है। फलितार्थ यह है कि यह काव्य बिना ही खलनायक के है और यह इसकी एक खास विशेषता है।

रस अलंकार एवं छन्द—

'प्रद्युम्न चरित' वीर रसात्मक काव्य है। काव्य का प्रथम सर्ग युद्ध वर्णन से प्रारम्भ होकर अन्तिम सर्ग भी युद्ध वर्णन से ही समाप्त होता है। वैसे यद्यपि इसमें अन्य रसों का भी प्रयोग हुआ है; किन्तु वीर रस प्रधान रूप से इस काव्य का रस मानना चाहिये। श्रीकृष्ण-जरासन्ध युद्ध, प्रद्युम्न-सिंहरथ युद्ध, प्रद्युम्न-कालसंवर युद्ध, प्रद्युम्न श्रीकृष्ण-युद्ध एवं प्रद्युम्न रूपचन्द-युद्ध इस प्रकार काव्य का काफी हिस्सा युद्ध-वर्णन से भरा पड़ा है। पाठक को प्रायः काव्य के प्रत्येक सर्ग में युद्ध के दृश्य नजर आते हैं। "रहिवर साजहु, गयवर गुडहु, सजहु सुहड, आज रण भिडउ" के वाक्य काव्य में सर्वत्र प्रयोग किये गये हैं। सिंहरथ जब प्रद्युम्न को बालक समझ कर युद्ध करने में लज्जा का अनुभव करने लगता है तो उस समय उसे प्रद्युम्न जिस प्रकार जवाब देता है वह पूर्णतः वीरोचित जवाब है :—

वालउ सूरु आगासह होइ,तिन को जूझ सकइ धर कोइ।
वाल वभंगु डसइ सउ आइ, ताके विसमणि मंतु न आहि ॥१६८॥
सीहिणि सीहु जणै जो बालु, हस्ती जूह तणो वे कालु।
जूह छाडि गए वण ठाउ, ताकह कोण कहै भरिवाउ ॥१६९॥

इसी प्रकार जब श्रीकृष्ण और प्रद्युम्न में युद्ध के समय वार्तालाप होता है तो वह वास्तव में वीर रसात्मक है। उसके पढ़ने से उसके नायक प्रद्युम्न की वीरता एवं शौर्य की आश्चर्य-कारी चतुरता का पता चलता है। यद्यपि उस जमाने में आज की तरह जन विनाश कारी आणविक व अन्य शस्त्र नहीं थे, किन्तु तलवार, धनुष, गदा, भाला, गोफन, बर्छी, बाण एवं चक्र ही प्रमुख हथियार थे। लड़ाई में योद्धा इतने कुशल थे कि एक समय में धनुष में ५० बाण तक चढ़ाकर चला सकते थे। अग्निबाण जलबाण, वायु बाण, नागपाश आदि के प्रयोग करने की प्रथा थी। वायु बाण और जलबाण आदि कैसे होते थे कुछ कहा नहीं जा सकता। माया से अनेकानेक शस्त्रास्त्रों का निर्माण करके भी युद्ध लड़ा जाता था। कभी २ माया से विरोधी सेना मूर्च्छित भी करदी जाती थी जो अंत में पुनरुज्जीवित हो जाती थी। इन क्रियाओं के कारण यह काव्य अद्भुत रस से ओत प्रोत है इसलिए इसका मुख्य रस वीर होने पर भी वह अद्भुत मिश्रित है।

इन दोनों रसों के अतिरिक्त शृंगार, करुण, रौद्र आदि रसों का प्रयोग भी इसमें हुआ है। वात्सल्य रस भी जिसे कई लोग नव रसों के अतिरिक्त रस मानते हैं इस काव्य में प्रयुक्त हुआ है।

वात्सल्य-रस का एक नमूना देखिए—

जब रूपिणि दिठा परदवणु।
सिर चुंमइ आकउ लीयउ, विहसि वयणु फुणि कंठ लायउ।
अब मो हियउ सफलु, सुदिन आज जिहि पुत्रु आयउ॥
दस मासइ जइउ धरिउ, सहीए दुख महंत।
वाला तुणह न दिठ मइ, यह पछितावउ नित॥४२६॥

चौपई

माता तणे वयणु निसुणेइ, पंच दिवस कउ वालउ होइ।
खण इकुमाह विरधि सोकयउ, फुणि सो मयण भयउ वेदहुउ॥४३०॥
खण लोटइ खण आलि कराइ, खण खण अंचल लागइ धाई।
खण खण जेतवणु मागइ सोइ, वहुतु मोह उपजावइ सोइ॥४३१॥

इसी प्रकार बीभत्स रस का भी कवि ने बड़ा सुन्दर वर्णन किया है। श्री कृष्ण और प्रद्युम्न में खूब जम कर लड़ाई हुई। युद्ध में अनेकों योद्धा काम आये। चारों ओर नरमुंड ही नरमुंड दिखाई देने लगे।

कवि कहता है:—

हय गय रहिवर पडे अनंत, ठाइ ठाइ मयगल मयमंतु।
ठाठा रुहिरु वहहि असराल, ठाइ ठाइ किलकइ वेताल॥५०४॥
गोधीणी स्याउ करइ पुकार, जनु जमराय जणावहि सार।
वेगि चलहु सापडी रसोइ, ग्रसइ आइ जिम तिपत होइ॥५०६॥

प्रद्युम्न के छटी रात्रि में अपहरण हो जाने के कारण, रुक्मिणी की दशा अत्यन्त शोचनीय हो गयी। उसका परिवेदन और आक्रन्दन वास्तव में हर एक के लिए हृदय द्रावक था। वह पुत्र वियोग के कारण ऐसी संतप्त

रहने लगी कि उसका शरीर कृश हो गया और उसकी सारी प्रसन्नता जाती रही। करुण-रस का यह प्रसंग भी हृदयंगम करने लायक है—

जहिं सो रूपिणि करइ, पूत्र संतापु हिय गहवरइ।
निन नित छीजइ विलखी खरी, काहे दुखी विधाता करी ॥१४०॥
इक धाजइ अरू रोवइ वयण, आसू वहत न थाके नयण।
पूब्ब जन्म मैं काहउ कियउ, अब कसु देखि सहारउ हियउ॥१४१॥
की मइ पुरिष विछोही नारि, की दम्ब घाली वणह मझारि।
की मैं लेणु तेल घृतु हरउ, पूत संताप कवण गुण परयउ ॥१४२॥

प्रद्युम्न ने जो नाना स्थलों पर अपनी अलौकिक विद्याओं का प्रयोग किया है उसे पढ कर पाठक आश्चर्य में डूब जाता है। ये विद्यायें सामान्य जन को प्राप्त नहीं हैं इसलिए प्रद्युम्न की अद्भुतता में कोई संदेह नहीं रहता यही चीज रस बन कर पाठक पर छा जाती हैं।

सत्यभामा ने कपट-भेषी ब्राह्मण प्रद्युम्न को जितना सामान परोसा वह सभी खा गया। ८४ हांडियों में तैयार किये हुए व्यंजनों को तो वह बात की बात में चट कर गया। यही नहीं इसके अतिरिक्त जो कुछ सामान सत्यभामा के पास था वह सभी प्रद्युम्न के उदरस्थ हो गया। फिर भी वह भूखा भूखा चिल्लाता रहा इस अद्भुतता का भी पाठक रसास्वादन करें:—

चउरासी हाडी ते जाणि, व्यंजन बहुत परोसे आणि।
मांडे कडे परोसे तासु, सवु समेलि गउ एकइ गासु ॥३८७॥
भातु परोसइ भातुइ खाइ, आपुण राणी बैठि आइ।
जेतउ घालइ सवु सघरइ, बडे भाग पातलि उवरइ ॥३८८॥

काव्य में अलंकारों का भी खूब प्रयोग किया गया है। वैसे मुख्य मुख्य अलंकारों में उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, उदाहरण, दृष्टान्तः अपह्नुति अर्थातरन्यास एवं स्वभावोक्ति आदि के नाम गिनाये जा सकते हैं। काव्य में अनूठी उत्प्रेक्षाओं का प्रयोग किया गया है जिससे काव्य-सौन्दर्य अधिक विकसित हुआ है। कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं—

१. सैन उठी बहु सादु समुदु, जाणौ उपनउ उथल्यउ समुदु॥५५७॥

वह मूर्च्छित सेना इस प्रकार उठी मानों सातों समुद्र ही उलट कर चले हों।

२. बरसहि बाण सरे असराल, जाणौ घण गाजइ मेघ अकाल।

बाणों की निरन्तर वर्षा इस प्रकार होने लगी मानों अकाल के मेघ गाज रहे हों।

३. निसुणि वयण नरवइ परजलीउ, जाणौघीउ अधिकु हुतासणु परिउ।

वचनों को सुनकर राजा इस प्रकार प्रज्वलित हो उठा मानों अग्नि में खूब घी डाल दिया हो जिससे वह और भी प्रज्वलित हो गयी हो।

इस काव्य में चउपई छन्द का मुख्य रूप से प्रयोग हुआ है। इस छंद के अधिक प्रयोग होने के कारण ही किसी किसी लिपिकार ने तो 'प्रद्युम्न चउपई' ही ग्रंथ का नाम रख दिया है। चउपई छन्द के अतिरिक्त काव्य में वस्तुबन्ध, ध्रुवक, दोहा, सोरठा छन्दों का भी प्रयोग हुआ है। इस काव्य में प्रयुक्त वस्तुबन्ध तथा अन्य रचनाओं में प्रयुक्त वस्तुबंध छन्द में कुछ अन्तर है क्योंकि अन्य रचनाओं में प्रयुक्त छन्द की प्रथम पंक्ति को दो बार बोला जाता है और इस काव्य में प्रथम पंक्ति का एक बार ही प्रयोग करके छोड़ दिया है। चौपई छन्द के अन्त में वस्तुबन्ध का उपयोग किया है और इसके पश्चात् भी चौपई छन्द का प्रयोग हुआ है।

भाषा की दृष्टि से अध्ययन—

भाषा की दृष्टि से प्रद्युम्न चरित ब्रज भाषा का काव्य है। ब्रज भाषा के सर्व मान्य लक्षण प्रद्युम्न चरित की भाषा में पूर्ण रूप से मिलते हैं। डा० शिवप्रसादसिंह ने 'सूर पूर्व ब्रज भाषा और उसका साहित्य' नामक पुस्तक में प्रद्युम्न चरित को ब्रज भाषा के अद्यावधि प्राप्त ग्रंथों में सबसे प्राचीन काव्य माना है। और उस पर अपनी पुस्तक में विस्तृत विवेचन किया है। ब्रज भाषा बनाम खड़ी बोली नामक पुस्तक में डा० कपिलदेव सिंह ने ब्रज भाषा के जो सर्व मान्य लक्षण बतलाये हैं वे निम्न प्रकार हैं—

१. ब्रज भाषा में एक ही कार्य को सूचित करने वाले संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, अव्यय आदि में अनेक पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग होता है।
२. ब्रज भाषा की क्रियाओं में 'लाघव' है जो काव्य रचना के लिये बहुत ही उपयुक्त होता है।

३. ब्रजभाषा का यह सर्व मान्य नियम है कि 'गुरु लघु, लघु गुरु होता है निज इच्छा अनुसार'

४. ब्रज भाषा में कारक चिह्नों का लोप लभ्य है।

५. ब्रज भाषा की प्रकृति संयुक्त वर्ण से बचने की है किन्तु कवियों ने दोनों प्रकार के प्रयोगों की छूट ली है।

६. ब्रज भाषा में तद्भव और अर्द्ध तत्सम शब्दों का प्रयोग होना भी उसकी एक बड़ी विशेषता है—

अब हमें यह देखना है कि ये उक्त सर्वमान्य लक्षण प्रद्युम्न चरित की भाषा में कहां तक मिलते हैं।

१. प्रद्युम्न चरित में एक ही अर्थ को सूचित करने वाले संज्ञा सर्वनाम क्रिया अव्यय आदि में कितने ही पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग हुआ है। जैसे

संज्ञा—

कृष्ण— कन्ह (५०,५७२)
कान्ह (६०,६६)
किसन (५४२)

प्रद्युम्न—

परदमणु (४१३)
प्रद्वणु (५२२) प्रदुवनु (१३६)

सर्वनाम— तुझ (२८) तुझि (१०८) तुहि (४७०)
तुम्हि (२४८) तुम्ही (५७२)

अव्यय— इतु (३८३) इह (२८,३६) इहि
(४०,४७) उह (८१,३१२)

क्रिया— कंपइ, कंपत (३७८) कंपिउ (६७) (५०२)
दीठउ (६२) दीठि (४०) दीठी (२७)
दीठे (३७)

दीराउ (६४८) दीनउ (२६) दीनी (४७)
दीने (३५०)

२. ब्रज भाषा की दूसरी विशेषता—क्रियाओं को लाघव रूप बना कर प्रयुक्त करने की रही है। प्रद्युम्न चरित में भी यही विशेषता अक्षुण्ण रूप से दिखाई देती है यथा—

सुन करके— निसुणि (२४,४२)

बुला करके— बुलाइ (१८७)

देख करके— निरखि (१०६) देखि (३२,४३)

पढ़ता है— पढ़इ (३१८)

दौड़ा करके — दौड़ाइ (३३०)

लिख पढ़ करके—लिखितु पढ़ितु— १३७

३. ब्रज भाषा के सर्व मान्य नियम—"गुरु लघु, लघु गुरु होता है निज इच्छा अनुसार" का भी कवि सधारु ने अपने प्रद्युम्न चरित की भाषा में पालन किया है—जैसे—

क. सति भामा हरि दीठउ नयणा, रुदनु करइ अरु बोलइ वयणा (६६)

ख. वाहुडि राउ विमाणा गयउ (१३३)

ग. जिन रुपिणि हीयरा विलखाइ (१५६)

४. प्रद्युम्न चरित में कारक चिह्नों का प्रयोग प्रायः नहीं हुआ है। अधिकांश स्थलों पर शब्द बिना कारक चिह्नों के ही प्रयुक्त हुये हैं—

कर्त्ता कारक— सारंग पाणि धनुष लौ हाथि
काल संवर तग वीडा देइ (१७२)
नारद बात मयणस्यो कही (२४७)
मुनि जंपइ मुहि नाहीं खोडी (२४८)

कर्म कारक— सेथ पाल पठउ जमपंथि
फुणिर नेम जिन केवल भयउ (६६४)

सम्बन्ध कारक—	सिंघ जुध जो जाणे भेउ।	(१६५)
	उवसंत मनि भयउ उछाहु	(२२३)
	तीनि खंड जो पुहमि नरेसु	(३०६)
अधिकरण—	इह वण चरण न पाव कोइ	(३३६)

५. ब्रज भाषा की प्रकृति संयुक्त वर्ण से बचने की है किन्तु प्रद्युम्न चरित में दोनों ही प्रकार के प्रयोग हुये हैं—

संयुक्ताक्षर—	ज्योति (६६०) ज्योनार (६५३) नक्षत्र (११) धर्म्म (५६२) प्रद्वण (५४६)
असंयुक्ताक्षर—	जालामुखी (५) चकेसरी (५) जादमराउ (४७५) कान्ह (४०) सनमधु (६८६) बांभण (३२५)

६. ब्रज भाषा के अन्य काव्यों की तरह प्रद्युम्न चरित में तद्भव और अर्द्धतत्सम शब्दों का भी प्रयोग किया है जैसे—

सतिभामा (६३) वरम्हंड (५३६) मोसिहु (१६०, हीयरा (१६०) सकति (२६८) विरख (८४) पुहिमि (८१)

इस प्रकार हम देखते हैं कि ब्रजभाषा के सर्वमान्य लक्षण प्रद्युम्न चरित की भाषा में मिलते हैं।

भाषा की अन्य विशेषतायें

प्रद्युम्न चरित में आद्य या अन्त के अक्षर में कभी कभी अ का इ रूप भी कर दिया गया है—

जैसे तिसु (२) किमाड़ (१६) तिपत (५०१) हाथि (७७) विवाहि (२२७)

अ+उ या अ+इ का औ या ऐ उद्वृत्त स्वर से संध्यक्षर रूप में परिवर्तन करने की प्रथा प्राचीन ब्रज भाषा की रचनाओं के समान प्रद्युम्न चरित में भी मिलती है यथा—

चउवारे, चउक (५६२) चउत्थउ, चउतीसह (१७) किन्तु उद्वृत्त स्वरों के साथ २ संध्यक्षरों के प्रयोग भी पर्याप्त संख्या में अन्य ब्रज भाषा की रचनाओं के समान प्रद्युम्न चरित में भी यत्र तत्र देखने को मिलते हैं-यथा चोपास (३१४) चोपदु (३४२) चल्योउ (३३) पौरिष (४५३) सैंन (२८८) रम्यो (२७०)

स्वर संकोच—प्रद्युम्नचरित में स्वर संकोच कितनी ही प्रकार से हुआ है जिसके कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं—

जादौराउ (यादवराव) ठाउ (स्थान) पून्न (पुण्य)

व्यञ्जन—प्रद्युम्नचरित में न और ण के विभेद को बनाये रखने की प्रवृत्ति अधिक दिखाई नहीं देती जैसे—

मुनि के लिये मुणि

मानस ,, माणस

मदन ,, मयण

भानइ ,, भाणइ

किन्तु कहीं कहीं न के स्थान पर 'न' का ही प्रयोग हुआ है यथा-भानकुमार; मन, भामिनी आदि।

काव्य में ड और र की ध्वनियां भी कितने ही स्थानों पर आपस में मिल सी गयी है यथा—

पकडि तथा पकरि, लडइ और लरइ, वाहुडि तथा वाहुरि मुंदडी एवं मुंदरी तथा भिडे एवं भिरे।

प्रद्युम्नचरित में न्ह, म्ह एवं म्व का प्रयोग खूब किया गया है यथा पम्वाण (४१६) न्हाइ (५०६) तुम्ह (१२७) तिन्हि (५२६) जेम्वणु (३६१) तिन्हि (१)

इसी तरह 'क्ष' का छ बनाकर शब्दों को अधिक मधुर बनाने की चेष्टा की गयी है यथा-नछत्र (नक्षत्र) जच्छ (यक्ष) छण (क्षण) छत्री (क्षत्री)

सर्वनाम

प्रद्युम्नचरित में सर्वनामों के तीन ही भेदों का खूब प्रयोग हुआ है। यद्यपि शब्दों में समानता नहीं है फिर भी काव्य में उनका विस्तृत रूप से वर्णन किया गया है यथा—

	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष—	हउं (१) मैं (१४१)	हमि (२७) हमइ (६५०)
	हौ (१४७)	हमारी (११३) हमारे
	मेरो (५४२) मेरी (३०१) मे (६०३)	
मध्यम पुरुष—	तू, तुमि (१०६)	तुम्हारउ (२६) तुम्हि (२४५)
	तु, तुम्ह (१२०)	तुमहि (४७०)
अन्य पुरुष—	वह (७६) सो (१)	ते (६३२) आदि।

अनिश्चय वाचक एवं प्रश्नवाचक सर्वनाम के लिये—कोउ (२) काके (५५) किमइ (४४०) किम (४०५) आदि शब्दों का प्रयोग किया गया है।

यद्यपि काव्य में कारक चिह्नों का अधिक प्रयोग नहीं किया गया है किन्तु फिर भी रचना में कितने ही स्थलों पर उनका प्रयोग कर भी दिया गया है। इन कारकों में कर्मकारक, अपादान कारक, सम्बन्ध कारक एवं अधिकरण कारक मुख्य है। यथा—

कर्म कारक—धाइ कम्मु को किउ विणासु

संख्या वाचक विशेषण—प्रद्युम्नचरित में संख्या वाचक विशेषणों का निम्न प्रकार से वर्णन हुआ है—

१. इकु (३४) इक (३७) एकु (२३७) एक (३०३) एकइ (५३६)
२. दुइ (३३) दूजी (१६७) दोइ (१८१)
३. तीजी (२००) तीजे (२०३) तीनि
४. चारथो, चारि (३२४) च्यारि (२०) चउत्थउ (८)
५. पांच (१३६) पंचति (४५६) पंचम (५६६)

६. छह (८६) छठि (१२२)

७. सात (५१)

८. अठ (३) आठमउ (८)

६. नवउ (६)

१०. दसह (४६६) दस (४)

११. ग्यारह (११)

१२. द्वादस (३७४)

१३. तेरह (६८६)

१४. पंद्रह (५४८)

१५. सोलह (८०) सोलहउ (६)

१६. सतरह (१०)

१७. अट्ठारह (२०) अठार (१७६)

१८. पगुणसीवार (१०)

क्रिया पद

व्रजभाषा में संयुक्त क्रिया का बहुत प्रयोग होता है प्रद्युम्नचरित में भी ऐसे प्रयोग खूब देखने को मिलते हैं। सहायक क्रिया एवं मुख्य क्रिया दोनों के ही पदों का प्रयोग देखने को मिलता है। सहायक क्रिया मुख्य रूप से भू धातु से बनी है और उसके प्रद्युम्नचरित में निम्न रूप प्राप्त होते हैं—

वर्तमान काल—होइ (१) कवितु न होइ
होहि (७४) रहि रूपिणी वामा काहरि होहि
हुइ (११) संवतु चौदहसै हुई गये

भूतकाल—(१) ढाठउ भयउ (२६)
(२) उपर अधिक ग्यारह भए (११)
(३) आज पवित्तु भयो इह ठाउ (२८)
(४) निसुणि वयण कोप्यो परदवणु (१७८)

मुख्यक्रिया पदों का प्रयोग भी प्रद्युम्नचरित में व्रजभाषा के अन्य अन्य काव्यों के समान ही हुआ है।

सामान्य वर्तमान—सामान्य वर्तमान काल में सभी क्रिया पदों को इकारान्त बनाकर प्रयोग किया गया है—यथा—

१. सो सधार पणमइ सरसुति । (१)
२. तिस कउ अंतु न कोउ लहइ । (२)
३. करइ गर्ज मेदनी विलसंतु । (२१)
४. रहटमाल जिउ यहु जीउ फिरइ (६८६)
५. फुणि मयरद्धउ जंपइ ताहि (५२४)

आज्ञार्थ—वर्तमान आज्ञार्थ के रुप कभी भी शुद्ध रुप में प्राप्त नहीं होते। इसकी रचना अंशतः प्राचीन विधि (Potential) अंशतः प्राचीन आज्ञार्थ और अंशतः प्राचीन निश्चयार्थ से होती है (पुरानी राजस्थानी पृष्ठ ११६) । प्रद्युम्नचरित में आज्ञार्थ क्रिया पदों के निम्न रुप से प्रयोग मिलते हैं—

(१) रथ साजिउ सारथि वयसारि (५८)
(२) रहिवर साजहु गयवर गुरहु (७०)
(३) उदधिमाल तुमि मो कहु देहु (३०५)
(४) हीण अधिक जण लावहु खोडि (७०१)
(५) घर वेगे सामहणी करहु (२८६)

विध्यर्थ—

(१) कलुस मोल आइ तुम्हि लेउ (३४०)
(२) दुइ घोड़े ए चरहु अघाइ (३४१)
(३) नयर मंगल किजइ (५६६)

भूत काल—वर्तमान काल में इकारान्त क्रिया पदों के समान भूत काल की क्रिया भी उकारान्त बनाकर प्रयोग की गयी है यथा—

(१) तिहि कुरखेत महाहउ भयउ (६६१)
(२) सतिभामा महिलउ पठयउ (४३३)
(३) रहवरु मोडि नयर महगयउ (२६२)
(४) कठिया जाइ संदेसउ कहिउ (३६८)

भविष्यत्काल--भविष्यत्काल में अधिकांश 'ह' वाले रूप ही मिलते हैं ग वाले रूप बहुत थोड़े तथा कहीं २ ही मिलते हैं ।

(१) सो काहो जेम्वहिगे आइ (३६२)

(२) किम रण जीतहुगे महमहण (७३)

अन्य भाषाओं का प्रभाव—

ब्रज भाषा के अतिरिक्त प्रद्युम्नचरित की भाषा पर मुख्य रूप से अपभ्रंश एवं राजस्थानी भाषा का प्रभाव पड़ा है। वास्तव में १४ वीं शताब्दी में अपभ्रंश भाषा के प्रभाव रहित किसी भाषा का काव्य लिखना भी दुष्कर कार्य रहा होगा। कवि ने यद्यपि अपभ्रंश के शब्दों का कम से कम प्रयोग करने का प्रयास किया है और पूरे काव्य में अपभ्रंश की एक गाथा उद्धृत की है, जिसके सम्बन्ध में अभी तक यह पता नहीं लग सका है कि वह स्वयं कवि द्वारा निबद्ध है अथवा किसी अन्य रचना में से उद्धृत की है, किन्तु फिर भी रचना में अपभ्रंश शब्दों का खूब प्रयोग हुआ है इसे कोई अस्वीकार नहीं कर सकता। यहां अपभ्रंश के कुछ शब्द रचना में से उद्धृत किये जा रहे हैं—

अवलोइ (५४२) असराल (२८२) उच्छाह (५८६) तिजयणाहु (१२) णिव्वाणा (२३२) वीण (४) जइ३ (४२६) अपमाण (४८३) अवरइ (३८१) उभाइ (१७०) कुकडाइ (६१०) कोह (२८७) खेमु (६५४) खग (२१३) लोयपमाणु (६६०) लोयणु (५०७) वण (५६) विविह (१०७) सवेहु (५८८) सयल (२५८) सरसइ (३) नयर (१७) दुज्जण (६८६)

व्रजभाषा के अरिक्ति राजस्थानी भाषा के शब्दों का भी कहीं कहीं प्रयोग स्वत; ही हो गया है जैसे--आगि (४७८) आपणी (६३१) दूख्यो (६३०) न्हानी (२३६) आदि।

प्रद्युम्न चरित की अन्य विवेषतायें--

प्रद्युम्न चरित यद्यपि अधिक बड़ा काव्य नहीं है। डा० माताप्रसादजी गुप्त के शब्दों में हम उसे सतसई कह सकते हैं क्योंकि पूरे काव्य में ७०१ पद्य हैं। प्रद्युम्न चरित में वस्तु व्यापारों और जीवन दशाओं का भी अच्छा वर्णन किया गया है जिन में से कुछ का यहां संक्षेप में उल्लेख किया जा रहा है :—

१. सामाजिक सम्बन्ध, कृत्य उत्सव आदि--
सन्तानोदय, विवाह, स्त्री समाज
२. सेना के अस्त्र शस्त्र
३. नगर वर्णन
४. प्रकृति वर्णन

१:—सामाजिक सम्बन्ध कृत्य उत्सव आदि :—

(अ) सन्तानोदय—समाज में पुत्र होने पर खूब उत्सव मनाये जाते थे। प्रद्युम्न के जन्म पर द्वारका में खूब उत्सव मनाये गये। प्रत्यक घर में बधावा गाये गये तथा सौभाग्यवती स्त्रियों ने मंगल गीत गाये :--

दुहु नारि घर नंदण भए, घर घर नयरि वधावा गए।
सूहो गावइ मंगलचार, वंभण वेद पढ़इ भुणकार ॥१२०॥
वाजहि तूर भेरि अनिवार, महुवरि भेरि संख अनिवार।
घरि घरि कूं कूं थापे देह, मंगल गावहि कामिनि गेह ॥१२१॥

(ब) विवाह—विवाह बड़ी धूमधाम से किये जाते थे प्रद्युम्न के विवाह के अवसर पर देश विदेश के राजा महाराजा सम्मिलित हुए थे। नगर को सजाया गया, बाजे बजाये गये तथा विवाह विधि पूर्वक सम्पन्न किया गया था। ऐसे शुभ अवसरों पर ब्राह्मण लोग मंत्रोच्चारण करते थे एवं सौभाग्यवती स्त्रियां मांगलीक गीत गाती थी। प्रद्युम्न के विवाह का वृतान्त पढ़िये :—

संख सवुद मंद ल्ह निहाउ, ठाठा भयउ निसाणा घाउ।
भेरि तूर वाजइ असराल, महुवरि वीण अलावणि ताल ॥५८०॥
विप्रति वेद चारि उचरइ, घर घर कामिणी मंगलु करइ।
वहु कलियरु नयरि उछलिउ, जन मयरद्धु विवाहण चलिउ ॥५८१॥

(स) कवि और स्त्री समाज—

कवि ने प्रद्युम्न चरित में एक प्रसंग पर स्त्री समाज पर खूब आक्रमण किया है। तुलसीदासजी ने तो अपनी रामायण में स्त्री को 'ताड़न

का अधिकारी' कह कर ही सन्तोष कर लिया था, किन्तु सधारु कवि उनसे भी ४ कदम आगे चलते हैं। स्त्री समाज की निन्दा करते हुये कवि कहता है कि वह असत्य बोलती है और असत्य कार्य करती है तथा अपने पति को छोड़ कर अन्य के साथ रमती है। कवि ने अपनी बात की पुष्टि के लिये कुछ ऐसे उदाहरण भी दिये हैं जिन अवसरों पर स्त्रियों ने पुरुषों को धोखा दिया था।

तिरिय चरितु निसगाउ भरिभाउ,
विलख वदन भउ खगवइराउ।
अलियउ बोलइ अलियउ चलइ,
निउ पिउ छोड़इ अवरु भोगवइ ॥२६६॥
तिरियहि साहस दूणो होइ,
तिरिय चरित जिण फुलइ कोइ।
नीची वुधि तिम्वइ मनि रहइ,
उतिमु छोडि नीच संगइ ॥२६७॥
पयडी नीच देइ सो पाउ,
एसो तिवइ तणउ सहाउ ॥२६८॥

२—सेना प्रयाण :—

१. सेना के अस्त्र शस्त्र—

राजाओं के पास नियमित सेना होती थी जो संकेत मात्र से युद्ध के लिये तैय्यार हो जाती थी। शिशुपाल, कालसवर श्रीकृष्ण एवं रूपचद की सेना युद्ध के लिये संकेत मिलते ही तैय्यार हो गयी थी तथा अपने २ शस्त्रों को संभाल लिया था। गज, अश्व एवं पदाती सेना होती थी। शस्त्रों में कोंतु, तलवार, सेल, कटारी, छुरी, धनुष बाण आदि शस्त्र प्रयोग में लाये जाते थे। इन शस्त्रों के अतिरिक्त विद्याबल से भी युद्ध लड़ा जाता था।

२. विद्याओं के बल पर युद्ध करने की परम्परा—

प्रद्युम्नचरित में सभी अवसरों पर विद्याओं के बल पर युद्ध करवाये गये हैं। अग्निबाण, जलबाण, वायुबाण आदि कितने ही प्रकारों के बाणों का प्रयोग होना, प्रद्युम्न का कितनी ही विद्याओं में प्रवीण होना तथा उनके आधार पर सिंहरथ, काल संवर एवं श्रीकृष्ण की सेनाओं को मूर्छित करके हरा देना; कनकमाला से तीन विद्याओं की प्राप्ति एवं उनके बल पर कालसंवर

को हराना आदि घटनाएं प्रद्युम्न की लोकोत्तर शक्ति का परिचय देती हैं कि उस समय के युद्ध इस प्रकार की आश्चर्यकारी विद्याओं के द्वारा भी लडे जाते थे।

कवि को अलौकिक विद्याओं पर खूब विश्वास था। प्रद्युम्न जहां भी गया वहीं उसे विद्याएं प्राप्त हुई। कवि ने जिन १६ विद्याओं के नाम गिनाये हैं वे सभी अलौकिक विद्याएं हैं। यदि प्रद्युम्न को वे विद्याएं प्राप्त नहीं होती तो वह कभी किसी युद्ध में नहीं जीत सकता था क्योंकि सिंहरथ, कालसंवर एवं श्रीकृष्ण सभी उससे बल पौरुष में बढ़ कर थे। इसमें कोई सन्देह नहीं कि उसकी प्रत्येक सफलता का कारण उसकी अलौकिक विद्याएं थी।

३. नगर वर्णन—

प्रद्युम्नचरित में द्वारका का वर्णन किया गया है। यद्यपि वर्णन विस्तृत नहीं है किन्तु थोड़े से शब्दों में ही कवि ने नगर का काफी अच्छा वर्णन किया है। नगर में ऊंचे २ महल थे जिन पर विभिन्न प्रकार की पताकायें फहराती थीं। प्रद्युम्न जब नारद के साथ विमान द्वारा द्वारका पहुँचा तो नारद ने नगर के प्रमुख महलों का वर्णन करके उसे परिचित कराया था।

४. प्रकृति-वर्णन (वृक्ष एवं पुष्पलताओं का वर्णन)

सधारु कवि को प्रकृति-वर्णन भी प्रिय था। सत्यभामा के बाग का वर्णन करते हुये उसमें २५ से भी अधिक वृक्षों, पुष्पों एवं लताओं का वर्णन किया है। इस प्रकार का वृक्ष एवं पुष्पों का वर्णन अपभ्रंश साहित्य में भी खूब हुआ है और उसी का प्रभाव हिन्दी साहित्य पर भी पड़ा है। प्रद्युम्नचरित में जिन वृक्षों एवं पौधों का वर्णन किया गया है वह निम्न प्रकार है—

जाइ जुही पाडल कचनारु, ववलसिरि वेलु तिहि सारु।
कूंजउ महकइ अरु कणवीरु, रा चंपउ केवरउ गहीरु ॥३४५॥

कुंद टगरु मंदारु, सिंदूरु, जहि बंधे महइ सरीरु।
दम्वरणा मरूवा केलि अरणांत, निवली महमहइ अनंत ॥३४६॥
आम जंभीर सदाफल घरणे, बहुत विरख तह दाडिम्व तरणे।
केला दाख विजउरे चारु, नारिंग करुरण खीप अपार ॥३४७॥
नीवू पिंडखजूरी संख, खिरणी लवंग छुहारी दाख।
नारिकेर फोफल वहुफले, वेल कइथ घरणे आवले ॥३४८॥

उपसंहार—

इस प्रकार हम देखते हैं कि हिन्दी भाषा के प्राचीन चरित काव्यों में प्रद्युम्न चरित एक उत्तम रचना है और इसका हिन्दी साहित्य में भाषा और वर्णन शैली की दृष्टि से उल्लेखनीय स्थान है। इसे ब्रज भाषा का आदि काव्य होने के कारण भाषा विज्ञान के अध्ययन के लिये आधार भूमि भी माना जा सकता है। ग्रन्थ की शब्दानुक्रमणी के अवलोकन से पता चलेगा कि कवि ने शब्दों के प्रयोग में कोई निश्चित लक्ष्य नहीं रखा किन्तु एक ही शब्द को विभिन्न रूपों में प्रयोग किया है। इससे कवि की भाषा विषयक विद्वत्ता एवं तत्कालीन प्रचलित भाषा के विभिन्न प्रयोगों का भी पता चलता है। कवि ने कुछ ऐसे शब्दों का भी प्रयोग किया है जो हमें हिन्दी के अनेकानेक शब्दकोशों में नहीं मिले हैं इसलिये इस काव्य के प्रकाशन से हिन्दी शब्दकोश में भी अभिवृद्धि होगी ऐसा हमारा विश्वास है।

इस काव्य के प्रकाशन से हिन्दी भाषा के आदि कालिक काव्यों की संख्या में एक और की अभिवृद्धि ही नहीं होगी किन्तु विद्वानों को प्राचीन काव्यों की परम्परा जानने में भी सहायता मिलेगी। हिन्दी भाषा के अन्वेषण प्रिय विद्वानों को इस काव्य से एक दिशा निर्देश प्राप्त होगा और खोज के लिये अधिकाधिक प्रेरणा मिलेगी। प्राचीन हिन्दी साहित्य की अबतक पूरी खोज नहीं हुई है, नहीं कह सकते सधारु जैसे महान् कवियों की कितनी अमूल्य रचनाएं ग्रंथ भण्डारों के गहनांधकार में हमारी प्रतीक्षा कर रही हैं और हिन्दी सेवकों को कह रही हैं कि यदि अब भी तुमने ध्यान नहीं दिया तो हम सदा के लिए महाकाल के मुंह में विलीन हो जायेंगी।

ग्रन्थ का सम्पादन—

इस ग्रंथ का सम्पादन कैसा हुआ है और उसमें किस सीमा तक सफलता मिली है इसका निर्णय हम पाठकों पर ही छोड़ते हैं। हमें इस बात का संतोष है कि हमसे इस ग्रंथ का उद्धार हो सका और इस बहाने हम हिन्दी की यह सेवा पा सके। ग्रन्थ संपादन में मूल प्रति के अतिरिक्त तीनों प्रतियों के पाठ में यदि थोड़ा भी असाम्य ज्ञात हुआ तो उसे पाठ भेद में दे दिया गया है। यद्यपि मूल प्रति अपेक्षाकृत शुद्ध एवं सुन्दरता से लिपि की हुई है फिर भी कुछ पाठ अशुद्ध लिखे होने के कारण उनके स्थान पर अन्य प्रतियों के शुद्ध पाठ को ही देना अधिक उपयोगी समझा गया है। इसके अतिरिक्त मूलपाठ में कोई संशोधन अथवा संवर्द्धन नहीं किया गया है। शब्दानुक्रमणिका काफी विस्तृत होगई है किन्तु कवि द्वारा एक ही शब्द को विभिन्न रूपों में प्रयोग किये जाने के कारण उन सभी शब्दों को देना आवश्यक समझा गया, यही इसके विस्तृत होने का कारण है। हमें मूल ग्रंथ का हिन्दी अर्थ लिखने में पर्याप्त कठिनाई का सामना करना पड़ा; क्योंकि प्रद्युम्नचरित के बहुत से शब्द तो ऐसे हैं जो हिन्दी कोशों में खोजने पर भी नहीं मिले; तो भी जहां तक हो सका है शब्दों का ठीक अर्थ देने का ही प्रयत्न किया गया है।

गच्छतः स्खलनं क्वापि, भवत्येव प्रमादतः ।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र, समादधति सज्जनाः ॥ १ ॥

धन्यवाद समर्पण—

अन्त में हम क्षेत्र कमेटी एवं विशेषतः कमेटी के मंत्री महोदय श्री केशरलालजी बख्शी को धन्यवाद देते हैं जिन्होंने इस ग्रन्थ को क्षेत्र द्वारा संचालित जैन साहित्य शोध संस्थान की ओर से प्रकाशित कराकर प्राचीन हिन्दी-ग्रन्थों को प्रकाश में लाने में सहयोग दिया है। श्री अनूपचन्दजी न्यायतीर्थ एवं श्री सुगनचन्दजी जैन के हम विशेष रूप से आभारी हैं जिन्होंने प्रद्युम्नचरित के पाठ भेदों, शब्दानुक्रमणी एवं प्रूफ रीडिंग में हमें पूरा सहयोग दिया है। श्री भंवरलालजी पोल्याका जैनदर्शनाचार्य के

भी हम आभारी हैं जिनसे हमें ग्रन्थ की शब्दानुक्रमणी तैयार करने में सहयोग प्राप्त हुआ है। इनके अतिरिक्त डा० माताप्रसादजी गुप्त के भी हम बहुत आभारी हैं जिन्होंने हमारे अनुरोध पर भूमिका लिखने एवं शब्दार्थ के निर्णय में भी सहायता दी है। श्री अगरचन्दजी नाहटा के प्रति भी हम आभार प्रदर्शित किये बिना नहीं रह सकते जिन्होंने प्रद्युम्न चरित की प्रतियां उपलब्ध करने में अपेक्षित सहयोग दिया है। खण्डेलवाल पंचायती दि० जैन मन्दिर कामां (भरतपुर) एवं बधीचन्दजी दि० जैन मन्दिर जयपुर के व्यवस्थापकों के भी हम अत्यधिक आभारी हैं जिन्होंने हमें अपने भण्डार की हस्तलिखित प्रतियां सम्पादनार्थ दी हैं।

चैनसुखदास
कस्तूरचन्द कासलीवाल

दिनांक १-१-६०

प्रद्युम्न चरित की मूल प्रति

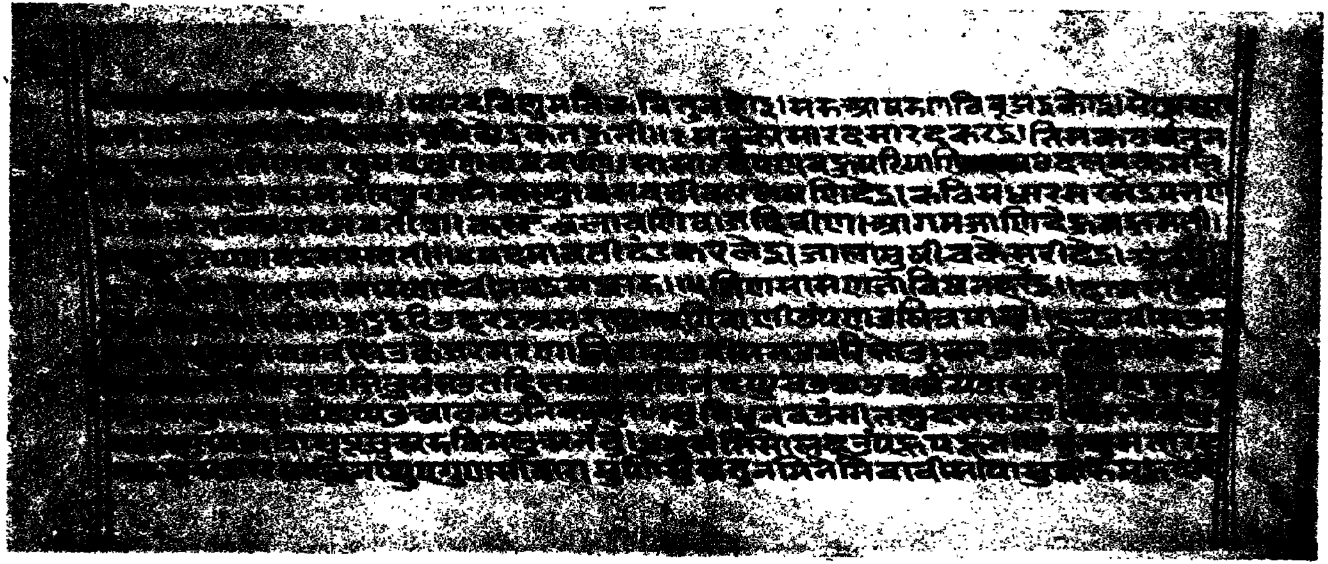

प्रथम पत्र

प्रद्युम्न चरित

स्तुति खण्ड

चौपई

सारद विणु मति कवितु न होइ, सरु[1] आखरु[2] णवि[3] बूझइ[4] कोइ ।
सो सधार[5] पणमइ सरसुति, तिन्हि[6] कहुं बुधि होइ कतहुती ।।१।।
सबु[1] को सारद सारद करइ[2], तिस कउ[3] अंतु न कोउ[4] लहइ ।
जिणवर मुखहु[5] जु णिगाय वाणि, सा सारद पणवहु[6] परियाणि ।।२।।
अठदल[1] कमल[2] सरोवरु वासु, कासमीरपुर[3] लियो निकासु ।
हंस[4] चढी कर लेखणि देइ, कवि सधार सरसइ पभणेइ ।।३।।
सेत[1] वस्त्र पदमवतीण[2], करहं अलावणि वाजहि वीण ।
आगम[3] जाणि देहु बहुमती[4], पुणु[5] दुइजे[6] पणवइ[7] सरसुती[8] ।।४।।

---

(१) १. सार (क) सारु (ग) २. अखिर (क) अक्खरु (ख) अक्षरु (ग) ३. नवि (क) नउ (ख) कहइ सभु (ग) ४. बूझं (ख) ५. जोइ सधारि जणणि सरसति (क) जो सधारु पणवइ सरसुती (ख) जउ सधारु पनमइ सुरसती (ग) ६. ननमइ तिहु नइ वुधि न हरती (क) तिन्ह कहु वुद्धि होइ मति (ग)

(२) १. सह (क) २. कहइ (ख) ३. को (क) ताकउ (ग) ४. कोइ (क, ख) ५. मुखि सो निश्चै जाणि (क) जउ मुख हुति विद्या खणी (ग) ६. पणवउ परमाणि (क) सारद पनव बहुविधिघणी (ग)

(३) १. अट्ठदल (क,ख,ग) २. कवल (ग) ३. मुखमंडणवासु (क) पुरलिउनिवास (ख) पुरी लियो निवासु (ग) ४. हंसि चढि करि पुस्तकि लेइ (ग) (क) प्रति में तीसरा और चौथा पद्य निम्न प्रकार है—

जोइ सधारि पणवउं पणमेवि, सेत वस्त्र पदमावति देवि ।।३।।
करहि कला करि वीणा अति, आगम जाण देहु बहुमती ।
हंसासणि लेहइ पुस्त अति, दोइ कर जोड़ णमउं सरसती ।।४।।

५. साधारु (ग) सधारु (ख)

(४) १. श्वेत (ख) २. पदमासण (ग) पदमावतीलीण ३. आगमु (ख,ग) ४. विमउ (ग) ५. पुणि (ग) ६. दूजै (ग) ७. पणमउ (ग) पणवउं (ख) ८. बहु सरसुती (ग)

पदमावती दंड[१] कर लेइ, जालामुखी चकेसरी[२] देइ[३] ।
अंवमाइ[४] रोहिणि जो सारू, सासण[५] देवी नवइ सधारू ॥५॥
जिण सासण[१] जो विघन हरेइ,[२] हाथ[३] लकुटि लै उभौ होइ ।
भवियहु[४] दुरिउ[५] हरइ असरालु,[६] अगिवाणीउ पणउ खित्रपालु[७] ॥६॥
चउवीसउ[१] स्वामी[२] दुह हरण, चउवीसउ[३] मुक्के जर मरण ।
जिण[४] चउवीस नमउ धरि भाउ, करउ[५] कवितु जइ[६] होइ पसाउ ॥७॥
रिषभु[१] अजितु संभउ तहि भयउ, अभिनंदणु चउत्थउ वर्न्नयउ[२] ।
सुमति पदमु[३] प्रभु[४] अवरु सुपासु,[५] चंदप्पउ[६] आठमउ[७] निकासु ॥८॥
सुविधु[१] नवउ सीतलु[२] दस भयउ, अरु[३] श्रेयंसु ग्यारह जयउ ।
वासुपूजु अरु विमलु अनंतु ,धम्मु[४] संति सोलहउं पहूपहूंत ॥९॥

---

(५) १. झुरि करि लेइ (क) दंडु (ख, ग) २. सकेसरी (ग) चक्केसरि (क) ३. देवि (क) ४. अंवाइ रोहिणि जे सार (क) अंवउ हीनउ खंडि जो सारु (ग) ५. सा सा प्रणमो नोइ सधार (क) सासण देवि कथइ साधारु (ख)

(६) १. जिन शाशनि (क) सासणि (ग) २. रहाइ (ग) ३. हाथि लकुटि सो उभउ होइ (क) हाथ लकटि ढाढा लिउ लाइ (ग) ४. भवियण (क) ५. दुरी (क) दुरतु (ग) ६. असराल (क) ७. खेत्रपाल (क) खेत्रपालु (ख)

(७) १. चउवीसइ (क) २. सामी (क) ३. जे चउवीसइ मुक्का (क) चउवीसइ मुक्के ४. चउवीस "इ नमो धरि भाव (क) जिण चउवीस णमउ धरि भाउ ५. करो (क) ६. जे (क)

नोट—७ वां पद्य ग प्रति में नहीं है ।

(८) १. रिषभ अजित संभव तह भयउ (क) २. तहि थयउ (क) हरि थुयउ (ख) ३. पदम (क,ख) ४. पहु (ख) ५. पासु (ख) ६. चन्द्रप्रभु (क) चंदप्पहु (ख) ७. आट्ठमउ सुभासु (क) अट्ठमु ससिभासु (ख)

(९) १. सुविधि (क) सुविहि (ख) २. शीतल तह दसमउ भयउ (क) सु नवउ शीतलु दसमउ (ख) ३. जिण श्रीअंशइ ग्यारमो थयउ (क) जिण सेंयमु ग्यारहमउ जयउ ४. धर्म्म संति सोलमउ जिणिंद (क) धम्मु संति सोलहमु निरुत्तु (ख)

कुंथु[1] सतारह अर सु अत्थार, मल्लिनाथु[2] एगुणसी वार।
मुणिसुव्रतु[3] नमि नेमि[4] वावीस, पासु वीरु[5] महु देहि असीस ॥१०॥
सरस कथा रसु[1] उपजइ[2] घणउ, निसुणहु[3] चरितु पजूसह[4] तणउ।
संवतु चौदहसै[5] हुई गए,उपर अधिक[6] ग्यारह[7] भए ॥
भादव दिन[8] पंचइ सो सारु, स्वाति नक्षत्र[9] सनीश्चरवारु ॥११॥

वस्तु बंध छन्द—

णविवि[1] जिणवरु[2] सुट्ठु[3] सुपवित्तु[4]।
नेमिसरु गुण णिलउ सामि वपु[5] सिवदेवि[6] नंदणु।
चउतीसह[7] अइसइ सहिउ कम्मवाण घण[8] मान मद्दणु ॥
हरिवंसर[9] रुहइ मणि तिजयणाहु[10] भय सासु।
समयमुहं पंचज णाणु केवलणाण[12] पयासु ॥१२॥

---

(१०) १. कुंथ सतारह अर अठार (क) कुंथु भतारह अरु अठारु (ख) २. मल्लिनाथ उगणीस कुमार (क) मल्लिनाहु उणवीसमउ कुमारु (ख) ३. मुणिसुव्वउ (क, ख) ४ निमि (ख) ५. पास वीर ए इम चौवीस (ख) पासु वीरू अन्तिम चौबीस।

(११) १. रस (क) २. उपइ (ख) ३. निसुण (क) ४. पजउवन (क) पजुन्नह (ख) ५. चउदसइ इग्यार (क) चउदहसइइसु (ख) ६. अधिकइ (ख) ७. भईए ग्यार (क) संवत पंचसइ हुई गया, गरहोतराभि अरु तह भया (ग) ८. भाद्रवसु दिनम बीजे सार (क) भादव सुदी पंचमी सो सारु (ख) भादव वदि पंचमि तिथि सारु (ग) ९. नक्षित्र (क) नखित्र (ख) १०. सनीचरवार (क)

(१२) १. नमिय (क) नविवि (ख) २. जिणवर (क) ३. सुट्ठु (ख) सतु (ग) ४. सपवित्तु (क) ५. सोमवयणु (क) सामवण्णु (ख) स्यामवर्ण (ग) ६. एवि (ख) ७. वावीसमउ जिणेसरु (क) वावीसमु वयसहिउ (ख) ८. मव मोह खंजणु (क) मयमोहखंडणु (ख) ९. हरिवंशह तसु कमल रवि (क) हरिवंसह तह कमल रवि (ख) १०. तिजइ णाहु पयासु (क) तिजय नाहु हय पासु (ख) ११. चउयइ संघह तमु हरइ (क) चउविह संघह तमु हरइ (ख) १२. केवल ज्ञान प्रकासि (क) केवलनाण पयासु (ख) केवलज्ञान प्रगास (ग) • मूलपाठ "चउवीसहं हय वय सहिउ"

चौपई

पढमद्य[1] पंच परम गुरू नवणी, वीय जिणवर पय सरण
गुरू णीगांथु नउं धरि भाउ, करउं कवितु जउ होउ पसाउ ॥१३॥

द्वारिका नगरी वर्णन

जंबूदेशु[2] सुदंसणु[1] मेरू, लवणवुहि[3] वेढियउ[4] सु फेरू ।
भरह[5]खेत[6] दाहिण[7] दिसि अहइ, सोरठ देसु[8] माहि तिही वसइ[9] ॥१४॥
वसइ[1] गाम्व[2] ते नयर समान[3], नयर विसेषइ[4] देव समाण[5] ।
यह[6] मंदिर धवल हर[7] उतंग, कणइ कलस[8] झलकंति सुचंग ॥१५॥

---

(१) पणरवि पणमो जिनवर वाणि, जामइ सुध वच्च गुण खाणि ।
करउ कवित जे करउ पसाउ, मोहिय जन तणा भंनि भाइ (क)
पढम पंच परमेट्ठि णवेवि, वीरणाहु भत्तिय पणवेवि ।
जासु तित्थि मइ जिणवर धम्मु, पाविवि सहलु कियउ नर जम्मु । (ख)
पुणु पुणु पणविवि जिणवर वाणि जामइ सद्दग्रच्छ मणि खाणि ।
करइ कवित्तु जइ करइ पसाउ । महु पजुन्न करणें ग्रणुराउ ॥
नोट—ग प्रति में प्रथम २ पंक्ति पीछे निम्न पाठ है—
दया धम्मं दिनु रयणि, करइ स्तुति चउवीस वंदनु ।
संभम भारु बहुविधि सहिउ, केवल ज्ञान प्रगास ॥
मुकत गउ खिइं कम्मकरि, वुहियण वंदहु तासु ॥

चौपई

पहिलइं माइ पिता गुरु सरण, वीतराग जिणवर पाइ सरण ।
गुरू निरगंथु नवउ धरि भाउ, हुइ इक चित्ति मुझु करो पसाउ ॥

(१४) २. दीप (क) दोउ (ख) द्वीप (ग) १. सुदंसण (क,ख,ग) ३. लवणोवधि (क,ग) ४. वेढयउ चहु फेर (क) वेढिउ चउ फेरु (ख) वेढयो चउ फेरि (ग) ५. भरत (क,ग) ६. षेत्र (क,ग) खेत्रु (ख) ७. तिह दाहिण दिसइ (क) तहो दाहिणा दिसइ (ख) दाहिणी दिसा (ग) ८. देसु (ख) देश (ग) ९. माझि सो वसइ (क) माझि तहो वसइ (ख) माहि तिसु बसा (ग)

(१५) १. वसहि (ख,ग) २. गाम (क,ख) गांव (ग) ३. तिह नगर समान (क) ते नयर समाण (ख) तहि नगर समाण (ग) ४. नयर सेवही (क) नयर विसेषहि (ख) नगर विसेषहि (ग) ५. विमाणु (क) विमाण (ख,ग) ६. मढ (क,ख) गढ (ग)

साथर[1] माहि द्वारिकापुरी, धगाय जक्ष[2] जो रचि करि धरी ॥
बारह जोजगा[3] कै विस्तार, कंचगा कलस ति[4] दीसइ बार ॥१६॥
छाए[1] चउवारे वहुभंति, सुद्ध फटिक दीसइ ससि[2] कंति ।
मार्ग्रज[3] मगि जागौ जडे किमाड, सोहहि मोती[4] वंदनमाल[5] ॥१७॥
इकु सोवन[1] धवलहर अवास[2], मढ मंदिर देवल[3] चउपास ।
चौरासी[4] चौहटे[5] अपार, वहुत[6] भाति दीसइ सुविचार[7] ॥१८॥
चहु[1] दिस[2] राइर[3] गहिर[4] गंभीर[5], चहु दिस लहरि[6] झकोलइ नीर[7] ।
सो[8] वारवइ पयगा जागिए, कोडिध्वज[9] निवसहिं[10] वागिये ॥१९॥

---

७. धवल हर उतुंग (ख) देवल उत्तंग (ग) ८. कणइ कलस झलकंति सुचंग (क) काणय कलस धय मंडिय तुंग (ख) विविह भंति दीसहि प्रति चंग (ग)

(१६) १. मझिझ (क) माहि सो (ख) २. धणय जखि सु रचिकरि धरी (क) धणय जक्ष सो रचि करि धरी (ख) धनयर जख बहुत विधि करी (ग) ३. जोयण कइ विस्तारि (क) जोयण कै विथारि (ख) जोजन कइ विस्तारि (ग) ४. शाहति झलकहि वारि (क) सोहत दीसहि वारि (ख) कलसज दीपहि बार (ग)

(१७) १. छाजे (क, ग) छजे (ख) २. ससि उदो करंति (ग) ३. मरकत मणि बहु जड़े किवाड़ (क) मरगज मणि बहु जड़िय किवाड (ख) मरगज माणिक जडे किवाड (ग) ४. मोतिय (ख) ५. बन्दरवाल (क,ख,ग)

(१८) १. एक सुवन (क) इक सोवन (ख) इक सोवन्न (ग) २. आवास (क,ग) ३. देउल (क,ग) ४. चउरासी (क,ख,ग) ५. चउहटे (क,ख,ग) ६. बहुत भंति (क) विविह भंति (ग) ७. सविसार (क)

(१९) १. चउ (ख) २. दिसु (ख) दिसि (ग) ३. सायर (क) सायर (ख) साइर (ग) ४. गहिरू (ख) गहर (ग) ५. गंभीर (ख, ग) ६. पवन (ग) ७. नीर (क)

नोट—(ग) प्रति में निम्न पंक्ति और है—

चहुं दिसि नाना वर्ण सिंगार, चहुं दिसि हाट अनुपम अपार ।

८. चोबारे चोहठे जाणिया (क) सा द्वारवइ पयण जाणियइ (ख) धन धान सहित जाणीया (ग) ९. कोटीधुज (क) कोडीधुज (ख) कोडिधजी (ग) १०. वसहि (ग)

धर्म[1] नेम को जाणहि[2] गम्वणि[3], अरू[4] तहि वसइ अट्ठारह[5] पवणि,
ब्राह्मण[6] खत्री वसहि[7] तियवर[8], वैस[9] सूद[10] तहि[11] निमसहि अवर।
कुली[12] छतीस[13] त सूझइ ठाइ, तिहि[14] पुरि सामिउ जादउ राउ ॥२०॥
दल वल साहण[1] गणत[2] अनंत, करइ गर्ज[3] मेदनी[4] विलसंतु[5]।
तीनखंड चक्केसरी राउ, अरियणदल भानइ[6] भरिवाउ[7] ॥ २१॥
तिहि[1] वलिभद्र सहोदरू[2] अवरू[3], तिहि[4] सम पवरीष दीसइ अवरू।
कोडि छपन जादउ अनिवार[5], करहि राज ते सव परिवार ॥२२॥
सभा पूरि वइठउ हरि राउ, चउवल[1] सइन न सूझइ ठाउ।
अगर[2] सुगंध वास परिमलइ, कनक[3] दंड सिर चामरि ढलइ ॥२३॥
पंच सबदु तहि वाजइ घणे, वहुत भाति पावल[1] पेखणे।
भरिहि भाइ नाचणि[2] पउ[3] धरइ, ताल विनोद कला अणुसरइ[4] ॥२४॥

---

(२०) १. धम्म (ख) २. जाणइ (क) ३. गमणि (क), गयणि (ग) ४. अवरु (ग) अर (क) ५. अठार (ख) छत्तीसइ (ग) ६. बांभण (ख,ग) ७. वेस (क) ८. अपार (ग) ९. वसहि (क) वइस (ख) विस (ग) १०. सुद्र (क) ११. को जाणइ सार (ग) १२. कुलिय (ख) (१३) छत्रीसइ निवसइ ठाउ (क) छत्तीसउ सूझइठाउ (ख) छतीस इन सूझइ ट्ठाउ (ग) १४. तिन पुरि निवसिइ जादम राउ

(२१) १. वाहण (ख) तह साहण (ग) २. गिणत न अन्त (क) गणिउ न अन्तु (ख) संयुत (ग) ३. राज (क ख ग) ४. मेइण (ख) ५. वहतु (ग) ६. भंजइ (ग) ७. भडिवाउ (क,ख,ग)

(२२) १. वलिभद्र बीरू सहाई तास (ग) २. सहोयरु (ख) ३. जेय (क) जेट्ठु (ख) ४. नीलंवर मूशल उक्किट्ठु (क) नीलंबरु हलु मूसल उक्किट्ठु (ख) रणि अजीत सो सत्र विनासु ग) ५. वर वीर (क) (यह पंक्ति ग प्रति में नहीं है।)

(२३) १. जिह सामंतन सूझइ ठाउ (क) जहि सामंत चक्कवइ राउ (ख) चउरंग दल नाहिन सूझइ ठाउ (ग) २. गंध वास परिमल मह महइ (क) सवहि भवर परिमलइ (ख) ३. कणइ (क) कनकति (ग)

(२४) १. पाय पेखणा (क) परवल पेखणे (ख) भरहि सिभाउ अधिकु पेखणा (ग) २. नाचहि (क) ३. वहुभांति (क) (तीसरा चरण ग प्रति में नहीं है) ४. गुणसंति (क) ऊसारहि (ग)

नारद ऋषि का आगमन

छत्री हाथ कमंडल धरहि[1], मूंडे मूड चूटी[2] फरहरइ[3]।
चढिउ विमाण मन विहसंतु, नानारिषि[4] तहां आइ पहुंत ॥२५॥
नमस्कार करि सारंग-पाणि, करणय[1] सिंघासण[2] दीनउ[2] आणि।
रहस[3] भाइ पूछइ नारायणु[4], कहा तुम्हारउ भो[5] आगमणु ॥२६॥
हमि आकासत करि[1] उपण, मंत[2] लोग वंदे जिणभूवण।
द्वारिका[3] दीठी उपनउ भाउ, तउ[4] तू भेटिउ जादउराउ ॥२७॥
तउ नारायण विनवइ सेव, भलउ भयउ जो आयउ देव।
नानारिषि तुम कीयउ पसाउ, आज पवित्तु भयो इहु ठाउ ॥२८॥
निसुणि[1] वयण रिषि मन विहसाइ, कुसल वात पूछि सतभाइ।
दइ असीस सो ठाढउ भयउ, फुनि[2] नारद रणवासहु गयउ ॥२९॥
जहि सिंगार सतभामा करइ, नयण रेख[1] कजल[2] संचरइ[3]।
तिलकु लिलाट[4] ठवइ ससिभाइ[5], षण नानारिषि गो[6] तिहि ठाइ ॥३०॥

---

(२५) १. करहइ (क) करहि (ग) २. चोटी (ख) उचले अणुसरइ (क) ४. नारद (क) नारदु (ख)

नोट—(ग) प्रति में निम्न पाठ है—

काल रूपि कलि देखी जहा, राउ नरायणु बइठा तिहा।

(दूसरा तथा तीसरा चरण नहीं है)

(२६) १. अर्घ (क) २. दीधउ (क) ३. कुसल (ग) ४. महमहणु (ग) ५. भयो (क) भउ (ख) भईया (ग)

(२७) १. भए उत पवणु (क) ते कियउ आगमणु (ख) ते कीया गमणु (ख) २. मातलोकि (क,ख,ग) ३. देखि द्वारिका (ग) ४. भेटियउ वलिभद्र यादव राउ (क) बलिभद्द भेटयउ नारउ राउ (ख) तउ तुम्ह उलटे आवमराउ (ग)

(२८) प्रथम दो चरण ग प्रति में नहीं है।

(२९) १. 'रहसिभाइ पूछइ हरिराउ, तउ नाना रिषि उपना भाउ' प्रथम दो चरण के स्थान पर ग प्रति में है। २. तब (ग)

(३०) १. रेह (ख ग) २. कालु (ख) ३. सचरइ (ख)

नारद हाथ कमंडल धरइ,[१] काल रूप कलि देखत फिरइ ।
सो सतभामा पाछइ[२] ठियउ,[३] दर्पण माझ[४] विरूप[५] देखियउ[६] ॥३१॥

विपरित[१] रूप रिषि दिठउ जाम, मन विसमादी सुंदरि ताम ।
देखि कूडीया[२] कीयउ कुतालु, साति[३] करत आयउ वेतालु ॥३२॥

नारद का क्रोधित होकर प्रस्थान

वडी वार[१] रिषि ठाढउ भयउ, दुइ कर जोड न वणिसण[२] कहिउ ।
उपनो कोपु[३] न सक्यउ[४] सहारि, तउ नानारिषि चल्योउ पचारि॥३३॥

विणहुं[१] तूर जु नाचण चलइ,[२] ताकहुं[३] तूर आणि जउ मिलइ ।
इक स्याली[४] अरू वीछी खाइ, इकु नारदु अरू चलीउ रिसाइ ॥३४॥

नानारिषि रूण चल्यो रिसाइ, श्रींगी[१] पर्वत वइठो जाइ ।
मनमा[२] वइठउ चिंतइ[३] सोइ, कइसइ मान भंग या[४] होइ ॥३५॥

नोट—(ग) प्रति में प्रथम दो चरण निम्न प्रकार हैं—

सो नानारिषि आया तहां, सत्यभामा का मन्दिर जहां

४. निलाउ (ग) ५. तिह ठाइ (ग) ६. पहुतो (क ग) गउ (ग)

(३१) १. करइ (ग) २. आगे (क) ३. ठयउ (क ख) गया (ग) ४. माहि (क ख ग) ५. रूप (क ग) ६. पेखिया (ग)

(३२) १. विप्रत (ख) विपरीत (क) विप्र (ग) २. कूडए (क) ३. संति (कखग)

(३३) १. वेर (क) २. न वेशण वियो (क) न वइसण कहिउ (ख) न वइसण चया (ग) ३. रोष (ग) ४, सक्यो (क) सक्या (ग) सकिउ (ख)

(३४) १. विना (क) २. कहइ (क) ३. तिन्हइ तूर जब अइवि मिलइ (क) ताकहु तूर आइ जहि मिलइ (ख) ४. वानर (क)

नोट—(ग) प्रति में निम्न पाठ है—

वाहु तूरि जो नाचण चुलिउ, तिसहि तूरण आवतउ मिलउ (ग)

(३५) १. सींगी (क ख ग) २. महि (ख) ३. चितवइ (क ख ग) ४. एह (क) इहि (ख) मानभंग किउ इसका होइ (ग)

ताम चिंतइत[1] वइ[2] मुनिराइ
कोवानल[3] पजलइ[4] सचभामु अवमान खंडउ ।
कहि[5] काहुस्यउ हहडउ अहव सिला तत्तपि[6] चंपि छडउ ॥
तउ पछिताउ[7] हरि करइ मन तह[8] एम्व विचारि ।
इह पह[9] रूप जु आगली सो परणाउ णारि ॥ ३६॥

चौपई

गाउ[1] गाउ तिहि फिरे असेसु, नयर सयलु फिरि दीठे देस ।
सउजु[2] दहोतरू खग वइ पुरी, ग नारद[3] क्षरण इक फिरि ॥३७॥

नारद का कुंडलपुरी में आगमन

फिरत देस मन चिंतइ सोइ, कुंवरि[1] सरूप न देखइ कोइ ।
फुरिण[2] नानारिषि आयो तहां, कुंडलपुरि विजाहर जहां ॥३८॥
भीमु[1]राउ आहि[2] तिस[3] तरणउ, धरम नेम जारगइ ते[4] घरगउ ।
अतिसरूप वहु लक्षरण सारू, वेटा[5] वेटी रूप कुम्वारू ॥३९॥
दीठि[1] पसारि कहइ मुनि जोइ[2], इहि उरगहारि कुम्वरि जो होइ ।
विहि पासाइ जइ घटइ[3] संजोगु तउनि जु होइ नरायरगु जोगु ॥४०॥

---

(३६) १. चितवइ (ग) २. मनहि (ख) मनहि फर भाउ (ग ३. कोहानलु (ख) कोपानल (क) कोपि होइ (ग) ४. परजलइ (क) पज्जिलइ (ख) पजिजलिउ (ग) ५. कहइ तथा पए हरणउ (क) कहि कहइ होया हरउ (ग) ६. तलि एह चंपउ (क) तालि चांप छंडउ (ख) ७. पछितावो (क) पछित उ (ख) पछितावा (ग) ८. महि (क ख ग) ९. तहि (ख) इस ते (ग) एह थइ (क)

(३७) १. गाम गाम (क ख ग) २. सब जगु होता गावांपुरि (ग) ३. तिवि नारव रिषि खिरिण महि फिरी (क) ते सब नारदि खिणु इकु फिरि (ख ग)

(३८) १. कुमरी (क ख) २. फिरि (ख)

(३९) १, भीषमु (क ख ग) २. आथि (ग) ३. तिहि (ख) ४. बहु (क) सो (ख) ५, बेटा रुपचंदु सुकुमारू (ख) बेटा बीक्षा रूपि अपारू (ग)

(४०) १. दृष्टि पसारि (क ग) २. सोइ (क ख ग) ३. बसइ (क) जुडइ (ग)

मन मा[1] इम नारद चिंतवइ, दइ असीस रणवासह गयउ ।
दीठी सुरसुंदरि तंक्षिरणी, अरु[2] तिहि छोलि कुम्वरि रुकमिणी ॥४१॥

नारद से रूक्मणी का साक्षात्कार

अति सरूप वहु लक्खणवंत, चन्द्रवयणि[1] ससि उदउ करंत ।
हंसगमिणि मनु सोहइ[2] सोइ, तिहिं[3] समु तिरिय न पूजइ कोइ ॥४२॥
नारदु आवत जवु देखियउ[1], नमस्कार सुरसुंदरि कीयउ[2] ।
देखि रुक्मिणी[3] बोल्लइ[4] सोइ, पाटघरणि[5] नारायणि होइ ॥४३॥
भणइ सहोदरि[1] भीषमु तणी[2], सेसपाल[3] दीनी[4] रुक्मिणी ।
इहि वर नयरी वहुत[5] उछाहु, धरी[6] लग्न[7] ठयउ[8] विवाहु ॥४४॥
सुरश्रुंदरि वोलइ सतभाउ, नाहिन वोल[1] तिहारउ ठाउ ।
जो अरिराउ मानषइ[2] कालु, सवु[3]परिमह[4] आयो[5] सुसपालु ॥४५॥

---

(४१) १. महि (क ख ग) २. अनतइ छोडि कुमरी रुकमिणि (क) अरु तिहि छोलि कुमरि रुक्मिणि (ख) आयत बोलि तव रुक्मिणि (ग)

(४२) १. चन्द्रवदनि ससि सोह करंनि (क) चन्द्रवदना नयणझलकंति २. मोहइ (क ख ग) ३. तिहि सरि तिर्यंग न पूजइ कोइ (ख)

(४३) १. पेखिया (ग) २. कियो (क) किया (ग) ३. कामिणी (ग) ४. बोलो (ग) ५. पटराणी (क) पटधरणी (ग)

(४४) १. सहोयरि (ख) सोइरि (ग) २. भणी (क) ३. सिसुपाल (क) सिसपाल (ख) सीसपालि (ग) यह मांगी सिसपालह घणी (ख) प्रति में यह पाठ है। ४. दीधी (क) ५. तणउ न दीउ बाहु (क) ६. वरी (क ख) धन्य (ग) ७. लगनु (क ख ग) ८. थापउ (क) हुइ ठयउ (ख) हो ठयो (ग)

(४५) १. नानारिख तब बोल पसाउ (क) नाही इन बोलह का ठाउ (ख) नही इव बोलण का ठाउ (ग) २. मनावै (ख) जे सिरि राउ मनहि खइ कालु (ग) ३. तब (ख) शिव (ग) ४. परिगह (ख) पुरगिह (ग) ५. आवै (ख) आया (ग)

नोट—तीसरा व चौथा चरण (क) प्रति में नहीं है ।

निसुणि वयण[१] नारदरिषि[२] चवइ[३], तिनि खंड मह जो चकवइ ।
छपन कोडि जादउ[४] मुहवंतु[५], अइसइ छोड़ि[६] विवाहहि अनु[७] ॥४६॥
पूर्व रचित[१] न मेटइ[२] कोइ, जिहि[३] कीहु रची[४] विवाहइ सोइ ।
घालहु छोड़ि वात आपणी[६], नारायण परणइ[७] रूकिमिणी ॥४७॥
तउ[१] सुरसुंदरि[२] मनमां[३] रली, मुणिवर वात कहि सो मिली[४] ।
नारद निसुणि कहउ[५] सतिभाउ, कहहु जुगति किम होइ विवाहु ॥४८॥
रिषि जंपइ तुम अइसउ[१] करहु, पूजा करण[२] देहुरइ चलहु ।
नंदणवण की करहु सहेट, तिहि ठा[३] आणि कराउ भेट ॥४९॥
तव[१] जंपइ[२] रूपिणि[३] सुरतारि[४], को पहिचाणइ[५] कन्ह मुरारि ।
तउ नारद[६]रिषि कहइ सुजाणु, तउ[७] तुहि कहइ[८] ताहि[९] सहनाणु[१०] ॥५०॥

---

(४६) १. वचन (ख) २. रिषि नारदु (ख) नाना रिद्धि (ग) ३. कहइ (ख) ४. जादव (क) जादौं (ख) ५. महमंत (क) मुहकंतु (ख) ६. तेसम (क) अइसउ ७. अंत (क)

नोट—(ग) प्रति में ३–४ चरण में निम्न पाठ है—

छप्पन कोडि माहि जिसकी आण, अइसा पुरपु न अउर सयाण ।

२. मूल प्रति में "करउ कवित जउ बइ" दूसरे और तीसरे चरण के ये शब्द और हैं।

(४७) १. लिखतु (क ग) २. कि भूंटउ होइ (ख) ३. जेह कउं (क) जिह कहु (ख) जिस कहु (ग) ४. घडी (क) ५. वाल्लभ (क) छांड्ड (ग) ६. सहल आपणी (ग) ७. व्याहइ (क)

(४८) १. तब (ग) २. स्वंदरि (क) ३. माहि (क ग) मह (ख) ४. सा भिली (क) तउ भली (ग) ५. नानारिषि तुम्हि सांची कहाउ (ग)

(४९) १. एसौ (क) ऐसा (ग) २. पूजा कारण (ग) ३. ठाउ (क) ठाइ (ख) ट्ठाइ (ग)

(५०) १. तउ (क) तौ (ख) इम (ग) २. जंपैइ (ख) बोलइसा (ग) ३. रुकमिणि (क ख ग) ४. नारि (ख) सुनारि (ग) ५. पिछाणउ (क) पिछाणइ (ग)

नोट—२ रा चरण (ख) प्रति में नहीं है।

६. नानारिषि (ग) ७. हो तुझ (क) हो तुहि (ख) तउस्यउ (ग) ८. कहउ (क ग) ९. तास (ग) १० सुहनाणि (क) सहनाणि (ख) सहनाण (ग)

संख चक्र गजा[1]पहरण जासु, अरु बलिभद्र सहोदर तासु ।
सात ताल जो वाणनि[2] हणइ, सो नारायण नारद भणइ ॥५१॥
आपी[1] ताहि वज्र मुंदड़ी, सोहइ रतन पदारथ जड़ी ।
कोमलि[2] हाथ करइ चकचूरू[3], सो नारायनु गुण परिपूनु[4] ॥५२॥

नारद का श्रीकृष्ण के पास पुनः आगमन

खडी[1] बात करि नारदु गयउ, पटु[2] लिखाइ रूपीणि[3] को लियउ ।
चहि[4] विमाण मुनि[5] आयउ[6] तहा, सभा नारायणु वयठउ[7] तहां ॥५३॥
पुणु[1] पुडु[2] छोड़ि[3] दिखालिउ[4] जाम, मन अकुलाणउ[5] नरवइ[6] ताम ।
काम वाण तसु हयउ[7] सरीर, भउ[8] विहलंघण[9] जादउ वीरु ॥५४॥
कीयह[1] आछर[2] की वणदेइ[3], कै मोहणी तिलोत्तम[4] कोइ[5] ।
की विजाहरि[6] रूप सुतारि[7], काके[8] रूप लिखो यह नारि ॥५५॥

---

(५१) १. गवापहिरण (क) गज पहिरणु (ख) गज पहरण (ग) २. जो बाणइ (म) जो बाणहि (ख) इकवारिणहि (ग)

(५२) १. आपी तासु (क) आफियहि (ख) आपीताह (ग) २. सोमलि (ख) ३. चकचून (ख ग) ४. उनपूर (क) संपूनु (ख) परडनु (ग)

(५३) १. खरी (क ख ग) २. पट (क) पडहु (ख) पाटु (ग) ३. रुक्मिणी (क) तासु (ग) ४. चडि (क ख ग) ५. रिषि (क) सो (ग) ६. आया (ख) पहुंता (ग) ७. बेठो (क) बैठु (ख) बइठा (ग)

(५४) १. पुणि (क) फणि (ग) २. पट (क) पडु (ख) पटु (ग) ३. खोलि (ख ग) ४. दिखालिय (क) दिखालउ (ख) दिखाया (ग) ५. अकुलानो (क) अकुलाणो (ख) अकुलाणि (ग) ६. नरवं (ख) सुन्दर (ग) ७. हुआ (ग) ८. भयउ (क) भय (ग) ९. विहलंघल (क) विहलंघलु (ख) विहलंघलि (ग)

(५५) १. कइ (क) कीइह (ख) केइ (ग) २. अपछरा (क ग) अछव (ख) ३. वणदेवि (क ख) वणदेव (ग) ४. तिलातिम (ख) कि लोचन (ग) ५. एह (क) केव (ख) एव (ग) ६. विज्जाहरि (क) विज्जहरि (ख) विद्याधर (ग) ७. संसारि (ग) ८. काकइ (क) काकै (ख) कवण (ग) कवणतिया किसही उणहारि ग प्रति का अंतिम चरण

नानारिषि बोलइ सतिभाउ, आथि[1] नयरू कुंडलपुर ठाउ ।
भीषमुराउ दीठ[2] तंषीरणी[3], रूपिणी कुवरि आहि तसु तणी[4] ॥५६॥
सोमइ[1] तो[2] कहु मागी देव, परणउ जाइ म[3] लावहु खेड ।
मयण कामदेहुरे सहेट, तिहि ठा आणि कराउ भेट ॥५७॥

श्रीकृष्ण और हलधर का कुंडलपुर के लिये प्रस्थान

तउ तूठाउ[1] महमहणुरिंदु[2], मन में[3] विहसि कीयउ[4] आणन्दु[5] ।
रथ साजिउ[6] सारथि वयसारि[7], गोहिण[8] हलहर लियो हकारि ॥५८॥
तउ[1] सारथि षण रथ साजियउ, पवण वेग कुंडलपुर गयउ ।
वण उद्यान देहुरउ जहां, हलहरू[2] कान्हु[3] पहुते तहां ॥५९॥
ठयो[1] मंतु नहु लाइ वार, पठए[2] दूत जणाइ सार ।
कहि[3] जाइ तिहि सारउ[4] वयणु, नंदणवणु आयो महमहणु ॥६०॥
निसुणि[1] वयण रूपिणि[2] विहसेइ, मोती माणिक थालु भरेइ ।
गोहिण[3] मिली वहुत सहिलडी, पूजा करण देहुरे चली[4] ॥६१॥

---

(५६) १. अतिथ नयर (क) आथ नयरु (ख) अथि नयरु (ग) २. बिठ्ठउ (क) दिठ्ठ (ख) अथि (ग) ३. तिहतिरणी (क) ४. तिंतं (क)

नो —तिसुकी कुवरि नाम रूक्मिणी (ग) प्रति का अंतिम चरण ।

(५७) १. स्वामी (ग) २. तुम्ह (ग) ३. न लावहु (क) म लावहि (ख) करहु सत (ग) मइ देहुरै इस करी सहेट, तहां करावउ तुम्ह कहु भेट ॥ (ग) प्रति के अंतिम दो चरण !

(५८) १. तूठउ (क ख) ऊठ्यौ २. महुमहणनरिंद (क) मह महणुणरिंदु (ख ग) ३. महि (क ख ग) ४. कीयो (क) कीया (ग) ५. आनन्द (क ग) आनंदु (ख) ६. सजिउ (क) सजोय (ग) ७. वंसारि (क ख) वइसालि (ग) ८. सुर तेतीस लिये संभालि (ग)

(५९) १. तब सारथि सरत्थ पेलिया (ग) २. बलभद्र (ग) ३. कन्ह (कखग)

(६०) १. उठ्ठिउ मित्र (क) किया मंत्र (ग) २. पूछनि दूति क) ३. करी जुगति जउ साच वरण ४. मारिउ (क)

(६१) १. सुणी वचन रूपणि विगसाइ २. नारदु (क) ३. मिलिय गोहणि (क) सखी सहेली बहुती लेइ (ग) ४. गयी (ग)

श्रीकृष्ण और रूक्मिणी का प्रथम मिलन

भेटिउ जाइ तहा हरिराउ, तउ चंपइ रूपिणि[1] सतिभाउ ।
रादउराइ वयण मुहु[2] गुणहु[3], सात ताल तुम[4] वाणनि हणउ ।।६२।।
वज्र[1] मुंदरी[2] आफी[3] आणि, तउ[4] कर मसकी सारगपणि ।
फुटि[5] चून भइ मुंदड़ी, जनकु[6] कणिक गरहट तल पड़ी ।।६३।।
तउ कोवंडु नरायणु लेइ, हलउ[1] आइ अगूठा[2] देइ ।
सल[3] केसे सति सूधे भए, सातउ ताल वेधि[4] सर गये ।।६४।।
नर[1] रूपिणि[2] मन भयो संनेहु[3], जाणिउ निज नारायणु एहु[4] ।
रथ चढाइ तिन्हि[5] करी पुकारी, भीषमराइ जगाइ[6] सारी ।।६५।।

वनपाल द्वारा रूक्मिणी हरण की सूचना

पाछइ गरव करइ[1] जिन कोइ, चोरी गए रुक्मिणी[2] लेइ ।
तव वणवाल पुकारिउ[3] आइ[4] जहि वलु[5] आइ सु लेहु छिड़ाइ ।।६६।।

---

(६२) १. रूकमिणी (क) २. मुहि (क) हम (ग) ३. सुणहु (क ख ग) ४. तुम्हे वाणउ (क) तुम्हि वाणहि (ख)

(६३) १. जव (क) २. मूंदड़ी (क ख ग) ३. ति आपी आणि (क) आएफी आणी (ग) ४. तंकरि (क) तड करि (ख) करी समकरी (ग) ५. फूटी (क ख ग) ६. जाइ रूक्मिणी देखइ मणि पड़ी (क) जाण्यो साकण हट ते पड़ी (ग)

(६४) १. हलहर (क ख) हलधरु (ग) २. अगुट्ठउ (क) अंगूठा (ग) ३. सल किउसे सत पूया भयउ (क) साल केस सति सूधा भयउ (ख) सल केथे सभि उभे भये (ग) ४. वीधी (क) विंधे (ख)

(६५) १. तब (क ग) तउ (ख) २. रूकिमिणी (क) ३. सनेहु (क ख) तब को मन गया संदेहु (ग) —पूरा चरण ४. देउ (क) ५. तिणि (क ख ग) ६. जणावहु (ग)

(६६) १. करो (क) २. ले गयो (क) पीछइ गरबु म करिज्यो कोइ, चोरी गया ते रूक्मिणि लेइ (ग) ३. पुकारिउ (क ख ग) ४. जाइ (ख) ५. आहि (ख) होय इसु लेउ छुडाइ (ग)

वस्तु बंध—लइय रूपिणि रथहं चडाइ[1] ।

पंचायणु तहि[2] पूरियो, सारु[3] सुर[4] लोइउ संकिउ ।

महिमंडलु[5] तहि[6] थरहरिउ, टलिउ[7] मेरु गांमेसु[8] कंपिउ ॥

महले[9] जाइ पुकारियउ, पुहमिराय अवधारि ।

उभी रूपिणि देवलहि,[10] हडिलइ[11] गयउ मुरारि ॥६७॥

चौपई

तउ मन कोपिउ भीषमु राउ, ठा ठा[1] भए निसाणा[2] घाउ ।

तुरीय पलाणहु[3] गैयर[4] गुडहु,[5] काल रूप हुइ राम्वत चढहु[6] ॥६८॥

सेमपाल राजा सुधि भइ, रुपिणि कुवरि चोरी हरीलइ ।

नवइ कोपि बोलियउ नरेस, तुरिय पलाणहु वेगि असेस ॥६९॥

रहिवर साजहु गयवर गुरहु, सजहु सुहड आजु रणव भिडहु ।

रावत कर साजहु करवाल, धाणुक[1] करहु धणुह टंकारु ॥७०॥

सेसपाल अरु भीषमु राउ, दुइ[1] दल सूझन न सुझइ ठाउ ।

घोडउ खुर लइ उछली घेह,[2] जनु[3] गाजहि[4] भादौ के मेह ॥७१॥

---

(६७) १. वेसाइ (क) २. जब (क) ग प्रति में नहीं है । ३. सबव (क सद्द (ख) सबवु (ग) ४. सब लोक म्राइय (क) सुरलोक कंप्यो (ग) ५. दल वलउ (क) ६. हर्‌यो (ग) ७. चल्यो (ग) ८. तब सेस (क) गिरिसेस (ग) ९. महिला जाइ पुकारि करि (क) १०. देहुरइ (क) ११. हरिलइ (ग)

(६८) १. थाहउ (क) टाडा (ख) वेगे (ग) २. निसाहण (क ख ग) ३. पल्याणा (क) गयवर (क ख) ४. गुड्या (क) ५. साम्ह चढ्या (क) सबहि चढहु (ख)

ग प्रति में निम्न पाठ हैं—रूक्मिणी कुमरी चोरी हडिलेइ, कहहु देव यह कइसी भई

(६९) ६९ की चौपाई ग प्रति में नहीं है ।

१. धणह रयण च करहि टंकार (क)

(७१) १. बहुदल सेनन (क) दुइदल सेनन (ख) दुइदल २. मिले खेह (क ख ग) ३. जिम (क) जाणो (ग) ४. गरजइ भादव घण मेहु (क) गज्जइ भादों के मेहु (ख) भादव गज्जइ मेह (ग)

चिन्ह[१] चमर[२] दीसइ चमरंत,[३] जाणौ[४] दावानल करलेहि[५] निमजंत ।
चतुरंग[६] दलु भयो संजुत, पवग्ग वेग रण[७] आइ पहुँत ।।७२।।

आवत दलु दीठउ अपवालु,[१] उड़ी खेह लोपी[२] ससिभाणु ।
अह[३] डरि रुपिणी लागी कहण, किम रण जीतहुगे महमहण[४] ।।७३।।

रहि रुपीणी[१] वामा[२] काहरि होहि, पवरिशु आज दिखाउ[३] तोहि ।
सेसपाल[६] भानउ भग्गिवाउ,[४] वाधि[५] न आणौ भीषमराउ ।।७४।।

वात कहत दलु आइ पहुत, सेसपाल बोलइ प्रजलंतु[१] ।
रावत निमजि[२] लेहु करवालु, पडिउ[३] भेट जिन[४] जाइ गुवालु ।।७५।।

---

(७२) १. विहविस (क) चीर (ग) २. चंबर (ग) ३. फरकंति (क) फरहरंत (ख) प्रहरंतु (ग) ४. ध्वजा पवण को जाणं अंभु (ग) ५. कमलिनि जुत (क) ६. जरद सनाहु भाय माजंत (क) चमर छत्र दल मिलिया संजूत्त (ग) ७. दल (क)

(७३) १. असमान (क) अयवाणु (ख) परवाणु (ग) २. सुढंकियो (क) लोप्या (ग) लोपिउ (ख) ३. अनि (क) ४. महुमहण (क) महमहिण (ख)

(७४) १. धीरी रुकमिणी मुकंद लहोह (ग) २. म कायिर (क) मत कातिर (ख) ३. दिखालउ (क ख) दिखावउ (ग) ४. भडि (क ख) भड (ग) ५. बंधी करि आणउ (क) बांधि जु आणेउ (ख) आणउ बंधिव (ग)

(७५) १. बलिवंतु (क) मयमंतु (ख) २. निजु (क) निवजि (ख) माजि (ग) ३. न्हामि जिनि मरइ गुवाल (क) अब भागा कित जाहि गोवालु (ग) ४. किम (ख)

मूल प्रति एवं ग प्रति में निम्न छन्द नहीं है—
जब ससपाल जनमु तहि भयउ, बहु तुव दंड गभुं संभयउ ।
तब तिहि माता बोले वयण, सउ अवगुण मइ बोले सहण ।
तरा कारणि हउ समुहु विरत्तु, फुणि मुहि रुपिणि वेखहि
अन्तु ।। ७७ ।। (ख)

वस्तु बंध—सेसपाल विठु[1] हरिराउ ।

जउ[2] वैसंदर अत[3] ढल्यउ, धनुष बाण कर ले अफालिउ ।

अव समरंगिणि जाणिउ, पुव[4] वयण नियमण[5] सभालिउ ॥

चोरी रूपीणि हरिलइ,[6] इह[7] तइ कीयउ उपाउ[8] ।

कहा जाइ दिठि परचउ,[9] अव[10] भानउ भरिवाउ ॥७६॥

चौपई

दुष्ट वयण सठ[1] पूरे जाम,[2] कोपारूढ विष्णु भो[3] ताम ।

सारंगमणि[4] धनुष[5] लौ[6] हाथि, सेसपाल पठउ[7] जमपंथि ॥७७॥

श्री कृष्ण और शिशुपाल के मध्य युद्ध

हाकि[1] पचारि[2] भिडइ[3] दुइ वीर, वरसइ बाण सघण[4] जाणौ[5] नीरू ।

तव वलिभद्र हलावभु[6] लेइ, रह[7] चूरइ मइगल पहूरेइ ॥७८॥

---

(७६) १. भिडइ (क) हमउ (ख) २. जणु (क) जनु (ख) ३. घीउ (ख)—पूरा चरण—कोपि होइ प्रज्जलिउ (ग)

निम्न पाठ—(ख) प्रति तथा (ग) प्रति में और है—

धखुह बाण करह लइ आफिउ, अवसमरंगणि जाणि जाणियउ (ख)

धनुष वाणि हथियार लिए, रे गवार संभार संभलि (ग)

४. पूरव वैरते (क) पुव्व वइरू (ख) किउ उपाइ क्यों रहहि जीव (ग) ५. नियमणह (ख) ६. हडिलेइ चालिउ (क) हड चलउ (ख) ले चल्यौ (ग) ७. एतइ (क) यह ते (ग) ८. माहउ किम जाइस (क) कहा जाहि तू (ग) ९. पडियउ (क) पडिउ (ख ग) १०. हिव (क) इव (ग)

(७७) १. सव (ख) सुणु (ग) २. नामु (ग) ३. भयो (क) भउ (ख) कोपवंतु भय कन्हहुताम (ग) ४. पाणि (क ख ग) ५. खडगु (ग) ६. ले (क ग) लियो (ख) ७. पठयो (क) पठवउ (ख) पडवउ (ग)

(७८) १. एक बार (क) २. पचारि (ख ग) ३. उठहि (क) ४. घणा (ग) ५. जिम (क ग) जिउ (ख) ६. हलायुध (क) हलाउधु (ख) हलधु (ग) ७. रथमइ गणते चूरइ लेइ (क) रह चूरइ मयगल पहरेइ (ख)

(७८) का अन्तिम चरण ग प्रति में नहीं है ।

सेसपाल कर धनहर[1] लेइ, वार[2] पचास वाण[3] तो देइ।
नाराइणु सउ करइ[4] संघारणु[5], वहु ढूंइ[6] सइ मेल्हइ सपराणु[7] ॥७६॥
वहु[1] सइ च्यारि वाण पहरेइ, वहु सैइ आठ संधाण करेइ।
वहु सोलह धरि मेलइ चाउ, वहु[2] बत्तीस न सूझइ ठाउ ॥८०॥
दोउ[1] वीर खरे सपराण[2], दूणे दूणे करइ संधाण।
बाढी[3] राडी न उहरण[4] जाइ, वाणनि[5] पुहिमि[6] रहि धरछाइ[7] ॥८१॥

श्रीकृष्ण द्वारा शिशुपाल का वध

तव नारायणु करइ[1] उपाय, नाहि धनुष बाण[2] को ठाउ।
फेरहु[3] चक्र हाथि करि[4] लियो, छिनि[5] सीसु ससिपालह गयो ॥८२॥
सेसपाल भानिउ भरिवाउ, विलख वदन भौ[1] भीषमराउ।
भीष्म[2] मारि रण सहन न जाइ, चवरंगु[3] दलु[4] चल्यो पलाइ ॥८३॥

---

(७६) १. धणहणु (क) धणहर (ख) प्रथम चरण ग प्रति में नहीं है। २. वाण (क ख) ३. संघाणु करेहु (ग) ४. करउ (क) देइ (ग) ५. संधाण (क) संघारू (ख) संधाणु (ग) ६. वहु (क) उहु (ख ग) ७. पराण (क) शिशुपाल (ख) परवाण (ग)

(८०) १. उसा चारि (क) उहु सय (ख) २. ए छत्तीस न चूकइ ट्ठाउ (क) उहु बत्तीस न सूझइ नाउ (ख) रथ चूरे मइगल पुहरेइ, सीसपाल का धुणहरू लेइ (ग)

(८१) १. वोइ (क) दोहिमि (ख) २. सपरण (ख) ३. छई सेननउ उठ्ठिउ जाहि (क) ४. हटरण (ख) ५. बाणउ (क) ६. पहुवि (क) ७. सब (क)

ग प्रति—वधी सुराउ न हटनउ जाइ. वाणिहि पुहवी रहि घर छाइ

(८२) १. करे उपाव (क) करइ उपाउ (ख) २. बाणनी (क) ३. फिरि चापु (क) फेरि चकु (ख) फेरि चक (ग) ४. हाथ हिलउ (ग) ५. छेद (ग)

(८३) १. पयो (क) २. विषम (क ग) ३. चउरंगु (ख) चावरंग (क) चतुरंग (क) ४. बलु (ख) ख प्रति में तीसरा चरण नहीं है।

तव रूपिरिण बोलइ सतभाउ, राखि[१] रूपचंदु भीष्मराउ[२] ।
करइ साथ[३] मन छाडइ वयरू, वहुडि आपि कुंडलपुर नयरू ॥८४॥
तउ नारायणु करइ पसाउ, वाधिउ छोडउ भीषमुराउ ।
रूपचन्द कहु[१] आफहु भरइ, पुणि[२] णिय णयर वहुडि हुरि चलइ॥८५॥

श्री कृष्ण और रुक्मिणी का वन में विवाह

वाहुडि हलहरु चले मुरारि, दीठउ मंडपु वरणह मंझारि ।
विरख[१] असोग तरण[२] छइ[३] जिहा, तिनी जरणे[४] सपते[५] तहा ॥८६॥
तव तिनके मन भयो उछाहु, आजु लग्न हइ[१] करइ विवाहु ।
महुवर[२] भुरिण जरणु मंगलचार, सूवा[३] पढइ वेद भुरण कार ॥८७॥
वसासइ[१] तिनि मंडपु कीयो,[२] दे[३] भावरि हथलेवो कियो ।
पारिण—ग्रहरण करिपरणी नारि, फुरिण घर चाले कन्ह मुरारि ॥८८॥

---

(८४) १. थापउ (क) बंधहु (ख) २. कराउ (क) अव राउ (ख ग) ३. संति (क ख) सांत (ग)

ग— करहु सांत तुम कबुल जाउ, चालहुं कुंडलपुर हरिराउ (ग)

(८५) १. को आगे करइ (क) कहु आंकउ भरइ (ख) कहु अंक भरिउ (ग) २. वाहुडि नृप नयर कहु चलइ (क) फिरि णिय नयरि बहुडि हर चलइ (ख)

पुणि तिहि नयरि वहुडि चालिवउ (ग)

(८६) १. बिरखु (ख) वृक्ष (ग) २. तणउ (ख) तणा (ग) ३ है (ख) हइ (क) ४. तीन्यौं (ग) ५. पहुते तहां (ग) सुपहुते तहां (ख)

८६ वां छन्द क प्रति में नहीं है

(८७) १. ठया (ग) है करहु (ख) २. महुवर भुणि जणु मंगलचारू (ख) मधुर धुनिहि होइ मंगलचारू (ग) ३. मूल पाठ महु में चरित्र सु जाणौ मंगलचारू सुवर (ख) सोइ (ग)

(८८) १. वणह माहि (क) वणसइ महि (ख) हरइ बंसका मंडप थया (ग) २. थयउ (क) ठयउ (ख) ३. देवि समरि (क)

श्रीकृष्ण का रूक्मिणी के साथ द्वारिका आगमन

जव वाइस[१] नारायणु गयो[२], छपन कोड़ी मिलि उछव[३] कीयउ ।
गूडी उछली घर घर वार, उंभे[४] तोरण वंदनमाल[५] ॥८९॥
इक रूपिणि अरु कान्ह मुरारि, विहसत[१] पैठा नयर मंझारि ।
ठाठा लोग रहाए घणे, उइ[२] पइ पठे मंदिर आपणे ॥९०॥
गये[१] विवस वहु भोग करंत, सतभामा की छोड़ी चिंत ।
नित नित सुख[२] विलखी खरी, सवतिसाल[३] वहु[४] परिहस भरी ॥९१॥

सत्यभामा के दूत का निवेदन

महलउ[१] राणी पठयो तहा[२], वलिभद्र कुवर[३] वइठे जहा ।
सीस नाइ तिहि विनइ सेव, सतीभामा हौं[४] पठयो[५] देव ॥९२॥
हाथ जोड़ि महले वीनयो, सतिभामा हइ[१] अइसउ कहउ[२] ।
कवणु[३] दोसु मो[४] कहहु विचारि, वात[५] न पूछइ कन्ह मुरारि ॥९३॥
निसुणि[१] वयणु हलहलु[२] गऊ[३] तहा, राउ नरायणु वइठउ जहा ।
विहसि वात तिहि[४] विनइ[५] घणी, करइ[६] सार सतिभामा तणी ॥९४॥

---

(८९) द्वारावइ (क) जव सौं नयरी ख) २. जाय (ग) ३. महुछउ (ख) आनन्द कराइ (ग) ४. बांधे (ख) रोपी (ग) ५. वंदरवाल (क ख ग)

(९०) १. विगसत (ग) २. सवि (क) अइ (ख) वुइ (ग)

(९१) १. एक (क) २. नारि (क) रोवइ (ख) झुरवइ (ग) ३. सोउ किशाल (क) ४. वुलह भरी (क ग)

(९२) महिला (ग) २. जहाँ (क) ३. कुमर (क) कुमरू (ख) कन्ह (ग) ४. हमि (क) हउ (ख ग) ५. पठए (क) पठयउ (ख) पठई तू (ग)

(९३) १. हिव (क) तुम्ह (ग) २. अइसा चवइ (ग) ३. कवणु (क ख ग) ४. मोहि (क) मुहि (ख) हम (ग) ५. सु बात (ग)

(९४) सुणी बात (ग) हलहर (क ख ग) ३. गयो (क) गयौ (ग) ४. तवइ (ग) तिह (क) ५. वीनवी (क) विनवै (ग) ६. करउ (ग)

तउ नारायणु करइ कुतालु, जूठउ रूपिणि तणउ उगालु ।
गांठि[1] वाधि[2] संपतउ[3] तहा, सतिभामा कइ[4] मन्दिर जहा ॥९५॥

सतिभामा हरि दीठउ[1] नयणा[2], रूदनु करइ[3] अरू वोलइ वयणा ।
कहइ वात वहु परिहस[4] भरी, कवण दोस[5] स्वामी परहरी ॥९६॥

तउ हसि वोलइ कन्ह मुरारि, मधुर वयण समझाइ[1] नारि ।
कपट रूप सो निद्रा करइ, गाठी झुलाइ खाट तर[2] धरइ ॥९७॥

गाठी[1] झूलति जव दीठी जाम, उठि सतभामा छोरी[2] ताम ।
परीमलु महकइ[3] खरी सुगंध, देखी[4] सुगंध लगाइ[5] अंग ॥९८॥

अंगु मलति जव दीठी राइ[1], जागि[2] कान्ह वोलइ विसधाइ[3] ।
तेरउ[4] जाण[5] गयउ सवु आलु, इह[6] तउ रूपिणि तणउ उगालु ॥९९॥

---

(९५) १. गंठि (क ख) २. बंध (ग) ३. संपतो (क) संपता(ग) ४. कउं (क ख) का (ग)

(९६) १. दीठा (ग) २. जाम (क) ३. बोलो इक माम (क) ४. रोसह (क) ५. दोसि (क ख) दोसे (ग)

(९७) १. समझावइ (क ख ग) २. तलि (क ख ग)

(९८) गंठडी झुलकत देखी (ग)

नोट—दूसरा चरण क प्रति में नहीं है

२. छोड़ी (ख) दीठी (ग) ३. वहइ धरिय (ख) दीठा गंध सुचंग (ग) ४. वोडि (क) ५. लावइ (ख ग)

(९९) १. नारि (ग) २. जागु कन्ह बोलीया विचारि (क) ३. विहसाइ (ख) ४. तेरा (ग) ५, सिगारू गयउ सबु अहल (ख) अवगुणु गया सभु आलु (ग) ६. ऐहु (क) इहु है (ख)

निम्न छन्द मूल प्रति तथा क और ख प्रति में नहीं है—

विलवेते क्यो घृत टलि जाइ, अणभावता न रुचा खाइ ।
कहा नाराइणु झंखहि आलु, इहु मुझु बहणि तणा उगालु ॥

सत्यभामा का रूकमणि से मिलने का प्रस्ताव

सतिभामा वोलइ सतिभाउ, मो कहु रूपिणी आणि[१] भिटाउ।
तव हसि वोलइ कान्ह मुरारि, भेट कराउ[२] वणह मभारि ॥१००॥
उठि नारायण गयो अवास, वैठउ[१] जाइ रूकिमिणी पास।
वहु फुलवाडि[२] वसइ[३] वण माहि, चलहु आजि[४] जह जेवण जाहि ॥१०१॥
रूपिणि सरिस नारायण भये[१], चढे सुखासण वाडि गये।
विरख[२] असोग[३] वावरी[४] जहा, लइ रूकिमिणि उतारी तहा ॥१०२॥
सेत[१] वस्त्र उज्जल आभरण, करकंकण[२] सोहइ आभरण।
देवी रूप अला[३] वइसारि, जपइ[४] जाप तहा[५] गयउ मुरारि ॥१०३॥

सत्यभामा और रूक्मिणी का मिलन

पुणि[१] सतिभामा पठइ[२] जाइ, हउ[३] रूपिणि कहुं लेउ वुलाइ[४]।
जाइ[५] वावरी ठाढी होइ, जिम रूकिमिणी भिटाउ[६] तोहि ॥१०४॥

---

(१००) मिलाइ (ग) करावहुं (ग)

(१०१) १. विहुठउ (क) बइठा (ग) २. फल आवि (क) फुलवाड (ख) फुलवावि (ग) ३. अछइ (क) अछे (ख) अछहि (ग) ४. तुम भेटण जाहु (क) तहं भेटण जांहि (ख) तिन्ह देखण जांहि (ग)

(१०२) १. भयउ (क) गये (ख) भया (ग) २. वृक्ष अशोक (ग) ४. बावडो (क ख ग)

(१०३) १. श्वेत (ग) २. सोहइ अनियर काजल नयण (क) कर कंकण सोह तडिवयण (ख) कर कंकण पहरे मन हरण (ग) ३. 'अवल' वइसारि (क) आलै वैसारि (ख) ४. जपे (क) जपहि (ख) जपियऊ (ग) ५. कहि (क ख ग)

(१०४) १. फिरिण (क) फुणि (ख) फुनि (ग) २. पहितो (क) पठई (ख) पठणं (ग) ३. कहे वात नरवइ सतिभाउ (क) ४. अडाइ (ग) ५. क प्रति में निम्न पाठ है—

चालि गेहिणी तू वलि होइ, वन रूक्मिणि भेटाउ तोहि।

नोट—दूसरा और तीसरा चरण ख प्रति में नहीं है।

६. भेटाउ (क) भिटायउ (ख) मिलावहु (ग)

गोहिण मिलो[1] वहुत सहिलड़ी, वाडी[2] गइ जहा वावड़ी ।
नयण निरखि जद[3] देखइ सोइ, वण देवी[4] वह वैठी[5] कोइ ॥१०५॥
पय[1] ससि चेली जल मह हाइ, पुणि देवी के लागइ[2] पाइ[3] ।
सामिणि मुहिकहु[4] देहु[5] पसाउ, जिम[6] मुहि मानइ जादउराउ ॥१०६॥
अव[1] वह[2] देवी मनावहि सोइ, जिमि[3] रूकिमिणि दुहागिणी होइ ।
विविह पयार पयासइ सोउ[4], आगइ[5] आइ हसइ[6] हरिदेउ ॥१०७॥
सतभामा तुमि[1] लागी वाइ. वार वार कत[2] लागइ पाइ[3] ।
काहो[4] भगति पयासहु घणी. यह आलइ[5] वयठी रूकिमिणी॥१०८॥
सतिभामा वोलइ तिहि ठाइ, कहा भयो[1] जइ लाइ पाइ ।
कूडी[2] वूधी करड[3] तू घणी, यह मो[4] वहिणी होइ रूकिमिणी॥१०९॥

---

(१०५) १. वहुतु सहेली मिली (ग) २. गयी जिहां बाडी वावडी (क) वाडी मांहि देखहि एकली (ग) ३. जो नयण दिखाइ (क) जिव देखइ साइ (ख) जे (ग) ४. देव्या (ग) ५. कइ लागइ पाइ (क ख) यह (क)

(१०६) १. परहसि वोलि वणमहि जाइ (ख) २. लागी (ग) लागै (ख) ३. पाय (ख ग) ४. मोकहु (क ख) हमको (ग) ५. करहु (क) ६. जउ हउ मार्णौ जादमराय (ग)

(१०७) १. इम (क ख) जउ (ग) २. ऊहु (ख) ३. तउ (ग) ४. सेव (क ख) ५. आगलि (क) ६. हसैं ।

तीसरा और चौथा चरण ग प्रति में नहीं है।

(१०८) किसु लागइ पाइ (क) तुम्हि लागी पाइ (ख) तुम्ह कहउ सभाउ (ग) २. क्या (ग) ३. भाइ (ग) ४. काहउ भगति करहि वहु घणी (क) काहउ भगति पयासहु घणी (ख) कहा जाति बोलहि आपणी (ग) ५. अलाइ (ग) यह तो वहिणि आहि रूकमिणी (क)

(१०९) १. हुआ (ग) २. कूड बुद्धि (क ख) कूडी बुद्धि (ख) इतनी बुद्धि (ग) ३. बूझी तुम्ह तणी (ग) ४. मोहि (क) मुह (ख) तउ (ग)

राति दिवस तू करिहि कुतालु[1]. वंस[2] सहाउ न जाइ गुवालु ।
फुणि रूपिणी सहु[3] करह सभाइ. चालइ[4] वहिण[5] अवसइ[6] जाइ ॥११०॥

चढि याण[1] ते गइ[2] अवास[3], सव सुख भूंजहि करहिं विलास ।
राजु[4] करत दिन कछुक[5] गये, राणी दुहु[6] गर्भ[7] संभये[8] ॥१११॥

तव सतिभामा चवइ निरुत, जाके[1] पहिलइ जामइ पूत ।
सो हारइ जाहि[2] पाछइ[3] होइ, तिहि सिहु[4] मूंडि विकाहइ[5] सोइ ॥११२॥

सतिभामा अरु रूपिणि तणौ[1], वलिभद्र आइ[2] भयउ[3] लागणउ[4] ।
तुम जिण[5] करहु हमारी काणि, जे हारहि तिहि मूडहु[6] आणि॥११३॥

एतह[1] कुरवइ[2] पठयउ दूत, नारयण पह[3] जाइ[4] पहुत ।
तुम घर जेठउ नंदन होइ, ता दूतह करावहु सोइ ॥११४॥

---

(११०) १. कोताल (क) ढमाल (ग) २. वश बजाहें नही गोवाल (क) मुझ कहु कहा भोलवहि गोवाल (ग) ३. स्यो कहे सुभाइ (क) सहु कहइ सुभाइ (ख) बोलत सतभाउ (ग) ४. चालि (क ख) चलहि (ग) ५. बहणि (क) बहण (ख) बहुण (ग) ६. अपणे घरि जाहि (क) आवासहि जाहि (ख) आवासहि जाइ (ग)

(१११) १. चकडोल (क) विमाणि (ख ग) २. गए (क) चली (ग) ३. आवास (क) आवासि (ग) ४. भोग (ग) करत केलि दिन केतक गये (ख) ५. बहुत (क ग) ६. विहुकर (क) दुहु कहु (ख) दुन्ह (ग) ७. ज भए (क) ८. गब्भ (ख)

(११२) १. जिहि घरि पहिला जन्मे पूत (ग) २. जिह (क) जिसु (ख) जिहि (ग) ३. पीछे (ग) ४. सिर (क) सिस (ख ग) ५. विवाहइ (क ख) विवाहे (ग)

(११३) १. भणउ (क) तणउ (ख) तणा (ग) २. कुमर (क ग) ३. भयो (क) सयउ (ख) हुवा (ग) ४. लागणा (ग) ५. मत (क ग) ६. तिह (क) तिस (ग)

(११४) १. एतइ (क) तिहि (ग) २. कइरविहि (ग) ३. तह (ग) ४. आइ (क ख) तिह को निय धुव व्याहइ सोइ (क) कुरवइ धीय विवाहइ सोइ (ख ग)

सत्यभामा और रुक्मिणी को पुत्र रत्न की प्राप्ति

एतह्[१] आइ वहुत दिन गये[२], दुहु[३] नारि कह[४] नंदन भये।
लक्षणवंत[५] कला[६] समजुत[७], ऐसे[८] भये दुहु[९] घर[१०] पूत ॥११५॥

सतिभामा तणउ वधावउ गयउ, जाइउ[१] सेसे[२] ठाढउ[३] भयउ।
रूपिणि तणउ वधावउ जाइ[४], पाइत सो[५] पुण वयठउ जाइ ॥११६॥

जागि नरायणु वइठो होइ, रूपिणि दूत वधावउ देइ[१]।
हाथ जोडि वोलइ विहसंतु, रूपिणि घरह उपनउ पूत ॥११७॥

दूजउ[१] दूत वधावउ[२] देइ, नारायण सिहु[३] विनवइ[४] सोइ[५]।
हउ[६] स्वामी तुम[७] पह[८] पठयउ, सतिभामा पूणि[९] नन्दण भयउ ॥११८॥

---

(११५) १. एतउ कहि दूत तव गये (क) २. भये (ग) ३. वेउ (क) बुन्हु (ग) ४. घरि (क) ५. लखिण (क ख) ६. वत्तीस (ग) ७. संयुत्त (क ग) संजुत्त (ख) ८. जइसे (ग) अइसे (ख) ९. विहु (क) १० के (ग)

(११६) १. जाइउ (क ख) जाइअ (ग) २. सीसउ (क) सीसे (ख) सीसा (ग) ३. ठाडउ (क) ठाउ (ख) ठाडा (ग) ४. आइ (क) देइ (ग) ५. तालि से (क)—सो पुणि पाइवि खडा रहेइ (ग)

(११७) १. होइ (क)

ग प्रति का तीसरा चौथा चरण—

रुकमिणि पूतु जण्यो छइ आज, देयउ वधावा ता हरं काजि।

(११८) १. बीजा तिहां (ग) (२) वधावा (ग) ३. स्यो (क ग) सहु (ख) ४. विनवे (क) विनवै (ख) विनउ (ग) ५. करेइ (ग) ६. हो (क) ७. वासि (ग) ८. पठाविउ (क) पाठयउ (ख) पाठियौ (ग) ९. घरि (ग)

तउ हरि[१] हलहर लेइ[२] हकारि, कहइ वात जा वलि[३] वयसारि ।
झूठउ[४] वोलि टलै जिन कम्वगु, जेठउ[५] पूत[६] भयउ परदवगु[७] ॥११९॥

दूहु नारि घर नंदरण भए, घर घर नयरि वधावा गए[१] ।
सूहो[२] गावइ मंगलचार, वंभरण वेद पढइ भुरणकार[३] ॥१२०॥

वाजहि तूर भेरि अनिवार[१], महुवरि भेरि[२] संख अनिवार[३] ।
घरि घरि कूं[४] कूं थापे देह, मंगलगावहि[५] कामिरिण गेह ॥१२१॥

धूमकेतु द्वारा प्रद्युम्न का हरण

छठि[१] निसि जागरण करंतु, धूमकेतु तहा आइ पहुंत ।
घोमि[२] विम्वाणु रचितु[३] छरण[४] जाम, धूमकेतु मनि चिंतिउ ताम ॥१२२॥

उतरि[१] विमारणु दिट्ठु परदवगु, भरगइ जक्षु[२] यहु खत्री कवगु ।
वयर[३] सम्हालि कहइ तंखीरगी, इरगी[४] हरी नारी मुहि तरगी ॥१२३॥

---

(११९) १. तिहि (ग) २. लीयउ हकारि (क) लीया वुलाय (ग) ३. वउसा विचारि (क) वलिवइ साइ (ग) ४. झूंठी बात कहइ पर कवगु (ग) ५. जेठा (ग) ६. पुत्र (क ग) ७. परदमणु (क ख)

(१२०) १. हुये (ग) २. महुउ गमिउ मंगलचार (क) सूहउ करहिसु मंगलधार (ख) अहि जो गावइ मंगलचार (ग) ३. जयकार (क) झरणकार (ग)

(१२१) १. सविचार (क) २. शब्द बहुताल (ग) ३. अनेचार (ख) ४. कुंकम रोला (क) ५. मंगल चारुवर कामिरिण करेह (ख) घरि घरि कामिरिण गीत करेह (क) मूलपाठ—यह चरण मूल प्रति में न होने कारण 'घ' प्रति से लिया गया है ।

(१२२) १. छट्ठा दिवसि निसि गीत चवंति (ग) २. थामि (क) खोवि (ख ग) ३. रहइ (क) रहउ (ख) रहया (ग) ४. गरिण (क) खरिण (ख) तिसु (ग)

(१२३) १. उठिउ (क) २. देव (क) जख्यि (ग) ३. वइर (क) वयरु (ख) वइरु (ग) ४. एरिण (क) वयरु हडो (ख) यह हइ हारि नारि (ग)

हुइ प्रछन्न[1] उठावइ[2] सोइ, जैसे नयर न जाणइ कोइ ।
घालि विमाणि चलिउ[3] ले[4] तहा, वनखंड[5] माझ सिला हुति जहा ।।१२४।।
धूमकेतु तौ[1] काहौ[2] करइ, घालउ[3] समुद्र त वेलउ[4] मरइ ।
वामन[5] हाथ सिला सो पेखि, इहि तल धरउ[6] मरउ दुख देखि ।।१२५।।
पूर्व[1] रचित न मेटण कवणु, करम बंध भूंजइ परदवणु ।
चापि[2] सिलातल सो[3] घर जाइ, तव रूपिणी जागइ[4] तिहि ठाइ ।।१२६।।
वस्तु बंध—छठि[1] रयणि हरिउ परदवणु
तह रूपिणि कारणु करइ, अरे[2] पाहरू[3] तुम्ह वेगि जागहु ।
नारायण हर[4] निसुणि,[5] तुम वलिवंत[7] पुकार[6] लागहु ।।
सतिभामा आनंद भयउ,[8] कलयर[9] करइ वहूतु ।
सो रूपिणि कारणु करइ जिहि रहस्यउ[10] निसि पूत ।।१२७।।

---

(१२४) १. परछन्नि (क) परछन्नु (ख) प्रछन्नु (ग) २. उठाउ (क) तव उट्ठियो (ग) ३. गयउ (क) चल्या (ग) ४. सो (ग) ५. वनवइ राडि (क) वणिखइ राडइ सिला थी जह' (ख) वणुखइ राडि सिला हुइ जहा (ग)

(१२५) १. तह (क) तउ (ख) तुव (ग) २. काहउ (क) कहा (ग) ३. पामउ (क) ४. बेगिउ (क) वेगउ (ख) वेगि (ग) ५. वावन (क ख ग) ६. धरो (क) घालउ (ख) धरइ (ग)

(१२६) १. पूरब क्रम सु मेटइ कवण, तउ ए दुख वेखे परदमण (क)
पूरब वैर न मेटइ कोगु, करम बंध भुंचैं परद्रोगु (ख)
पूरब विभु'न मेटइ कोइ, करम लिखा सो निश्चइ होइ (ग)
२. चंपि (क ग) ३. रथि (क) ४. जाणइ (क) जगाई (ग) धूमकेतु चंपि विगसाइ (ख)

(१२७) १. निसहि हडउ परदवणु, (ग) २. हो (ग) ३. पहरुवावे (ख) ४. हलहर (क ख) हरधर (ग) ५. मिलहु (ग) ६. कुमार (क) ७. बलवंड (ग) ८. मनि (ग) ९. कलियल (क) करजल (ग) १०. हडियो पूत (क) हाडलियउ निसि पूत (ख) जिहि का हडिया तिस पुत्त (ग)

चौपई

नयर[1] माहि[2] भयउ[3] कहलाउ[4], सोवत जागिउ[5] जादवराउ ।
छपन कोटि मिल चले पुकार, फुणि तिस[6] तणी न पाइ सार ॥१२८॥

विद्याधर यमसंवर का भ्रमण के लिये प्रस्थान

एतइ[1] मेघकूट[2] जहि ठाउ, जमसंवर तहि निमसै राउ ।
बारहसइ विद्या जा[3] पासु, कंचणमाला गेहिणि[4] तासु ॥१२९॥
वहिकौ[1] मन[2] वनक्रीडा[3] रल्यउ, चढि[4] विम्वाण सकलत्तउ[5] चलिउ ।
सोवण माझ पहुतउ जाइ, वीरू परदम्वणु[6] चाप्पोहौ जहा ॥१३०॥
देखी[1] सिला माझ वण[2] धरी, वाम्वन हाथ[3] जु उची खरी ।
खण उचसहौ खण तलही होइ, उतरि विम्वाणहु देखइ सोइ ॥१३१॥

यमसंवर को प्रद्युम्न की प्राप्ति

विद्या[1] के वल सिला[2] उठाइ, तउ नरिंद देखइ निकुताइ ।
लषण वत्तीस कनकमय[3] अंगु, जमसंवर देखयउ अणंगु[4] ॥१३२॥

---

(१२८) १. नयरि (ख ग) २. मांझ (ग) ३. हुआ (ग) ४. कलिहाउ (क) (क) कलिहाइउ (ग) ५. जाग्या (ग) ६. तसु (क) तिनि (ग)

(१२९) १. तहि (ग) २. मेघकुटिलपावइ (ग) ३. जिह (क) जिस (ख) ४. गोई अवासि (ग)

(१३०) १. उपवन (क) उनका (ग) २. कीडा (क) कीला (ख) ३. ऊपरि भया (ग) उछक भयो (क) ४. वेइट्ठि (क) ५. गयउ (क) गया (ग) ६. थरिउ (क) चापिउ (ख) चांपी (ग)

(१३१) १. दीठी (क) २. सो (क ख) जो (ग) ३. कर (ग)

(१३२) १. विहि संजोग (ग) २. सिललाई उट्ठाइ (ग) ३. कनक मइ अंगु (ग) उणंगु (ग) मूलपाठ—हचरोंतसु अंगु

कुम्वरु[1] उठाइ उछंगह लयउ, वाहुडो राउ विमाण[2] गयउ।
पाट महा दे राणो जाणि, कंचणमालाहि आपिउ[3] आणि ॥१३३॥
कंचणमाला लयउ कुम्वारु, अति सरूपु वहु लक्षण सारु।
तिसके[1] रूप न देखइ[2] कोइ, राजा[3] धर्मपूत सो होइ[4] ॥१३४॥
चढि विमाणु[1] सो गयउ तुरंतु[2], पम्वण[3] वेग सो जाइ पहुँत।
नयरि उछाउ[4] करै[5] सवु कवणु[6], कणयमाल हुवो[7] परदवणु ॥१३५॥
भो[1] प्रदुवनु कुवर[2] सुपियारु[3], अति सरूप गुण[4] लक्षण सार।
दुइज[5] चंद जिमि व्रिधि[6] कराइ, वरस[7] पांच दस को भो आइ ॥१३६॥

प्रद्युम्न द्वारा विद्याध्ययन

फुणि सो पढण[1] उभावलि[2] गयउ, लिखिनु पढितु सवु वुझिवि[3] लियउ[4]।
लक्षण छंदु तर्कु[5] वहु सुणिउ, नाटक राउ[6] भरथ सवु मुणिउ॥१३७॥

---

(१३३) १. कर उचाइ (क) २. चडेइ (ग) ३. आफिउ (क) दीन्हो (ग)

(१३४) १. तिहि के (क) तिहिकइ (ग) तिसकइ (ख) २. पूजाइ (ग) ३. राजाहि (ख) राया (ग) ४. मो होइ (ग)

(१३५) १. विमाणि (क, ख, ग,) २. तुरंत (ग) ३. गया (ग) ४. आनंदु ५. (ग) करइ(ख,ग) ६. भणइ (ग) ७. घरहि(ग)

(१३६) १. भो (क) तव (ख) सो (ग) २. करे (क) कुमारु (ख) खरा (ग) ३. गुणसार (क) ४. बहु (क ख ग) ५. बोइज (क) बोज (ग) ६. बिरधि (क ख ग) ७. बरस पंचनउ हुवो जाम (क) बरिस पांच बस का भउ राउ (ख) बस बरस को भयो तिह ठाइ (ग)

(१३७) १. पठणउ (ख) २. परसाउ (ग) उभावहि (क) भावरि (ख) भाउरि (ग) ३. गुण (क) बूझिहि (ख) बूझवि (ग) ४. लयो (ग) ५. बहुत सो (क) कवितु बहु (ख) ६. राव (क) राउ (ग) मूल पाठ तकु

नोट—तीसरा और चौथा चरण ग प्रति में नहीं है।

धनुष वाण[१]को वूझि[२]उ जाणु, सिघ जूझ[३]कौ जाणिउ जाण[४] ।
लडणु पडणु[५] निकासु[६] पइसारू. सवु जाण प्रदुवनु कुम्वारू ॥१३८॥

एसौ वीर भयउ परदवणु, तहि[१] सरिसु न वूझइ कवण ।
कालसंवर[२] घर वृद्धि कराइ. वाहुरि[३] कथा द्वारिका जाइ ॥१३९॥

द्वितीय सर्ग

पुत्र वियोग में रुक्मिणी की दशा

जहिं सो रूपिणि कारणु करइ, पूत्र संतापु हिय गहवरइ ।
नित[१] नित छीजइ[२] विलखी खरी, काहे दुखी विधाता करी ॥१४०॥

इक धाजइ[१] अरु[२] रोवइ वयण, आसू वहत[३] न थाके[४] नयण ।
पूव्व जन्म मैं[५] काहुउ कियउ, अव कसु देखि सहारउ हियउ ॥१४१॥

कीमइ[१] पूरिष विछोही नारि, को[२] दम्व[३] घालो वणह मझारि ।
की मै लेणु तेल घृतु हरउ, पूत संतापु कवण गुण[४] पर्यउ ॥१४२॥

---

(१३८) १. कउ (क ख) का (ग) २. विझविउ (क) बूझइ (ग) ३. झुझकउ (क) झुझावउ (ख) जूझ का (ग) ठाण (क) वाणु (ख) ट्ठाणु (ग) ५. भिडणु (ग) ६. निकसन पे (क) निकासु (ख) निकलु (ग)

(१३९) १. ताकी सुधि न जाणइ कवणु (क) तहि सम सरिसु न बूझै कवणु (ख) २. अइसा वीरु भया तिह द्वार (ग ख) इहु कथा द्वारिका जाइ (ग)

(१४०) १. ते तउ नारी (क) २. ऊंसो इव (ग)

(१४१) १. धूजइ (क) छीजइ (ख) २. इकु (ख) पर पूरइ वयण (ग) ३. ढलि (ग) ४. भइरसी (ग) ५. पाप मइ किया (ग)

(१४२) १. कइ मइ (क, ग) २. को (क) कइ (ग) ३. ववदीथी (क) ववलाई (ख) ववलाइ (ग) ४. दुख पड्या (ग)

इम सो रूपिणि[1] मन विलखाइ, तौ हरि[2] हलहरू वइठइ[3] जाइ ।
मत[4] तू सूंदरि विसमउ[5] धरइ, अनजानत[6] हमि काहौ करहि ॥१४३॥
सरलि[1] पयालि कहइ सुधि[2] कम्बणु, तौ[3] हमि चाहि लेहि परदम्बण ।
पलि[4] एस्यो हमि करइ पराण, मारि उठावइ गीध[5] मसाणु ॥१४४॥
इम समझाइ रहाइ[1] जाम, तो[2] मन[3] परिहस विसर्‌यो ताम ।
आइसे झुरत वरिसुहु गयउ, तौ नानारिषि द्वारिका गयउ ॥१४५॥

रूक्मिणी के पास नारद का आगमन

मूंडे मुंड चुटी[1] फर हरैं, छत्री हाथ कमंडल धरै ।
तौ नानारिषि आयो तहा, विलिख वदन भइ[2] रूपिणि तहा ॥१४६॥
जव तह नारद दीठउ नयण, गहवरि रूपिणि लागी[1] कहण ।
पद्मपूत[2] हौ स्वामी भयउ, जाणउ नही कवण हरि लयउ ॥१४७॥

---

(१४३) १. छिण छिण विलखी जाइ (क) २. तव (ग) ३. वइठा तिह आइ (ग) ४. मत (क ख ग) ५. विषवाद (क) विसमउ (ख) विसमाहु (ग) ६. अणजानते हम कहा करेहि (ग)

(१४४) १. सुरग (क) सुरगि (ख) सुर्गं (ग) २. सो सुधि—(क) सोधि कवणु (ग) ३. तउ वेगइ आणउ वल बुधि (क) ४. वलितिह संहणन को पूरनु (क) वलि गसिउ हमि करहिं पराणु ५. गीरध (ग)

(१४५) १. हलधर (क) हरि गउ घरि (ख) २. मनि परिहस विसारि जाम (क) ३. वन (ख)

नोट—प्रथम २ चरण (ग) प्रति में नहीं है ।

(१४६) १. चले (क) चोटी (ख) २. रुकमिणि जहां (क ख) रूपिणि हइ जिहां (ग)

(१४७) १. बोलइ वयण (ग) २. एक पुत्त मुहि सामी भया (क) एकु पुत्त, मो स्वामी भयउ (ख) एक पुत्त स्वामी हम भया (ग)

तुहि[१] पसाइ मुहि अैसौ भयउ, पेट[२] दाहु[३] दे[४] नंदण गयउ ।
हाथ जोडि बोलै रूकिमिणी, स्वामी सुधि करहु तसु[५] तणी ॥१४८॥
तव[१] हसि नारद बोलइ वयणु, सुद्धि[२] लेण चाल्यो परदवणु ।
सुर्ग पयालि पुहमि[३] ग्रह नहइ, चालि लेहु इम नारद कहइ ॥१४९॥

नारद का विदेह क्षेत्र के लिये प्रस्थान

कही बात नारद समुझाइ, पूरव[१] विदेह सपत्तउ जाइ ।
जहि खेमंधरू[२] सामि पहाणु, तहि उपनू केवलज्ञानु ॥१५०॥
समवसरण नानारिषि गयउ, तह चकवइ अचंभउ[१] भयउ[२] ।
चक्कवंति[३] मुणि[४] पूछिउ तहा, एसे माणस उपजइ[५] कहा ॥१५१॥

सीमंधर जिनेन्द्र द्वारा प्रद्युम्न का वृतान्त बतलाना

तउ जिनवर[१] बोलइ[२] सतिभाउ[३], जम्बूदीप[४] आहि सो ठाउ ।
भरहखेत[५] तहां सोरठ देसु, जयन[६] धर्म तहि चलइ असेसु ॥१५२॥

---

(१४८) १. तउ सामी किम जाइ कहियउ (क) २. वेटउ (क) ३. दुख (क) ४. ऐसे दे (क) ५. सुत (क)

(१४९) १. विहसि (क) २. सुधि करी लेस्यो परदमणु (क) सुधि करि चाहि लेउ परदवणु (ख) सुद्ध करि चलहि लेहि परदवणु (ग) ३. पुहविहे जहा (क), पुहमि जइ रहइ (ख) पुहवि जे अइहै (ग)

(१५०) १. पुव्व (क) २. पुणि पूर्वदिसि पहुता जाइ (ग) ३. सीमंधर (क ख) जमधूत (ग)

(१५१) १. अचंभो (क) २. सभापेसि पुणि पूछण लिया (ग) ३. तउ छत्री (क) ४. जिन (क) नाना रिषि तउ पूछइ तिहां (ग) ५. निपजहि (ग)

(१५२) १. जिनवर (क) २. उपवेसइ (क) ३. भाउ (क) तिह ठाइ (ग) ४. सुणु नानारिषि कहउ सभाइ (ग) ५. भरत क्षेत्र (क) ६. जइन (क,ख) जैन (ग)

सायर माझ[1] द्वारिका पुरी, जणु[2] सो इंद्रलोक ते[3] पडी।
राउ[4] नारायणु निमसइ जहा, एसै माणस उपजइ[5] तहा ॥१५३॥
ताकी वरणि आहि रुक्मीणी[1], धरम[2] वात सो जाणइ घणी।
ताकौ[3] पूत प्रदवणु भयो[4], धूमकेतु ता हडि ले गयो ॥१५४॥
वावण हाथ सिला हौ[1] जहा, वीर परदवणु[2] चाप्पो[3] तहां।
पूरव[4] जनम वैरू हौ[5] घणौ, धूमकेत सारिउ[6] आपणउ ॥१५५॥
मेघकूट जे[1] पवहि[2] ठाउ, तहि निवसइ वीजाहरराउ[3]।
काल संवर आयो[4] तिहि ठाउ, देखि कुवरू लैगय[5] उठाइ ॥१५६॥
तहिं ठा विरधि करइ परदवणु, तिसकी सुधि न जाणइ कवणु।
वारह[1] वरिस रहइ[2] तिहि ठाइ, फुणि सो[3] कुवर द्वारिका[4] जाइ ॥१५७॥
निसुणि वयण मनि[1] नारद रल्यउ[2], नमस्कार[3] करि वाहुडी चलिउ।
चढि विवाण मुनि आयो तहा, मेहकूटि[4] मयरद्धहु[5] तहा ॥१५८॥

---

(१५३) १. मज्झि (क) माहि (ख,ग) २. जाणे (क) जाणी (ग) ३. अवतारी (क) उतरी (ग) ४. तउ (ग) ५. निपजइ (क ग)

(१५४) १. अछइ (ग) २. धम्मं तणी मति जाणइ घणी (क) ३. तहु कहु (ग) ४. जनमउ(ख)

(१५५) १. हइ (क) थी (ख) (ग) २. लेइ कुंवरु (ग) ३. चंपियउ (क) चापियउ (ख) चंपासो (ग) ४. पुव्व (ख) पूर्व (ग) ५. बहु (क) हउ (ख) हइ (ग) ६. साधउ (क) सान्या (ग)

(१५६) १. जो (क) जव (ख) हइ (ग) २. परवत (क) पावइ (ख) विचडा (ग) ३. विज्जाधर (क) विज्जाहरु (ख) विद्याहरु (ग) ४. आविउ तह (क) आयउ ताहि (ख) आयतिसु (ग) ५. उट्ठाइ (क) उचाइ (ग)

(१५७) १. सोरह (ख) २. जाहि (ग) ३. वाहुडि कथा (क) पुन सो कुमरु (ख) ४. दुवारिका (ख)

(१५८) १. रिषि (क) सो (ग) २. रलियउ (क) चलिउ (ख) रलिउ (ग) ३. जिरा वंदी चिलि (क) ४. मेघकूट (क,ख,ग) ५, मइंराधा (ग)

देखि कुवरू रिषि[१] मन विहसाइ[२]. फुणि[३] वारमइ सपतउ जाइ।
भेटी जाइ तेण[४] रूकिमीणी. कही सार तसु[५] नंदण तणी ॥१५९॥
जिन[१] रूपिणि हीयरा[२] विलखाइ, बरिस वारहै[३] मिलिइ[४] आइ।
मो[५] सिहु कहियउ केवली[६] वयण, निश्चे आइ मिले परदवण ॥१६०॥

प्रद्युम्न के आने के समय के लक्षण

उकठे[१] आंव[२] फलइ सैहार[३], कंचण कलसइ दीपइ[४] वारि।
कूवा[५] वारि जे सूके खरे, दिसइ निंम्पल[६] पाणी भरे ॥१६१॥
खीर[१] विरख सव[२] दीसहि फले, अरू आंचलइ[३] होइ हुहि[४] पियरे[५]।
थण हर जुवल[६] वहै[७] जव खीरू, तव सो[८] आवइ साहस धीरू ॥१६२॥
कहि सहनाण गयो[१] मुनि जाम, रूपिणि मन संतोषो ताम।
पाख मास दिन[२] वरिस गणाइ, वाहुरि[३] कथा वीर पहजाइ ॥१६३॥

---

(१५९) मनइं (क) मनमहि (ग) २. विगसाइ (ग) ३. खिणि बारवती पहुतो (क) फुणि बारवइ सपत्तउ (ख) फुनि सो नयरी द्वारिका (ग) ४ तिहा (क) तहां (ख) तवते (ग) ५. ते (क) तिसु (ग)

(१६०) १. मन ग) २. हियडइ (क,ख) हियइ (ग) ३. बारमइ (क) सोरह (ख) ४. मिलसी (क) में मिलहइ (ख) मिलइगी (ग) ५. मोहिसउ (क) मुहिसहु (ख) मोस्यो (ग) ६. श्री जिनवर (क)

(१६१) १. सूके (क) उकट्ठे (ग) २. अंब (क ग) ३. सँवार (क) सइहार (ख) सहिसउ बार (ग) ४. दीसहि (क) ५. कूवावाविजे (क) कूव वाइजे (ख) सूहडी वावडि (ग) ६. निरमल (क,ख,ग)

(१६२) १. क्षषि (ग) २. सभि (ग) ३. अंचल (क ग) आंचल (ख) ४. दीसइ (क) होसहि (ख) दीसहि (ग) ५. पीयले (क,ख,ग) ६. युयल (क) जुगलि (ग) ७. बहु (क) ८. ते (क) परि (ग)

(१६३) १. सु गयउ (ख)

नोट—(ग) प्रति का प्रथम चरण निम्न प्रकार है—

काहसि दिन पूगे सब जान तउ २. नइ (क) ३. बाहुडि (क ख) बाहुडि (ग)

तृतीय सर्ग

यमसंवर द्वारा सिंहरथ को मारने का प्रस्ताव

तहि निमसै[1] सिंघरहु[2] नरेसु, तिहिसिहु विगहु[3] चलिउ असेस ।
जवसंवर[4] जव[5] करइ उपाउ[6], को भाराइ इहि[7] को भरिवाउ ॥१६४॥

कुवर पांचसौ[1] लए हकारि[2], रण जीतहु संघरहु[3] पचारि ।
सिंघ जुध[4] जो जाणै भेउ, वेगि आइ सो[5] वीरा लेउ ॥१६५॥

कुवरन नियरौ[1] आवै कोइ[2], तव विहसि करी वीवो[3] लेइ ।
मोंकहु सामी करहु पसाउ, हउ रण जिणमु[4] सिंघरहु राउ ॥१६६॥

तउ नरवै वोलइ सतिभाउ, वाले कुवर[1] न तेरउ[2] ठाउ ।
जुझ तणउ नहि[3] जाणइ भेउ, तिम[4] करि तुहिकहु[5] आइस[6] देइ ॥१६७॥

---

(१६४) १. निवसइ (क ख ग) २. 'संघरथ (क) सिंघरहु (ख) सिंघराय (ग) ३. तह सो विग्रहुते (क) ताहि सहु विगाहु चलिउ (ख) तिसस्यों विग्रहु चल्या (ग) ४. जम (क) ५. तव (क ख ग) ६. पसाउ (क) ७. किम भानउ एह नउ भडिवाउ (क) किम भानइ इहि कउ भडिवाउ (ख) कोइ भानो इसु का भडिवाउ (ग)

(१६५) १. पांचसइ (क ख) पंचसइ (ग) २. बुलाइ (ख,ग) ३. सिंघराउ रणि जीतहु जाइ (ग) ४. जुझ (क) जुज्झ (ग) ५. तवहि विहसि तव बीडा लेइ (क) तउतुहि घसिरि बीडा लेहु (ख) वेगि आइ सो वाडी लेइ (ग)

(१६६) १. वेटउ (ख) नियडउ (ग) नेडा (ग) २. कवसु (ग) ३. बीडा मागइ सोइ (क) करिवीरु बोलेइ (ख) वोल्यो परववसु (ग) ४. जीतस्यों (क) रणि जीतउ (ख ग)

(१६७) १. कुवरन (क ग) कुमरन (ख) २. तेरा (ग) ३. महु (क) मझ (ख) ४. जिम (क) किम (ख) किमइ (ग) ५. फिरि (क) ६. ताफे तोहि (क)

वालउ[1] सूरु आगासह[2] होइ, तिनको[3] जूझ सकइ धर कोइ ।
वाल[4] वभंगु[5] डसइ[6] सउ आइ, ताके[7] विसमणि मंतु न आहि[8] ॥१६८॥

सीहिणि[1] सीहु जणै जो वालु, हस्ती[2] जूह[3] तणो षै कालु ।
जूह छाडि गए वण ठाउ, ताकह[4] कोण कहै भरिवाउ ॥१६९॥

वालउ[1] जै[2] वयसंदरू[3] सोइ[4], तिहि[5] सुधि[6] न जाणइ कोइ ।
रउदव्वाल[7] हुइ जै परजलइ[8], पुहमि[9] उझाइ[10] भासमु[11] सो करइ ॥१७०॥

तिम[1] हौ वालै[2] राकौ[3] पूत, मोहि[4] आइस देहु तुरंतु ।
अरियण दलु भानउ भरिवाउ, जौ[5] भाजउ तो लाजइ राउ ॥१७१॥

---

(१६८) १. बाला (ग) २. अगासह (क ख) आयसिहि (ग) ३. ताको तेज न सहिहइ कोइ (क) ताको तेज न वरनै कोइ (ख) तिसुका तेज न सहई न कोइ (ग) ४. वालउ (क) बालइ (ग) ५. सर्प्पं (क) भुयंगु (ख) भुयंगि (ग) ६. डसइ जो आवि (क) डसइ जइ कोइ (ख) डस्या जो कोइ (ग) ७. तिहके (क) ताकै (ख) तिसुकइ (ग) ८. होइ (ख,ग) विशि कोइ नाहि उपाव (क)

(१६९) १. सीह (क) सीहु (ख) सिंघु (ग) २. हाथी (क) हसती (ख) ३. जूथ (क) यूथ (ग)

४. जवहि पडहि तव गिधइ भाउ । भाजि जूथ जाहि पलाइ (क)
जवहि पडइ तहि कउ गंध वाउ । भाजहि जूह छोडि वण ठाउ (ख)
जे उन्ह ताहि पडइ गंध वाउ । भाजहि यूथ छोडि वन ठाउ (ग)

(१७०) १. बाले (ग) २. जे (क ग) ३. वेशांवर (क) वइसावरू (ख) वइसानरु (ग) ४. होइ (क ख ग) ५. तिहको (क) तहको (ख) तिसुको (ग) ६. बुद्धि (ग) ७. दव दाझइ लुह जग पजुले (क) सइझाल जे हुइ परजलइ (ग) ८. पज्जलइ (ख) ९. पुहवि (ग) १०. दझाइ (क ख) दाझावइ (ग) ११. भसम सो (क ख) भसमी (ग)

(१७१) १. तिमहो (क) तिवहउ (ग) २. बालउ (क) बालु (ख) बाला (ग) नाइनो पुत्र (क) रायकउ पूतु (ख) राइका पुत्र (ग) ४. मोहक (क) मुहिकहु (ख) मोकहु (ग) ५. जं जं भाजउ तउ लीजइ राउ (ग)

निसुणि वयण मन[1] तूठउ राउ, मयण कुवर कहु करहु पसाउ ।
कालसंवर तव[2] वीडा देइ, हाथ पसारि मयणु[3] तब लेइ ॥१७२॥

प्रद्युम्न का युद्ध भूमि के लिये प्रस्थान

वस्तुबंध—भयउ आयसु चल्यउ[1] परदवणु ।
चउरंग[2] दलु[3] साजिउ,[4] पडहु तूर वहु[5] भेरि वजइ[6] ।
तहि[7] कलियलु वहु उछल्यउ, जाणौ[8] अकाल[9] घण मेघ गर्जइ[10] ॥
रह सज्जेह[11] गैयर गुडे तुरिहय[12] पडियउ पलाणु ।
हुइ[13] सनधु चलिउ मयणु गयणि न सूझइ भाणु ॥१७३॥

चौपई

मयण चरितु निसुणहु धरि भाउ, जहि रण[1] जिणिवि सिधरह[2] राउ
.... १७४॥

---

(१७२) १. मनि हरषिउ (क) ग प्रगति में—सुणि करि बात अभेषउ राउ, मयण कुवर कहु भया पसाउ (ग) २. जब (ख) ते तव (ग) ३. प.वमणु (क) परवमणहु (ग)

(१७३) १. चलिउ (क) २. चाउरंगु (क ख) ३. बलु (ख) ४. सज्जियउ (ख) ५. काइ (क) ६. वज्जहि (ख) वाजहि (क) ७. तउ तिह (क) ८. जिसउ (क) जणु (ख) ९. अंबरह (क) १०. गाजइ (क) गज्जहि (ख) ११. साजे (क) सज्जे (ख) १२. तुरीयण (क) १३. इसी सनिधि (क) सण्ढ (ख)

(१७४) १. जिणउ (क) जीतिउ (ख) २. सिधरयु (क)
ग प्रति में १७३ और १७४ वो छन्द निम्न रूप से है—
भया अइसु २ ताम परवमणु,
चतुरंगी सेन सज्जिय । पडह भेरि बहुतु बज्जहि ॥
तह कलियरु बहु उछलिउ । जणु आकाश ते मेहु गज्जइ ॥
सर पाइक अरु बहुतु बल । तुरियह पडे पलाण कियो ॥
पयासाउ मयणि भइ । गयणभ सूझइ भाणु ॥

ध्रुवक

कुवर[2] पलाणिउ सब[3] जगु जणिउ[1], गयणिहि उछली[4] खेह ।
रहिवर साजहि वाजे वाजहि, जाणै[5] भादों के मेह ॥
जे[6] अरिदल[7] भंजइ परीवल गंजहि, सुहड चले[8] अप्रमाणु[9] ।
ते भणइ[10] सभूते[11] जाइ[12] पहुते, सवल वीर समराण ॥१७५॥

चौपई

आवतु देखि[1] कुमर[2] परदवणु, भणै सिंधु यौं[3] वालो[4] कोणु[5] ।
वालो[6] रण[7] कि पठावइ कोइ, इहिसउ[8] भीडत[9] लाज मो[10] होइ ॥१७६॥
फुणि[1] फुणि वाहरी जंपइ राउ, किम करि वालेहि घालै घाउ ।
देखि मया[2] चित[3] उपनी ताहि, वाल कुवर वाहुडि घर जाहि ॥१७७॥

प्रद्युम्न एवं सिंहरथ में युद्ध

निसुणि[1] वयण[2] कोप्यो परदवणु, हीण बोलु तै बोल्यो कवणु ।
वालउ कहत[3] न[4] लाभइ ठाउ, अब भानउ[5] तेरउ भरिवाउ॥१ ७८॥

---

(१७५) जणियउ (क) जाणिउ (ख) २. तव राजकुमर पलाणइ (ग) ३. सह (क) सहु (ग) ४. उडी (क) ५. जिम (क) जाण (ख) जाणउ (ग) ६. जब (क) ७. अरियण (ग) ८. सघायह (क) ९. रण सामि (क) ले प्राण (ग) १०. भये (ख) ११. रथ-जूते (ग) १२. प्राइ (ख)

(१७६) १. देखिउ (क) देखा (ग) २. तिहि (ग) इहु (ख ग) ४. वालहु (ख) वालकु (ग) कवणु (ख ग) क—प्रति—कहे सिघरथ छत्री कवण ६. वालउ (क ख) वाला (ग) ७। रिणिमहि (क) रणिहिं (ग) ८. एह सो (क) इहु सिहु (ख) इसु स्यों (ग) ९. भिरत (क) तिडत (ख) १०. न (क) मुहि (ख) मै (ग)

(१७७) १. वाला देखि जंपियो राउ (ग) २. दया (ख) ३. मनि (ग) क प्रति—तो देखत मोहि मनु विगसाइ, उठि कुमर वाहुडि घरि जाहि (क)

(१७८) १. सुणे (ग) २. वचन (ग) ३. कहि (ग) ४. किव (ग) लाज नहि ठाउ (क) ५. इव (ग)

तव रावत काढइ[1] करवाल, वरिसहि वाण मेघ असराल[2] ।
भिडइ सुहड[3] करि असिवर लेइ, रहु[4] चूरइ मइगल पहरेइ ॥१७९॥
मैंगल[1] सिंहु मैंगल[2] आ भिडइ, हैवर[3] स्यौ[4] हैवर आ[5] भिडइ ।
पंचावथु[6] जूझू[7] तहि[8] भयउ, गीध मसाण तहा उठीयउ[9] ॥१८०॥
सैयन[1] जूझि परीधर[2] जाम, दोउ वीर भीरे रण ताम ।
दोइ वीर खरे[3] सपराण, दोइ करइ सिंघ जिमू ठाण ॥१८१॥
मलु[1] जूझते दोउ भीडइ, दोउ वीर[2] अखाडो करहि ।
हारिउ सिंह गयउ भरिवाउ, बांधिउ[3] मयण गलै[4] दे पाउ ॥१८२॥
वस्तुबंध—जवहि जित्यउ[1] कुवर परददणु
सुर देखइ ऊपर[2] भए, वंधि[3] स्यंघरहु कुमर चल्लिउ ।
मयणु सुगुणु सधेहि वुल्लिउ, तव सज्जण आणंदियउ ॥
देखि राउ आणंदियउ, तू सिवि[4] कीयउ पसाउ ।
महु णंदण जे पंच-सय, तिहि उपर तू राव ॥१८३॥

चौपई

मयण चरितु[1] निसुणि सवु कोइ, सोला लाभ परापति होइ ।

---

(१७९) १. करि ले (ग) २. असराल (क ख ग) ३. कुमर (ख) ४. रहवर चूरमइ गल विहरेइ (क) तीसरा और चौथा चरण ग प्रति में नहीं है ।

(१८०) १. स्यो (क, ग) २. रण (ग) ३. रहवर (ख ग) पाइक (क) ४. सिउ (ख) ५. संचडिउ (ख) तुलि चढं (ग) ६. हयवर सेती हयवर सार (क) पचावत्थु (ख) पंचवरसु (ग) ७. जव (ख) ८. गिद्ध (ख) गर्भ (ग) ९. उठि गयउ (ख) उठि करि गयउ (ग) (क) इणि जूझ करत वडवार (क)

(१८१) १. सेना (क ख) सैन्या (ग) २. रलि (ग) ३. वहरी (ग)

(१८२) १. मारन (क) माल (ख,ग) २. राउ (ग) ३. बंधि (ग) ४. गलि (ग)

(१८३) १. जाम (क ख) २. अचिरज (क) ग प्रति— जइ कीयो तव सूरि तहि ३. वांधि (ख ग) ४. ठिवि (ख) ५. इहु (ख)

(१८४) १. सोलह (क ख ग) २. वेवा पड घण सो वन जयउ हयोह चढि सिघरचु चरि गयउ (यह पाठ क प्रति में है) ग प्रति में इस छन्द का पूरा पाठ नहीं है ।

विजाहर तव करइ पसाउ, बांध्यो छोडि स्यंघरउ राउ ।
देइ[2] पटु पुरिए आकउ लयउ, समदिउ स्यंघराउ घर गयउ ॥१८४॥

तव[1] कुम्वरन्हि[2] मन विसमउ[3] भयउ[4], जियत[5] वुआल[6] हमारउ भयउ ।
इतडो[7] राइ न राखियउ[8] मान, पालकु आणि कीयउ परधानु ॥१८५॥

तवहि[1] कुवर[2] मिल कीयउ उपाउ, अव[3] भानउ इनको[4] भरिवाउ ।
सोला गुफा दिखालइ[5] आजु, जैसे होइ निकंटकु[6] राजु[4] ॥१८६॥

कुमारों द्वारा प्रद्युम्न को १६ गुफाओं को दिखलाने के लिये ले जाना

एहु मंत्र[1] जिए भेटइ[2] कवणु[3], लियउ[4] वुलाइ कुमर परदमणु ।
कियो मंतु सव कुमर[5] मिले, खेलण[6] मिसि वण क्रीडा चले॥१८७॥

भणहि[1] कुवर निसुणहि[2] परदवणु, विजयागिरि उपर जिण भवणु ।
जो नर[3] पूज करइ नर सोइ[4], तिहि[5] कहु पुन्न[6] परापति होइ ॥१८८॥

---

(१८५) १. सव्व (ग) २. कुमर (क) कुमरहं (ख) कुवरिहि (ग) ३. विशमो (क) विसमा (ग) ४. कियउ (क) भया (ग) ५. जीवत (क) जीवतु (ख) वेखुइ (ग) ६. आलु (क) अहलु (ख) हालु (ग) ६. गयउ (ख) थयउ (क) कीया (ग) ७. एतउ (क) इतनउ (ख) इतना (ग) ८. राखिय (क) राखिउ (ख) राख्या (ग)

(१८६) १. तव (क) २. कुमर (क) कुमार (ख) कुवरिहि (ग) ३. एहनउ (क) इसुका (ग) ४. इव भागा (ग) इव भनि हिया कउ भडिवाउ (ख) ५. दिखावहि (क ग) ६. निकंटो (क) निकेरहु (ख) ७. जिउ हम (ग)

(१८७) १. मंतु (ख ग) २. भेटउ (क) भेटइ (ख) मोटइ (ग) ३. कवण (क) कउण (ग) ४. चालहु जाहि लेण (ग) ५. भाई सवि (क) ते खिण महि (ग) ६. खेलउ (क) अन्तिम चरण का (ग) प्रति में निम्न पाठ है—

जाइ जो लेण भुचति कीडा को चले ।

(१८८) १. भाजहु (ग) २. वेखउ (ग) ३. तिहु (क) तह (ख) तिन्ह (ग) ४. कोइ (क,ख.ग) ५. तिह को (क) तिसको (ग) ६. पुनि (क) पुन्न (ख,ग)

निसुणि वयण हरष्यो[१] परदवणु, चढि गिरवरि[२] जोवइ[३] जिणभवणु ।
चढी[४] जो देखइ[५] वीर पगारू,[६] विषमु नागु करि मिल्यउ[७] फुकारू[८] ॥१८९॥

हाकि मयणु विसहरस्यो[१] भीडइ,[२] पकडि पूछ तहि[३] तलसीउ करइ[४] ।
देखि वीरू मन[५] चिंभिउ[६] सोइ, जाख[७] रूप होइ[८] ठाढो[९] होइ ॥१९०॥

दुइ कर जोडि करइ[१] सतिभाउ, पूव्वहुँ[२] हूं तु[३] कण्णखउराउ[४] ।
राजु छाडि[५] गयउ[६] तप करण,[७] सोलह विद्या आफी[८] धरण ॥१९१॥

हरि[१] घर[२] ताह होइ अवतरणु,[३] तुहि[४] निरखि[५] लेइ परदवणु[६] ।
यह[७] थोथी तसु राजा तणी, लेइ सम्हालि[८] वस्त[९] आपणी ॥१९२॥

---

(१८९) १. हरषिउ (क,ख) कोपा (ग) २. वे चढि गिरि (क) चडिवि सिखर (ख) चडि गिरवरि (ग) ३. वंदे (क) ४. चढियउ (क) चडियउ जो (ख) चडिजे (ग) ५. जोवइ (ख) ६. वरि शृंगारि (क) वीरु पगार (ख) वीरु पगारि (ग) ७. मिल करइ (क) करि मिलिउ (ख) उठिउ (ग) ८. चिकार (क) फुंकार (ख ग)

(१९०) १. सिहु (ख) सउ (ग) २ भिडिउ (क ख ग) ३. तिन (क) तिहि (ग) ४. शिरु कियउ (क) सिरु करिउ (ख) सिरु करया (ग) ५. मइ (क) मनि (ख,ग) ६. विशनव होइ (क) जंपइ सोइ (ग) ७. जखि (क) जक्ख (ख) जख (ग) ८. करि (क) हुइ (ख) सो (ग) ९. रूठउ कोइ (क) वइठा होइ (ग)

(१९१) १. कहइ (क,ग) २. पुवइ हूं (क) पूरवह (ग) ३. हूँ तउ (क) हितू (ग) ४. कणंखउ (ख) कनखल (ग) ५. छोडि (क ग) ६. गयो (ख) कहुचल्या (ग) ७. चरणि (क ख ग) ८. आपी (क) आपो (ग)

(१९२) १. हरित्थर (क) २. जाइ (क) जाह (ख) ३. अवतारिण (क) अवतणी (ख) ४. लेहि (क ख) ५. न राखि (क) ६. लिहि परवमखु (क) विद्या आपणी (ख) ७. हइ छोड (क) अवणी (ख) ८. संभारि (क) ९. वसत (क) वसतु (ग)

नोट—१९२ वां छंद (ग) प्रति में नहीं है--

१६ विद्याओं के नाम

हिय–आलोक अरू मोहणी[१], जल–सोखणी रयण–दरसणी ।
गगन वयण पाताल गामिनी, सुभ–दरिसणी सुधा–कारणी[२] ॥१९३॥

अगिनि–थंभ विद्या–तारणी[१], वहु–रूपणि[२] पाणी–वंधणी[३] ।
गुटिकासिधि पयाइ होइ, सवसिद्धि जाणइ सवु कोइ ॥१९४॥

धारा–वंधणी वंधउ धार, सोला विद्या लही अपार ।
रयणह जडित[१] अपूरव जाणि, कणय मुकटु तहि[२] आफउ[३] आणि ।१९५।

आफि मुकट फुणि[१] पायह पडिउ, विहसि वीरू तहा[२] आगइ[३] चलउ[४] ।
सो मयरद्धु[५] सपत्तउ[६] तहा, हरिसय पंच[७] सहोयर[८] जहा ॥१९६॥

कुमरन्हि पासि मयणु जव गयउ, मन मह तिन्हहि अचंभो भयो ।
उपरा उपरू करहि मुहं चाहि, दूजी[१] गुफा दिखालइ आणि[२] ॥१९७॥

---

(१९३) १. गेहणी (क) २. सुख कारणी (क) नोट—मूल प्रति से भिन्न प्रथम चरण के हिय के स्थान पर एक संमउ (क) एक मूड़ा (ख) एक सुरही (ग)

(१९४) १. विद्याकारणी (क) २. चन्द्ररूपिणी (क) ३. पवन-बंधणी (ख)

(१९५) १. जडिउ (क) राइ (ग) २. तिणि (क) तहि (ख) तिह (ग) ३. दीना (क) सो (ग)

(१९६) १. ति (क) २. ताहि (ख) तव (ग) ३. आगलि (क) अग्गहा (ग) ४. सरिउ (ग) ५. मइरधउ (क) मइराधा (ग) ६. पहुतो (क) आयो (ग) ७. हिव पंचसह (क) हहिसयपंच (ख,ग) ८. सहोदर (क ग)

(१९७) १. बीजी (क) २. जाइ (क) आहि (ख) ताहि (ग)

काल गुफा कहिए तसु नामु[1], कालासुर[2] दैयतु[3] तहि ठाउ[4]।
पूरव चरितु[5] न मेटइ कवणु, तिहि[6] सिहु जाइ भिरइ[7] परदवणु ॥१९८॥
हाकि[1] कुवर[2] धर[3] पाडिउ सोइ, हाथ जोडी फुणि[4] ठाढो होइ।
पवरिशु[5] देखि हियइ अहि डरइ[6], छत्र[7] चवर ले आगइ धरइ ॥१९९॥
वसुणंदउ आफइ विहसाइ, हुइ किंकर फुणि लागइ[1] पाइ।
फुणि सो[2] मयणु अगुहडो[3] चलइ, तीजी गुफा आइ[4] पइसरइ[5] ॥२००॥
नाग गुफा दीठी[1] वर वीर[2], अति[3] निहालिउ[4] साहस धीरू।
विषमु नागु घणघोर[5] करंत, सो तिहि आइ भिडिउ मयमंतु ॥२०१॥
तव[1] मयण मन करइ[2] उपाउ, गहि[3] विसहर भान्यउ[4] भरिवाउ।
देखि अतुल वल[5] संक्यो[6] सोइ[7], हाथ जोडि फुणि उभो[8] होइ ॥२०२॥

---

(१९८) १. सुहनाणि (क) तिह नांव (ख) २. काल सरोवर (क) कालु संभु (ग) ३. देखो (क) दीन्हउ (ग) ४. ठाणि (क) ठाउ (ग) ५. रचित (क) चित्त (ग) ६. तिह ठा (क) तिहि सहु (ख) तिन्हस्यो (ग) ७. भिडइ (क) भिडिउ (ख) लडया (ग)

(१९९) १. होक्या (ग) २. सो (क) पछा (ग) ३. पाडइ (क) पडया (ग) ४. छिणि (क) सो (ग) ५. पौरिष (क) पउरिषु (ख) पउरषु (ग) ६. प्रति डरइ (क) गहवरइ (ग) ७. छन्नू (ग) छत्तु (ख)

(२००) १. लागा (ग) २. ते (क) सु (ग) ३. आगउ चलइ (क) तौ अगहा सरइ (ग) ४. जाइ (ग) ५. संचरइ (क)

(२०१) १. वेढी (क) जवदीठी (ख) २. वीरि (ख) ३. धूत (क) बहुतु (ख) रूप (ग) ४. निकलउ (क) निहाली (ग) ५. धुरधरंत (क)

(२०२) १. तबही (क ग) २. करइ (क) बहुकिया (ग) ३. पब (क) तहि (ख) ४. भानो (क) भानउ (ख,ग) ५. प्रतिबरु (ग) ६. संकिउ (क ख) संक्यां ७. लोइ (ग) ८. करिविनयं सोइ (क) सो ऊभा होइ (ग)

मयण कुवर बलिवंतउ जाणि, चंद्र[1] सिघासणु आप्पउ[2] आणि ।
नागसेज[3] वीणा पावडी, विद्या तीनि आणि[4] सो[5] धरी ॥२०३॥
सेनाकरी[1] गेह–कारणी, नागपासि विद्या–तारणी ।
इनडौ[2] लाभ तिहा तिह[3] भयो, फुणि सो न्हाण[4] सरोवर गयो ॥२०४॥
न्हात देखि धाए[1] रखवाल, कवण पुरिषु तू चाहिउ[2] काल[3] ।
जो सुर राखि सरोवरू[4] रहिउ[5], तिहि[6] जल न्हाइ[7] कवण तू[8] कह्यउ[9] ॥२०५॥
तवइ वीर बोलइ प्रजलेइ[1], आवत वज्र[2] झेलि को लेइ ।
जे[3] विसहर मुह घालै हत्थ, सो मोसहु[4] जुझणह[5] समत्थ[6] ॥२०६
तव रखवाले[1] मिलइ[2] साण, विषमु वीरू[3] यह नाही मान[4] ।
उपरा उपरू[5] करइ[6] मुह चाहि, मयरधउ[7] वरू[8] अप्पहि[9] आणि ॥२०७॥

---

(२०३) १. विय (ग) २. वीधउ (क) आफिउ (ख) ३. नाग पाशि (क) ४. आई (क) ५. तिनि (क) तिहि (ख ग)

(२०४) १. सनारी (क) सेना कारणी (ख) २. एवडउ (क) चडतु (ख) इतना (ग) ३. थी (क) ते (ग) ४. न्हाण (क ख,ग)

(२०५) १. आये (क) आया (ग) २. चंपियो (क) चापिउ (ख) चल्यो (ग) ३. कालि (क) अकाल (ग) ४. भरिउ (ख) ५. सो (क) ६. सरि (क) ७. न्हाण (क ख) ८. तुह (क ख) ९. वयउ (क) कहिउ (ख)

ग प्रति में ३–४ चरण नहीं है ।

(२०६) १. प्रजलेइ (क) पगलेइ (ख) इतनं सुणत मयण परजलेइउ (ग) २. आवत तुझु झाडिव करि लेहु (क) अवतु वजु झलिय को लेइ (ख) आवतु बालि झकोलवि चाल्यो (ग) ३. जो (क) तव (ख) ४. हमसे या (क) ५. नहि झूझ करण (क) ६. मूलपाठ हाथ और समथ

(२०७) १. रखवाल (क) २. मिलियर अवशाणि (क) मिलवहिसपनु (ख) बोलण ३. हम (क) इहु (ख ग) ४. जाणइ कवणु (ख) सानि (ग) ५. रूपु (ख) ६. कहहि (क,ख) करइ (ग) ७. मयरधा (क) भयरद्ध (ख) मइराध्य (ग) ८. वर (क) बलु (ग) ९. आफहि आह (क) आफहि ताहि (ख ग)

अमिनिकुंड गउ[1] जव वर वीरू, करइ आण हिव[2] साहस धीरू
उठउ[3] सरवरू[4] चलियउ[5] जाणि, अगिनि कपड[6] तहि[7] आपिउ आणि॥२०८॥
लेतइ[1] वीरू अगाडो[2] चलइ[3], विरख[4] आंव तो दीठउ फल्यउ।
आउ[4] आंव[5] तोडी सो[6] खाइ[7], वंदरूदेउ[8] पहुतउ आइ ॥२०९॥
कवणु वीरू[1] तू तोडहि[2] आम, मुहिसिहुं[3] आइ भिडहि[4] संग्राम।
कोपि मयणु[3] तव[4] तिहिपह गयउ, तिहुसहु[5] जुझु महाहउ कियउ॥२१०॥
मयण पचारि जिणिउ[1] सो देउ, कर[2] जोडइ अर[3] विणवइ सेव।
पहुममालु[4] दुइ हाथह लेइ, अर पावडी जुगलु[5] सो देइ ॥२११॥
तउ[1] लइ मयण कयथवण[2] गए[3], पयठइ[4] मयण[5] फुणि[6] उभे[7] भए।
गयउ[8] वीर जउ[9] वणह मझारि, दूयरू[10] गौयरू उठिउ विचारि[11]॥२१२॥

---

(२०८) १. गयउ (क) पहुता (ग) जब गइयउ (ख) २. आस हिव (क) झंपता साइ (ख) झंपतह (ग) ३. तूठउ (क,ख) तूहा (ग) ४. सुरवर (क ख) ५. चालिउ (क) चाला (ख) ६. कपटु (ख) निपाटु (ग) ७. आयो जाणि (क) दीन्हा आणि (ग) नोट—मूलपाठ आणहिव के स्थान पर आपतेवा

(२०९) १. तितलइ (क) तेलइ (ख) लेइ (ग) २. त आगो (क) अगुहड़ो (ख) अगहा (ग) ३. बलिउ (ख) चालियो (ग) ४. वृक्ष (ग) ५. अंव (क) अशोक (ग) ६. को (क, ख) ७. फणिउ (क) फलिउ (ख) फुलियो (ग) ८. वनरदेव (क)

(२१०) १. अंव (क) आंव (ख ग) २. समाहि (क) ३. मोस्यो (ग) ४. केह (क) तिसु (ग) ५. स्यो (ग) माहि तिनि कियो (क) मालावरझु भयो (ग)

(२११) १. जिण्यो (क) २. दुइ कर जोडि सु विनवइ सोव (ग) ३. बहु (क ख) ४. पुहप (ख ग) पहुप (क) ५. युगल (क) पगहु (ग)

(२१२) १. तव ले (ख ग) २. कयत्थ (ग) ३. गयउ (ग) ४. जहठइ (ख) पइठि (ग) ५. वीरु (ग) ६. तह (ख) सो (ग) ७. अभा भया (ग) ८. ले ले मयण गउ (क) ९. जे (ग) १०. दुद्धरु (ख) दुवर (क) रूवरू (ग) ११. विकारि (क ख)

नोट—२०९ का चौथा चरण (क) प्रति से लिया गया है।

सा[1] गैयरू[2] गरूवो[3] मयमंतु, हाथि[4] कुम्वरूस्यो[5] भिरउ[6] तुरंतु ।
मारि[7] दंतुसल[8] तोडइ सोइ, चडिवि कंधि करि[9] अंकुस देइ[10] ॥२१३॥
पुरिण वावी[1] लइ गए[2] कुम्वार[3], तइ[4] विसहरू रिणवसइ रगंकालु[5] ।
जाइ वीरू[6] तहां उपर चढइ[7], विसहर निकली मयरगस्यो[8] भिडइ॥२१४॥
तहि[1] गहि पूछ फिरावइ सोइ, विलख वदनु तउ[2] फुरगवइ होइ ।
फुरिण तिहि विसहर सेवा करी, काममूंदरी आफी[3] छुरी ॥२१५॥
मलयागिरि पर[1] जव गयउ[2], करि विसादु[3] फुरिण[4] उभउ[5] भयउ ।
अमरदेव तहि आयउ धाइ, निजिरिण[6] कंद्रप धरीउ रहाइ ॥२१६॥
हारयो[1] देवभगति तिस करइ, कंकरगु जुवलु[2] आरिण सो धरइ[3] ।
सिखरू मुकट्ट देइ[4] अविचारू[5], आपिउ[6] आरिण[7] वस्त उनिहारू[8] ॥२१७

(२१३) १. सो (क ख ग) २. गयवरू (क ख) ३. अतिहि (क) परभय (ख) गरूवा (ग) ४. हाकि (क ख ग) ५. कुमर सो (क) कुमरसिहुं (ख) कुवरू (ग) ६. फिडइ (क) भिडिउ (ख) उठिउ (ग) ७. मारिय (क) चूरि (ग) ८. फुरिण मानौ सोइ (ग) ९. तव (क) सो (ग) १०. लेइ (ग)

(२१४) १. वावडी (क) विविभौ (ग) २. गयउ (क) गया (ग) ३. कुमार (क,ख) कुवारू (ग) ४. तवहि (क) तहि (ख ग) ५. नयकारू (ग) तवहि सूर इक करइ झंकार (क) ६. तिह (क) तह (ख) तव (ग) ७. चढयो (ग) ८. तेह सो (क)

(२१५) १. तउ (क,ख) तव (ग) २. तव (क ख ग) ३. आपो (क) अरु आफी (ख) आपउ (ग)

(२१६) ऊपरि यो (क) ऊपरि जउ (ख) ऊपरि जे (ग) २. गया (ग) ३. विसहु (ख) विसमाहुसु (ग) ४. तिह (क) फरिण (ख) ५. ऊभा भया (ग) भयो (क) ६. कुंवर संघाति करइ लडाइ (क) रिणज्जि रिणकंद्रपु धरिउ रहइ (ख) जिण्या सुकंद्रप रहया थाराइ (ग)

(२१७) १. हास्यो देव भगति तिस कर इहि (ख) अमर देउ तवहा कारेइ (ग) २. युगल ते (क) जुगल (ग) ३. धरहि (क) जि दीनउ आइ (ख) आरिण सो देइ (ग) ४. दुइ (क) दियो (ग) ५. अतिचारू (क) ६. आप्पा (क) आफि (ख) ७. आरिणउ (ख) ८. उरहारू (क ख) अरूहारू (ग)

नोट—२१७ मूल प्रति में प्रथम चरण में 'अमरदेव तह आयउ धाइ' पाठ है ।

वरहासेण[1] गुफा ही[2] जहा, कुवरन्हि मयण पठायो[3] तहा[4] ।

तिहि ठा[5] अमरदेउ हो[6] कोइ, रूप वरह भयो[7] खण[8] सोइ ॥२१८॥

सूवर रूप आइ सो भिडउ[1], मारिउ[2] मयणि दंतसलि[3] भिडउ ।

पुष्प[4] चापु[5] दीनउ[6] सुरदेउ[7], विजहसंखु[8] आपिउ[9] तहि[10] खेउ ॥२१९॥

तवहि मयणु[1] वण[2] वयठउ जाइ, दुष्ट[3] जीउ निवसइ[4] तह[5] आइ ।

वण मा[6] मयण पहुँतउ तहा, वीरू[7] मणोजो[8] बांधिउ जहा ॥२२०॥

बाधिउ वीर मनोजउ छोड़ी, फुणि ते वण[1]मा[2] गए वहोडी ।

जहि[3] विजाहरि[4] एतउ कीयउ, सो[5] वसंतु खण बंधिवि लयउ[6] ॥२२१॥

फुणि सु मनोजउ[1] मनहविसाइ[2], कुम्वर मयण के लागइ[3] पाइ ।

हाथ जोडि सो कहा[4] करेइ, इंदजालु विद्या दुइ[5] देइ ॥२२२॥

---

(२१८) १. वारहसेन (क) वराहसेन (ख) वीरसेण (ग) २. हहि (क) जब गयउ (ख) थी जहां (ग) ३. पाठयउ (ख) ४. जिहां (क) तिहां (ग) ५. ठइ (ग) ६. हुवो (क) हुइ (ख.ग) ७. थकउ (क) भयउ (ख) भया (ग) ८. रहि (क) हुइ (ख) जनु (क)

(२१९) १. भया (ग) २. मारइ (क) मारि (ख,ग) ३. दंतूसल झडइ (क) दंतूसलु झडिउ (ख) हेठि सो दीया (ग) ४ पुहप (ख) पुहवि (ग) ५. चाप (क ख) चंपि (ग) ६, हनइ (क) दीना (ग) ७. सुरवेह (क) सुरदेवि (ख) ८. विजइ (क) विजय (ख वाजि (ग) ९. आयो (क) आफिउ (ख ग) १०. तिणि जहां (क) उनि खेउ (ग)

(२२०) १. उपवणि (ग) २. पयट्ठइ (क) वणि (ख) पइट्ठा (ग) ३. दुट्ठ (ख) ४. पुहोम (ग) ५. केराइ (ग) ६. महि (क) माहि (ख) ७. पहूतो (क) ८. मणोज (क) मणोजउ (ख)

(२२१) १. जण (क) २. माहि (क) महि (ख) ३. जिणि (क) ४. विद्याधरि (क) विज्जाहरि (ख) ५. सोतिणि कुमरि वेधि छिणि लियउ (क)

(२२२) १. मनोजव (क) २. मनि विहसाइ (क ख) ३. लागउ (क) ४. काहउ करइ (क) ले धरइ (क)

नोट:—ग प्रति में २२० से २२६ तक के छन्द नहीं हैं।

उवसंत[1] मनि[2] भयउ उछाहु, दीनी[3] कन्या ठयहु विवाहु ।
वहु भगति वोल सतिभाइ, फुणि[4] विजाहरू लागइ[5] पाइ ।।२२३।।
अरजुन[1] वगह वीरु[2] जउ जाइ, तिहि वण जरहु[3] पहुतउ[4] आइ ।
तिहिसउ[5] जुझ अपूरव होइ, कुसमवाण सर आपइ[6] सोइ[7] ।।२२४।।
फुणि सो वीरू विउण[1] खण गयउ, विलतरंग[2] सिरि[3] उभउ भयउ
विरखु[4] तमाल[5] तणउ[6] हुइ जहा, खण मयरद्ध[7] सपतउ तहां ।।२२५।।
फटिक–सिला वयठी[1] वर नारि, जपइ जाप सो वणह मझारि ।
तउ विजाहर पुछइ मयणु, वण मा वसइ णारि यह[2] कम्वणु ।।२२६।।
तउ[1] वसंत मन[2] कहइ[3] विचारि, रतिनामा यह वूचइ[4] नारि ।
अति सरूप सुहनाली[5] नयण[6], लेइ विवाहि कुम्वर परदवणु ।।२२७।।
तव[1] मयण मन[2] भो उछाहु, दीनी[3] कुवरि आढए[4] विवाहु ।
फुणि सो मयण सपतउ तहा, हहि[5] सयपंच सहोयर जहा ।।२२८।।

(२२३) १. तव वसंत (क ख) २. उछाहु (क ख) ३. दीधी (क) ४. भिणि (क) ५. लागउ (क)

(२२४) १. अज्जुण (क) २. वीरजव (क) जवि (क) ४. पहुतो (क) तिहसो (क) तिहिसिहु (ख) ५. होइ (क) ६. आफइ (ख)

(२२५) १. वलि खण (क) २. विरल लता (क ख) ३. उग (क) ताल (ख) ४. विरख (क) विरखु (ख) ५. तमालह (क) तमाल (ख) ६. हिये (क) ७. पहुतो (क) सपतउ (ख)

(२२६) १. सो (ख) २. इह (ख) सो (क)

(२२७) १. वलि वशंत (क) २. मनि (क) ३. करइ (क) ४. बीजी (क) ५. सुविनाली (क) १. मयण (क ख)

(२२८) १. तवहि (क ख) २. भयो (क ख) ३. वीठी (क ख) ४. तणउ (क) आढयो (ख) ५. खइ जइ (क) जहि सइ (ख)

२२४—मूल प्रति में तिहिसउ जुझ के स्थान पर तिहिसउज

पभणइ[1] कुवर मुहामुह चाहि, विषमु वीरु यह[2] मानन[3] आहि
सोलह गुफा पठायो[4] मयण[5], तह तह[6] मिलहि वस्त्र आभरण॥२२९॥
मयणह पौरिशु देखि अपारु, तव कुम्वरन्हि छोडिउ[1] अहंकारु
सवहू मिलि सलहिउ तहि ठाइ, पुनवंत कहि लागे पाइ ॥२३०॥
वस्तु बंध—पुन्नु वलियउ[1] अहि[2] संसारु[3] ।
पुन्नु[4] सेम्वहि सुर असुर, पुन्नु सफलु[5] अरहंत जंपिउ[6] ।
कत[7] रूपिणि उर अवतरिउ, धूमकेत[8] ले[9] सिला[10] चंपिउ[11] ॥
जमसंवरू कत[12] लै गयउ, कनयमाल घरि[13] तह गयउ विरिद्धि ।
सोलह लाभ महंतु फलु, पुग परापति सिद्धि ॥२३१॥

चौपई

पुन्नहि[1] राज भोगु महि होइ, पुन्नइ नरु उपजइ सुरलोइ ।
पुन्नहि अजर[2] अमर मुगण्णा[3], पुन्नहि जाइ जीव खिव्वाणा[4] ॥२३२॥

---

(२२९) १. चितइ (क) पभणहि (ख) २. एहि (क) इह (ख) ३. मन (क) माणु न (ख) ४. विसायी (क) पठायउ (ख) ५. मरण (क ख) ६. तिहि तिह (क)

(२३०) १. छोडियउ (क) छाडियउ (ख)

(२३१) १. गुरुवउ (क) २. आहि (क ख) ३. संसारि (क ख) ४. पुन्नि (ख) ५. फलइ (क) ६. जाणिउ (ख) जंपइ (क) ७. कितु (क) ८. कित धूमकेत (क) ९. कित (क) लइ (ख) १०. सिला तल (क) ११. चंपइ (क) चंपिउ (ख) १२. कहु (क) किसो पुनइ अविहड रिधि—यह पाठ 'क' प्रति में ही मिलता है। १३. नोट— मूल प्रति का पाठ 'घरि बंधि'

(२३२) १. पुनि जग माहि एहउ होइ (क) पुन्न वडउ जु जगत महि होइ (ख) २. अजरामर (ख) ३. पद ठाण (क) अमर विमाण (ख) ४. निरवाणि (ख)

प्रद्युम्न द्वारा प्राप्त विद्याओं के नाम

विद्या सोलह लइ[1] अविचार, चम्वर छत्र सिर मुकट अपार।
नागसेज जो[2] रयणनी[3] जरी[4], असीणी[5] कपड[6] वीणा पावडी ॥२३३॥
विजयसंख कौसाद[1] अपार, चंद्र संघासण[3] सेखण[2] हार।
सोहइ हाथ काममुंदरी[3], पहुपचाप कर[4] कडिहा छुरी ॥२३४॥
कुसुमुवाण कर हाथह लेइ, कुंडल जुवल[1] सम्वण[2] पहेरइ।
राजकुवरि दुइ परिणइ सोइ[3], चढि गैयर[4] फुणि ऊभौ[5] होइ ॥२३५॥
कंकण जुगल रयणि अनिवार, अर द्वइ[1] लेइ पुष्प[2] की माल।
न्हानी वस्त[3] गणौ[4] तह[5] कवण, इतनउ[6] लेनि[7] चलउ[8] परदवण ॥२३६॥
मयण कुवर घर चल्यो तुरंत, मेघकूट[1] खण[2] जाइ[3] पहुत।
जमसंवरु[4] भेटिउ[5] तिहि[6] ठाउ, बहुत भगति करि लागो[7] पाइ ॥२३७॥
भेटि राउ[1] फुणि[2] उभो[3] भयो, मयणु[4] कुवरु रणवासहू गयो।
कनकमाल[5] खण[6] भेटी जाइ, वहुत भगति करि लागो[7] पाइ ॥२३८॥

---

(२३३) १. जे सुविचार (क) २. सो (क) जा (ख) ३. रयणहि (ख) रयणह (क) ४. जडी (क ख) ५. अगनि (क ख) ६. कपटु (ख)

(२३४) १. कोसाद (क) कउसवदु (ख) २. सेरवर (क) ३. ˝संघासण (क) ३. मूंदडी (क ख) ४. कडि (क)

(२३५) १. युगल (क) जुगलु (ख) २. श्रवण (क) सवणह (ख) ३. जाइ (क) ४. गइयर (ख) ५. उभउ (क ख)

(२३६) १. दुइ (क ख) २. पुहप (क ख) ३. वस्तु (क) वसतु (ख) ४. गिणइ (क) गणइ (ख) ५. इह (क ख) तिहि (ख) ६. एती (क) इतडउ (ख) ७. ले (क) लइ (ख) ८. चालिउ (क) निकलिउ (ख)

(२३७) १. मेघ कुटिल (क) २. सो (ग) खणि (ख) खिणि (क) ३. आइ (क) ४. काल (ग) ५. जइ वइठउ आइ (ग) ६. तिह भाइ (ख) ७. लागिउ (ख)

(२३८) १. राव (क) २. पुणि (क) तव (ग) ३. उभउ भयउ (क ख ग) ४. फुणिवि मयण (ग) ५. कणयमाल (क ख) ६. भेट तिह (ग) ७. लागउ (क) लागी (ख) लग्या (ग)

कनकमाला का प्रद्युम्न पर आसक्त होना

देखि सरूप[1] मयण वर वीर, कामबाण तसु हुयउ[2] सरीर ।
फुणि सो अंचलु[3] लागी धाइ, करि[4] उतरु[5] वह चल्योउ[6] छुडाइ ॥२३९॥

प्रद्युम्न का मुनि के पास जाकर कारण पूछना

फुणि सो मयणु सपतउ तहा, वण[3] उद्यान मुनिस्वरु जहा ।
नमस्कार करि पूछइ सोइ, कहहु वयण जो[1] जु[2]गतउ होइ ॥२४०॥
कणयमाल[1] माता[2] मुहु[3] तणी, सो[4] मो[5] पेखि[6] कामरस घणी[7] ।
आंचल[8] गहिउ छाडि[9] तहि कारणि, कारणु कहहु कवण मुहि जाणी[10]।२४१।
तं[1] मुणियर जंपइ तंखीणी[2], कहहु बात तुह जम्मह[3] तणी ।
सोरठ देस वारमइ[4] ठाउ, तिहि पुरि निमसै जादमराउ ॥२४२॥
ताकी[1] घरणि[2] आहि[3] रुकिमिणी, जह[4] कीरती महमंडल घणी ।
तिहि[5] सम तिरी[6] न पूजइ कोइ, कंद्रप जणणि तिहारी[7] होइ ॥२४३॥

---

(२३९) १. मयण सुन्दर (ग) २. न सुहयउ (ख) हणिउ (क) तिसु हुआ (ग) ३. अंचलि (क ग) ४. कहि (ग) ५. उत्तर (ग) ६. गयउ (क) चल्या (ग)

नोट—तीसरा और चौथा चरण ख प्रति में नहीं है

(२४०) १. जे (क) जुगती (ग) २. जैन धर्म हइ निश्चय जहां (ग)

(२४१) १. कंचनमाला (ग) मा (ग) ३ मोहि (क) महु (ख) मुहि (ग) ४. सा (क ग) ५. मोहि (क) महु (ख) हम (ग) ६. देखि (क ग) ७. सरि हणी (क ग) हणी (ख) ८. अंचल (क ग) ९. छोडि (ग) १०. मुणीसर जाणि (क)

(२४२) १. तउ (क) तब (ग) २. तंषिणि (ख) ३. जनमह (क) जम्मंतर (ख) जनम्ह (ग) ४. द्वारिका (क) बारवै (ग) ५. स्वामी (क) निवसइ (ख ग)

(२४३) १. तिहकी (क) तिहि की (ख) तिसु की (ग) २. घरिणी (ख) ३. अच्छइ (ग) ४. जस (क) ५. तिहसरि (ग) ६. भीनवि (क) तिरिय न (ख) तिया न (ग) ७. तुम्हारी (क) तुहारी (ख, ग)

धूमकेत हौ[1] तू हरि लयो, चापि सिला तल सो उठि[2] गयो ।
जमसंवर तोहि[3] पालिउ आणि, सो परदवन आप[4] तू जाणि ।।२४४।।
कणयमाल तुव[1], अंचल गहिउ, पूव जन्म तो[2] सनमध[3] भयउ ।
जइ[4] वह तोसिहु पेमरस[5] भीनि, छलु करि लीजहि[6] विद्या तीनि ।।२४५।।
निसुणि[1] वयण सो वाहुडि[2] जाइ, कनकमाल पह वइठउ जाइ[3] ।
विद्या तीनि मोहि जउ[4] देहि, जुगतो[5] पेसणु[6] करिहो[7] तोहि[8] ।।२४६।।
रस[1] की बात कुवर पह सुणी, पैम[2] लुवधि अकुलाणी घणी ।
जमसंवर की करीय न काणि, तीनिउ[3] विद्या आफी[4] आणि ।।२४७।।
पूरव[1] दाउ कुम्वर[2] मन रल्यउ, फुणि[3] विद्या लइ[4] वाहुरि[5] चलिउ[6] ।
हम्वु[7] तुम्हि[8] पूतु जणणी[9] तू[10] मोहि, जगतउ[11] होइ[12] सु[13] पेसणु देहि ।।२४८।।

---

(२४४) १. तिह थो हडिलियो (क) तउ तूं हडिलिउ (ख) तुम्हि हडि ले गया (ग) २. उट्ठियउ (क) उठि गयउ (ख) उट्ठि गया (ग) ३. तू (ख ग) ४. अपूरव (ग) मूल प्रति में तोहि पाठ नहीं है ।

(२४५) १. तुम (क) तव (ख) तुम्ह (ग) २. तोहि (क) कउ (ख) मेहि (ग) ३. संनबध (ग) ४. जो वहु होइ (क) जइ हुउ हतो (ख) जे वह तोहि (ग) ५. प्रेम (क) परम (ख) पिरम (ग) ६. छीनले (क)

(२४६) १. सुणउ (ग) २. वहुडिउ (ख) ३. आइ (क ख ग) ४. जे (क) जइ (ख) ५ जुगत (क,ख) जुगति (ग) ६. पलउ (क) विसतुह (ग) ७, करिहु (क) होइ (ख) हुउ करिस्यो (ग) ८. देहि (ख)

(२४७) १. सर (ग) २. प्रेम लुवध (क) प्रेम लुब्ध (ग) ३. तीनइ (क) तीन्हों (ग) ४ सउपी (ग)

(२४८) १. परियउ (क) कडिउ (ख) पूरिउ (ग) २. कुमार (ख) ३. छिण (क) ले (ग) ४. सो (ग) ५. बाहुडि (क ख ग) ६. चल्यो (क) भलिउ (ख) ७. हुम (क) हउ (ख ग) ८. तोहि (क) तुहि (ख) ९. मात (क) १०. हुई (ग) ११. युगत (क) जुगति (ग) १२. पसाउ (क) १३. करिउ क्यो सोइ (क)

कनकमाला द्वारा अपना विकृत रूप करना

कणयमाल तव धसक्यो[१] हीयउ[२], मोसिहु[३] कूडकूडीया[४] कीयउ ।
इकु[५] तउ लाज भइ[६] मत टल्यउ[७], अवरू[८] हाथि लइ विद्या चलिउ ।।२४९।।
कणयमाल तउ[१] विसमउ धरइ[२], सिर कूटइ[३] कुकुवारउ[४] करइ ।
उर थणहर मह[५] फारह[६] सोइ, केस छोडी[७] विहलंघन[८] होइ ।।२५०।।
इक रोवइ अरु करह पुकार, कालसंवर रा जाणी[१] सार ।
कुमर पांचसै[२] पहुते जाइ, कनकमाल पह वइठे आइ ।।२५१।।
कालसंवर सउ[१] कहउ सभाउ, इहि दिषि[२] पालक[३] कीयउ[४] उपाउ ।
धरम पूत करि थापिउ[५] सोइ, अब सो मोकहु गयो[६] विगोइ ।।२५२।।

कालसंवर द्वारा प्रद्युम्न को मारने के लिये कुमारों को भेजना

निसुणि[१] वयण नरवइ पज्जलीउ, जाण[२] घीउ[३] अधिकु हुतासणु[४] परिउ[५] ।
कुवर पाचसह लिये हकारि, पवण[६] वेगि इहि[७] आवहु मारि ।।२५३।।

---

(२४९) १. धसकैया (ग) धसकिउ (ख) २. हीया (ग) ३. मोहि स (क) मुहि सिहु (ख) मोस्यों (ग) ४. कूडि जइ (ग) ५. अव मोहि (क) इकु सहु (ख) इकुतो (ग) ६. गई (ख) ७. मन टलिउ (क) मनु टालिउ (ख) मनु टलिउ (ग) ८. ले विद्या हाथह ते चलिउ (ग)

(२५०) १. तो (ग) २. करइ (क ख) ३ पीटइ (ग) ४. कुकवर (क) कुकु भारउ (ख) अरु कूकतउ फिरइ (ग) ५. नख (क) नह (ख) करि (ग) ६. फाडइ (क ख) पोटइ (ग) ७. खोलि (ख ग) ८ विहलघल (क ख) बिहलंखलि (ग)

(२५१) १. जाणइ सार (क) राजा पासि जणावउ सार (ग) २. पंचसइ (क) पंचसय (ख ग)

(२५२) १. स्यो (क) सिउ (ख) तव बइठ्ठा आइ (ग) २. विधु (ग) ३. बालक (क ग) पालागी (ख) ४. किउ एह उपाव (क) कीयउ उपगारु (ख) कीया उपाउ (ग) ५. राखिय (क) थापो (ग) ६. चलिउ (ख) गया (ग)

(२५३) १. सुणे (ग) २ जखु (ख) ३. घृत (क) घिरत (ग) ४. बसंनर (कं) हुवासए (ख) वैसंदर (ग) ५. भलिउ (क) पडिउ (ख) टालइ (ग) ६. वखिहु वेगिइ सु ७. तुम (क)

तव[1] कुवर[2] मन पूरउ[3] दाउ, इहिकहु[4] भयउ विरुद्धउ राउ ।
मिलि सव[5] कुवर एकठा भए, मयण बुलाइ[6] कुवर[7] वण गए ॥२५४॥
तवइ अलोकणि[1] विद्या कह्यउ[2] मयण[3] अचंकित[4] काहे भयउ ।
एह बात हो कहौ सभाइ[5], ए सव[6] मारण पठए[7] राय ॥२५५॥
तव[1] रिसाणौ[2] साहस[3] धीर, नागपासि घाल्यो वरवीर ।
चारि[4] सौ नानाणौ आकउ[5] भरइ, बाधि[6] घालि[7] सिला सिर[8] धरइ २५६
एकु कुम्वर राखिउ[1] कमार, राजा[2] जाइ जगाइ[3] सार ।
तुहि[4] जउ राय भरोसउ आहि, दणु[5] परिगह[6] आणइ[7] पलणाइ[8] ॥२५७॥
जमसंवर रा वइठउ[1] जहा, भागिउ कुवरु[2] पुकारिउ[3] तहा ।
सयल कुम्वर वापी मह[4] घालि[5], उपर दीनौ[6] वज्र सिल[7] टाल ॥२५८॥

(२५४) १. तउ (क) तिय (ग) २. कुमरे (क) कुमरनि (ख) कुवरइ (ग) ३. पूगउ (ग) ४. इसु को (ग) मार मयण अब पूजइ दाउ (क) मारहि मयण (ख) ५. सहि (ग) ६. बुलावइ (ग) ७. कमल (क ख)

(२५५) १. आलोकणि (क ग) २. कहइ (क) कहिउ (ख) कहै (ग) ३. मयणि काइते डीलउ कहइ (क) संभलु मयणु कुवर मति कहइ (ग) निश्चितउ (ख) ५. सुभाउ (क) सभाउ (ख) ६. तुझ (क) ७. पठयो (क)

(२५६) १. तवहि (क, ग) तउ (ख) २. चमकियो (क) विहसाणउ (ख) रीसाणा (ग) ३. सहस सधीर (ग) ४. चारिसइ निनाण्णे (क) चारि निनाणे (ख) चउसइ नंन्याणु (ग) ५. आगइ घरइ (क) आंको भरा (ख) अंकौ भरउ (ग) ६. वापि (ग) ७ सुहड (क) ८. तलि (क)

(२५७) १. तिन लिया उबारि (ग) २. राजहि (क ख ग) ३. जगावहि (ख) ४. तुहि सइ (ख) जे तुझु (ग) ५. दलु (क ख) दल (ग) ६. परियण (क) ७. सब खेहु (क) आणहि (ख) वेगा (ग) ८. पलाइ (क) ले जाइ (ग)

(२५८) १. वइठाहइ (ग) २. सो जउ (क) ३. पहूंता (ग) ४. महि (क ग) मुहि (ख) ५. राल (ग) ६. दीधी (क) ७. शिला अडाल (क) शिला टाल (ख) हताल (ग)

जमसंवर और प्रद्युम्न के मध्य युद्ध

निसुणि वयण मन कोपिउ[1] राउ, आजु मयण भानो[2] भरिवाउ[3] ।
रहिवर[4] साजे गैवर गुडे[5], तुरिय[6] पलाणे पाखर परे[7] ॥२५६॥

धनुक[1] पाइक अरु छुरीकार[2], अतिवल[3] चलत न लागी वार[4] ।
आवत देखि[5] मयण कह[6] करै[7][8], सैनाकरि[9] सयन रची धरै ॥२६०॥

जाइ पहुतउ[1] दल अतिवंत[2], तहा[3] हाकि भीडइ मयमंत ।
रावत[4] स्यौ रावत रण भिरइ, पाइक[5] स्यो पाइक आ भिडइ ॥२६१॥

जमसंवर कहु[1] आइ[2] हारि, चउरंगु[3] दलु घालिउ[4] मारि ।
विजाहरु रा[5] विलखउ[6] भयो, रहवरु[7] मोडि नयर मह गयउ ॥२६२॥

---

(२५६) १. कोप्यो (क) कोप्या (ग) २. भानउ (ख) भागउ (ग) ३. भडिवाउ (ख ग) ४. रहहिवार (ग) ५. गुडहु (क) गुडहि (ग) ६.तुरी (क ग) ७. पडहि (क ग)

(२६०) १. धाणुक (क ख) धानुप (ग) २. कराहि (ग) ३. अविचल (क) ४. लाइ वार (क) सभि हथियार सूभट ले आहि (ग) ५. मदनु (ख) ६. कया (ख) के (क) ७. निहरत्थो (ग) ८. करइ (क ख) जाम (ग) ९. सेना रचि साम्हउ संचरइ (क) सयना कहव सयनु रचि धरहु (ख) माया रुप सयनु रचि ताम (ग)

(२६१) १. पहुता (क) पहूते (ख) २. बलवंत (क) मिलि आयो बलु जबहि अनन्तु (ग प्रति) ३. वेगइ आइ (क) तहं तहं रांकि भिडे मयमंत (ख) तब रथु हकि भिड्या मयमंतु ४. रहवर सिहु रहवर (ख ग) रहवर सो रहवर (क) ५. टूटइ खडग पडइभुंइ ताम (क) टूटहि तुंड मुंड वर जाम (ख) टूटहि रुंड मुंड बहु ताम (ग)

(२६२) १. को (क) २. आवइ (क) ३. बलु (ख) ४. चल्लिउ (ख) घाल्या सहि (ग) ५. राउ (क) तब (ग) ६. विलखा (ग) ७. मयण कुवर सहु बलु मारिया (ग)

पुणि[1] णिय मंदिर जाइ पहुत, जमसंवर तव[2] कहइ निरुत ।
कनकमाल हुउ आयउ[3] तोहि, तीन्यो विद्या आफइ मोहि ॥२६३॥

निसुणि वयण अकुलानी वाल[1], जाणि सुहइ[2] वज्र की ताल ।
जिहिलगी सामी[3] एतउ[4] भयउ, मो[5] पह छीनी कुवर ले गयउ ॥२६४॥

वस्तुवंध—एह[1] नरवइ सुणिउ जव वयणु ।
विजाहर कारण[2] करइ, तिय[3] चरितु सुणि हियउ कंपिउ ।
उरुषु[4] रुहडे फाडियउ मोहि सरिसु इणि अलिउ[5] जंपिउ ॥
पेम लुवधै[6] कारणै आपी विद्या तीनि ।
अव मोस्यो परपंचु[7] करइ, कुमर ले गयो छीनि ॥२६५॥

---

(२६३) १. थिणि (क) फुणि २. तह (क) ३. आपी आवउ (ख)

ग प्रति में निम्न पाठ है—

जम संवरु तब विलखा भया, वलु छोड्या घर कहु उहि गया ।

जहति जातह बोलं एहु, तीन्यो विद्या वेगी वेहु ॥२५२॥

(२६४) १. नारि (ग) २. सिरि वजी पवताल (क) ३. स्यामी (क) स्वामी (ग) ४. एहवा (ग) ५. मुझ (क) मोहि विगोइ छीनो ले गया (ग)

(२६५) १. जा (क) २. करुणा (ग) करणु (ख) ३. भिया (क) तिया (ग) ४. एस रुप मइ समभियउ (क) कंपइ उसुवा थर हरइ (ख) उकवुक होइ पूरहस्यो (ग) ५. घालु (क) आल (ग) ६. लुवधि (क ख) ७. परपंचु (क ख) ग प्रति—

बहु झूरइ तह राउ मनि, देख चरितु इहु तेणि ।
प्रेम लुबध कइ कारणिहि. सउपी विद्या एणि ॥

चौपई

देखि चरित जब[1] बोलइ[2] राउ, अब मो[3] भयउ मरण को ठाउ ।
तिरियहं[4] तणउ जु पतिगउ[5] करइ, सो माणस[6] अणखुटइ[7] मरइ ॥
तिरिय[8] चरितु निसणउ[9] भरिभाउ[10], विलख वदन भउ[11] खगवइराउ[12] ।२६६

ध्रुवक छन्द

स्त्री चरित का वर्णन

अलियउ बोलइ अलियउ चलइ[1], निउ पिउ[2] छोडइ[3] अवरु भोगवइ ।
तिरियहि साहस[4] दूणो[5] होइ, तिरिय चरित जिण[6] फुलइ[7] कोइ ॥२६७॥

चौपई

नीची[1] बुधि तिम्बइ[2] मनि[3] रहइ, उतिमु छोडि नीच संगइ[4] ।
पयडी नीच[5] देइ[6] सो पाउ, एसो तिवइ[7] तणउ सहाउ ॥२६८॥

---

(२६६) १. पुणि (क ख) तव (ग) २. सोभइ (क) २. इव मोहि जुगतउ मरण का ठाउ (ग) ४. त्रिय (क) तिया (ग) ५. पतिगरु (ख) पतिगहु (क) भरोसा (ग) ६. मूरिख (क) नर जाणउ (ग) ७. अनखूंटो (क ख) ८. त्रिय (क) तिरिय (ख) तिया (ग) मूल पाठ तिनिय ९. सुणहु (ग) १०. धरिभाउ (ग) ११. थयउ (क) तह (ग) १२. तव राउ (क) बोलइ राउ (ग)

(२६७) १. चवइ (क ख) चवहि (ग) २. निय पिय (क) निउ पिउ (ख) थाहणु (ग) मूल पाठ केवल पिउ है । ३. छोडि (क ख ग) ४. पौरिष (क) ५. दूणउ (ख) दुवणउ (क) ६. नवि (क) मतु (ग) ७. भूलइ (क) भूलउ (ख ग)

(२६८) १. नीच (ख) २. तियइ (क) ती (ख) तियह (ग) ३. मनि रहे (क) मनु हरइ (ख) मनु धरहि (ग) मूल पाठ मुनि ४. संग्रहइ (क ख) भोगवहि (ग) ५. नीची (क ख ग) ६. दे सो पाव (क) देइ सो पाउ (ख) दह सिर पाउ (ग) ७. त्रियह (क) ती मइ (ख) ती वइ (ग)

उजैणि[1] नयरि[2] सो वूचइ[3] ठाउ, पुव्वह[4] हुतौ विवयह राउ ।
तिरिय विसास[5] करइ[6] जो घणउ, जिहि[7] जीउ सोप्यो राजा तणउ।२६६।
दुइजे राउ[1] जसोधर भयउ[2], अमइ महादे[3] सोखइ लयउ ।
विस लाडू दइ मारयो[4] राउ, फुणि कुवडउ[5] रम्यो[6] करि[7] भाउ ।२७०।
फुणि तीजे[1] णिसुणह धरि भाउ, आथि[2] नयरु पाटण[3] पयठाणु ।
हया[5] सेठि निमसइ[6] तिहि काल, तीनि नारि ताकी[7] सुहिनाल ।२७१।
सोतउ[1] सेठि वणिज[2] उठि गयउ, जीभ[3] लुवधि तिहि काहउ कीयउ ।
छाडी[4] हया[5] सेठी की[6] कारणि[7], धूतु एकु सिर[8] थापिउ आणि ।।२७२।।
अदिरणि[1] छोडि[2] नाहु[3] सुपियारु, धूतु आणि ता[4] कीयउ भतारु[5] ।
तिहि[6] साहस कउ[7] अंत न लहउ, तिहि चरितु[8] हउ केतउ[9] कहउ ।२७३।

---

(२६९) १. जज्जैणि (ख) २. नयरी (ख) नयर (ग) ३. जो टुाउ (क) ऊचइ (ख) उत्तिम (ग) ४. पुव्व हु गयउ सो ठाउ (क) पुव्वहुं हुंतु वियर कछुराउ (ख) तिस पुर भंचउ विक्रमराउ (ग) ५. विशास (क) विस्वास (ग) ६. किया तिह घणा (ग) ७. त्रिय (क) आपणउ (क) (तीसरा चरण ख प्रति में नहीं है)

ते हिंति जिउ प्राण राजा तणउ (ख) राजइ सउप्पा जीव आपणा (ग)

(२७०) १. राज (क) २. गयउ (क) ३. अमइ महादेवि सो टलिउ (क) अमय महादे सो घर गयउ (ख) अव्रत-मती तिय लागीया (ग) ४. मारिउ (क ख) मारा (ग) ५. कुवडा ते (क) ६. रमिउ (क ख) रम्याउइ (ग) ७. घरि (ख ग)

(२७१) १. तेउ (क) तीय (ख) विजजाहरु तब बोलइ राउ (ग) २. अत्थि (क ग) ३. पइणपुर (ग) ४. टुाउ (क ग) ठाउ (ख) ५. घणवइ (क) हाया (ख) हुवा (ग) ६. वसइ (क) ७. तिहके (क)। तिस की (ग)

(२७२) १. सोवतउ (क) सो तहि (ख ग) २. वणजहि (ग) ३. प्रेम लुबध तिहि अइसा कीया (ग) ४. छाडइ (क) छोडी (ग) ५. तेह (क) हाया (ख) तणी (ग) ६. सब (ग) ७. वाणि (क) ८. घरि (क ख) तिन राखा आणि (ग)

(२७३) १. परियणउ (क) रणिउं (ख) २. छांडि (ख) ३. नारि (क) ४. तिह (क) तिन (ख) ५. भतारु (ख) प्रथम-द्वितीय चरण ग प्रति में नहीं है। ६. इह (क) तिसका (ग) ७. को (क) अंतु न कोई लहइ (ग) ८. त्रिय (क) त्रिया (ख) तिया (ग) ९. कितना ले (ग) केता कहोइ (ग)

अभया राणी कीए विनाण[1], सुहृदंसण[2] लगि गये परान।
जिहि[3] लगि जुझ महाहो भयो, लइ[4] तप चरणु सुदंसणु गयउ २७४

रावण राम जु[1] वाढी[2] राडि, विग्रहु[3] भयउ सुपनखा लागि।
सीया[4] हडह[5] लंका परजलइ[6], सब परियण[7] रावण संघरइ[8] ॥२७५॥

कौरों[1] पांडो[2] भारथ[3] भयउ[4], तिहि[5] कुरुखेत महाहउ ठयउ[6]।
अठार[7] खोहणी दल संघारि, दुइ[8] दल बोलइ दोवइ[9] नारि ॥२७६॥

कालसंवरू तउ कहइ वहोडी[1], कनकमाल[2] तो[3] नाही खोडी।
पूरव रचित न मेटण कवणु[4], ए वीद्या लेहै परदवणु ॥२७७॥

असुह कम्मु[1] नहु[2] मेटइ कोइ, सुरजनुहु[3] तउ सुवरीयउ होइ।
दोस न कनक[4] तुहि तणउ, इह लहणौ[5] लाभइ आपणउ[6] ॥२७८॥

---

(२७४) १. विवाण (ख) २. सुदंसण (क) सुभदंसण (ग) ३. तिहि स्यों मास झूझ इहु भयो (ग) ४. संजम लेइ (क) लय तप चरणु (ख ग)

(२७५) १. जा (ग) २. बाधी (क) बंधी (ग) ३. विघन सुरपखि कीनी राड (क) विगाहु बलिउ सपनखी लाहि (ख) विग्रह चल्या सुपन भय ताडि (ग) ४ सीता (क) सीय (ख ग) ५. हरण (क) हडयु (ख) हडी (ग) ६. परजलयु (क) परजलइ (ख) परजली (ग) मूल पाठ—परजली लाइ ७. सब परियण (क ख) रखउ परियर (ग) मूल पाठ स्यो पहयाल ८. संघरण (क) संघरइ (ख) संघटी (ग)

(२७६) १. कौरव (क) कौरउ (ख) कइरव (ग) २. पांडव (क) पांडउ (ख) पंडव (ग) ३. विग्रह (ग) ४. सयउ (ख) ५. तिनि (क) तिन्ह (ख) तिन्हे (ग) ६. कियो (क) किया (ग) ७. अट्ठारह (क ग) अठारह (ख) ८. दुइ (क ख ग) ९. द्रोपदी (क ग)

(२७७) १. वोला (ग) २. कंचनमाल (ग) ३.॰तह लागी (क) न सुमय लोडि (ग) ४. कोइ (ख) तीसरा और चौथा चरण 'ग' प्रति में नहीं है।

(२७८) १. कर्म्म (क) २. नवि (क) ३. सज्जन ते सुख वैरी होहि (क) प्रथम एवं द्वितीय ग में तथा द्वितीय एवं तृतीय चरण ख में नहीं है। ३. कनकमाल (क ग) ५. लिखियउ (क) लहणा (ग)

गाथा

दग्घंति[1] गुणा विचलंति वल्लहा[2], सज्जनाहि[3] विहडंति[4] ।
विवसाय[5] णाथि सिद्धी पुरिसस्स परंमुहादिम्वहा ॥

चौपई

छुटउ कमगु[1] काल की वहिए, फुणि ते वहुडी करी सामहण[2] ।
चउरंगु वलु सवु समहाइ, करउ[3] अभेडउ दुइजो जाइ ॥२७६॥

यमसंवर एवं प्रद्युम्न के मध्य पुनः युद्ध

बहुत रोस[1] मन नरवइ भयउ, चाउ[2] चढाइ हाथ करि[3] लयउ ।
लयउ[4] धनषु[5] टंकारिउ[6] जाम, गिरि पवय[7] जाणौ डोले ताम ।२८०।
दोउ[1] वीर आइ रण भिडे, देखइ अमर विवाणहि चढे ।
वरसहि वाण सरे असराल, जाणौ घण गाजइ[2] मेघ अकाल ।२८१।

गाथा

१. न संति (ख) निसंति (ग) २. विद्या (ग) ३. सजणाइ (क) सज्जनाय (ख) सयण सज्जन (ग) ४. विचलंति (ग) ५. सजन पासु बुयणु भया, जे मथिहु कम्म चलंति (ग)

(२७६) १. कवण (क ख) २. संमहण (क) समहाण (ख) ३. करइ जुध तव बाहुडि आवि (क)

ग—काल संवरू मनि भया उदासु, छोड्या कणयमाल का पासु ।
वल चउरंगु सहु लीया बुलाइ, करइ झूझु बाहुडि सो जाइ ॥

(२८०) १. दोसु (ख) २. चक्र (क) बाणु (ग) ३. तिहि लीया (ख) ले (ग) ५. धुणुहु (ग) ६. टंकारा (ग) ७. पवास भइ कंपइ ताम (ग)

क—धनुष टंकार करइ ते जाम, तव गिर परवत ढालइ ताम

(२८१) १. दोनउ (ग) २. गज्जहि (ग) ग प्रति में दो चरण निम्न रूप में अधिक हैं—

दोऊ वीर जोर सपराण, दूणे दूणे करि संधाण

तव[1] परदमण रिसानो जाम, नागपासि मुकलाइ[2] ताम ।
सो दलु नागपासि दिठु[3] गह्यउ, राउ अकेलउ ठाढउ वह्यउ[4] ॥२८२॥
भणइ मयण एसो करइ, जमसंवर सबु दल संघरइ ।
इम मयरद्धउ कहउ सुभाय, तउ नानारिष गयउ तिह ठाइ ।२८३।

नारद का आगमन एवं युद्ध की समाप्ति

भणइ[1] मयणु रहायो मयणु, वापहि पूतहि गाउ[2] कमणु ।
जिहि प्रतिपालिउ कियउ[3] तु राउ[4], तिहिकउ किमि[5] भानइभरिभाउ २८४
नारद बात कहै समुझाइ, दू[1] दल विगाह[2] धरइ[3] रहाइ ।
कालसंवर तो[4] हो इन जूत[5], यह परदवण नरायण[6] पूत ॥२८५॥
निसुणि वयण[1] मन उपनौ भाउ, भरि आयौ[2] सिर उमइ[3] राउ ।
इतडो[4] परि पछितावो भयउ, चउरंग दलु संघरि[5] लयउ ॥२८६॥

---

(२८२) १. सो (ग) २. छोडइ तिसु ठाम (ग) ३. दुइ (क) ४. रहो (क) रहिउ (ख ग)

(२८३) क ख प्रतियों में निम्न पाठ है ।

भणइ मयण एसो करइ, जमसंवर सबु बल संघरइ ।
इम मयरद्धउ कहइ सुभाय, तउ नानारिख गयउ तिह ठाइ ॥२९२॥

ग प्रति—

भणइ मयणु हो इसउ कराउ, इव भाणउ इसका भडिवाउ ।
नानारिषि आया तिह ठाइ, कही बात बलि आंवइ साइ ॥२७३॥

(२८४) १. तउ रिषि जाइ रहायउ मयण (क ख) बोलइ रिषि तू सुण परववसु (ग) २. विग्रह (क ख ग) ३. अंतराव (क) तू तहू राउ (ग) ४. तिनकउ (क) तिस का (ग) ५. सिबु (क) किउ (ग)

(२८५) १. दुइ (क,ख) बुहु (ग) २. विघ्न (क) विग्रहउ (ग) विगाहु (ख) ३. हरइ घराइ (क) धराइ (ग) ४. तोहि (क) तुहिं (ख) तुम्ह (ग) ५. निरुत (क) जुत्तु (ख) ६. तुम्हारउ (ग)

(२८६) १. मयण (क) वचन (ग) २. आकइ (क) आकउ (ख) अहि अंकि (ग) ३. वुमइ (क) चूवइ (ख) चूवौ (ग) ४. लडियउ (क) तानि व मारिए (ख) इतना (ग) ५. गयउ (क, ख) सहु संघारिया (ग)

तव[१] मयरा मन छोडो कोह, मोहणी जाइ उतारयो मोह ।
नागपासि जव[२] घाली छोरी, चउरंग वल उठो[३] वहोरी ॥२८७॥

उठी[१] सैन[२] मन हरिष्यो राउ, बहुत मयरा को कीयो पसाउ ।
नानारिषि वोलइ तंखिणी, घर अवेसि[३] तिहारी[४] धणी[५] ॥२८८॥

वयण हमारे जउ मन[१] धरहु, घर[२] वेगे सामहणी करहु ।
पवरा वेगि तुम द्वारिका[३] जाहु, आज तिहारौ आहि विवाहु ।२८९।

नारद बात कही तुम भली, मुही[१] केवली कही सो मिली ।
विहसि बात बोलइ[२] परदवणु, हम कहु वेगि पराइ[३] कम्वणु ।२९०।

नारद एवं प्रद्युम्न द्वारा विद्या के बल विमान रचना

नारद[१] खरा[२] विमारा रचि फरइ, कंद्रप तोडइ हासी करइ ।
वहुडि[३] विम्वारा[४] धरइ मुनि जोडि, खरा[५] मलयद्धउ[६] धारइ[७] तोडि ॥२९१॥

विलख वदन भो[१] नारद जाम, करइ उपाउ मयरा[२] हसि ताम ।
मरिग मारिगक[३] मय[४] उदउ करंतु, रचि विमारा खरा[५] धरइ तुरंतु ।२९२।

---

(२८७) १. तबही (क ख ग) २. तब (क) बन्ध (ग) ३. सुचला (ग)

(२८८) १. उठी (क) उट्ठि (ख ग) २. सेन (क) सयरा (ख) मयनु (ग) ३. आरति (क) अवसेरि (ख, ग) ४. तुम्हारी (क) तुहारो (ख) अथि तुम्ह (ग ५. तणी (ग)

(२८९) १. चित्ति (ग) २. घर सामहणी साम्हा चलिउ (क) घर कहु वेगि पयाणा करहु (ख) घर को वेगि साखती करहु (ग) ३. घर कहू जाहू (ग)

(२९०) १. मुणिवर (क) २. पूछइ (क) ३. परणावइ (क ग) पराणइ (ख)

(२९१) १. रिषि (ग) २. रिषि (क) ३. करइ (क) रिषि धरइ सु जोडि (ग) ४. करि (ग) ५. खरा (ग) ६, मयरद्धउ (क ख) ६. मइराधा (ग) ७. घालइ (क ख ग) मूल प्रति में मुनि के स्थान पर 'मन' शब्द है ।

(२९२) १. होइ (क) हुउ (ख) २. मइरधउ (क) मयरा खिणि ३. मइरधउ (क) ४. बहु (ख) का (ग) ५. वरा (ख) खिणि (ग)

विद्यावल [1]तह [2]रच्योउ, विमाणु, जहि [3]उदोत [4]लोपि ससि भाणु ।
धुजा घंट [5]घाघरि सजूतु, फुणि [6]तिह चढयो नारायण पूत । २९३
जमस[1]ंवरु रामहिउ जाइ, वहुत भगति करि लागइ पाइ ।
कुमरहि सरिसु [2]खिणतवु करइ, कंचणमाल [3]समदि घर चलइ।२९४।
कुवरु मयण अरु नारदु पास, चढि विमाण [1]उपए [2]आकास ।
गिरि [3]पव्वय वहु लंघे मयण, बहुत ठाइ वंदे जिणभवण ।२९५।
फुणि [1]वण माझ पहुते जाइ, उदिधिमाल दीठी ता ठाइ ।
बहुत [3]वरात [4]कुवर स्यो मिलि, [5]भानु [6]विवाहण द्वारिका चली ।२९६।
[1]नारद वात मयणस्यो [2]कही, यह पहले तुम ही कहु वरी ।
तुम हडि धूमकेत ले जाइ, [3]तउ अब भानहि दीनी आइ ॥२९७॥
मुनि जंपइ [1]मुहि नाही खोडी, [2]आहि सकति तउ [3]लेहि [4]अजोडि ।
रिषि कौ वयण कुमरु मण धरइ, आपण भेस [5]भीलकहु करइ ।२९८।

---

(२९३) १. तिनि (क) तहि (ख) तिहि (ग) २. चलिउ (ख) ३. उदया (ग) ४. लोपिउ (क) लोपिहु (ग) करहि (ख) ५. वघारि (क) वावती (ख) क—कणय विमाणु सुहिर रसजूत (ग) ६. चलि चढयो (ग)

(२९४) १. राजा समिझाइ (क) राजा समदि धरि जाइ (ख) आय। तितु ठाइ (ग) २. छमावणि करइ (क) खिउ तब करउ (ख) सबहि कुवर सों विनति करइ (ग) ३. माता जाइ धरि (क) चलण सिरि धरइ (ग)

(२९५) १. अगासि (क) २. उपमे (क) उप्पवे (ग) ३. परवत (क ग) पव्वय (ख)

(२९६) १. वण माहि (क ख ग) २. उदधिमाला रही तितु ठाइ (ग) ३. वात (क) वनात (ख) वरसेइ (ग) ४. कुमर मन (क) कमर कहु (ख ग) ५. भान (क) भानु (ख ग) ६. विवाहण (क ख ग) मूल प्रति वण के स्थान—पर मण

(२९७) १. ऋषि (ग) २. उच्चरी (ग) ३. तौ यह नारि भानु कहु ठ्या (ग)

(२९८) १. तुम (क) तुम्हि (ग) २. आत्थि (ग) करि अजोडि (ग) ४. वहोडि (क ख) ५. भिलन का (ख)

ग—नारद वचनहि अइसा भया, आपण भेस भील ठ्या (ग)

प्रद्युम्न द्वारा भील का रूप धारण करना

धणही[१] कांड[२] विसाले हाथ, उतिरि[३] मिल्यउ तिनि के[४] साथ ।
पवण वेग सो आगय गयउ, देइ[५] आखर परिण[६] उभउ भयउ ।२९९।
हुउ वटवाल नारायण तणउ, देइ दाण मुहि लागइ घणउ ।
चढ़ी वस्तु[१] आपु मुहि जोगु[२], जइसे[३] जाण देइ सवु लोगु ।।३००।।
महलउ[१] भणइ निसुणि[२] महु[३] वयणु, वडी वस्त तू मागइ कमूणु ।
अर्थ[४] दर्वु[५] सोनो तू[६] लेहि[७], हम कहु जाण अगहुडउ[८] देइ ।।३०१।।
भीलु[१] रिसाइ देइ तव जाण[२], आइसी[३] परि किम्व लाभइ जाण ।
भली[४] वस्त जो तुम पह आइ[५], मो मुहि आफि अगहुंडे[६] जाहि ।३०२।
तउ महलउ जंपइ मुहि चाहि[१], एक कुम्वरि मोपह[२] इह आहि ।
हरिनंदण कहु परणी जोइ[३], अरे सम्वर[४] किम मांगइ सोइ ।३०३।

(२९९) १. घुणहो (क) धणुहो (ख) धनुष (ग) २. सजि करि सर ले हाथि (क) बाण विसाले हाथि (ख) कटारी विसाहल हाथ (ग) ३. तिन कइ (क) तिन्ह ही (ख ग) ४. पुणि उठि मिल्या (ग) ५. ले आखत (क) दइ आखत (ख) देइ अदिठु तब ऊभा भया (ग) ६. तव (क) फुणि (ख)

(३००) १. वस्त (क) दाण (ख) वस्तु (ग) २. जोगि (क) लोगु (ख) ३. जिउ हुउ

(३०१) १. महिला (क ग) २. सुणहि (क) ३. मो (क) ४. अरथ (क) अरथु (ख ग) ५. दरबु (ख ग) देखि (क) ६. तं (क) ७. लेहु (क) लोहि (ख) ८. आगे (क) अगुहडे (ख) वेगि जाण (ग)

(३०२) १. भिल्लु (ख) २. आण (क ख ग) ३. एसी (क) ४. बडी (ग) ५. आहि (क ख) अइहे (ग) ६. लागहु (क) अघउडउ (ख) सोह हम देहु भिलु इम कहै (ग)

(३०३) १. वाहि (ख) २. जो मो पहि (क) इह मो पहि (ख) यह मो पहि (ग) ३. सोइ (ख) ४. सवर (क) समर (ख) नोट—तीसरा और चौथा चरण 'ग' प्रति में नहीं है ।

भणइ वीर[१] यह[२] आफहि[३] मोहि, जइ सइ[४] वाट जाण द्यो[५] तोहि ।
महल्हु कोपि पयंपइ[६] ताहि, अरे भिलु तोहि[७] जुगत न आहि ।३०४।
निसुणइ[१] महल[२] कहइ विचारु, हउ नारायण तणउ कुमार ।
इहखोल[३] जिन करहु संदेहु, उदधिमाल तुमि[४] मो कहु देहु ।।३०५।।
महलउ बोलइ रे अचगले,[१] झूठउ[२] बहुत कहइ अतिगले[३] ।
तीनि खंड जो पुहमि नरेसु, तिहि के पूतहि[४] आइसु[५] वेसु ।।३०६।।
वाट छोडि तउ ऊवट[१] चले,[२] उहि[३] पह भील कोडी दुइ[४] मिले ।
भणइ सधारु[५] नहि मुहि[६] खोडि, वलु करि कन्या लइय अहोडी[७] ।३०७।

प्रद्युम्न द्वारा उदधिमाला को बल पूर्वक छीन लेना

छीनि कुम्वरि तहि[१] लइ पराण, फुणि सो वाहुडि चल्यउ[२] विम्वाण ।
भीलु देखि सो मनु अहि डरइ, करण[३] कलापु कुवरि सो करइ ।३०८।

---

(३०४) १. मुहि (क) इह (ख) यहु (ग) २. भिल्लु (ग) ३. सउपहि मेहि (ग) ४. जेसे (क) ५. दो (क) दिउ (ख) नातरु जाणक वेऊ तोहि (ग) ६. भणइ (क) चंपइ (ख ग) ७. तुहि जुगती न आहि (क ख)

ग प्रति में—हरि नंदन कहु परणी जोइ, अरे भिल्लु किउ मागहि सोइ ।

(३०५) १. सुणि (ग) २. महिले (क) माहतो (ख) महिला (ग) ३. एणि वयणि (क) दूसरु बात मत (ग) ४. तुम्हि आयो एहि (क) तुहि मुहि कहु देहु (ख) हम कहु देउ (ग)

(३०६) १. अवगले (क) महिला कोपि सु तव परजली (ग) २. जुट्ठि (क) ३. आगले (क ख) झूठा वचन कहवहि हो भिली (ग) ४. पुत्र (क) पूत कि (ख) पूतुन (ग) ५. कवणु इह वेसि (क) अइसउ भेसु (ख) अइसा वेसु (ग)

(३०७) १. उवरे २. (ग) चलइ (क) चले (ख) चलिउ मूलप्रति में 'चलोउ' (ग) ३. उठि (ख) तापहि (ग) ४. इक (क ग) ५. कुमर (क) सधारू (ख ग) मूल प्रति में 'सधरु' ६. हम (ग) ७. वहोडि (क ख) अजोडि (ग)

(३०८) १. घो निये पराणि (क) सोज कुवर तिन्हि लई पराण (ग) २. चले (क) चडिउ (ख ग) ३. मरण (ख) करुण (ग) मत ए रूप कुमर ए करिउ (ग)

पहलै मयण कुवर कहु[1] वरी,[2] दुजे[3] भानु विवाहण चली ।
नारद निसुणी हमारी बात, अब[4] हौ परी भील के[5] हाथ ॥३०९॥

अब मोहि पंच परम गुण सरणा, लिउ सन्यास[1] होइ किन मरणा ।
तउ नारद मन भयो[2] संदेहु, वुरो[3] वयण इनि आखिहु एहु[4] ॥३१०॥

तउ[1] नारद जंपइ तंखिणी, कंद्रप कला करइ आपणी ।
लखण वतीस कणयमय[2] अंगु, रूप आपणै भयो अणंगु ॥३११॥

उदधिमाल सुंदरि[1] समभाइ, फुणि विमाण सो चलिउ सभाइ ।
चलत विमाण न लागी वार, गये[2] वारम्वइ के पइसार ॥३१२॥

देखि नयरु वोलइ परदवणु, दिपइ पदारथ मोती रयणु ।
धनुक[1] कंचण दीसइ भरी, नारद वसइ कवण उह[2] पुरी ॥३१३॥

---

(३०९) १. कुवरी (क) २. वली (ग) ३. कजइ (क ग) वुइजइ (ख) अवहू (क) अवहउ (ख) इही (ग) ५. कइ (ख ग)

(३१०) १. ले चारित किम हो सहि मरणु (क) ले मासा जसु होवइ मरण (ग) सील सथास सिउ हुइ किन मरण (ग) २. पडिउ (क ख) पड्यो (ग) ३. वीरउ (क) ४. मोहि (क)

(३११) १. उठि (क) २. कणचन (क) कणइमइ (ग)

(३१२) १. तव (ग) चले विमाणि वचन मनु लाइ (ग) २. गये नगर द्वारिका मझार (क) गए वारमइ कियइ सारू (ख) गया वरवइ नयर दुवारि (ग)

(३१३) १. धन कण (क ख ग) २. ए (क) इह (ख) ग प्रति में यह पद्य नहीं है ।

नारद द्वारा द्वारिका नगरी का वर्णन

वस्तुबंध—भणइ नारद निसुणि परदवण ।

यह[1] तु चइ द्वारिकापुरी, वसइ माझ सायरहं णिच्चल[2]।

जंमि[3] भूमिय अथि[4] तुव, सुद्ध फटिक मणि[5] जणित उज्जल ॥

कुवा वाडिउ[6] च वणवर वहु धवहर[7] आवास ।

पहुपयाल[8] जिणवर भुवण पउलि[9] कोट चोपास ॥३१४॥

निसुणि जंपइ[1] मयणु वरवीरु, मुझ[2] वयणु नारद निसुणि ।

फुडउ[3] कहहि णहु गुझु रखहि, देखि[4] मयणु णिय चित्तु दइ ॥

जो जहि तणउ अवासु ॥३१५॥

चौपई

माझ[1] नयरि धवल हरु उत्तंगु, पंच वर्ण मणि जडिउ[2] सुचंगु ।

गरडू धुजा सोहइ वह[3] घणउ, वह[4] अवासु सु नारायण तणउ ॥३१६॥

---

(३१४) १. एह वसइ (क) यह कहियइ (ख) यह ऊंची (ग) २. सचंगो (क) हनिहचल (ख) हववुपरि (ग) ३. जम्म (क ख) जनम (ग) छइ तुमह (क) इह आथि तुव (ख ग) करइ राज इकु छत्ति सो हरि (ग प्रति में यह चरण पल्ले के स्थान पर है। ५. सो वन्न वन्नी (क) जडित (ख) ६. वाडी वयण वर (क) वाडिउ वयण पवर (ख) वापी वाग वण (ग) ७. भवल (क ख ग) ८. वहु पयार (क) ९. पोवलि कोर चोपास (क) मझु वयण नारव निसुणि भुवणि किवण्णइ तासु (ख) कंचन कलसिहि दीपतिहि वसइ भूवण चउयास (ग)

(३१५) १. पयंपइ (ग) २. मोहि (ग) ३. फुंडउ मुझहि गुहय रखहि (क) कहहु साचा जिन गुज्झ राखहु (ग) ४. कवण गेहि मुह तणउ सयल चरित मोहि सयल अखहि (क) कवणु गेहु महु कहु तणउ सब्बु चवहि महु सरसु अक्खर (ख) कवणु गेह इहु किसण तणो। सयल भेवु हम वेगि आखहु (ग)

(३१६) १. मझि (क ग) मझु (ख) २. जडिय (क) जडिउ (ख) जडे (ग) मूलपाठ जडिउ ३. तव खिणउ (क) बहु घणा (ख) ४. एह (क) बहु (ग)

सिव[१] धुजा[२] डोलइ चोपास, वह[३] जाणइ बलिभद्र अवास ।
जहि[४] धुज[५] मेढे[६] दीसइ देव, वह[७] मंदिर जाणइ बसुदेव ॥३१७॥

जिहि धुजा विजाहर सहिनाण, वंभण वइठे पढइ पुराण ।
जहि कलियलु वह सूझइ[१] घणउ, वह अवासु सतिभामा तणउ[२] ।३१८।

कलकमाल जस[१] उदो करंत, जह वह धुजा दीसइ[२] फहरंत[३] ।
मणिगज[४] मणि सहि चउपास, वह तुहि[५] माता तणउ अवास ॥३१९॥

निसुणि वयण हरषिउ[१] परदवणु, तिहि को[२] चरितु न जाणै कवणु।
उतरि विमाणति उभउ भयउ, फुणि सो मयणु नयर मा[३] गयउ ।३२०।

प्रद्युम्न को भानुकुमार का आते हुए देखना

चवरंग दल सयन[१] संजूत, भानकुवर[२] दीठउ आवंतु ।
तव विद्या पूछइ परदम्वनु, यह कलयलुसिह[३] आवइ कम्वनु[४] ।३२१।

---

(३१७) १. सिघ (क) २. लहकइ (क) डोलहि (ख) डोलै (ग) ३. ए आणइ (क) उ जाण इ (ख, ग) ४. जिहि (क) जहि (ख) जाहि (ग) ५. धज्जु (क) धुजा (उ) ध्वजा (ग) ६. मीढा (क) मौढे (ख) मढ (ग) ७. उह (क ख ग) मूल प्रति में 'सिघ'

(३१८) १. सूझइ (क) सुणियं (ग) सूझइ (ख) २. भणउ (क ख ग)

(३१९) १. सुजइ दइ (क) सुनि उवउ (ख) बहु उवौ (ग) २. दियइ (क) ३. फरकंति (क) ४. मरकति मणि दीसइ चुह पासि (क) जाँहि बहु धुजा दीसहिं चउपासि (ख) मगंज मणि दीसहि जिसु पास (ग) ५. उह (क) तुहि (ख) तुहु (ग)

(३२०) १. बोल्या (ग) २. तिसु का (ग) ३. मांहि (क) महि (ख ग)

(३२१) १. सेन (ख) सइन (ग) २. भानू कुवरू आवइ दिठसु (ग) ३. कलियल सु (क) कलियर स्यउ (ग) ४. कवणु (क ख) कउण (ग)

निसुणि मयण तुहि कहो विचारु, यह हरि नंदनु भानु कुमारु ।
इहि[1] लगि नयरी वहुत उछाहु, यह[2] जु कुवरु जइ[3] तणउ विवाहु ॥३२२॥

प्रद्युम्न का मायामयी घोड़ा बनाकर वृद्ध ब्राह्मण का भेष धारण करना

तहा[1] मयण मन[2] करइ उपाउ, अव[3] इहकउ[4] भानउ भरिवाउ ।
वूढ[5] वेस विप्र को करइ, चंचल तुरिय[6] मयायउ[7] करइ ॥३२३॥
चंचल तुरीयउ गहिरी[1] हिंस, चार्यो पाय[2] पखारे[3] दीस[4] ।
चारि[5] चारि आंगुल ताके[6] कान, राग वाग पहचाणइ[7] सान[8] ॥३२४॥
इक[1] सोवन वाखर[2] वाखर्यउ, पकरी[3] वाग आगैहुइ[4] चलिउ ।
भान कुवर देख्यो एकलउ, वाभण वूढउ घोरो[5] भलउ ॥३२५॥
घोरो[1] देखि भान मन रलउ, पूछइ[2] वात विप्र कहु चलिउ ।
फुणि तहि वाभणु[3] पूछिउ तहा, यह घोड़ो लइ[4] जैहहि[5] कहा ॥३२६॥

---

(३२२) १. एहि लगि (क) इह वर (ग) २. एह सु (क) इह सु (ख ग) ३. जिह (क) जहि (ख) जिस (ग)

(३२३) १. तबहि (क ग) २. बहु (ग) ३. इब (ख) ४. इसका (ग) इहि कर (ख) ५. वूढउ (क ख) वूढा (ग) ६. तुरी (क ग) तुरिउ (ख) ७. मायामई (ग) मायामउ (ख) मयण रचि धरई (ग)

(३२४) १. गुहीरी हासु (क) आगइ आरसी (ग) २. पाउ (क) पाय (ख) पाव (ग) ३. परवालिय (क) परवाले (ख ग) ४. ए तासु (क ख) ५. चारइ (क) चारिसु (ख) ६. जिन्ह के (क) तिन्ह के (ख) जिसुके (ग) ७. पिछाणइ (क) यह ।।रइ (ख] ८. भानु (क ख)

(३२५) १. साखति सो वन अरु पाखरउ (क ग) २. पाखर पाखरियउ (क ख) ३. पकडि (क ख ग) ४. आघेरउ (क) आगइ (ख ग) ५. घोडउ (क ख) घोवडा (ग)

(३२६) १. घोडा देखत जन मनु चलिउ (ग) २. पूछण (क ख ग) ३. चले चाल्यो किहा (ग) ४. जाइसि (क)

वाभणु[१] ठवहुक घोडौ हइ आपणउ, तजिउ[२] समुद[३] वालुका तणउ ।
निसुणिउ भान कुम्वर कौ नाउ, तउ तुरंगु आणिउ तिहि ठाइ।३२७।

भान कुवर मन[१] उपनो भाउ, वहुतु[२] विप्र कहु कियउ पसाउ ।
निसुणि[३] विप्र हउ अखएहु[४], जो[५] मागइ सो तोकहु देउ ।।३२८।।

तवहि विप्रु मागइ सतिभाइ, भानकुवर कै मनु[१] न सुहाइ[२] ।
विलखउ भानकुवर[३] मन भयउ[४], मान भंगु इहि मेरउ कियउ।३२९।

भणइ विप्रु[१] हौ[२] आखउ तोहि, इतनउ[३] जे न सकहि दइ मोहि ।
मइ तो कहुदीनउ[४] सतभाइ, परिहा[५] जउ देखाहि दौडाइ[६] ।।३३०।।

भानुकुमार का घोड़े पर चढना

निसुणि वयणु कुवर मन रल्यउ, कोपारूढु[१] तुरगइ[२] चढिउ[३] ।
विषमु तुरंगु न[४] मकउ सहारि, घोड़े[५] घाल्यो भानु अखारि ।।३३१।।

---

(३२७) १. वंभण चिरत कहइ आपणउ (क) वाभणु गवडु कहइ आपणउ (ख) वंभण नाउ कहइ आपणा (ग) २. तेजी एह (क ग) ते जिउ (ख) ३. रण समवह तणउ (क) समुवह तणा (ग)

(३२८) १. वहु (ग) २. वहु ति (क) बहुतु (ग) ३. निसुण (ख) ४. इसउ करेउ (ग) अखो तोहि (क) आखउ तोहि (ख) ५. सो आयो (क) तुझ जोगो (ग)

(३२९) १. मनह (ख) २. सनाहि (ग) ३. वदन (क) ४. तव (ग) को। (क)

(३३०) १. हहु (क) कहुउ (ग) २. आयौ (ग) ३. मांगिउ सके न दइसी कोइ (क) इतनउ जे न सकहि दइ मोहि (ख) मांग्या देइ न सकइ मोहि (ग) ४. वोलिउ सतिभाउ दीना रुपसाउ (ग) ५. परहुवाउ (क) जउ जे इस कहुं लइ दउडाइ (ग) ६. दउडाइ (ख) मूल प्रति—मामिउ जइ सकइ वं मोहि

(३३१) १. कोप रूपि सु (ग) २. तुरंगम (क) लइ चलिउ (ख) ४. नवि सहो (क) ५. भानकुमार घालिउ पछारि (क) घोडइ दीनउ भानु सु राडि (ख) घोडे राड्या भानुकुमार (ग)

पडिउ भानु यहु[1] वडउ विजोगु, हासी करइ सभा को लोगु ।
यह[2] नारायणतनो कुमारु, या[3] समु नाही अवर असवारु ॥३३२॥
भणइ विप्र तुम काहे रले[1], इहि तरूणे पह[2] वूढे भले ।
दूरह[3] ते करि आयउ आस, भानकुवर तइ कियउ निरास ॥३३३॥
हलहर भणइ[1] विप्र जिण डरहु[2], इन्ह[3] घोडे किन तुम ही चढउ ।
हौ वूढउ चाहौ[4] टेकणौ, दिखलाउ[5] पवरिष[6] आपणउ ॥३३४॥

प्रद्युम्न का घोड़े पर सवार होना

जण[1] दस वीस कुवर पाठए, विप्रह तुरी[2] चढावण गए ।
तउ वाभण अति भारउ होइ, तिहिके[3] कहै न सटकइ सोइ ।३३५।
तुरीय चढावण आयो भाणु, उलगाणे[1] को नाही मानु ।
जण दस वीस कियउ भरिवाउ, चडिवि[2] भान गलि दीनउ पाउ३३६
चढइ विप्र असवारिउ करइ, अंतरिख भो[1] घोरो[2] फिरइ ।
दिठउ सभा अचंभो भयउ, चमतकार करि उपइ[3] गयउ ॥३३७॥

---

(३३२) १. जब हुवो (क) तब भया (ग) २. ए (क) इहु (ख ग) ३. समान (क) इहि समु (ख) इसु सरि (ग)

(३३३) १. हंसे (ख) २. हम (क) ते हम (ग) ३. दूर थकी (क)

(३३४) १. कहइ (क) २. मत अडहु (ग) ३. रणि को (क ख) इसु घोडइ तुम बेगहु चढिउ (ग) ४. चाहउ विकणिउ (क) चाहउ वेकणउ (ख) चालउ टेकणा (ग) ५. दिखलावउ (ख) ६. बल पोरुष (क)

(३३५) १. वीषम (ख) २. तू चढावण भए (क) ३. तिह कइ कियइ न उहुइ सोइ (क) तिन्ह कइ कहइ नइ चाडइ सोइ (ख) तिन के कहे न सकइ चढि सोइ (ग)

(३३६) १. उलगाण (क) उलगणो (ख) उलगण (ग) २. चढयो तुरंग दिया गलि पाउ (ग) मूलप्रति—उलमाणे कउमाझ न माहि

(३३७) १. हुइ (क ग) २. आगे (ब) ३. ऊपमि (क ग)

प्रद्युम्न का मायामयी दो घोड़े लेकर उद्यान पहुँचना

फुणि सो रूप खधाइ[1] होइ, द्वौ घोड़े निपजावइ सोइ ।
वन उद्यान रावलुहो[2] जहा, घोड़े खाची[3] पहुतउ तहा ॥३३८॥
वणह[1] मयण पहुतउ जाइ, तउ[2] रखवाले उठे रिसाइ ।
इह वण चरण न पाव कोइ, काटइ[3] घास विगुचनि होइ ॥३३९॥
कोपि मयण मन[1] रहउ सहारि, रखवालेसहु[2] कहयउ हकारि[3] ।
कछुस[4] मोलु आइ तुम्हि लेहु, भूखे तुरी चरण किन देहु[5] ॥३४०॥
तवइ[1] भइ तिन्हु की मतु हारि, काम मूदरी देइ उतारि ।
रखवाले बौलइ[2] वइसाइ, दुइ घोड़े[3] ए चरहु अधाइ ॥३४१॥
फिरि फिरि घोड़ो वग मा चरइ, तर[1] की माटी उपर करइ ।
तउ रखवाले कूटइ[2] हीयउ, दू घोड़े वणु चोपटु[3] कीयउ ॥३४२॥
दोनी[1] तिनसु काम मूदरी[2], वाहुरी हाथ मयण कै[3] चढी ।
सो वर वीर पहुतउ तहा, सतिभामा की वाडी जहा ॥३४३॥

---

(३३८) १. खुधाइ (क ग) २. रावल (क) रखवालउ (ख) सुरावल (ग) ३. रचि (क) खइंचि (ख) खंची (ग)

(३३९) १. वण महि (क ख ग) २. कावउ खास चरावइ जाइ (क) काटइ घासु विगूचइ सोइ (ख) तीसरा चौथा चरण—क प्रति—तव रखवाला बोलइ एम घास रावलउ काटइ केम (क) ३. कापइ तासु विधावइ सोइ (ख) काढइ घास विगूचइ सोइ (ग)

(३४०) स. कोप (क) जिन (ग) २. वंशहि जस हारि (ख) बुलाइ (ग) ४. कछू मोल तुम हम पहि लेहु (क) कछू मोलि तुम्हि आपणउ लेहु (ग) ५. तुम (क)

(३४१) १. तव कीनी (ग) २. बोलहि (क) बोले (ग) ३. लेहु (ग) मूलप्रति—वइषइ

(३४२) १. तल की (क ख ग) २. तूंटहि (ख) पीटहि (ग) ३. चउपटु (ग) चउपट (ख) अन्तिम चरण क प्रति में नहीं है ।

(३४३) १. मूंदडी (क ख) २. दीनी तहि (ग) ३. कुमर के पडी (क)

वाडि मयरण पहुतउ जाइ, वहुत विरख दीठे ता[१] ठाइ ।
कोइ न जाणइ तिनकी आदि, वहुत भाति फूली फुलवादि ।३४४।

उद्यान में लगे हुये विभिन्न वृक्ष एवं पुष्पों का वर्णन

जाइ जुही पाडल[१] कचनारु, ववलसिरि[२] वेलु तिहि सारु ।
कूंजउ महकइ अरु[३] कणवीरु, रा[४] चंपउ[५] केवरउ[६] गहीरु ।।३४५।।

कुंढु[१] टगरु मंदारु सिंदूरु, जहि वंवे[२] महइ सरीरु[३] ।
दम्वणा[४] मरुवा केलि अणंत[५], निवली[६] महमहइ अनंत ।।३४६।।

आम जंभीर सदाफल घणे, वहुत विरख तह दाडिम्व[१] तणे ।
केला दाख विजउरे[२] चारु, नारिंग[३] करुण[४] खीप[५] अपार ।।३४७।।

नीवू पिंडखजूरी संख[१], खिरणी लवंग छुहारी दाख ।
नारिकेर फोफल वहु फले, वेल कइथ घणे आवले ।।३४८।।

---

(३४४) १. तिह (क) तहि (ख)

(३४५) १. पाटल (क) पाडले (ख) २. वाउल सेवती सो सभिचार (क) वावल (ख) ३. अवर (ख) ४. राइ (क) राय (ख) ५. चंपा (क) ६. केतकी गहीर (क) केवडउ हीर (ग)

(३४६) कुंद अगर मंदार सिंदूर (क) कूट्ठ टगरु मधुरु सिंदूरु (ख) २. मह महइ (क) महकइ (ख) ३. ससरीरु (ख) ४. ववणउ (क) ववणा (ख) ५. महंत (ख) ६. नीव्वू (क) नेवाली (ख)

(३४७) १. अगणत गिणे (क) जाजिण गणे (ख) २. विजौरी (क) ३. नारिली (क) करणा (क) करुणा (ख) ५. खीप (क ख) मूलप्रति में 'खीपि' पाठ है

(३४८) १. अणंत (क) असंख (ख) मूलप्रति में कइथ के स्थान परहथ पाठ है

नोट—३४४ से ३४८ तक के पद्य 'ग' प्रति में नहीं है ।

प्रद्युम्न का दो मायामयी बन्दर रचना

वाडी देखी अचंभिउ वीर, तव मन चितइ साहस धीर।
जइसइ लोग न जाणइ[1] कोइ, वांदर[2] दुइ निपजावइ सोइ ॥३४६॥

तउ वंदर[1] दीने मुकलाइ, तिन सब वाडी घाली खाइ।
जो फुलवाडि[2] हुती वहु भाति, वंदर घाली सयल निपाति।३५०।

फुणि[1] ते वंदर पइठे[2] मोडि, रूख[3] विरख सव घाले तोडि।
सव[4] फल हली तव संघरी, तउपट[5] करि सव वाडी धरी ॥३५१॥

लंका जइसी[1] की[2] हणवंत, तिम वारी की[3] वालखयंत।
भानु कुम्वर हो[4] वैठो जहा, मालि जाइ पुकारयो तहा ॥३५२॥

मालि भणइ[1] दुइ कर जोडि, मो[2] जिन[3] सामी लावहु खोडि।
वंदर[4] द्वै[5] से पइठे[6] आय, तिहि[7] सव वाडी घाली खाइ ॥३५३॥

जवति[1] माली करी पुकार, रथ चढी कुम्वर लए हथियार।
पवण वेग सो धायउ[2] तहा, वंदर[3] वाडी तोरी[4] जहा ॥३५४॥

---

(३४६) १. जाणइ (क ख ग) २. वानर (क) बंदर (ख ग)

(३५०) १. वानर (क) २. फुलवाडि (ग) मूलप्रति में फुलवावि पाठ है। यह चौपई 'ख' प्रति में नहीं है।

(३५१) १. फुणते (ख) २. पठए (क) ३. रुक्ख (ख) ४. सब्ब फलाहली (ख) फुनवाडी (ग) ५. चउपर वाडी करि सवि धरी (क ख) चउड चपट तिह वाडी करी (ग) मूलप्रति में 'वेव पाठ है

(३५२) १. जिस करी (क) जेमसी (ग) २. करी (क ख ग) ३. लीधी खु खपंत (क) किय काल कयंति (ख) तउ वाडी वंदरि रवाधन्ति (ग) ४. छइ (क) था (ख)

(३५३) १. विनवइ (क ग) २. मुझ (क) मोहे (ग) ३. मत (क) ४. वनचर (क) ५. वाडी (क) दुइ (ख ग) ६. इहि बइठा आइ (ग) दुइ तहि पइठे आइ (ख) ७. तिन (क) तिन्ह (ख) तिम्ह (ग)

(३५४) १. जब तिहि (क ख ग) २. धाउ (क) पहुता (ग) ३. वानर (क) ४. तोडइ (क) तोडी (ख) तोडहि (ग)

प्रद्युम्न द्वारा मायामयी मच्छर की रचना करना

तउ मयरधउ काहो[1] करइ, मायामइ[2] मछर रचि[3] धरइ।
तिहि ठा भानु सपतउ जाइ[4], खाजतु[5] मछर[6] चलिउ[7] पलाइ ॥३५५॥
भानु भाजि णिय[1] मंदिरि गयउ, पहरकु दिवसु आइ तिह भहउ[2]।
तंखिणि वहु वरकामिणी[3] मिली, भानइ तेल चढावण चली ॥३५६॥

प्रद्युम्न द्वारा मगल गीत गाती हुई स्त्रियों के मध्य विघ्न पैदा करना

तेल[1] चढावहि[2] करइ सिंगारु, सूहउ[3] गावइ मंगलुचारु।
रथ चढि कुवरिति[4] उभीभइ, फुणि मटियाणउ[5] पूजण गइ ॥३५७॥
तवइ मयण सो काहो[1] करइ, ऊंटु तुरंगु जोति[2] रथ चढइ[3]।
ऊटू तुरंगु सुअठे[4] अरडाइ, भानु रालि[5] घोडउ घर जाइ ॥३५८॥
पडिउ भानु उइ विलखीभइ[1], गावत आइ[2] रोवति गइ।
ऊटू तुरंग उठे अरराइ, असगुन[3] भयो न जाण न जाइ ॥३५९॥

---

(३५५) १. काहुउ (क) अइसा (ग) २. मायारूप (ग) ३. तह करइ (क) रचिति धरइ (ग) ४. मूलपाठ तहां जाउ (ग) भानुकुमरु तउ पहूंता आइ (ग) ५. खाजत (क) खाजनू (ख) ६. माछर (क ग)–७. चलउ (क ख) खिणि रहो सो चली पलाइ (ग)

(३५६) १. जिन (क ग) २. आइ तिह थयो (क) तहां तिसु भया (ग) ३. नयरी (ग)

(३५७) १. तिलु (ख) २. चढुवहि (ख) ३. अइसइ (क ख) तब से (ग) ४. कुवरति (क) ते (ख)–चढ्यो कुंवरु रथि आगे भयो (ग) ५. मटियाणी (क) मढियाणउ (ख) मढियाणउ (ग)

(३५८) १. तहि अइसो करइ (ग) २. जोडि (ग) ३. चलइ (क ख) चरइ (ग) ४. उठ्या अरडाइ (क ख) तवहि उर सो करइ पुकार (ग) ५. असवरण भयो न जाणइ सुहाइ (क) घोडा भागा भानहि मार (ग)

(३५९) १. तब विलखा भया (ग) २. गावै थी सो घर कहु गया (ग) ३. असवरण (ख) नोट—यह पद्य क प्रति में नहीं है।

प्रद्युम्न का वृद्ध ब्राह्मण का भेष बनाकर सत्यभामा की बावड़ी पर पहुँचना

फुणि मयरद्धउ बंभगु भयउ, कर[1] धोवती कमंडलु लयउ।
लाठी टेकतु चलिउ सभाइ, खरण वावडी पहूतउ जाइ[2] ॥३६०॥
उभो भयउ जाइ सो तहा, सतिभामा की चेरी[1] जहा।
भूखउ वामरगु जेम्वरगु[2] करहु, पारिगउ पियउ[3] कमंडलु भरहु ॥३६१॥
फुणि चेडी जंपइ तंखरणी[1], यह वापी सतिभामा तरणी।
इरिग[2] ठा पुरिषु न पावइ[3] जारग, तू कत आयउ विप्र अयारग ॥३६२॥
तउ बंभरग कोपिउ तिरगकाल[1], किन्हहू[2] के सिर मूडे हि वाल[3]।
किन्हहू[4] नाक कान ते खुटी[5], फुणि वंभरगु पइठउ[6] वावड़ी ॥३६३॥

विद्या बल से बावड़ी का जल सोखना

फुणि तहि वुधि उपाइ घरणी, सुइरी[1] विद्या जल सोखरणी।
पूरि कमंडलु निकलिउ सोइ, सूकी वावडी[2] रीति होइ ॥३६४॥

कमंडलु के जल को गिरा देना

सूकी देखि अचंभी नारि, गो वाभरण चोहटे[1] मझारि।
धाइ लड़ी वाहुडी कर गयउ, फुलि[2] कमंडलु नदी होइ वहउ ॥३६५॥

---

(३६०) १. तलि (ग) २. आइ (क ग)

(३६१) १. वावडी (क) चेडी (ख ग) २. जीमरण (क) जेमरगु (ख) जीवगु (ग) ३. पारगी पिए (क) पारगी देहु (ग)

(३६२) १. ता तरणी (क) २. इहि ठा (ख ग) ३. आवइ (क)

(३६३) १. तिसि काल (क) तहि बाल (ख) तहितात (ग) २. किण्हहूकउ (क) किन्हही के (ख) तिन्ह के (ग) ३. वाल (क ख ग) ४. किनहू (क) सबे (ग) ५. खुडी (क ख ग) इव (क) ६. वइठावउ (ग) मूलप्रति में 'तिताल' पाठ है

(३६४) १. सुमरी (क) सुमरी (ख) संवरी (ग) २. वाइ (ग)

(३६५) १. चउहटे (ग) ते पहुती सतभामा वारि (ग) २. फूटि (ख)

वूडण लागी पाणी हाट, भणहि वाणिए पाडी पाठ ।
नयर लोगु सबु कउतगि मिलिउ, इतडउ करिसु तहां ते चलिउ ॥३६६॥

प्रद्युम्न का मायामयी मेढा बनाकर वसुदेव के महल में जाना

फुणि तहि मयण मित्र[1] चितयउ, माया रूपी मेढो[2] कियउ ।
पहुतउ वसुदेव तणौ[3] खंधार, कठीया जाइ जणाइ सार ॥३६७॥
तउ वशुदिउ[1] वोलइ सतभाउ[2], वेगउ तहा भीतरि[3] हकराउ[4] ।
कठिया जाइ संदेसउ कहिउ[5], ले मैंढो[6] भीतरि गयउ ॥३६८॥
छोटो[1] मैंढो धरो न संक[2], विहसि[3] राउ तव छाडी टंक ।
तउ मयरद्धउ वाहु कहइ, वात एम कौ कारणु अहइ[4] ॥३६९॥

---

(३६६) क प्रति में—
कमंडलु भरि चलिउ बाजारि, करथो पडिउ कंमडलु सारि ।
फूटि कमंडलु नवू तिह चली, लोक उत्तर पूछइ वेवली ॥३७४॥
पूछइ पणिहारी बइठे हाट, भणहि वाणिए पाडी हाट ।
नगर लोग सब कौतिग लिउ, इतनो करि तहां थी चलिउ ॥३७५॥
ख प्रति
वूडण लागी पाणी हाट, भणहि वाणिए पाडी पाठ ।
नयर लोगु सबु कउतगि मिलिउ, इतडउ करिसु तहा ते चलिउ ॥३७१॥
लोग महाजन कौतिग मिल्यो, इतना करि बाहुडि चाल्यो (ग)
ग प्रति
वंभण जाइ जणाईसार, गय वंभण चउहटं मझारि ॥३५८॥
फारि कमंडलु नही हुइ चली, नगर उनी बोलइ तब बली ।
डूबण लागउ सभु बाजार, सवइ लोग मिलि करहि पुकार ॥३५९॥

(३६७) १. मनु (क) बहुडि (ग) मंतु (ख) २. मढिउ (क) मेढउ (ख) माटी (ग) ३. के द्वारि (ग)

(३६८) १. वसुवेउ (क) वसुहिउ (ख) वासुदेव (ग) २. तिहि ठाइ (ग) ३. सातरिह (ख) वेडा गुइह भीतरह कराउ (ख) ४. बुलाइ (ग) ५. कियउ (ख) चयउ (ग) ६. लै भागउ बहु (क) ले मींढा उहु भीतरि गयो (ख ग)

(३६९) १. ठाडिउ (क) छोडिउ (ख) छूटा (ग) २. संख (क) संग (ग) ३. विहसि रायणि आडी णक (क) विहसि राय पुछ ऊटी टंग (ख) विहसि राय तब वोनी टंग (ग) ४. अछइ (क ग) मूलपाठ सही

विहसि अणंगु पयंपइ ताहि, हउ परदेसी वाभण आहि ।
दुखइ[1] टंक तुहारी देव, तउ हउ[2] जीवत उवरउ केम्व ॥३७०॥

तउ जंपइ वसुदेउ वहोडी, इहिर वयण तुहि[1] नाही खोडी ।
मन आपणे धरइ जिन[2] संक, मेरी तूटि[3] जाइ किन टंक ॥३७१॥

तव तिन्हि मेहउ[1] दीनउ छोडि, देखत सभा टांग गउ तोडि ।
तोडि टांग मैढो वाहुडिउ, वसुदेउ राउ भूमि[2] पडिगयउ ॥३७२॥

वशुदेउ राउ भूमि गिरि पडिउ, छपन कोटि[1] मन हासउ[2] भयउ ।
तिहि ठा सिगली सभा हसाइ, फुणि सतिभामा कै घर जाइ ॥३७३॥

प्रद्युम्न का ब्राह्मण का भेष धारण
कर सत्यभामा के महल में जाना

कनक धोवतो जनेउ धरै, द्वादस टीकौ चन्दन करै ।
च्यारि वेद आचूक[1] पढंत, पटराणी घर जायो पूत[2] ॥३७४॥

उभो भयो जाइ[1] सीद्वार, कठिया जाइ जणाइ सार ।
जेते वाभण भीतर घणे, सतिभामा वरजे आपणे ॥३७५॥

---

(३७०) १ देखइ कत तुहारी सेव (क) २. तुह जिनवरउ मन मःनउ देव (क) तउ हउ तुम्ह ते उवरउ केव (ग) 'हउ' मूलप्रति में नहीं है ।

(३७१) १. तुम माही खोडि (क) २. मा (ख) न (ग) ३. टूट (क)

(३७२) १. मीढउ (क ख ग) टांग (ख) टंग (ग) २. भूमि गत (क) वासुदेव भूमहि गिर पड्यो (ग)

(३७३) १. कोडि (क ख ग) २. मिलि हासउ किउ (क) ग प्रति–हो वसुदेव कहा यहु किया,.................. ।

ताली पारैं सभा हसाइ, फुणि सतिभामा कै घरि जाइ

(३७४) ग प्रति में–करिहि कमंडलु धोती बंधि, द्वादश तिलक जनेउ कंठि ।
च्यारिउ वेद अचूक भणाइ, पटराणी घर पहुंता जाइ ॥

१. अचुपके (ख) २. पहूत (क ख)

(३७५) १. जाइ सीह दुवारि (क ख) सुलासु (ग)

सुण्यो पढंतउ[1] उपनो भाउ, वहु[2] वाभरण भीतर हकराउ[3] ।
राणी तणउ हकारउ भयउ, लाठी टेकतु भीतर गयउ ॥३७६॥

अक्षत[1] नोरु हाथ करि लेइ, राणी जाइ[2] आसीका देइ ।
तूठी राणी करइ पसाउ, मागि विप्र जा[3] उपर भाउ ॥३७७॥

सिर कंपत वंभरण जव कहइ, वोल तिहारो साचउ अहउ[1] ।
वयरगु एकु हौ आखउ[2] सारु, भूखउ वाभरण देहु आहारु[3] ॥३७८॥

राणी[1] तणउ पटायतु[2] कहइ, भूखउ खरउ करटहा[3] अहइ[4] ।
राणी आणइ[5] अर्थु भंडारु, एकुउ[6] मागइ एकु आहारु[7] ॥३७९॥

तुम विप्र कहत हहु भलउ, तुह्मि वहु[1] वाभरगु हुउ एकलउ[2] ।
वेद पुराण कहिउ जो[3] सारु, उतिमु एक आहि आहारु ॥३८०॥

वैठि[1] विप्र[2] उठ भोजन करहु, उपरा उपर काहे लडहु ।
एक ति[3] उपरि तल वैसरहि, अवरइ विप्र परसपर लडहि[4] ॥३८१॥

---

(३७६) १. पंडित (ग) २. इह (क) बहु (ख) इहि (ग) ३. वुलाइ (क) लेइ वुलाइ (ग) इहु संति कराइ (ख)

(३७७) १. अखत (ख) अखित (ग) २. कहूं आशिष सो देइ (ग) ३. जिह (क) जह (ख) जिसु (ग)

(३७८) १. कहइ (ग) २. अपउ (क) ३. आधारु (ग)

(३७९) १. घणी ततउ पठाइतु कहइ (ख) २. चितु आहाइ (ग) सोइउ कसइ (क) ३. करहिंहा अहइ (क) ४. कहइ (ख ग) ५. आपइ (क ख) आफइ (ग) ६. तू किउ (क) वडुवा (ख) हुउतउ (ग) ७. आधारू (ग)

(३८०) क प्रति में यह छन्द नहीं है। १. सभि (ग) एकला (ग) ३. सो (ग)—'ख' प्रति में चौथा चरण नहीं है ।

(३८१) १. वेसि (क) बइसि (ख) बइसहु (ग) २. बंभरण (ग) ३. एक नि विप्रति उपरि लडहि (क) ४. अलहि (ख)

निसुनहु वात परदवन तणी, मुकलाइ[1] विद्या जूभणी ।
उपरापहति[2] वंभण लडइ, सिर[3] कूटहि कुकुवार करहि ॥३८२॥

राणी बात कहइ समुभाइ, इतु[1] करटहानु[2] लागी वाइ[3] ।
दूरउ[4] होइ तहि[5] घालइ रालि[6], नातरु वाहिर देहि निकालि ॥३८३॥

तउ मयरधउ वोलइ वयरणु, साधु[1] अघाणउ भूखे[2] कम्वणु ।
खुधा[3] वियापइ सुणइ विचारु[4], हमि कहु मूठिक देहि अहारु[5] ॥३८४॥

सतिभामा ता तउ[1] काहौ[2] करइ, कनक थालु तस आगइ[3] धरइ ।
वइसि विप्र तसु[4] भोजन करहु, उन[5] की वात सयल[6] परिहरहु ॥३८५॥

वैठउ[1] विप्रु[2] आधासणु[3] मारि, चकला दिनउ आगइ सारि ।
लेकर[4] दीनउ हाथु पखाल, आणिउ[5] लोणु परोसिउ थाल ॥३८६॥

---

(३८२) १. मुकलावइ (ख) २. उपरा (ग) पहुते (ख) उपरि (ग) ३. सिर फूटहि कोलाहल करहि (क) सिर कूटहि कूवारउ करहि (ख) पीटहि सीसु कूक बहु करहि (ग)

(३८३) १. इते (ग) २. काइटा (क) कररहि (ग) ३. वाइ (क) पाइ (ग) ४. भलइ बुरउ (ख ग) ५. तउ (क) जउ (ग) ६. राडि (ग) मूलप्रति में 'वार' पाठ है

(३८४) १. साथु (क ख) २. भपउ (ख) ३. बुधा वियापहि (ख) बुडे विप्प (ग) ४. तू वासा (ख) ५. अघारू (ग)

(३८५) १. तब (क ग) २. इसी (ग) ३. तब आणि धराइ (ग) ४. तुम (क) तुम्ह (ख ग) ५. उन्ह की (ख ग) इनकी (क) ६. सबे (ग) मूलप्रति में 'तुम्ह की' पाठ है ।

(३८६) १. बइसइ (क) २. विपु (ख) ३. अघाणि (क) ४. लोटउ (क) ५. अण्णिउ (ख) नोट—यह छन्द 'ग' प्रति में नहीं है ।

प्रद्युम्न का सभी भोजन का खा जाना

चउरासी हांडी[1] ते[2] जाणि, व्यंजन[3] बहुत परोसे आणि।
मांडे[4] वडे[5] परोसे तासु, सवु समेलि[6] गउ एकुइ गासु ॥३८७॥

भातु परोसइ भातुइ खाइ, आपुण राणी वैठि आइ।
जेतउ घालइ सवु[1] संघरइ, वडे[2] भाग पातलि उवरइ[3] ॥३८८॥

वाभण भणइ निसुणि हो बाल, अधिक पेट मोहि उपजी ज्वाल।
तिमु[1] तिमु लोगु सयलु परिहरयउ, मो आगे सवु कोडा[2] करहु ॥३८९॥

जहि जेम्वण[1] न्योते[2] सवु लोगु, तितउ[3] परोसिउ वाभण जोगु।
नारायणु कहु लाडू धरे, तेउ सयल विप्र संहरे ॥३९०॥

तउ राणी मन विलखी होइ, तिहि[1] तो खाइ सयल[2] रसोइ।
यहु[3] वाभणु अजहु न अघाइ, भूखउ भूखउ परिविलखाइ[4] ॥३९१॥

भयण वीरु[1] यहु वडउ विजोगु, तइ जू[2] नयर सवु न्योत्यो लोगु।
सो काहो जेम्वहिगे[3] आइ, इकुइ विमु न सकइ अघाइ ॥३९२॥

---

(३८७) १. विधि ग) ते तउ (ग) २. भोजन (ग) ४. मंडा (क) मांडे (ख ग) ५. बहुत (ग) ६. सकेलि (ख ग) सबनि कीयो एके गासु (क)

(३८८) १. ते तउ खाय (ख) २. वडइ (ख) ३. ऊवरइ (क) उवराइ (ख) मूलप्रति में 'ठाइ'

(३८९) १. निवलो लोग सबहि परिहरउ (ग) २. कूडा (क ग)

(३९०) १. जीमण (क ख) ज्योणार (ग) २. निउतउ (क) निउते (ख) निवतिह (ग) ३. तिन्ह कइ उपज्या वडा वियोग (ग)

(३९१) १. इहतउ (क ख) इनतउ (ग) २. सबहि (ए) ३. खाते खाडू नारायण खाइ (क) ४. विललाइ (क ख ग)

(३९२) १. बाक (ख) विप्र (ग) २. नगर काज (ग) ३. जीमइगो (क) जोवहिगे (ख)

राणी चितह उपणी कारिण, काहौ अवरु परोसो आणि ।
भूखउ वाभण काहो करइ, घालि आंगुली सो उखलइ[१] ॥३९३॥
अैसो बांभण कोतिगु करइ, सव[१] मांडहौति उखली भरइ ।
मान भंगु राणी कहु कीयउ, मयणु विप्र ते खूडउ भयउ ॥३९४॥

प्रद्युम्न का विकृत रूप बनाकर रुक्मिणी के घर पहुँचना

मूंडी मूडि नलीयरा[१] लयउ, निहुडिउ चलइ कुवडा[२] भयउ ।
वडे दांत[३] विरूपी[४] देह, फुणि[५] सु चलिउ[६] माता के गेह ॥३९५॥
खण खण रूपिणि चढइ अवास, खण खण सो जोवइ चोपास ।
मोस्यो[१] नारद कह्यउ निरुत, आज तोहि घर आवइ पूत ॥३९६॥
जे मुनि वयण[१] कहे परमाण[२], ते सवई पूरे सहिनाण ।
च्यारि[३] आवते[४] दीठे फले, अरु आंचल[५] दीठे[६] पीयरे[७] ॥३९७॥
सूकी वावी भरी सुनीर, अपय[१] जुगल भरि आए खीर ।
तउ रूपिणी मन विभउ[२] भयउ, एते[३] ब्रह्मचारि तहा[४] गयउ ॥३९८॥

---

(३९३) १. सब पाछउ घरइ (क) सो करइ (ख) ऐसा केतिग बंभण करै (ग)

(३९४) १. सव माहउ उखालि सो भरई (क) सव माणहु उ उखलि सो भरइ (ख) सउ मंडा अखलि सो भरऊ (ग)

(३९५) १. कमंडलु हाथि (ख) नालियरु (ग) २. हूडउ भयो (क) भयउ (ख) होइ (ग) ३. दातारिव (क) दंत (ग) ४. विरुखी (ख) विरुपिय (ग) ५. वहुडि (क) ६. सुवडिउ (ख)

(३९६) १. मुहिस्यो (क) हमसो (ग) ख प्रति में प्रथम चरण नहीं है ।

(३९७) १. वरन (क) वरु (ग) २. प्राले (ग) ३. वारि (ख ग) ४. अम्बते ५. अंचल (ग) ६. वीसहि (क) हुये (ख ग) ७. पीयला (क)

(३९८) १. थाणय (क) पयोहर (ख) २. विसमो (क) विसमा (ग) विभउ (ग) ३. इतडउ तापसु वारेहि गया (ग) ४. कह भयउ (ख)

नमस्कारु तव रूपिरिण करइ, धरम विरधि खूडा[1] उचरइ ।
करि आदरु सो विनउ करेइ, कणय सिघासणु वैसण देहु ॥३९९॥

समाधान पूछइ समुझाइ, वह भूखउ भूखउ चिललाइ ।
सखी बूलाइ जणाइ सार, जैंवण करहु म लावहु वार ॥४००॥

जीवण[1] करण उठी तंखिणी, सुइरी[2] मयण अग्नि[3] थंभीणी ।
नाजु[4] न चुरइ चूल्हि धुंधाइ, वह भूखउ भूखउ चिललाइ[5] ॥४०१॥

हो[1] सतिभाम कै घरि गयउ, कूर न पायो भूखउ भयउ[2] ।
जो[3] दीयो सो लीयो छीनि, तिनस्यो पूरी लाघण तीन ॥४०२॥

रूपणि चितह[1] उपनी काणि, तउ लाडू[2] ति परोसे आणि ।
मास[3] दिवस को लाडु धरे, खूडे[4] रूप सवइ संघरे ॥४०३॥

आधु लाडू नारायण खाइ, दिवस पंच ज्यो रहइ आघाइ ।
तव रूपिणि मन विंभी[1] कहइ, किछु किछु जाणउ यहु अहइ ॥४०४॥

---

(३९९) ३९८ के पश्चात् एक छन्द ग प्रति में और है जो निम्न प्रकार है—
तापस देखि उपना भाउ, तव रूपणी पूछई सतभाउ ।
स्वामी आगमणु किहां थी भया, एता ब्रह्मचरणु कहां ते लिया ॥
१. खेडउ (क) खूडउ (ख)

(४०१) १. पाक करण उठी तंखिणी, (क) २. सुमरी विद्या (ग) ३. अगनि (क) अगि (ख) अग्नि बंधणी (ग) ४. नाज न चढइ भूंमि धूंजाइ (क) नाज न राझहि चूल्हि धुंधाइ (ख) अग्नि बलइ चूल्हइ, धूंधाइ (ग) ५. विललाइ (क ग)

(४०२) तबहि मयण उठि मा पहि गया (ग) २. रहिउ (क) भयउ (ख) ३. सतिभामा सो (ग)

(४०३) १. चित्त (क) चितहि (ग) २. लगु लडू परुसउ (ग) परुसे (क) ३. नाराइणु कहु लाडू धरे (ग) ४. खोडे वंभण सब संघरे (ग) मूलप्रति में 'वीर' पाठ है ।

(४०४) १. विभउ (ख) चितिहि विसमाइ (ग)

तउ राणी मन विसमउ करइ, अइसइ पूतउ रह[1] को घरइ।
जइ[2] उपजइ तो कहसा न जाइ, किमु करि नारायण पतियाइ ॥४०५॥
तउ रूपिणी मनि भयो संदेह, जमसंवर घर वाढिउ एहु।
विद्या वलु हइ[1] हीएह घणउ, यह परभाउ अहि[2] विद्या तणउ ॥४०६॥
फुणिइ[1] जं पूछइ करि नयणु[2], लयउ[3] वरतु तुम्हि कारणु कवणु।
तव रूपिणि पूछइ धरि भाउ, सामी कहहु आपणउ ठाउ ॥४०७॥
काहा तै तुम्हि भो आगमणु, दीनी दिष्या[1] तुहि गुरु कवणु।
जन्मभूमि हो पूछो तोहि, माता पिता पयासो[2] मोहि ॥४०८॥
तवहि रिसाणौ वोलइ सोइ, गुर वाहिरी दीख[1] किमु होइ।
गोतु नाम सो पूछइ ताहि[2], व्याह विरधि जहि सनवधु आहि[3] ॥४०९॥
हम परदेस दिसंतर फिरहि, भीख[1] मांगि नित भोजन करइ।
कहा तूसि तू हम कहु देहि, रूसइ कहा हमारउ लेहि ॥४१०॥

---

(४०५) १. उवरिको (ग) २. किउ करि लाभइ इसकी माय (ग)

(४०६) १. हइ तुम यह घणउ (क) हइ इह यह घणउ (ख) इसु पहि हइ घणी (ग) २. ग्रत्थि तिसु तणी (ग)

(४०७) मूल प्रति के प्रथम दो चरण ख प्रति में से लिये गये हैं। १. बूजइ (क) २. रुकमिणी (ग) ३. लिउ वरु इहु (ग)

(४०८) १. दीन्ही दीक्षा सो गुरु कवणु (ग) २. पयासहु (क) पयासहि (ख) प्रकीसउ (ग)

(४०९) १. देखहि (क) दीख्या (ख) द्दिष्टि (ग) २. तोहि (क) मोहि (ग) ३ होइ (ग)

(४१०) १. भीख मांगि (क) चरी मांगि (ख) चारि भंग (ग) मूलप्रति में 'चरी मांगित' पाठ है। २. रूसी (क) रूसहि (ख) रुट्ठी (ग)

[१]खूडउ दिठु रिसाणउ जाम, मन विलखाणी रूपिणि ताम ।
वहुरि मनावइ दुइ कर जोडी, हम भूली जिन[२] लावहु खोडी ॥४११॥
तवहि मयणु जंपइ तिहि ठाइ, मन मा कहा विसूरइ माइ ।
साचउ मयणु पयासउ मोहि, जिम्व पडि उतरु आफउ मोहि ॥४१२॥
तउ जंपइ मन करहि उछाहु, जिम्व[१] रूपिणि कउ भयउ विवाहु ।
जिम्व परदवणु पूत्रु हडि लयउ, सयलु कथंतरु पाछिलउ कहिउ।४१३।
धूमकेत हौ[१] सो हडि लियउ, फुणि तह जमसंवरु लै गयउ ।
मुहिसिहु नारद कहिउ निरुत, आजु तोहि घर आवइ पूत ॥४१४॥
अवर वयणु मुनि कहे पम्वाण, ते सवई[१] पूरे सहिनाणु ।
अजहु पूतु न आवइ सोइ, तहि कारण मनु विलखउ होइ ॥४१५॥
सतिभामा घर वहुत उछाह, भानकुवर को आइ विवाहु ।
हारी हो[१]ड न सीधउ काजु, तिहि कारण सिर मुंडइ आजु ॥४१६॥
माता[१] पास[२] कथंतर सुण्यउ, हाथ कूटि फुणि माथो धून्योउ ।
आजु न रूपिणि मन पछिताइ, हउ जणु पूत मिल्यो तुहि आइ ॥४१७॥

---

(४११) १. खरा रिसाणा वीख्या जाम (ग) खूडउ निसुणि रिसाणउ जाम (ख) २. मत (ग)

(४१३) १. जउ (ग)

(४१४) १. सोवत (क) तिह सो (ख)

(४१५) १. सगला (क)

(४१६) १. होड (क) मूलप्रति में 'डोर' पाठ है

(४१७) १. तो मा (ख) २. तसाउ (क)

कंद्रप[1] वुद्धि करी तंखिणी, सुमिरी विद्या वहु रूपिणी ।
निजु माता उझिल करि धरइ, रूपिणि अवर मयाइ करइ ॥४१८॥

सत्यभामा की स्त्रियों का रूक्मिणि के केश उतारने के लिये आना

एतइ वहु वरकामिणी मिली, अरु नाउ गोहिणि करी चली ।
अछइ मयाई रूपिणि जहा, ते वर णारि पहुती तहा ॥४१९॥
पाइ पडइ अरु विनवइ तासु, सतिभामा पठई तुम्ह पासु ।
सामणि जाणहु आए उण लेहु, अलिउल केस उतारण देहु ॥४२०॥
निसुणि वयण सुंदरि यो कहइ, वोल तिहारौ साचउ हवइ ।
निसुणहु चरित अणंगह तणउ, नाउ मूडिउ सिर आपणउ ॥४२१॥

प्रद्युम्न द्वारा उनके अंग काट लेना

हाथ आंगुली धरी उतारि, अर मूंडी गोहिण को नारि ।
नाक कान तिनहु के खुरे[1], फुणि ते सव्व घर तन वाहुरे[2] ॥४२२॥
गामति[1] निकली नयर मझारि, कम्वण पुरिष ए विटमी[2] नारि ।
यहर[3] अचंभउ वडउ विजोउ[4], हासी करइ नगर को लोगु ॥४२३॥
एते छुण ते रावल गई, सतिभामा पहु उभी भई ।
विपरित देखि पयंपइ सोइ, तुम कवणाइ[1] मोकली विगोइ ॥४२४॥

---

(४१८) १. कइंपि (ग)

(४२०) मूलप्रति में—तुम्हि जिन सामिणि ऊण लेहु पाठ है

(४२२) १. पडे (ग) २. सेवडे (ग)

(४२३) १. गावत (क ख) गावतु (ग) २. विडंरी (ख) ३. अउर (क) एहु (ग) इहुरु (ख) ४. वियोग (क) विजोगु (ख) वियोगु (ग)

(४२४) १. कवणे (ख) नाई (ग)

नोट—क प्रति में दूसरा और तीसरा चरण नहीं है ।

तव[1] ते जंपइ विलखी भइ, हम ही रूपिरिग के घर गई ।
नाक कान जो देखइ टोइ, नाउ[1] सरिसु[2] उठी सव रोइ ।।४२५।।
निसुरिग[1] चरितु चर आए तहा, रूपिरिग रावल[2] वैठी जहा ।
विटमी नारि[3] सिर मूंडे घरणे, नाक कान हम काटे सुणे ।।४२६।।
निसुरिग वयरग फुरिग रूपिरणी कहइ, निश्चे[1] जाणौ येहो[2] अहइ ।
काज ताज छोडहि वरवीर, परगट होइ तूं साहस धीर ।।४२७।।

प्रद्युम्न का अपने असली रूप में होना

तव सो पयड[1] भयो परदवरगु, तहि सम[2] रूपिन पूजइ कवरगु ।
अतिसरूप वहु लक्षरगवंतु, तउ रूपिरिग जारिगउ यह[3] पूत ।।४२८।।

वस्तुबंध—जव रूपिरिग दिठ परदवरगु ।
सिर चुंमइ आकउ[1] लीयउ, विहसि वयरगु[2] फुरिग कंठ लायउ ।
अव मो हियउ सफलु[3], सुदिन आज जिहि पुत्रु आयउ ।।

---

(४२५) क प्रति में प्रथम दूसरा चरण नहीं है । १. नाई (क) नाऊ (ख) नाई (ग) २. सिउ ऊठे सवि रोइ (ग)

(४२६) करवि चरितु घरि आया तहां (ग) २. रोवै (ग) ३. तिय (ग)

(४२७) १. निहचउ जाणउ (ख) नीचउ जाणौ (ग) नविहू जाणउ (क) २. कुं इह अहइ (क) इह को अहइ (ख) ये हो अहै (ग) मूलप्रति में 'इवह' पाठ है ।

नोट—दूसरा और तीसरा चरण मूल प्रति और क प्रति में नहीं है । यहां 'ग' प्रति में से लिया गया है ।

(४२८) १. मयण (क) मयणु (ख) परगट (ग) २. सरि (ग) तासु रुपि न पूजइ कवणु (क) सवु को जाणइ सुंदर वयणु (ख) ३. निज (ग)

दस मासइ जइउ[4] धरिउ, सहीए दुख महंत ।
बाला[5] तुणह न दिठ मइ, यहु पछित्तावउ नित ॥४२९॥

चौपई

माता तणे वयणु निसुणेइ, पंच दिवस कउ वालउ होइ ।
खण इकु माह विरधि सो कयउ, फुणि सो मयण भयउ वेदहउ ।४३०।
खण लोटइ खण आलि कराइ, खण खण अंचल लागइ धाइ ।
खण खण जेत्वणु[1] मागइ सोइ, वहुतु मोहु उपजावइ सोइ ।४३१।
इतडउ चरितु तहा तिहि कियउ, फुणि आपणउ रूपो भयउ ।
माता मयणु सुनु[1] मोहि, कवतिगु[2] आज दिखालउ तोहि ॥४३२॥

सत्यभामा का हलधर के पास दूती को भेजना

एतउ अवसर[1] कथंतर भयउ, सतिभामा महलउ[2] पठयउ ।
तुम वलिभद्र भए लागने, आइस[3] काम[4] रूकमिणी तणे ॥४३३॥

---

(४२९) १. वाकउ बीयउ (क) अंकउ भरिउ (ख) अंकउ लिउ (ग) २. हिय तव कंठि लायो (ग) ३. जीतव्य फल (क) जीविउ सफलु (ख) जीवहु सफलु (ग) ४. उरि धारिउ (ख) मइ डरि धरचे (ग) ५. बालकु होतु न दीठु मइ इहु पछितावा पूत (ग)

(४३०) नोट—चौपइ ख प्रति में नहीं है ।

(४३१) १. भोजन रोइ (ग)

(४३२) १. सुणहि तू (क) २. कउतिग (क) नोट—ग प्रति में चौथा चरण नहीं है । मूलप्रति में 'दसो' पाठ है ।

(४३३) १. अमर (क ख ग) २. कंचुकि (क) महला (ग) ३. अइसा (क) अइसे (ख ग) ४. किये (ख ग) मूलप्रति में—'पठयो' पाठ है

महलउ जोइ पहुतउ[1] तहा, दलिभद्र कुवर वैइठे जहा।
जुगति विगतिहि विनइ[2] घणी, एसे काम कीए रूपिणी ॥४३४॥

हलधर के दूत का रूक्मिणि के महल पर जाना

हलहल[1] कोपि[2] दूतु पाठयो[3], पवण वेगि रूपीणि पहु[4] गए।
उभे भए जाइ सीहद्वारु, भीतर जाइ जणाइ सार ॥४३५॥
तवइ मयण वुधिमह धरइ, मूंडउ[1] वेस विप्र को करइ।
वडउ[2] पेट तिनि आपणउ कीयउ, फुणि आडौ दुवारि पडि ठयउ४३६
तवहि दूत वोलइ तिस ठाइ, उठहि विप्र हम भीतर जाहि।
तउ सो वाभण कहइ वहोडि, उठि[1] न सकउ आइयहु वहोडो।४३७।
निसुणि वयण ते उठे रिसाइ, गहि गोडउ[1] रालियउ कढाइ।
जइ[2] इह कीम्वहूं वाभणु मरइ, तउ फुणि इन्हकहू गोहिच चढइ।४३८।

---

(४३४) १. सपत्तउ (क) संपत्तो (ख) संपती (ग) २. वीवी (क) स्वामी बात सुणेहि मुझ तणी (ग)

(४३५) १. बलिभद्र (क) २. वेगि (ग) ३. पाठगो (क) पाठइ (ख) पाठ्या (ग) ४. घरि (ग)

(४३६) १. बूढउ (क ख) बूडा (ग) २. मूलप्रति में 'तहा विपरित' पाठ है

(४३७) १. आनि इह (क) हुउ न सकौ आये बहोड (ग)

(४३८) १. गहि गोडे रालउ इक नइ (क) गोडे झूलहि चलिउ न जाइ (ग) २. जो इहु कबही बंभणु महइ। तउ पुणि इसु की हत्या चडइ (ग) ग प्रति में निम्न पद्य अधिक है—

सो हम कहु वेइ न पइसारु, संधि रहया सो घर का बारु।
गहि गोडा जे रालउ तोहि, मरइ सु बंभणु हत्या आहि ॥४४०॥

प्रवेश न प्राप्त सकने के कारण दूत का वापिस लौटना

अइसो[1] जाणिति वाहुडि गए, हलहर आगइ ठाढे भए ।
वाभण एकु वाइह[2] पडउ, जाणि सु दिवसु पंचकउ मडउ ॥४३६॥
तिन[1] पह हम न लइ पयसारु, रुधि पडिउ[2] सो पवलि दुवारु।
गहि गोडउ जउ जालइ[3] ताहि, मरइ[4] सु वंभणु हत्या आहि ॥४४०॥

स्वयं हलधर का रुक्मिणी के पास जाना

निसुणि वयण हलहर परजल्यउ[1], कोपारूढ हो आपण[2] चलिउ ।
जण दस वीसक गोहण[3] गए, पवण वेगि रूपिणि पह[4] गए ।४४१।
उभे भए ति सीहद्वार[1], दीठउ[2] वाभण परउ दुवार ।
तउ वलीभद्र पइ[4]ाइ ताहि, उठहि विप्र हमि भीतर जाहि ॥४४२॥
तव वंभण हलहरस्यो कहइ, सतिभामा घर[1] जेम्वण गयउ ।
सरस[2] अहार[3] उवरु[4] मइ भरिउ, उठि न सकउ पेट आफरयउ[5] ।४४३।

---

(४३६) १. इसउ वयण (क) अइसउ जाणिति (ख) दीठा वंभणु (ग) २. वारणइ (क) वारिहइ (ख) वाहरि हइ (ग)

(४४०) १. तहि (क) तिहि (ख) सो हम कहु देइ न पइसारू (ग) २. रहया घर का वारु (ग) ३. रालहि (क) राडहे (ख) रालउ (ग) ४. मरइ सु वंभणु हत्या आहि (ग) नोट—यह पद्य ग प्रति में मूलप्रति के ४४० वें पद्य के आगे तथा ४४१ वें के पहिले दिया गया है । मूलप्रति में—मरइ किमइ गोहचहि अउराहि पाठ है

(४४१) १. पज्जलिउ (क) परजलिउ (ख) परजल्यो (ग) २. पुण (ख) आणइ वइसंदरि ज्यों टल्यउ (ग) ३. साथिहि (ग) ४. घरि (ग)

(४४२) १. जाइसीह (क ख) तिसीहउ (ग) २. वारि (क) दीठा वाभणु पडया सुवारि (ग) ३. कहइ हसि वात (ग)

(४४३) १. एजो घरि रहइ (ग) २. सरस (क ख ग) ३. मूलप्रति में 'पहार' पाठहै। ४. उवरु (क) बहुत संचरउ (ख) ५. आफरियउ (क) अफरिउ (ख) आफरै (ग)

तव वलिभद्र कहै हसि वात, एकर हटा[1] न उठइ खात ।
वाभण खउ[2] लालवी होइ, वहुत खाइ जाणइ सवु कोइ ॥४४४॥
तवइ रिसाइ विप्रइ कहइ, तू वलिभद्र खरो निरदयी ।
अवर करइ वाभण की सेव, पर[1] दुख वोलइ तू केव ॥४४५॥
तवइ उठिउ वलिभद्र रिसाइ, गहि गोडउ गहि[1] चल्यउ कढाइ ।
कहा विप्र कहु दीजइ कालि[2], वाहिर करि आवहु[3] निकालि ।४४६।
तव हलहर लइ चलीउ[1] कढाइ, पूछइ मयगु रुक्मिणी माइ ।
एक वात हो पूछउ तोहि, कवण वीर यह आखहि मोहि ।४४७।

रुक्मिणि द्वारा हलधर का परिचय

छपन कोटि मुख मंडल सारु, यह कहिए वलिभद्र कुवारु ।
सिंघजूझ यो जाणइ घणउ, यह पीतियउ[1] आहि तुमि तणउ ।४४८।
गहि गोडइ वह वाहिर गयो, वांधि[1] पाउ धडउ हइ रहउ ।
देखि अचंभउ हलहरु कहइ[2], गुपत वीर य कोण[3] अहइ ॥४४९॥

---

(४४४) १. रिटिया अनूसरि खात (क) रटिहानउ हटहि खात (ख) रटिकान उठूही खातु (ग) २. खरउ (ख) खरा (ग)

(४४५) १. तहु वोघंतउ बोलहि देव (ग)

(४४६) १. तिनि लीयो उचाइ (ग) २. गालि (क ख) माल (ग) ३. यहु देह (क) सुबीजे निकालि (ग)

(४४७) १. रिसाइ (क)

(४४८) १. पीतरिउ (क) पीतिया (ग)

(४४९) १. बुद्धि पाइ खुटउ होइ भयो (क) वढिउ पाउ धइ यहा रहिउ (ख) बाधा पाउ धरति महि हुया (ग) २. करइ (ख) ३. कोइ (ग)

प्रद्युम्न का सिंह रूप धारण करना

राลि[1] पाउ भुइ उभउ रहइ, तहि[2] क्षण सिंह रूप वहु[3] भयउ ।
तहि[4] हलु आवधु लयो सम्हालि, फुणि ते दोउ भीरे पचारि ।४५०।
जूझइ भिरइ अखारउ करइ, दोउ सवल मलावझ[1] लरइ[2] ।
सिंघ रुपि उठियोउ संभालि, गहि गोडउ घालियउ अखालि[3] ।४५१।
छपनकोटि नारायण जहा, पडियो[1] जाइ ति हलहर तहा ।
देखि अचंभ्यो सगलो लोगु, भणइ कान्ह यह वडउ विजोगु ।४५२।

चतुर्थ सर्ग

रुक्मिणि के पूछने पर प्रद्युम्न द्वारा अपने बचपन का वर्णन

इहर[1] वात तो इहइ रही, वाहुरि कथा रुपिणी पह गइ ।
पूछिउ तव नंदन आपनौ, कापह[2] सीख्यउ वल पोरिष घणौ ।।४५३।।
मेघकूट जो पाठइ[1] ठाउ, जमसंवर तहा निमसै राउ ।
निसुणौ[2] वयण माइ रुपिणी, तिहि ठा[3] विद्या पाइ घणी ।।४५४।।

---

(४५०) १. राडि पाउ भौमि ऊभी सोइ (ग) २ तंखिणि (ग) ३. विक्रमइ सो होइ (ग) ४. उठि वलिभद्र घालिउ संभारि (क) उहि हलु आवधु लियो संभालि (ख) हलु आवधु लिया संभालि (ग) मूलप्रति में—'तहि लुवावधु' पाठ है

(४५१) १. मल्लवहु (क) २. जुझिवइ (क) लडहिं (ख) ३. अडालि (क) नोट—ग प्रति में यह छन्द नहीं है । ख प्रति में तीसरा चौथा चरण नहीं है ।

(४५२) १. पडिउ (क ख) पडया (ग)

(४५३) १. अइसो (ग) हरनहर वात उहो इह रहो (ख) २. आपहि करण पउरिषु घणा (ग)

(४५४) १. पढइ (क) पावा (ग) पावइ (ख) २. सुणहु वात माता रूकमिणि (ग) ३. यह (क) था (ख) हुइ (ग)

निसुणि वयण हु आखउ तोहि, नानारिषि लै आयो मोहि ।
उदिधिमाल[1] मइ यह जोडि, फुणि प्रदवन कहै कर[2] जोडी ।४५५।
विहसि माइ तव रुपिणि कहइ, कहा सुभइया नारद अहइ ।
निसुणि पूत यह आखउ तोहि, उदधिमाल दिखलावहि मोहि ४५६

प्रद्युम्न द्वारा रुक्मिणि को यादवों की सभा में ले जाने की स्वीकृति लेना।

तउ मयरद्धउ कहइ सभाइ, वोल एकु हौ मागो[1] माइ ।
वाह पकरि तोहि सभा वसारि[2], लेजइहो जादौनो पचारि ।।४५७।।

यादवों के बल पौरुष का रुक्मिणि द्वारा वर्णन

भणइ[1] माइ सुणि साहस धीर, ए जादौ है वलीए वीर ।
हरि हर कान्हु खरे सपरान, इन्ह आगइ किम पावहु जाण ।४५८।
पंचति[1] पंडव पंचति[2] जणा[3], अतुल[4] वल कौंतीनन्दना ।
अर्जुन भीमु निकुल सहदेउ, इनके पवरिष नाही छेव ।।४५९।।
छपन कोटि जादौ वलिवंड, जिनके भय कांपइ नवखंड[1] ।
एसे[2] खत्री वसइ वहूत[3], किम्व तू जिणइ[4] अकेलो पूत ।।४६०।।

---

(४५५) १. लई अजोडि (ग) लईय वहोडि (क ख) २. ववहोडि (ग)

(४५७) १. बीजै (ग)

(४५८) १. भानउ चलो हउ (ग) २. महुर्वलि (क) कहियहि (ख)

(४५९) १. पांचति (ख) अवर (ग) २. पंचउ (ग) ३. जाण (क ख) ४. अवर मल्ल कैरव नन्दना (क) मल्ल कुंती एांदण (ख) बल कुंतीनन्दन (ग)

(४६०) १. तीनि (ख) ब्रहमंड (क) २. जिसे (ग) ३. नियत (ग) ४. जाइसि एकलउ (क)

वस्तुबंध---ताम कोप्यो भणइ मयरद्धु[1]
रण[2] तोडइ भड अतुल वल, लउ मान जादम[3] असेसह।
विहडाउ रण पांडवह, जिणऊ[4] रणि सव्वह नरेसह ॥
नारायण हलहर जिणिवि, सयलहु करउ संघार।
पर[5] कुरवि जिणवरु मुहवि, सामिउ नेमि कुमारु ॥४६१॥

चौपई

मयणु चरितु निसुणहु सवु[1] कवणु, नारायणु जुभइ परदवणु।
वाप पूत दोउ[2] रण भिरे, देखइ अमर विमाणह चढे ॥४६२॥

रुक्मिणि की बांह पकड़ कर यादवों की सभा में
ले जाकर उसे छुड़ाने के लिये ललकारना

कोपारुढ[1] मयण जव भयउ, वाह पकरि[2] माता लीए जाइउ।
सभा नारायणु वइठउ जहा, रुपिणि सरिस सपतउ तहा ॥४६३॥
देखि सभा वोलइ परदवणु, तुम सो[1] वलियो खत्री[2] कवणु।
हउ रुपिणि ले चल्यो दिखाइ, जाहि[3] वलु होइ[4] सु लेहु छुडाइ ४६४

---

(४६१) १. मयण रणि (क) मयरद्ध (ख) मूलपाठ ममभरि २. रण तोडइ भड अतुल वल (क ख) धाइ लयरद्धु रण तोडउ भउ ३. जवह (ख) ४. जिणिसु (क) जिणऊ रणि सव्वह नरेसह (ख) मूल पाठ जिहम्बु सवरि सहकरि नरेसह ५. एकुवि जिणवर मुन्चिकरि (ख) नोट--- वस्तुबंध छन्द ग प्रति में नहीं है।

(४६२) १. सहु कौणु (ग) २. दोनों (ग)

(४६३) १. कोपारुपि (ग) २. रूपिणि (ग)

(४६४) १. महि (क ख ग) २. किउणु (ग) ३. जैहा (ग) ४. आइ (क ख)

सभा में स्थित प्रत्येक वीर को सम्बोधित करके युद्ध के लिये ललकारना

तू[1] नारायण मथुराराउ, तइ कंस[2] भान्यो भरिवाउ ।
जरासंध तइ वधौ पचारि[3], मोपह रुपिणि आइ[4] उवारि ॥४६५॥

दसह[1] दिसा[2] निसुणो वसुदेव, जूझत[3] तणउ तुम जाणउ भेउ ।
जादो[4] मिलहु तुम छपन कोडि, वलि करि रुपिणि लेहु अजोडि[5] ।४६६।

वलिभद्र[1] तू वलियो वर वीर, रण संग्राम आहि[2] तू धीर[3] ।
हल[4] सोहहि तोपह हथियारु. मो पह[5] रुपिणि आइ[6] उवारु ॥४६७॥

तू ही अर्जुन खंडव[1] डहणु, तो पवरिष जाणौ सवु कवणु ।
तै वयराड छिडाइ गाइ, अव तू रुपिणि लेइ मिलाइ[2] ॥४६८॥

भीम गजा[1] सोहहि कर तोहि, पवरिष आज दिखावइ मोहि ।
खारि पाच तू भोजन खाइ, अव[2] संग्राम भिडइ किन आइ ॥४६९॥

निसुणि वयण सह्यो जोइसी, करि[1] जोइस काही हो वसी ।
विहसि वात पूछइ परदवणु, तुमहि[2] सरिस जिणइ रण कवणु ।४७०।

---

(४६५) १. हउ (ग) २. कंसह (क) कंसाह (ख) ३. बंधिउ (क) जीतिया (ग) बांधियउ (ख) ४. लोहे (ख) लेइ (ग)

(४६६) १. होवह (ग) २. दिसार (क ख ग) ३. झूझ (क) जूझण (ग) ४ वलिए (ग) ५. बहोडि (क ख)

(४६७) १. वलिभउ तह गुरुआ गंभीरु (ग) २. साहस धीर (ग) ३. बीर (ख) ४. हलु सोहितो (ग) ५. बलकरि (ग) ६. आज (ग)

(४६८) १. खंडव वण दहणु (क) खंडा वण दहनु (ग) धणुक धरणु (ख) २. छुडाइ (क) किन अणाइ (ग)

(४६९) १. गदा (क) २. अवहि आइ जुज्झहि रण मांहि (ग)

(४७०) १. करि जोइसकइ सउ होइसी (क ख) गिणिज्योइसु कइ साहउ इसी (ग) २. दलदलि माहे रणि जीतइ कवणु (ग) नोट—चौथा चरण ख प्रति में नहीं है ।

निंकुल कुवरु तउ पवरिषुसारु, तोपह[1] कोंत म्राहि हथियारु ।
म्रव हइ भयो मरण को ठाउ, मोपह रुपिरिण म्राणि छिडाइ ।४७१।

तुहि नारायण हलहर भए, छल[1] करि फुणि कुंडलपुर गये ।
तवहि वात जाणी तुम्ही तणी, चौरी हरी[2] म्राणी रूकिमिणी।।४७२।।

मयरधउ जपइ तिस ठाइ, म्रव किन म्राइ भिरहु संग्राम ।
वोल एकुह वोलो भलो, तुम सव खत्री हुउ एकीलो ।।४७३।।

प्रद्युम्न की ललकार सुनकर श्रीकृष्ण का युद्ध के प्रस्ताव को स्वीकार करना

वस्तु—निसुणि कोप्यो तहा[1] महमहण ।
जाणै वैशुंदरु घृत[2] ढल्यउ, जाणिक[3] सिंह वन मा गाजिउ ।
णं[4] सायर थल हलिउ, सयन सवनि[5] जादवन्हि सजिउ ।।
भीउ[6] गजा लइ तहि चलिउ, म्रर्जुन लिउ कोवंड ।
नकुल[7] कोपि कर कोंत लउ, तउ हल्लिउ[8] वरम्हंडु ।।४७४।।

चौपई

साजहु साजहु भयउ कहलाउ, भयउ सनद्धउ जादमराउ ।
हैवर साजहु गैवर गुरहु, साजहुइ[1] सुहड म्राजु रण भिडहु ।।४७५।।

---

(४७१) १. सोहइ इतु तोहि कुंता हथियारु (ग) नोट—ख प्रति में चौथा चरण नहीं है

(४७२) १. वलि पणि (क) २. जाइ (क)

(४७४) १. राउ (ग) २. घिउ (ग) ३. जखु (ख) जाखु (ग) ४. गहणि (ख) ५. सुर सायर तवउ चलो (क) णं सायरु महि उछलियउ (ख) जाणउ सेवनु मेह उछलिउ ६. सयल जाम (क) सयन जबहि (ख) खुंडउ सेनु नीसानु विज्जउ (ग) ७. हलहरि हलु म्रावद्धलिउ (ख) ८. फाटउ (क) हाल्या (ग) मूलप्रति में-म्रपठिउ पाठ है ।

(४७५) १. धावहु (ख)

आयसु भयउ सुहर[1] रण चलइ, ठा[2] ठा के विसखाती करइ ।
केउ[3] कर साजइ करवालु, केउ साजि लेहु हथियारु ॥४७६॥

युद्ध की तैयारी का वर्णन

केउ माते गैवर गुडहि, केउ सुहर साजि[1] रण चढइ ।
केउ तुरीन पाखर[2] घालि, केउ आवध[3] लेइ सभालि ॥४७७॥
केउ टाटण जूझण[1] लेइ, केउ माथे टोपा[2] देइ ।
केउ पहरइ आगि[3]सनाह, एसे होइ चाले नर[4] नाह ॥४७८॥
कोउ कोंतु लेइ कर[1] साजि, कोउ असिवर नीकलइ[2] माजि ।
कोउ सेल सम्हारइ फरी[3], कोउ करि[4]हा साजै छुरी ॥४७९॥
केउ भणइ वात समुझाइ, इन सुहडनि हइ लागी वाइ ।
जिहि है रूपिणि हरि पराण, सो नरु नहीं तिहारे मान ॥४८०॥
एक[1] ठाइ सब खत्री मिलहु, घटाटोप होइ जूझण[2] चलहु ।
वोछी[3] वूधि जिन करहु उपाउ, अब[4] यो भयउ मरण कउ[5] चाउ ॥४८१॥

---

(४७६) १. मिसाणेहू (ग) २. टाटर टोपजि सिरि परि धरया (क) ठाडे होइ उसारखती कराऊ (ग) ३. केइ कमरि कसहि (ग) कोइ (ख)

(४७७) १. जात रथि (ग) रथ (ख) २. अंबारी (ख) ३. आयुध (ग)

(४७८) १. जोसण (ग) २. टोपी (ख) ३. अंग (क ग) ४. रण मांहि (क ख ग)

(४७९) १. रण (ग) २. नीकलए (क) नीकालहि (ख) लेहि रण ३. खरी (क) करी (ग) ४. हाथिहि (ग)

(४८०) नोट—प्रथम द्वितीय चरण ग प्रति में नहीं है ।

(४८१) १. आवु रणि (ग) २. जूझण (ख) करी तुम्ह (ग) मूल पाठ खत्री ३. उरिध (क) कछु (ग) ४. इब हियो (क) इहु हइ (ग) ५. कउ ठाउ (क) कउ दाउ (ख) का ठाउ(ग)

चाउरंगु वलु[1] मिलिउ तुरंतु[2], हय गय रह[3] जंपाण संजूतु ।
सिगिरि[4] छात दीसहि अपाण, अंतरीख[5] हुइ चले[6] विमाण ॥४८२॥
असी सयन चली अपमाण, वाजण लागे दरड[1] निसाण ।
घोडा[3] खुररइ[2] उछली खेह, जाणौ ताजे[4] भादम्व के मेह ॥४८३॥

सेना के प्रस्थान के समय अपशकुन होना

वाइ दिसा करंकइ कागु, वाट काटिगो कालौ नागु ।
महुवरि दाहिणी अरु[1] पडिहारु, दक्षण दिस फेकरइ सियालु ॥४८४॥
वण मा दीसइ जीव असंखि, धुजा पडइ तिन वैसर पंखि ।
सारथि भणइ कहै सतिभाउ, वूरै[1] सगुन न दीजै पाउ ॥४८५॥
तउ केसव वोलइ तिस ठाइ[1], सुगमु सुगणइ विवाहण जाइ ।
सा सारथी समुझावै कोइ, जो विहि लिख्यो सु मेटइ कोइ ॥४८६॥
चालै सुहड न मानहि सवनु, देखि सयनु अकुलाणे मयणु ।
माता रूपिणि घालि विमाण, पाछइ आपण रचइ[1] झपाण ॥४८७॥

---

(४८२) १. वलु (क ग) २. संपत्तु (ग) ३. पाइक मिले बहुत्त (ग) ४. सिखरि छत्र (क ख) सिगण छत्र नहीं परवाणु (ग) ५. वाजइ गाजइ गुहिर निसाण (क) ६. चढा (ग)

(४८३) १. गहिर (ख) गुहिर (ग) २. घोरा खुरइ (क) घोडा लइ (ख) घोडा रज खुर (ग) ३. मूल पाठ खोडा ४. गरजइ (क) गाजे (ख ग)

(४८४) १. अरु पडिहारु (क ख ग) महिला सोही अरु प्रतिहारु कूकइ दसिण दिसा सीयालु (ग) मूलपाठ अंतु परिहारु

(४८५) १. इन सकुणिहि किउ दीजै पाउ (ग)

(४८६) १. सतिभाउ (ग) नोट—दूसरा तीसरा चरण ग प्रति में नहीं है ।

(४८७) १. रचइ पराण (क) रचइ विमाणु (ख) मूलप्रति में 'चइ' पाठ है
ग—सवहि मयणु बाहुडि बुधि माणि; माता रुपणि चडी विमाणि ।
चडि करि रथि वोलइ महमहण, चालहु सुहड न मानहु सवणु ॥

विद्या बल से प्रद्युम्न द्वारा उतनी ही सेना तैयार करना

तवइ मयण मन[1] मा वृधिकरी, सुमिरी विद्या समरी[2] करी ।
जइसउ तह वलु पर देखीयउ, इसउ[3] सयन आपणउ कीयउ ॥४८८॥

युद्ध वर्णन

दोउ दल सयउ[1] मह भए, सुहडनु साजि धनुष कर लए[2] ।
इनउ[3] साजि लए करवाल, जाणिक जीभ[4] पसारी काल ॥४८९॥
मयगल सिउ मैगल रण भिरइ[1], हैवर स्यो हैवर आ भिरइ[2] ।
रावत पाइक भिरे पचारि, पडइ उठइ[3] जिमवर की सारि ॥४९०॥
केउ हाकइ केउ लरइ, केउ मार मार प्रभणइ ।
केउ भीरहि स्मरि रण आजि[1], केउ कायर निकलइ भाजि ॥४९१॥
केउ वीर भिडइ दूवाह, केउ हाक देइ रण माह ।
केउ करइ धनष[1] टंकारू, केउ असिवर करइ संघारु[2] ॥४९२॥

---

(४८८) १. बाहुडि (ग) २. धरी (ख) ३. सेना करी (क) सयन कारणी (ख) विरची करी (ग) ४. तसउ (क) तइ सउ (ख) जे ता तिनि परदल देखिया, ते ता सेनु आपणा कीया (ग)

(४८९) १. साम्हे उभे (क) सनमुख जब (ख) वीर बराबर भये (ग) २. असाहुर (क) ३. किनही (क) किनहू (ख) केइ (ग) ४. जीभ (क ख ग)

(४९०) १. आ भिडहि (क) २. आखुडइ (क) किरजडे (ग) ३. सहहि अतिमार (ग)

(४९१) ग—केइ हाथि कहिके पहणाह, केइ मारते कहि हम भणहि ।
केइ भिडहि संवरि रणि माजि, केइ कायर नासहि भाज ॥
१. मूलपाठ रणाजि

(४९२) १. धूर्व का द्वाउ (ग) २. पहार (क ख) के असवार धालहि धाउ (ग)

देखि स्मरि[1] बोलइ हरिराउ, अर्जुन भीम्मु तिहारो ठाउ ।
सहियो निकुल पयंपहि तोहि, पवरिपु आजु दिखावहि मोहि ।४६३।

फुणि पचारि बोलइ हरिराउ, दसौ दिसा निसुणौ वसुदेउ ।
वलिभद्र कुवर ठाउ तुमि तणउ, दिखलावहु पवरिश आपणउ ॥४६४॥

कोप्यो भीमसेणि[1] तुरी चढीइ, हाकि[2] गजा ले रणमहि भिडइ ।
गैयर सरीसो करइ प्रहार, भाजहु[3] खत्री नही उवार ॥४६५॥

कोपारूढ[1] पथ[2] तव भयउ, चाउ चढाइ हाथ करि लीयउ ।
चउरंग वलु भिडउ पचारि, को रण पंथ[3] न[4] सकइ सहारि ॥४६६॥

सह्यो हाथ लेइ करिवालु, निकुल कौंत ले[1] करइ प्रहारु ।
हलहर जुझ न पूजइ कोइ, हल आवध लइ पहरइ सोइ ॥४६७॥

जादव भिरइ सुहर वर वीर, रण संग्राम[1] ति साहस[2] धीर ।
दसर दिसा होइ वसुदेव भिडे, वहुतइ सुहर[3] जूझि रण पडे ॥४६८॥

प्रद्युम्न द्वारा विद्या बल से सेना को धराशायी करना

तव[1] मयरद्ध कोप मन धरइ, माया[2] मइ जूधु वहु करइ ।
मोहे सुहड़ सयल रण पडे, देखइ सुहड[3] विमाणा चढे ॥४६९॥

---

(४६३) १. सेतु (ग)

(४६५) १. भीव तवहि तुल चढया (ग) २. हाथि (क ग) मूलप्रति में 'लए सो भीडह' पाठ है ३. जूझ भीम देइ बहुती मार (ग)

(४६६) १. कोपिरुढ पत्थ (ग) २. पत्थु (ख) ३. पछह (ख) पत्थ (ग) ४. सहइ रणि मार (ग)

(४६७) १. का (ग) मूलप्रति में 'भल' पाठ है ।

(४६८) १. संग्रामहि (ग) २. आहि रणधीर (क) ३. जे रण संगमि आहि रणवीर (ख) ४. मायामयी जुझ रण पडे (ख)

(४६९) १. मइमत्तो तब जूझ कराइ (ग) २. मोहणि विद्या बोई समवायि (ग) ३. अमर (क ख ग)

ठा[1] ठा रहिवर हयवर पडे, तूटे छत्रजि रयणनि[2] जरे ।
ठाठा[3] मैगल पडे अनंत, जे संग्राम आहि[4] मयमंत ॥५००॥
सेना जूझि परी रण जाम, विलख वदन भो केसव ताम ।
हाहाकारु[1] करै महमहणु, वलियो[2] वीरू आहि यह कवणु ॥५०१॥

रण क्षेत्र में पडी हुई सेना की दशा

वस्तुबंध—पडे जादौ व देखि वर वीर ।
अरु[1] जे पंडौ अतुलवल, जिन्हहि[2] हाक सुर साथ कंपइ ।
जिन[3] चलंत महि थर हरइ, सवलधार[4] नहु कोवि जित्तइ ॥
ते सब क्षत्री इहि जिणे[5], यह[6] अचरिउ महंतु ।
काल रूप यहु[7] अवतरिउ, जादम्व कुलह खयंतु ॥५०२॥

चौपइ

फिरि फिरि सैना देखइ राउ, खत्री परे न सूझइ ठाउ ।
मोती रयण[1] माल जे जरे, दोसइ छत्र तूरी[2] रण पडे ॥५०३॥
हय गय रहिवर[1] पडे अनंत[2], ठाइ ठाइ मयगल मयमंतु ।
ठाठा रुहिरु[3] वहहि असराल, ठाइ ठाइ किलकइ[4] वेताल ॥५०४॥

---

(५००) १. ठांइ ठांइ हिवइ आंसू पडइ (ग) २. सिर (ग) ३. पाइक (ग) ४. सुर (ग)

(५०१) १. कारु (क ग) मूलपाठ कालु २. रणमहि वीरु अप्पि परवयणु (ग)

(५०२) १. अनुजे (ख) २. अरजुन (ग) २. जिन्ह हाक ते सुरगुरु डोलइ (ग) ३. जिन्ह हाक इव मेदिनी धसइ (ग) ४. समर (ख) चलइ मेरु जिन्ह हाकु झोले (ग) ५. रण (ग) ६. इहु सूरा मयमतु (ग) ७. सब संधरइ (ख)

(५०३) १. रल (ग) २. तूरि (ख) तुही धर (ग) नोट—५०३ से ६१३ तक के छन्द 'क' प्रति में नहीं है ।

(५०४) १. मयगल (ग) २. बहुत (ग) ३. रुधिरपडे (ग) ४. किलकिलहि (ख)

गीधीणी[1] स्याउ[2] करइ पुकार, जनु[3] जमराय जणावहि सार ।
वेगि चलहु सापडी[4] रसोइ, असइ[5] आइ जिम तिपत होइ ॥५०५॥

श्रीकृष्ण का कोपित होकर युद्ध करना

तउ महमहनु कोपि[1] रथ चढइ, जनु गिरिवर पव्वउ खर[2] हडइ ।
हालइ महियलु सलकिउ[3] सेस, जम संग्राम चलिउ[4] हरि केसु ॥५०६॥

युद्ध भूमि में रथ बढाने पर शुभ शकुन होना

जव रण पेलिउ रथु आपनउ, तव फरकिउ लोयणु दाहिणउ ।
अरु दाहिणइ अंगु तसु करइ[1], सारथि निमुणि कहा सुभ करइ ॥५०७॥

सारथि एवं श्रीकृष्ण में वार्तालाप

रण संग्रामु सयनु सवु जिणी, अरु इहि आइ हुडी रुक्मिणी ।
तउ न उपजइ कोप सरीर, कारण कहा कहइ रणधीर ॥५०८॥
तंखण सारथि लागो कहण, कवण अचंभउ यह महमहण ।
भाजहि सुहड[1] हाक तुह तणी, अरु तो हाथ चढइ रुक्मिणी ॥५०९॥

---

(५०५) १. वाघिणि (ख) गीदउ (ग) २. स्याल (ग) ३. ते (ग) ४. संपडइ (ख) ५. स्याहु आय जिस तिःते होइ (ख) पंखी पसुवन रहइन कोइ (ग)

(५०६) १. कोपि तुडि (ख) कोपि रणि (ग) २. खडहडइ (ख) पर्वत थर हरयो (ग) ३. सकिउ (ख) बोलै (ग) ४. चढिउ (ख) चल सुरणि जावमह नरेसु (ग)

(५०७) दीठी सयन पडी धर ताम कोपारुढ विसनु भउ ताम ।
तंखणि हाथ लइ कर चाउ, मारियण दल भानउ भडिवाउ ॥
यह छन्द मूलप्रति में नहीं है ।

(५०९) १. सुहड (ग) २. तीसरा चरण 'ख' प्रति में नहीं हैं मूलप्रति में। 'कुवर' पाठ है ।

तउ जंपइ केसव[1] वर बीर, निसुणी बयण तू खत्री धीर।
तइ महु[2] सयन सयलु संघरयउ, अर भामिनी[3] रूपिणि ले चल्यउ॥५१०॥

श्रीकृष्ण द्वारा प्रद्युम्न को अभयदान देने का प्रस्ताव

पुंनवंतु तुहु खत्री कोइ, तुह[1] उपरि मुह कोपु न होइ।
जीवदानु मैं दीनउ तोहि, वाहुड[2] रूपिणि आपहि मोहि॥५११॥

प्रद्युम्न द्वारा श्रीकृष्णजी की वीरता का उपहास करना

तव हसि जंपइ[1] षत्री मयणु, असी वात कहै रण कवणु।
तोहि देखत मैं रूपिणि हडी, तो देखत सव[2] सयना परी॥५१२॥
जिहि[1] तू रण मा जिणिउ विगोइ, तिहि स्यो अवहि[2] साथि क्यो होइ।
लाज न उठइ तुमइ हरिदेउ, वहुडि भामिनी मांगइ केम्व॥५१३॥
मै तू सूणिउ जूझ आगलउ, अव मो दीठउ पौरुष[1] भलउ।
कछु न होइ तिहारे कहे, सयन पडी तुम हारिउ हिए॥५१४॥
तउ मयरद्ध हसि[1] करि कह्यउ, तइ[2] सव कुटम धरणि पडि सह्यउ।
तेरउ मनुइ परखिउ आजु, तुहि फुणि नाही रूपिणि काजु॥५१५॥

(५१०) १. तास (ग) २. सहु मयलु सयेतु संघरिउ (ख) मोहि (ग) ३, तिया (ग)

(५११) १. इसु (ग) २. जाहि (ग)

(५१२) १. बोलइ (ग) २. राठी (ग)

(५१३) १. मारचा बलु सयारु विगोइ (ग) २. सारथि (ग) सांति (ख) किन कोइ (ख)

(५१४) १. तेता (ग ख) तीसरा चरण ख प्रति में नहीं है। मूलप्रति में भेलउ पाठ है।

(५१५) १. विहसि फुणि (ख) तवहि वहसि (ग) २. तेता हरइ मनि संसारहइ (ग)

छोडि[१] आस तइ परिगह तणी, अरु तइ छोडी सो रुक्मिणी ।
जउ तेरे मन कछू न आहि, पभणइ मयणु जीउ[२] लै जाहि ॥५१६॥

प्रद्युम्न के उत्तर के कारण श्रीकृष्ण का क्रोधित होना एवं धनुष बाण चलाना

मण[१] पछितावउ जादमुराउ, मइयासहु[२] वोल्यउ सतिभाउ ।
इहि मोस्यो वोल्यो अगलाइ[३], अव[४] मारउ जिन जाइ पलाइ ॥
उपनउ कोप भइ चित काणि, धनुष चढाइयउ सारंगपाणि ॥५१७॥

अर्द्ध चंद्र तहि[१] वाधिउ वाण, अव[२] याकउ देखियउ पराणु ।
साधिउ धनियउ[३] दीठउ जाम, कोपारूढ[४] मयण भो ताम ॥५१८॥

कुसुमवाण तव वोलिउ[१] वयणु[२], धनहर छीनि[३] गयउ महमहणु ।
हरि[४] को चाउ तूटिगो जाम, दूजइ धनष संचारिउ[५] ताम ॥५१९॥

फुणि[१] कंद्रपु सरु दीनउ छोडी, वहइ[२] धनकु गयो गुण तोडि ।
कोपारूढ कोप[३] तव भयउ, तीजउ चाउ[४] हाथ करि लयउ ॥५२०॥

(५१६) तजी (ग) २. जीयडा (ग)

(५१७) १. मनि (ख, ग) २. मइ इहसिउ (ग) मइ सुख (ग) ३. आगलउ (ख) ४. इव (ख) जिन (ग)

(५१८) १. तिनि संध्या बाणु (ग) २. इव इह (ख) इव देखउ इसु तणा निवाणु (ग) ३. धणहरू (ख, ग) ४. कोपिरूप (ग)

(५१९) मेलिउ (ख ग) २. चाउ (ख) मयणु (ग) ३. छिन्नउ तव (ग) ४. तव हरि चाउ तूटिया ताम (ग) ५. चढाया (ग) नोट—दूसरा और तीसरा चरण ख प्रति में नहीं है ।

(५२०) १. तब (ग) २. मुहई (ख) ऊभी धणुष गया सो तोडि (ग) ३. विष्णु (ख) विष्णु (ग) ४. कठारा (ग)

मैलइ वाण मयण तुजि चडिउ, सो[1]उ वाण तूटि धर परयउ ।
विस्नु सभालइ धनहर तीनि, खिण मयरद्धउ घालइ छीनि ॥५२१॥

प्रद्युम्न द्वारा श्रीकृष्ण की वीरता का पुनः उपहास करना

हसि हसि बात कहै प्रदवणु, तो[1] सम ना[2]ही खत्री कम्वणु ।
[3]कापहु सीख्यउ पोरिष ठाउण,मोसिहु कहइ तोहि गुर कवणु ॥५२२॥
धनुष वाण छी[1]नै तुम तणे, तेउ राखि न सके आपणे ।
तो पवरिषु मै दीठउ आजु, इहि पराण तइ भूंजिउ राजु ॥५२३॥
फुणि मयरद्धउ जंपइ ताहि, जरासंध क्[1]यो मारिउ कांसु ।
विलख वदन तव केसव भयउ, दूजउ र[2]थ मयायउ ठयउ ॥५२४॥

श्रीकृष्ण का क्रोधित होकर विभिन्न प्रकार के बाणों से युद्ध करना

तहि आरूढो जादौराउ, कोपारूढु लयउ करि चाउ ।
[1]अगनि वाणु धायउ प्रजुलंतु, चउदस [2]झल वहु तेज करंतु ॥५२५॥

---

(५२१) १. सोइ धनुष टूटि भुइ पडिउ (ग)

(५२२) १. तउ हसि बात कहइ परदमणु (ख) २. अउरुन (ग) ३. रहसि भाइ पूछइ महमहणु (ग)

(५२३) १. छेवे तुहि तणे (ख)

(५२४) १. किम जीतिउ (ख) तइ जीत्या (ग) २. मूल प्रति में 'मर्च' पाठ है।

(५२५) १. अगनि बाणु मेलइ महुमहणु (ख) अगनिबाण आई परजलंत (ग) २. तिहि की आच न आई सहणु (ख)

मयरद्ध[1] दल चले पलाइ, अमिगिभ[2] लरइ सहण न जाइ ।
डाझहि[3] हय गय रहिवर घणे, उहटे[4] सयन पजूनहा तणे ॥५२६॥
कोपारूढ भयो तव मयणु, ता रणहाक सहारइ कवणु ।
पुहपमाल कर धनहर लीयउ, साधिउ मेघबाण पर ठयउ ॥५२७॥
मेघनादु[1] घनघोर करंत, जल थल महियल नीर भरंत ।
पाणी आगि वुझाइ जाम्व, जादम सयन चली वहि ताम ॥५२८॥
रहिवर छत्रजि दीसइ भले[1], नीर प्रवाह सयल[2] वहि चले ।
हय गय तुरय[3] वहइ असेस, खत्री[4] राणे वहे असेस ॥५२९॥
तव जंपइ महमहण[1] पचारि, कीयह[2] सुक्रम की चालि ।
नारायण मन परचो संदेहु[3], हुंतो[4] यह वरिसउ मेहु ॥५३०॥
तव मनह अचंभो भयो, मारुत[1] वाण हाथ करि लयो ।
जवइ[2] वाण धाइयो भहराइ, मेघमाली[3] घानी विहडाइ ॥५३१॥

---

(५२६) १. रउछभल (ख) रूपवंत (ग) २. अग्निवाण रण सहण न जाइ (ग) अगनि झल लख सहणन जाइ (ख) ३. दाझहि (ख) ४. हुवरे (ख)

नोट—५२६ का तीसरा चौथा चरण तीनों प्रतियों में नहीं है ।

(५२८) १. मेघवाणु (ख ग)

(५२९) १. घणे (ग) २. हुये तंखिणे (ग) ३. रन संवहितउ चले (ग) ४. खत्री बहे जे रण आगले (न)

(५३०) १. हरिराउ संभालि (ग) २. की यह सुक्रम भउम की सारि (ख) कउ इहु सुकु कय मंगलवालु (ग) ३. बडा (ग) ३. कहा हु तउ इह वरसिउ मेहु (ख) इहु सु कहा ते आया मेहु

(५३१) १. मारुची (ग) २. अवहि पवन छूटा तिहि ठाइ (ग) ३. मेघमाला वाले वहुडाइ (ग)

मायामय[1] सैन खर हुइई, उरइ[2] छत्र महिमंडल परहि ।
चउरंग दलु चलिउ पडाइ,[3] हय[4] गय रह को सकइ सहारि ॥५३२॥
तवइ पजून[1] कोपु मन कियउ, परवत वाण हाथ[2] करि लयउ ।
मेलीउ वाण धनसु कर लयउ, रूधि पवणु आडहु[3] हुइ रहउ ॥५३३॥
कोप्यो द्वारिका तणो नरेसु, मयणहि पवरिसु देखि असेसु ।
वज्र प्रहार करइ खण[1] सोइ, पव्वउ[2] फूटि खंड सो[3] होइ ॥५३४॥
देवतु[1] वाणु मयण लउ हाथ, नारायण पठउ जम पाथि ।
तव केसव मन विसमइ होइ, याको चरितु न जाणइ कोइ ॥५३५॥
अयसउ जुझु महाहउ[1] होइ, एकइ एकु न जीतइ कोइ ।
दोउ सुहड[2] खरे वलिवंत,[3] जिन्हि[4] पहार फाटहि वरम्हंड ॥५३६॥

श्रीकृष्ण द्वारा मन में प्रद्युम्न की वीरता के बारे में सोचना

तवइ कोपि जादो मनि कहइ, मेरी हाक कवण रण सहइ ।
मोस्यो खेत रहै को ठाइ, इहि कुल देवी आहि सहाइ ॥५३७॥

---

(५३२) १. माया रूपि पवन संघरइ (ग) २. भउ (ग) ३. पलाइ (ग) ४. गयवर के सकउ रहाइ (ग)

(५३३) १. बणि (ग) २. हस्त (ग) ३. आगइ (ग)

(५३४) १. फुणि (ग) २. पर्वत (ग) ३. हुइ (ग)

(५३५) १. देव विभाग (ग)

(५३६) १. मही मांहि (ग) २. वीर (ग) वलिवडं (ग) ३. जिन्ह चालंत्या कोपहि ब्रह्मंड (ग)

(५३७) नोट—चौथा चरण ग प्रति में नहीं है ।

मइ रण जीतिउ कंसु पचारि जरासंध रण घालि मारि ।
मैं सुर असुर साथ रण रह्यउ,[1] यह गरहु जु खेत अरि रह्यउ ॥५३८॥

श्रीकृष्ण का रथ से उतर कर हाथ में तलवार लेना

तव तिहि[1] धनहर[2] घालिउ रालि, चन्द्रहंस कर लीयो सभालि ।
बीजु सपिसु चमकइ करवालु, जाणौ सु जीभ पसारै काल ॥५३९॥
जवति[1] खरग हाथ करि लयउ, चंद्र रयणु चाम्वइ[2] कर गहिउ ।
रथ ते उतरि चले भर[3] जाम, तीनि भुवन अकुलाने ताम ॥५४०॥
इंदु चंदु फण[1] वैं खल भल्यउ,[2] जाणौ[3] गिरि पर्व्वतउ टलटल्यउ ।
मन मा कहइ सुरंगिनि[4] नारि, अवयहु इहइ कइसी मारि ॥५४१॥
किसन[1] कोपि रण धायउ जाम, रूपिणि मन अवलोइ ताम ।
दउ[2] पचारै मेरो मरणु, जुझइ कान्हु परइ परदवणु ॥५४२॥
नारद निसुणि कहु सतिभाउ, अव या भयो मीच को ठाउ ।
जव जिउ[1] सुहड न भीरइ पचारि, वेगो नारद जाइ निवारि ॥५४३॥

---

(५३८) १. इहु गवका जे रण महि रह्यउ (ग)

(५३९) १. तिन्हि (ग) २. धणहर (ग)

(५४०) १. जब हरिहाथ खड्ग करि लेइ (ग) तबहि खडगु हाथि करिलिये (ख) २. वामइ (ख ग) ३. भुई (ग) भड (ख)

(५४१) १. आसण पर हरे (ग) २. भले (ख) ३. अंतमउ पावन गिरि पर्वं वलई (ग) ४. सुरूपिणि (ग)

(५४२) १. विष्ण कोपि रण धरया जबहि (ग) २. बहू पचारइ (ख ग) ३. पड इनकूं बूझई परद्यवणु (ग)

(५४३) १. लगु (ग)

रणभूमि में नारद का आगमन

रूपिणि[1] वयण मन सो धरइ, हो तो विमाणह रीष्य उतरइ ।
रण मयरद्ध नारायण जहा, नारदु जाइ सपत्तउ तहा ॥५४४॥
विस्नु[1] मयण रथ दीठउ पाउ, चाहै[2] करण कुवर कहु घाउ ।
नानारिषि षण पहुंतो जाइ, वाह पकरि सो धरयो रहाइ ॥५४५॥

नारद द्वारा प्रद्युम्न का परिचय देना

तब हसि नारद लागो कहण, मोहि वचन निसुणह महमहणु ।
कहउ[1] तोसिउ कहहु वहुतु, यह प्रदवण तिहारो[2] पूतु ॥५४६॥
छठी निसिहि सो हरि लयउ, कालसंवर घर वृद्धिहि भयउ ।
इहि जीत्यो स्यंघरथ[1] पचारि, पुंनवंत यह देव मुरारि ॥५४७॥
सोला लाभ भए इहि जोगु, कणयमाल सिउ भयउ विजोगु ।
कालसंवर जीत्यो तिहि ठाइ, पंद्रह[1] वरिस मिली तुह आइ ॥५४८॥
यह सु मयणु गरुवो वरवीर, रण संग्राम जु साहस धीर ।
याह[1] पौरिष को वर्णाइ[2] घणउ, यह सो पूत रुकिमिणी तणउ ॥५४९॥

---

(५४४) १. रूपिणि वयणहि तब बाहुडहि, इहुं वेगा रथ ते उतरहि (ग)

(५४५) १. मराइणि रथि दीना पाउ (ग) २. लोडइ (ग)

तीसरा और चौथा चरण ग प्रति में नहीं है

(५४६) १. क्या क्या हो तुम्हसउ २. तुम्हारा

(५४७) १. सिघरथराउ (ग) २. पुण्यवंत (ग)

(५४८) १. बारह (ग) मूलप्रति में—'सो लाल' पाठ है

(५४९) १. रहि (ख) इसु (ग) २. वरणई (ख) वरंणउ (ग) मूल प्रति में परणंइ पाठ है ।

[1]एतहि मयण पास मुनि जाइ, तिहिस्यो वात कहई समुभाइ ।
[2]यह तो आहि पिता तुम तणउ, जिहि [3]पवरिष दीठउ तइ घणउ ॥५५०॥

प्रद्युम्न का श्री कृष्ण के पांव पड़ना

तउ परदवणु चलिउ तिहि ठाइ, जाइ पडिउ केसव के पाइ ।
[1]तव नारायण हसिउ हीयउ, मयण उठाइ उछंगह लयउ ॥५५१॥
[1]धनु रूपिणी [2]जेनि उर धरीउ, धनि सुरयणि जिणि अवतरिउ ।
[3]धनिसु ठाउ विराधी गवउ, जिहि धनु आजु जु मेलउ भयउ ॥५५२॥
धनुष वाण तिहि घाले रालि, वाहुडि कुवर लैयउ [1]अवठालि ।
जिहि घर [2]आइसो नंदनु होइ, [3]तिहिस्यो वरस लहइ सवु कोइ ॥५५३॥

नारद द्वारा नगर प्रवेश का प्रस्ताव

तव नानारिषि वोलइ एम, चलहु नयरि मन भावहु खेव ।
कुवर मयण घर करहु पएसु, नयरी उछहु करहु असेसु ॥५५४॥
नारायण मन विसमउ भयउ, परिगहु सयलु जुभि रण गयउ ।
जादम कुटम पडे संग्राम, किम्व मुहि होइ सोभ पुरि ताम ॥५५५॥
नानारिषि वोलइ वयण, क्षत्री [1]तू मोहिणी सकेलइ मयण ।
क्षत्री सुहड उठइ वरवीर, रण [2]संग्राम मति साहस धीर ॥५५६॥

---

(५५०) १. नारद मयणि पास उठि जाइ, (ग) २. इहु सो पिता तु अपि तुम्ह तणा (ग) ३. तिसु पुरिष क्या वर्णउ घणा (ग)

(५५१) १. तव नाराइणु उठइ उछंगि, मयण साथि भया बहु रंग (ग)

(५५२) १. धन्नि (ख) २. जिनि उवरि धस्यो (ग) ३. धनु सुठाउ जिहि विरधिहि गयउ (ख ग)

(५५३) १. अंकि उचाइ (ख) अकवालि (ग) २. अइसउ (ख) ३. तिहि परमंस लहइ सवु कोइ (ख) तिहि धरि सलह करइ सहु कोइ (ग)

(५५६) तुहु (ख) तू सो (ग) २. संग्रामजि (क ख) संग्रामहि (ग)

मोहिनी विद्या को उठा लेने से सेना का उठ खडा होना

तव मयणधइ[1] छाडचो मोहु, मोहिणि जाइ उतारचो मोहु ।
सैन उठी वहु[2] सादु समुदु, जाणौ[3] उपनउ उथल्यउ समुद्र ॥५५७॥
पांडो[1] उठे सुहड वरवीर, हलहुलु दस दिसा धर धीर ।
छपन कोटि जादव वलिवंड, छत्री सयल उठे परचंड ॥५५८॥
हय गय रहवर अरु जंपाणु[1], उठे[2] जिमहि सल पडे विमाण ।
सिगिरि छत्र जे पुहमि अपार[3], उठि सयन कवि कहिउ सधार ॥५५९॥

प्रद्युम्न के आगमन पर आनन्दोत्सव का प्रारम्भ

धवल छन्द

मयणु कुवरू जव दीठउ आनंदिउ[1] हरि राउ ।
लइ उछंगि सिर चुंमियउ, भयउ निसाणह घाउ ॥
भयउ निसाणा घाउ, राय जादम मन भायउ ।
सफलु जन्म भउ आजु, जेमि कंद्रपु घर आयउ ॥
सहुंकारु भणंत देव, जणु परियण तुठउ ।
मन आनंदिउ राउ, नयण जउ कंद्रप वयठउ ॥५६०॥

---

(५५७) १. मयरद्धउ छोडइ कोहु (ख) २. भएउ सद्दु समद्दु (ख) सेन्या उट्ठि खड़े अरु बूडु (ग) ३. जणु सु उच्छलिउ पलय समुद्दु (ख) जाग्या बलु बोथल्या समुंदु (ग) मूलप्रति में 'समुद्र' पाठ है ।

(५५८) १. पंडव (ख ग)

(५५९) १. जंपाण (ख) झंपाण (ग) २. उट्ठे मयगल अवकलि क्याण (ग) ३. बिभाण (ख)

(५६०) धवलु (मूल प्रति) दोहा (ख) धवल अंगों के (ग) १. आनाया (ग)

भेरि तूर वहु वाजहि, कलयरु भयो अनंदु ।
रूपिरिण सरिस मिलावऊ, अवहि[1] मिलिउ तहि पूतु ॥
अवर मिलिउ तहि पूतु, सयल परियण कुलमंडणु ।
अतुर मल्ल वर वीर, सुयण णायणाणंदणु[2] ॥
चले नयर सामुहे, सयल जनु जलहर गाजे ।
कलयलु भयउ वहूतु, ततूर भेरि ताहि वाजे ॥५६१॥

मोती चउक पुराइयउ, ठयउ सिंघासणु आणि ।
मयरद्धउ वयसारियउ पुंनवंत घर जाणि ॥
पुनंवंत घर जाणि, तहरि कंद्रप वइसारिउ ।
मोती माणिक भरिउ थाल आरति उतारिउ ॥
पाट तिलकु सिर कियउ, सयल परियण जण भायउ ।
ठयो सिंघासणु आणित, मोती चउक पुरायउ ॥५६२॥

घर घर तोरण उभे मोती वंदनमाल ।
घर घर गुडी उछली घर घर मंगलचार ॥
घर घर मंगलचार नयर जन सयल वधावउ ।
पुंन कलस लइ चली नारि नइ कंद्रप घर आयउ ॥
कामिणी गीत करंति, अगर चंदन वहु सोभे ।
मोती वंदनमाल, घर घर तोरण उभे ॥५६३॥

---

(५६१) अवहु (ख) २. जण (ख)
(५६२) १. घर तोरण उभे नारि
(५६३) १. असोहि (ख) मूलप्रति में–'मही' पाठ है। (ख)

चौपई

सयना सयल उठी घर जाम, छपनकोडि घर चाले ताम।
द्वारिका नयरी करइस सोभ, पुणि सबु चलिउ अछोहु...॥५६४॥

प्रद्युम्न का नगर प्रवेश

गरुवड छन्द

कंद्रपु पठयउ नयर मझारि, मयण किरणि रवि लोपियउ।
चडि[1] अवास वररंगिणि नारि, तिन कउ मनु अविलेखियउ[2]॥
धन रूपिणि मन धरिउ रहाइ, नारायण घर अवतरिउ।
सुर नर अवर जय जय कार, जिहि आए कलयर भयउ।
घर घर तोरण उभे वार, छपन कोडि उछव भयउ॥५६५॥

---

(५६४) १. अछोडि (ख ग) प्रति में पाठ है—

रहसु सवु करइ लुगाई, सुहला जीतवु आज।
कहइ इव रुकमिणि माइ, परिगहु सवु आइ वइठा।
आनंदा हरिराउ, मइथु जब नयणे दीठा ॥५६६॥
भेरि तूरि बहु वजहि, कोलाहल बहुत्त्।
रूपिणि सरिसु मिलावडा, आइ मिल्याति सुपुत्त्।
आमुकट सिरि मोतीमाला, घरि घरि मंगलचार।
जिनसि अडवंरु छत्त, आणु वरसहि घण गज्जहि।
ऊठ्यो जय जय कार भेरि तूरा बहु वज्जहि ॥५७०॥
घरि घरि तोरण खडे, घरि घरि वेद उचारइं।
घरि घरि गुडी उछली, घरि घरि आनंद अपार।
घरि२ नयरि घरि घरिहि बधाया, करहि आरतउ थालि।
भावु वंभण सहि आया, हसि हसि पूछइ बात।
बहुत परमल तिनि मूलं, सिघासणु ताणीया।
अक धरि तोरण ऊभे................................ ॥५७१॥
दो मोती माणिक भरि थालु, अवरु तिवु तिलकु कराया।
सुर तेतीस रहसु बहु, सिंहासण बइसाया ॥५७२॥

चौपाई

सैन्य सवे ऊठी घर जाम, छपन कोडि चले घरि ताम।
कंद्रपु पइठा नयर मझारि, बाजे सबद अपार।॥५७३॥

(५६५) १. नारि नच्चहि (ख) मूलप्रति में चडि पाठ नहीं है २. अभिलेखिउ (ख)

भयउ उछाहु जगत जाणिउ, नयर मंगल किजइ ।
ता संख पूरिहि नाचहि घर, पंच सवद वजहि ॥५६६॥
जवइ मयण परिगह गए, घर घर नयरि वधाए भए ।
गुडी उछली घर घर वार, कामिणी गावइ मंगलचार ॥५६७॥

चौपई

विप्रति[1] च्यारि वेद ऊच्चरइ[2], वर कामिणी तह मंगलु करइ ।
पून्न[3] कलस तह[4] लेइ सवारि, आगे[5] होण चली वर नारि ॥५६८॥
नयरि उछाहु करवहु[1] घणउ, जव ते दिठे नयन परदवणु ।
सिघासण वयसारिउ सोइ, पुरयन[2] तिलकु करइ सवु कोइ ॥५६९॥
दहि दूव[1] सिर आक्षित देइ, मोती माणिक थाल भरेइ ।
कुमरहि सिर आरति उतारि, दे असीस चालइ वर नारि ॥५७०॥

यमसंवर का मेघकूट से द्वारिका आगमन

एतहु मेघकूट सो[1] ठाउ जमसंवरु विजाहरु राउ ।
माणिक कंचण माल संजूत, द्वारिका नयरी आइ पहूत ॥५७१॥

---

(५६८) १. बंभण (ग) २. उच्चरहि (ख) ऊच्चरहि (ग) मूलपाठ उछलइ ३. सिघासन वंसाल्यो सोइ (ग) ४. सिरि (ख) ५. आगइ होइ (ख) देइ असीस (ग)

(५६९) १. कहइ बहु कवणु (ख) २. पुरजण (ख) यह पद्य ग प्रति में नहीं है ।

(५७०) १. वहीय दूव (ख)

(५७१) १. सो ठाउ (ख) सो तेहि मेघकूट जो ठाउ (ग) तीसरा और चौथा पद्य [illegible] प्रति में नहीं है । मूल पाठ विवाह

पवन वेग विजाहररराउ, जिसकी[1] सयनु न सूझइ ठाउ ।
रतिभामा[2] जो कन्ह कुमारि, सो आणी वारमइ मझारि ॥५७२॥

यमसंवर एवं श्रीकृष्ण का प्रथम मिलन

जमसंवरु भेटिउ हरिराउ, बहुत भगति बोलइ सतिभाउ ।
तइ वालउ पालिउ परदवणु, तुहि समु सुजन नही मुहि कम्वणु ॥५७३॥
तव रूपिरिण बोलइ तिहि ठाइ, कनकमाल कै लागी पाइ ।
किम्वहउं उररिण होउ घर तोहि, पूत भीख दीनी तइ मोहि ॥५७४॥

प्रद्युम्न का विवाह लग्न निश्चित होना

वहु आयउ करि कीयउ उछाहु, मयरण कुवर को ठयउ विवाहु ।
धरि लग्न जोइसी हकारि, तव मन तूठउ कन्ह मुरारि ॥५७५॥
हडे[1] वंस त्रि मंडपु ठयउ, वहुत भंती ते तोरणु[2] रहउ ।
कापरछाए वहु विथार, कनक कलस डोलहि सिंहवार[3] ॥५७६॥

विवाह में आने वाले विभिन्न देशों के राजाओं के नाम

करिसामहरण[1] सयल निकुताइ, आगै निमति पुहमि[2] के राइ ।
मंडलीक जे पुहमि असेस, आए द्वारिका सयन नरेस ॥५७७॥
अंग वंग कलिंगह[1] तरणे, दीप समूंद के भूंजही घरणे ।
लाड चोर कानकेजिकीर[2], गाजरणवइ[3] मालव कसमीर ॥५७८॥

---

(५७२) १. जिहि कइ सइनि (ग) २. रतिनामा (ख)

(५७६) १. हरे (ख) हरइ (ग) २. कौतिगुभया (ख) ३. सिंह दुवारि (ख) दीपहि पहि वारि (ग)

(५७७) १. करिसम लहहु (ख) २. अनेक, पुहमि के भउते राइ (ग)

(५७८) १. कालिंगह (ख) तिलंगह (ग) २. कानाडेकिकीर (ख) लाडग उडक भयज कसमीर (ग) ३. राजलोद महलिया बहुधीर (ग)

गूजर तेसो[1] भीजी भए, वेलावल संभरि के भले ।
जिझाहुति[2] कनवंजी भले, पुहमि राइ सव निमते गणे ॥५७९॥

संख सवुद मंद लहू निहाउ, ठाठा भयउ निसाणा घाउ ।
भेरि तूर वाजइ असंताल, महुवरि वीण अलावणि ताल ॥५८०॥

विप्रति[1] वेद चारि उचरइ, घर घर कामिणी मंगलु करइ ।
वहु कलियरु नयरि उछलिउ, जव[2] मयरद्धु विवाहण चलिउ ॥५८१॥

रयणनि[1] जडे[2] छत्र सिर धरइ, कनक[3] दंड चावर सिर ढलइ ।
कनय मुकट सिर उदउ[4] करंत, जाणौ[5] पावय रवि करण करंत ॥५८२॥

तव वोलइ रूक्मिणी रिसाइ, सतिभामा आणिहु[1] केसइ ।
तीनि भवण जउ वरजइ मोहि, तउ सिर केस उतारउ तोहि ॥५८३॥

केस उतारि पाय तल मलइ, फुणि परदवण विवाहणु चलइ ।
एतइ[1] मिलि सयल[2] जनु सव्वु, दुहु नारि करयउ[3] क्षिम तव्वु ॥५८४॥

---

(५७९) १. ते सोरठी जे भले (ख) कनकदेस सोरठ जे भले (ग) २. जोजन देश कनउजी मिले (ग)

(५८१) १. चारउ वेद विप्र ऊचरहि (ग) २. इव (ग)

(५८२) १. रयणीह (ख ग) २. जडित (ग) ३. मणि छत्त सिर ऊपरि धस्यो (ग) ४. उदौ (ग) ५. जाणउ नव रवि किरण करंतु (ख) जाणु कि सूर किरण छोडंति (ग) भउर अडंवर वाणी भले वलहि, चउर कटि कउतिग चले यह पाठ ग प्रति में अधिक है ।

(५८३) १. आणहि कराइ (ग) आणीहितु कराइ (ग)

(५८४) १. मिले जउ ताहू सयलु जण लोगु (ग) २. विसयल जनु सबः (ख) ३. करामउ खिम तव्वु (ख) होइ विवाहु जुड्यो संजोगु (ग)

सयल कुटम मनि भयउ उछाहु, कुम्वर मयरण कउ भयउ विवाहु ।
दइ भावरि[1] हथलेव कीयउ, पारिणगहरणु[2] इम्व कुवरहि लयउ ॥५८५॥

भयउ[1] विवाहु गयउ घर लोगु, करइ[2] राजु वहु विलसइ भोगु ।
देखित[3] सतिभामा गहवरइ[4], सवतिसालु[5] वहु[6] परिहसु करइ ॥५८६॥

सत्यभामा द्वारा विवाह का प्रस्ताव लेकर पाटण के राजा के पास दूत भेजना

तउ सतिभामा मंत्रु[1] आठयउ[2], दिजु वेग खेयउ[3] पाठयउ ।
रयण[4] सचउ पाटण तिहि ठाइ, रयणचूलु तहि निमसइ[5] राउ ॥५८७॥

विज्जु वेग तहि विनवइ सेव, सतिभामा हो पठयो देव ।
रविकीरति[1] सिहु करम सनेहु, धीय सुइ परिभानही देहु ॥५८८॥

भानुकुमार के विवाह का वर्णन

सयल राय विद्याधर मिलहु, वहुत कलयल सिहु द्वारिका चलहु ।
वहुत[1] नयर मह करइ उछाह, भानकुवर जिम होइ विवाहु ॥५८९॥

---

(५८५) १. भामरि (ख) भवरि (ग) २. पारिणग्रहरण जव कुवरह भया (ग)

(५८६) भयो बिवाहु लोग घरि जाइ (ग) २. करहि राज बिलसहि वहु भाय (ग) ३. वेखत (ग) ४. परजली (ग) ५. कि (ख ग) ६. दुखि परहसि भरी (ग)

(५८७) १, मंतु (ख) २. अरठयउ (ख) अरट्टयो (ग) ३. विज्जु वेगु खयरू पाठयउ (ख) विजइ विगे जोइरण पाट्ठयो (ग) ४. रमरण संभु पाटरणपुर ठाउ (ख) ५. निवसइ (ख) खगा वंक तिहहिं ले आउ (ग) मूलपाठ-विमधइ

(५८८) चाल्यो इतु पवन मनुलाइ. वेगि पहूता खिरण महि आइ ।
यह पाठ प्रथम द्वितीय चरण के स्थान में है तथा मूल प्रति का प्रथम द्वितीय चरण ग प्रति में तृतिय चतुर्थ चरण है ।

(५८९) १. विद्याधर तुम्हि मिलहु सुरोहु, धीय सुयंवर भानकउं देहु

माणिउ बोल कुटमु[1] वहु मिलिउ, खगवइराउ मसाहुण[2] चलिउ।
द्वारिका नयरी पहुते जाइ, जिहि ठा मंडपु[3] धरघो छवाइ ॥५६०॥
तोरण रोपे घर घर वार, कनक[1] कलस थापे सीहद्वार।
सयल कुटंब मिलि कीयो उपाउ[2], भानकुवर को भयउ[3] विवाहु ॥५६१॥
पथंतरि ते राजु कराहि, विविहि पयाल भोग विलसाइ।
राज भोग सब मिलइ मयणु, तहि सम पुहमि न दीसइ कवणु ॥५६२॥

पंचम सर्ग

विदेह क्षेत्र में क्षेमंधर मुनि को केवल ज्ञान की उत्पत्ति

एतइ अवरु कथंतर भयउ, पूव्व[1] विदेह जाइ संभयउ।
पूंडरीकणी णयरु हइ जहा, खेमंधरु[2] मुनि निमसइ जहा ॥५६३॥
नेम धर्म[1] संजमु जु पहाणु, तहि कहु उपणउ[2] केवलज्ञान।
[3]आइत स्वर्ग पसइ जो देव, आयो करण मुनिसर सेव ॥५६४॥

अच्युत स्वर्ग के देव द्वारा अपने भवान्तर की बात पूछना

नमस्कार[1] कीयउ तंखीणी, पूजी वात भवंतर तणी।
पूव सहोवरु मुणि[2] गुणवंतु, सो[3] स्वामी कहिठार उपंत ॥५६५॥

---

(५६०) १. सुपरियरू मिल्यो (ग) २. सुसाहुण (ख) विवाहुण (ग) ३. तोरण धरे रचाइ (ग) तृतीय एवं चतुर्थ चरण (ख) प्रति में नहीं है।

(५६१) १. कामिणि गावहि मंगलचारू (ग) २. उछाउ (ग) ३. हुआ (ग)

(५६२) ख प्रति में यह चोपाई नहीं है। ग प्रति में निम्न चोपाई है।

इसे अलंवल राजु कराहि, हउसनाक राखहि मनमाहि।
राजु भोगु सहि विलसहि आगु, नाही कोइ तिन्ह सनमानु ॥६०७।

(५६३) १. पूरब देसि जाइ सो गया (ग) २. खेमधरू (ग)

(५६४) १. तपि क्रिया समान (ग) २. उपजहि (ख) ३. अच्युत स्वर्ग वसइ सो देव (ग) मूलमति में 'पसइ' पार है।

(५६५) १. नेमसिर की जोति जाण (ग) २. मोहि (ग) मुणहि (ख) ३. सो सामी कहि ठाइ उपन्नु (ख) सो सम्यकवर माहि पहूंत (ग)

संसयहरु[1] फुणि कहइ सभाउ, भरहखेत सो पंचमु ठाउ[2] ॥
सोरठ देस वारमइ[3] नयरु[4], तहि समीपु हइ न दीसइ[5] अवरु ॥५९६॥
तह[1] स्वामी महमहण नरेसु, धम्मं नेम्म सो करइ असेसु ।
वहु गुणवंत भज्ज[2] तसु तणी, तासु नाउ कहीए रूपिणी ॥५९७॥
तहि घर उपणउ खत्री मयणु, पुंनवंत जाणइ सव कम्वणु ।
तासु के रूप न पूजइ कोइ, करइ राज धरणि[1] मा सोइ ॥५९८॥

देव का नारायण की सभा में पहुँचना

निसुणि वयण सुर वइ गो तहा, सभा नारायण वइठो तहा ।
सुरमणि रयणजडिउ जो हारु, सोविसुत आविउ अविचारु ॥५९९॥

देव द्वारा अपने जन्म लेने की बात बतलाना

फुणि रवि सुर दइ लागउ कहण, निसुणि वयण नरवइ महमहण ।
जिहि तू देइ अनूपम हारु, हउ कूखि लेउ अवतारु ॥६००॥

श्रीकृष्ण द्वारा सत्यभामा को हार
देने का निश्चय करना

तउ मन विभउ[1] जादउराउ, मन मा चिंत करइ मन भाउ[2] ।
चंद्रकांति मणि दिपइ अपारु, सतिभामा हियह आफहु हारु ॥६०१॥

---

(५९६) १. सोसाइरू (ग) २. वूचइ राउ (ख) भूचइ तिहि ठाइं (ग) मूलपाठ—भूचैठाउ ३. द्वारमाइ (ख) ४. मूलपाठ देसु ५. पूजइ (ग)

(५९७) १. तउ महमहणु राउ नरेसु (ग) २. नारि (ग)

(५९८) १. विलसहि महि सोइ (ग)

(५९९) १. देइ नारायणु कहै विचारु (ग) प्रथम तथा द्वितीय चरण के स्थान में निम्न पाठ है—परववणु वीठा वइठा पासि, पूरव नेह चितु भरया उल्हासि (ग)

(६००) १. जिसु तिय के कइ गलि घालिहि हारु (ग)

(६०१) १. विसमा (ग) २. धरि भाउ (ग)

प्रद्युम्न द्वारा रूक्मिणि को सूचित करना

तवइ[1] मयण मन चमक्यउ[2] भयउ, पवण वेगि रूपिणि पह गयउ ।
माता वयण सूझइ तू मोहि, एक अनूपम आफहु तोहि ॥६०२॥

पूव सहोवरु जो मोहि तणउ, सो सनेह वहु[1] करतउ कनउ ।
अव[2] मो देउ भया सुरसारु, रयणजडित तिण आण्यो[3] हार ॥६०३॥

अव[1] वह अहारसु पहरै[2] सोइ, तहि घर पूत आइसो होइ ।
माता फुडउ[3] पयासहि मोहि, कहहु तहा का अफामु तोहि ॥६०४॥

तव रूपिणि वोलै मुह चाहि, तू मो एकु सहस वरि[1] आहि ।
वहुत पूत मो[2] नाही काज, तू ही एकु मही[3] भूंजै[4] राज ॥६०५॥

जामंवती के गले में हार पहिनाना

फुणि वाहुडी वोलै रूपिणी, जंववती जु वहिण महु तणी ।
निसुणि पूत तौहि[1] कहौ विचारु, इनी कउ[2] जाइ दिवावइ हारु ॥६०६॥

---

(६०२) १. तांह (ग) २. अचरिज (ग)

(६०३) १. करहि हम घणहु (ग) वहु करतौ घणउ (ख) २. इव सो देव भया मुनिसारू (ग) ३. आपउ (ग)

(६०४) १. एहु हारु जो पहरहि कोइ (ग) २. तिहि कइ (ग) ३. फुडुन वोलउ नोहि कहाहि, तहारू हुउ दयावाडे तोहि (ग)

(६०५) १. वडि (ग) २. मोहि जाणे काज (ग) ३. मोहि (ग) ४. भूपति राजु (ख)

(६०६) १. तुम्ह (ग) २. उसकउ (ग)

जामवती का श्रीकृष्ण के पास जाना

तवहि मयणु मन कहइ विचारु, जंववती कहु[1] लेहि हकारि ।
काममूंदरी पहरइ सोइ, वोल[2] रुप सतिभामा होइ ॥६०७॥
न्हाइ धोइ पहरे आभरण, कण कंकण सोहइ ते रमण[1] ।
तिहिठा[2] वइठे कान्हु मुरारि, तहा गइ जामवंती नारि ॥६०८॥
तउ[1] मन विहसिउ तव[2] मन चाहि, तहा जाणइ सतिभामा आहि ।
वाहुडि कन्ह न कीयउ विचारु, तिहि[3] वछथलि घालिउ हारु ॥६०९॥
घालि हारू आलिगनु कियउ[1], तिहि उपदेस[2] आहि संभयउ ।
फुणि णिय रूपु दिखालि जाम, मन भिंभिउ नारायण ताम ॥६१०॥
वस्तुबंध—
ताम जंपइ एम महमहण ।
मन भिंभिउ विसमउ करइ, जइ यउ चरित सतिभामा जाणइ ।
वैरूप करि मोहणइ जा संवइ आणइ....................॥
जो विहिणा सइ चितयऊ, सो को मेटणहारु ।
पुंनवंत जंपइ तुव, करइ राज अनिवार ॥६११॥

---

(६०७) १. तुम्हि (ग) २. वोल रूप (ख) बोले रूप (ग)
(६०८) १. ते रमण (ख) ते रयण (ग) मूलपाठ तान्योरण २. अहिठा (ख ग)
(६०९) १. विगसइ केसव २. इहु (ग) ३. ताहु गलइ हंसि घाल्यो हार (ग)
(६१०) १. करइ (ग) २. ठा आइ वेउ संचरइ (ग) उरि वेइ (ख)
ग— काम मूंवड़ी घटी उतारि; वेलइ राउ जम्बवती नारी ॥
(तीसरे चोथे चरण के स्थान पर है)
(६११) ग प्रति में निम्न पाठ है—
ताम जंपइ जंपइ एम महमहणु मनि विभउ विस्मउ भयो ।
एहु रूप कहि मोहनी, मयणि कुवरि माड्यो विनासि ।
चरितु सतभामा जाणी, एह काम कहु को कयउ हरिराजा चिति चितवइ ।
जो विहिण लिखु चितयउ सो किउ मोहणे जाइ ।
जाहि जंववती विलसंतु करहि राज बहु भाइ ॥

चौपई

जव[1] जंवइ पूत अवतरिउ, संवकुम्वारु नाउ तसु धरयउ ।
वहु गुणवंत रूप कउ निलउ,[2] ससिहर कान्ति[3] जोति आगलउ ६१२॥

सत्यभामा के पुत्र उत्पत्ति

एतह[1] पढम सग्गि जो देउ, सुर नर करइ तास की सेव ।
सो तह हुँ तउ आउ खउ चयउ, सतभामा घर नंदण भयउ॥६१३॥

लक्षणवंतु[1] सयल गुणवंत, अति सरूप सो सीलम्वंत ।
नाम कुवर सुभानु तहा[2] चयउ, सतिभामा[3] घर णंदण भयउ ॥६१४॥

दोनु कुवर खरे सुपियार, एकहि दिवस लियउ अवतार[1] ।
दोउ विरधि गए ससिभाइ, दोइ पढै गुणौ इक ठाइ ॥६१५॥

शंबुकुमार और सुभानुकुमार का साथ साथ क्रीडा करना

एक[1] दिवस तिनि जूवा ठयो, कोडि सुवंद दाउ तिन ठयउ ।
संब कुवर जीणिउ तहि ठाइ, हारि सुभानुकुवरु घरि जाइ ॥६१६॥

द्यूत क्रीडा का प्रारम्भ

तव सतिभामा परिहसु करइ, मन मा[1] मंत्र चित्ति[2] सो[3] करइ ।
करहू खेल कुकडहि[4] वहोडी, जो हारे[5] सा देइ दुइ कोडि ॥६१७॥

---

(६१२) १. जवंवती ए पूत्तु अवतरघो (ग) २. किसु मिले (ग) ३. सूरून तिसु वडि तुलइ (ग)

(६१३) १. इहु पटमनि संदेह सी बेर, एहुता कर्म संयोगइ देव (ग)

(६१४) १. वत्तिस (ग) २. तसु भया (ग) ३. वुइज चंदु जिउ विरघो गया (ग)

(६१५) १. हथियार (ग)

(६१६) १. हाक्यो सयनु वाउ तिन्हि कियो (ग)

(६१७) १. गहि (ख) महि (ग) २. मूलप्रति में चि पाठ है । ३. विसाधरइ (ग) ४. कूकडन्हवकोडि (ग) ५. वाहुडि वाउ धरघा तिनि फेरि ।

तउ कुकडा देइ मुकलाइ, उपराऊपरु भिरे ते आइ।
कुवर[१] भान तणउ गो मोडी, संवकुवर जिणे[२] द्वै कोडि ॥६१८॥

वहुत खेल सो पाछइ कीयउ, तवइ[१] मंत ता ओरइ कियउ।
दूत[२] हकारि पठायो तहा, वहुरि विजाहर निमसइ तहा ॥६१९॥

गयो दूत नही लाइ वार, विजाहरनी[१] जणाइ सार।
भणइ[२] दूतु मनि चिंत्या लेहु, पुत्री एकु ,आनहि देहु[३] ॥६२०॥

सुभानुकुमार का विवाह

विजाहर[१] मन भयउ उछाहु, दीनि[२] कुवरि भयो तह व्याहु।
द्वारिका नयरी कलयलु भयो, व्याह[२] सुभानकुवर को भयउ ॥६२१॥

कुवर[१] सुभान विवाहै जाम, तव रूपीणि मन चिंतइ जाम।
दूत वुलाइ मंत्र परठयो[२], रूपुकुवर पास[३] पाठयो ॥६२२॥

---

(६१८) १. सभा नारायणु मुखु चाल्या मोडि (ग) २. जीता दोइ कोडि (ग)

(६१९) १. संवकुवरु जीति धनु लीया (ख ग)
२. कुवरु सुभानुहि आये हारि, तउ विलखी सतभामा नारि (ख ग)

(६२०) १. विज्जाहर राइ (ग) २. भणी विपु जिन अनचितु लेहु (ग)
३. देहि (ख ग) मूलप्रति में 'भणइ दूत मन अनुचित लेख, पुत्री एकु भानइ लेहि, पाठ है।

(६२१) १. विद्याहरु (क) विज्जाद (ख) २. तिम (क) दीनी (ख ग)
३. *उतिमु लोगु सयल आइउ (ग)

(६२२) १. तव रुपणि मनि उह्यो चाउ, हउ अपणा व्याहउ करिभाउ (ग)
२. तव कियो (क) सठयो (ख) ३. पासहि पाठयउ (क) पासि पाठयो (ख)
कुंडलपुरिहि दूतु पाठयो, आइ रूपचंदु वीनयउ (ग)

रुक्मिणि के दूत का कुंडलपुर नगर को प्रस्थान

सो कुंडलपुर गयो तुरंत, रूपचंदस्यो कह्यो निरुत्त ।
स्वामी बात सुणो मो तणी, हउ तुम पह पठयो रूपिणी ।।६२३।।

संवकुम्वारु[१] कुवर परदवणु, तिहि पवरिसु जाणइ सवु कवणु ।
जइसे तुम स्यो वाढइ[२] नेहु, दुहु[३] कुमार[४] कहु वेटी देहु ।।६२४।।

रूपचन्दु वोलइ तिस ठाइ[१], रूपिणि कहु[२] तू लेइ मनाइ ।
जादौ वंस पूत[३] जो होइ, तिसको[४] वाहुरि धीयको देइ ।।६२५।।

कहइ वात जणवउ[१] समुझाइ, इत्वही कहहि रुकुमिणी[२] जाइ ।
साभडि[३] तइ जु पवाडउ कियउ, वात कहत नहु दूखित[४] हियउ ।।६२६।।

जिणि परिगहु मालियउ अवटाइ, सेसपाल तू[१] गई मराइ ।
अजहु वयण कहइ तू एहु[२], मयणकुवर कहु[३] वेटी देहु ।।६२७।।

---

(६२३) निरुत्त (क) – नोट – प्रथम और द्वितीय चरण ग प्रति में नहीं है । मूलपाठ तुरंत ।

(६२४) १. उर (क) २. बाधइ (क) ३. वेहु (क) बहू (ग) कुवरनो (ग) ।

(६२५) १. राइ (क) २. कउ तउ बेटी तेहु (क) स्यउं तू कहइ बुलाइ ३. मूल प्रति में--पूजो सोई पाठ है । ४. तिस कहु धीयन वेई कोइ (ग)

(६२६) १. जनसिउ (क) जणसिउ (ख) इहि (ग) २. तू तिन्हस्यउ जाइ (ग) ३. सांभलि (क ख) संभलि करियहु म्हारा किया (ग) ४. फाटइ (ग)

(६२७) तू गई मराइ (ख) मूलपाठ—तू चल्यो मरवांइ २. माहि (ग) ३. कहु (ग) मूलपाठ तू

निसुणि वयण खस चाल्यो दूत, द्वारिका नयरि आइ पहूत ।
तुम[1] को वचन कहै समझाइ, सो[2] जण कहिउ सरस्वती जाइ ॥६२८॥

नारायण स्यो आयस[1] कहउ, हम[2] तुम माह कमण सुख रहिउ ।
केते[3] अवगुण तुम्हारे[4] लेउ, तुम कहु छोडि डोम[5] कहु देउ ॥६२९॥

निसुणि वात विलखाणी[1] वयण, आसू पातु[2] कीए द्वै नयण ।
मानभंग इहि[3] मेरउ कीयउ, वुरो[4] कियउ मुह दूख्यो हीयउ ॥६३०॥

विलख वदनि दीठि रूपिणी, पूछि वात जननी आपणी ।
कवण बोल तू विसमउ धरइ, सो मो वयण वेगि उचरइ ॥६३१॥

मइ[1] छइ पूत मंत्र आठयो, कुंडलपुर जण[2] पाठयो ।
दुष्ट वचन ते कहे वहुत, साले[3] खरे पूए मो पूत ॥६३२॥

---

(६२८) १. तिहकउ (क) उहकउ (ख) मोस्यउ (ग) २. आइ कहा रुकमिणि के आइ (क) सो ति कहिउ रुकिमिणी सिहु आइ (ख) सो तिन्ह कहे रुकमिणि आइ (ग)

(६२९) १. एसो (क) अइसउ (ख) आइसा चयउ (ग) २. हम तुम्ह आइ सुवइ सा भयउ (ग) ३. कितेक (ग) किते (ख) ४. थारे (ग) ५. हूंम (क ख ग)

(६३०) १. सो बिलखी वयण (ग) २. करहि दुह (क) करइ दुइ (ख ग) ३. यहु (क) इति (ख, ग) ४. वुरा वोलु मोरयउ वोलीया (ग)

(६३२) १. इसिउ पूत मंत आख्यो (क) मइथिउ पूत वयणु आघयउ (ख) मइया पुत्र मंतु इहु हुयउ (ग) २. छुउ जण पाठयो (क, ख) दूत पाठ्यो (ग) ३. साले खरउ होयइ मोहि पूतु (क) साले खरे मुहि हीय बहुत (ख) सालहि हियै खरे ते पूत (ग)

मइ जाण्योउ मुहि भायउ अहइ, एसी वात निचू[1] भउ कहइ।
विषयवासिणि[2] मानइ होइ, एसी वात कहइ न कोइ ॥६३३॥

निसुणि वयण परदवनु रिसाइ, हीणु वयण तह वोलइ माइ।
रूपचंदु रण जिणहु पचारि, पाण[1] रूप छलि परणउ नारि ॥६३४॥

प्रद्युम्न का कुंडलपुर को प्रस्थान

कंद्रप बुद्धि करी तंखीणी, सुमिरी विद्या बहुरूपिणी।
संबु[1] कुवरु परदमनु भयउ, पवण वेगु कुंडलपुर गयउ ॥६३५॥

दोनों का डोम का वेष धारण कर लेना

दीठउ नयरु दुवारे[1] गयउ, डोम रूप दोउ जण भयउ।
मयण अलावणि करण[2] पठए, सामकुमार[3] मंजीरा लए ॥६३६॥

फिरे वीर चोहठे मझारि, उभे भये जाइ सीहवारि[1]।
वहु परिवार[2] सिउ दीठउ राउ, तउ कंद्रपु करह व्रह्माउ ॥६३७॥

---

(६३३) १. नीच (क) नीच स्यों (ग) २. विष्फु सिघासणि (क) विष्पुसवासिणि (ख) किम वचन सुणि वोलइ सोइ (ग)

(६३४) १. पवनवेग (ग)

(६३५) १. संबु कुवरु परदमणु भयो (क) संव कुवारि कुवरु वुए भए (ग) मूल प्रति में 'स्वामी' पाठ है।

(६३६) १. द्वारि भाइए (ग) २. करि पाठए (क, ख) करणहि दुयो (ग) ३. संबु कुवरि (ग)

(६३७) सीह दुवारि (ग) सीह दुवारि (ख क) २. परियण सिउ (ख) परिगहस्यउ' (ग)

गीत कवित जे आदम तणै, ते कंद्रप गाए सब[1] सुणे ।
अवर गीत सब[2] चीतइ धरणी, जादम[3] राय की सलहण करइ ॥६३८॥

जादम तणउ[1] नाउ जब लयउ, रूपचन्द मन विसमउ[2] भयउ ।
वहुत गीत की[3] जाणहु सार, कहा[4] हुते आए वेकार ॥६३९॥

रूपचन्द को अपना परिचय बतलाना

द्वारिका नयरी कहिए ठाउ, भुंजइ[1] नरायणु जादमुराउ ।
पाटमहादे जहा रुक्मिणी, राय सहोत्तरि जो तुह तणी ॥६४०॥

तुह्मि सलहण वइ करइ वहूत[1], तिणि राणी पठए[2] दूत ।
तुम्हि उतरु तिहि कहउ जाइ, तिहि सहेट हमि आए राइ ॥६४१॥

वाले वोलति करहु पम्वाणु[1], सतु वाचीय परि होइ पवाण[2] ।
भाख[3] पालि मन धरहु सनेहु, दोउ पुत्री[4] हमि कहु देहु ॥६४२॥

---

(६३८) १. आपणा (क) २. पाछहि (क) सो चिति नकि (ग) ३. जादम राइ सालाहति करइ (ग)

१. मूलप्रतिमें—आग तणे पाठ है तथा चतुर्थ चरण नहीं है ?

(६३९) १. भणउ (ख) सुणउ (ग) २. मन विलखउ (क) मनि विसमउ (ख ग) मूलप्रति में 'नवि भयउ' पाठ है ३. गाए बहुवार (क) कीया तह सार (ग) ४. कहा ते आए ए वेकार (ग)

(६४०) १. तह (ग) बसहि (ख) भूंचइ ताह नारायण राउ (ग)
मूलप्रति में—'बुचइ' पाठ है ।

(६४१) १. गुणवंत (क) तोहि सराहण करहि बहूत (ग) २. पठए थे दूत (क) पठये हम दूत (ख) तिनि नाराइणि था पठुया दूतु (ग)

(६४२) १. प्रमाण (क) परवाणु (ख) परवमणु (ग) २. प्रवाण (क) परवाणु (ख) सत्य वयण ते होहि परवाणु (ग) ३. भागिवंत (क) भाजि आमिनि (ग) ४. कन्या (ग)

रूपचन्द का उन दोनों को पकड़ने का आदेश देना

वस्तुबंध—

निसुणि कोपिउ खरउ[१] तहिराउ।
जाणौ वैमुंदर घीउ ढलीउ, धुणि सीसु सरवंगु[२] कंपिउ।
पाणभ[३] वोलत गयउ, एहु वोलते कवणु जंपिउ॥
लै[४] बाहिर ए निगहहु, सूली रोपहु जाइ।
जइ[५] जादौ बहहि सवल, तोहि छुरावहु आइ॥६४३॥

चौपई

गीम्व[१] गहे तक करहि पुकार, डोम डोम हुइ रहे अपार।
हाथ अलावणि सिंगा[२] लए, हाट चोहटे सव परिरहे[३]॥६४४॥
तंखण[१] कुवर भइ पुकार, रूपचंद रा[२] जाणी सार।
हय गय रह[३] सेती पलणाइ, छण इक माह पहुंतउ आइ॥६४५॥
रूपचंद रा[१] पहुतो आइ, सामकुम्वारु[२] परदमणु जहा।
एक[३] ताऱक सव एकहि साथ, सागालाए[४] अलावणी हाथ॥६४६॥

---

(६४३) १. तवहि मनिराउ (ग) २. अति रोस कीए (ग) ३. प्राण जीव (क) पाण जीव (ख) पुणि बोल्यो भ्रिम गयो (ग) ४. लेई बाहरि निगयउ (क) वहि लेहो वहु निग्रहहु (ग) ५. वांह पकडि वन महि धरिउ जैसे पाइ पलाइ (क)

(६४४) १. ग्रीव (क) गावत गाहे करहि पुकार (ख) गीत कवित तिनि काढ वारि (ग) २. अरु गलि जाइ (ग) ३. भरि गए (क ख) भये वुढि चोहटे फिराइ (ग)

(६४५) १. पुरवि (क) पुरवरि (ख) पुत्र गुये हुंकारि (ग) २. राव जणाई सार (क) कहु दीनो सार (ग) ३. रथ पाइक (ग)

(६४६) आइ पहुतउ तिहा (क) २. संब कुमर परदमण (क) संब कुवर परदोम्‍न (ग) ३. एक तक नासरि (ग) ४. गलै अलावण बोला [illegible] (ग)

देखि डोम मन विंभउ[1] राउ, नीघण[2] जाति करउ किम[3] घाउ ।
घणुक[4] सधारणि वाण जब हणे, तहि[5] पह अवर मिले चउगुणे ॥६४७॥

प्रद्युम्न और रूपचन्द के मध्य युद्ध

कोपारूढ मयण तव भयउ, चाउ चडाइ हाथ करि लयउ ।
अग्निवाणु दीणउ मुकराइ,[1] जुभत पत्री चले पलाइ ॥६४८॥

भागी सयन गयउ भरिवाउ, वाधिउ मामू[1] गले दइ पाउ ।
लइ कन्या सवु दलु पलणाइ, द्वारिका नयरि पहुते आइ ॥६४९॥
रूप रावलइ पहुतो तहा, राउ नरायण वइठो तहा ।
रूपचंदु[1] हरि दीठउ नयण, हमइ[2] लाभु कियउ नारायणु ॥६५०॥

रूपचन्द को पकड़ कर श्रीकृष्ण के सम्मुख उपस्थित करना

तव हसि मदसूदनु इम कहइ, इह भाणेजु[1] तिहारउ अहइ ।
इहि विद्यावलु पवरिषु[2] घणउ, जिणि जीतिउ पिता आपणउ ॥६५१॥

---

(६४७) १. विलखो (क) चितइ (ग) विंभिउ (ख) २. निरखण (ख ग) ३. किउ (क) को (ग) ४. धणुष बाण ले हाथि हिणइ (ग) ५. ऊपरि अधिकु चउगणे गिणइं (ग)

(६४८) १. मुकलाइ (क ख ग)

(६४९) १. रूप ( ) मामा (ग)

(६५०) १. रूपचंद (क ग) २. इहु के वहुतु किया महमहणु (ग)

(६५१) १. यहु भाणजा तुहारा अहइ (ग) २. इहु सुपूत, रुकमिणि तणा (ग) नोट—यह छन्द (क) प्रति में नहीं है ।

श्रीकृष्ण द्वारा रूपचन्द को छोड़ देना

तब हसि माधव कीयउ[1] पसाउ, वाधिउ छोडिउ मनघरि[2] भाउ।
मयरद्धे[3] हसि आकउ भरिउ, फुणि रूपिणि[4] पहु घर ले चल्यउ ॥६५२॥

रूपचन्द और रुक्मिणि का मिलन

भेटी जाइ वहिणि आपणी, वहु[1] तक मोहु धरयो रुक्मिणी।
वहु आदर सीझइ[2] ज्योनार, अमृत भोजन भए अहार ॥६५३॥
भायउ[1] वहिणि भाणिजे भले, भयउ[2] षेमु जइ एकत मिले।
निसुणि वयण तव भयउ उछाहु, दीनी कन्या भयउ[3] विवाहु ॥६५४

प्रद्युम्न एवं शंबुकुमार का विवाह

हरे वंस तव[1] मंडप ठये, वहुत भांति करि तोरण रए[2]।
छपनकोटि जादम मन रले, दोउ कुवर विवाहण[3] चले ॥६५५॥

---

(६५२) १. करि मनिचाउ (ग) २. रुपचन्द राउ (ग) ३. मेराधा हसि अंको भरइ (ग) ४. कइ (ग)

(६५३) १. बहुता मोहु करै रुकमिणी (ग) बहुत सनेहु धरिउ रुकमिणी (ख) २. कीजहि जीमणवार (क) साजइ जवनार (ख) रची जउणार (ग)

(६५४) १. भाई वहिण भाणेजे भले (क) मिले (ख) आए बहण भणइ तुम्ह भले (ग) २. भली तरी जो खोमहमिले (ग) ३. हुयो (ग)

(६५५) १. का (ग ख) २. रोपिया (ग) ३. विवाहण (क ख ग) मूलपाठ 'विमाणा' ग प्रति में निम्न पाठ अधिक है—

रुपचन्द तिव बोलइ वाणि, बोइ कन्या देवउं आणि (ग)

संख भेरि वहु पडह अनंत, महुवरि[1] वेण तूर वाजंत।
दे भावरि हथलेवउ[2] भयउ, पाणिगहनु[3] चौहुजण कियउ ॥६५६॥

घर घर नयरी भयउ उछाहु, दुहु कुवर कउ[1] भयउ विवाहु।
सुरिजन जण ते मन मा रलइ, एकइ[2] सतिभामा परजलइ ॥६५७॥

रूपचन्द को आइस भयउ, समदिनारायण सो घर गयउ।
कुंडलपुर सो राज कराइ, वाहुरि कथा द्वारिका जाइ॥
एथंतरि[1] मनु धम्मंह रलो[2], जिणु वंदुण कैलासहि चलिउ ॥६५८॥

छठा सर्ग

प्रद्युम्न द्वारा जिन चैत्यालयों की वन्दना करना

वस्तुबंध—

ताम चिंतइ कुवर परदवणु।
भउ संसार समुदु[1] परिजयनु, धम्मं[2] दिढु चित दिजइ।
कैलासहि सिर[3] जिणवर भुवण, सुद्ध भाइ पूज्जइ किज्जइ॥
अतीत अनागत वरत[4] जे दीठे जाइ जिणिंद।
जें[5] निपाए जिणवर भुवण, धनु धनु भरहं नरिंद ॥६५९॥

---

(६५६) १. मधुरी वीण ताल वाजंत (क) २. कीया (ग) ३. पाणग्रहण करि वुइ परणीया (ग)

(६५७) १. का हुवा (ग) २. करि कउतिग आगै वुइ चले (ग)

(६५८) इस पद्य में ६ चरण हैं। १. इत्थंतरि (क) एथंतरि (ख) येथंतरि (ग) २. सो मन महि रले (ग)

(६५९) १. दुत्तर तरइ (क) समुदपरि (ग) समुद्दपरि (ख) २. जैनधर्म (क ख ग) ३. सिखर (ख) कविलासह सो सिखरि (ग) ४. वरति वंदे (क) ५. जेणि कराए जिण भवण ते सव वंदे आनंद (ख) ग प्रति में अन्तिम २ पंक्ति निम्न प्रकार है—

चलिउ ताह अह कम छिजइ फिरि फिरि देखइ जिण भुवण।
वंदइ भावन भाइ के जिन, आन्या महि रहहि तह महोछ्छवाइ॥

चौपई

फिरि चेताले वंदे[1] मयरण, तिन्हि[2] ज्योति दिपइ जिम्व रयरण ।

अट्ठविधि पूजउ[3] न्हवणु कराइ, वाहुडि मयरण द्वारिका जाइ ॥६६०॥

इथंतरि अवरु कथंतरु भयउ, कौरो पांडव भारहु भयउ ।

तिहि[1] कुरखेत महाहउ भयउ[2], तिहि नेमिस्वर संजमु लयउ ॥६६१॥

वाहुरि मयरण द्वारिका जाइ, भोग[1] विलास चरित विलसाइ ।

छहरस परि सीझइ ज्योनार, अमृत भोजन करै[2] आहार ॥६६२॥

तहा सतखरगा धोल[1] हर अवास, निय[2] निय सरसे भोग विलास ।

अगर चंदन वहु[3] परिमल वास, सरस[4] कुसम रस सदा सुवास ॥६६३॥

नेमिनाथ को केवल ज्ञान होना

एसी[1] रीति कालुगत गयउ, फुरिण नेमि जिन केवल भयउ ।

समवसरण तव आइ सुरिंद, वणवासी[2] अवर सुररिंदु ॥६६४॥

छपनकोटि[1] जादम मन रले, नारायण स्यो हलहल चले ।

समउसरण परमेसरु जहा, हलहल कान्ह पहुते तहा ॥६६५॥

---

(६६०) १. वंदण करइ (ख) वंदे जाय (ग) २. तिन्ह की जोति देखइ जिणभाणु (ग) ३. पूजा (क ख ग)

(६६१) १. तिन्ह (क) तिण्हि (ख ग) २. किया (ग)

(६६२) १. छह रति विलसइ भोग कराइ (ग) २. सरस (ग)

(६६३) १. धवल (क ख ग) २. निय पिय सरसहि (ख) नीरस परिस (ग) ३. केसर (ग) लहै (ग) ४. सरस कुसमरस सदा सुवास (क) मूलपाठ—तंबोल कुसम सर बीस

(६६४) १. अइसी (क ख) इसी (ग) २. भुवरणवासी आयो धरिंणिदु (ग)

(३६५) १. सभी जादम मिले (ग)

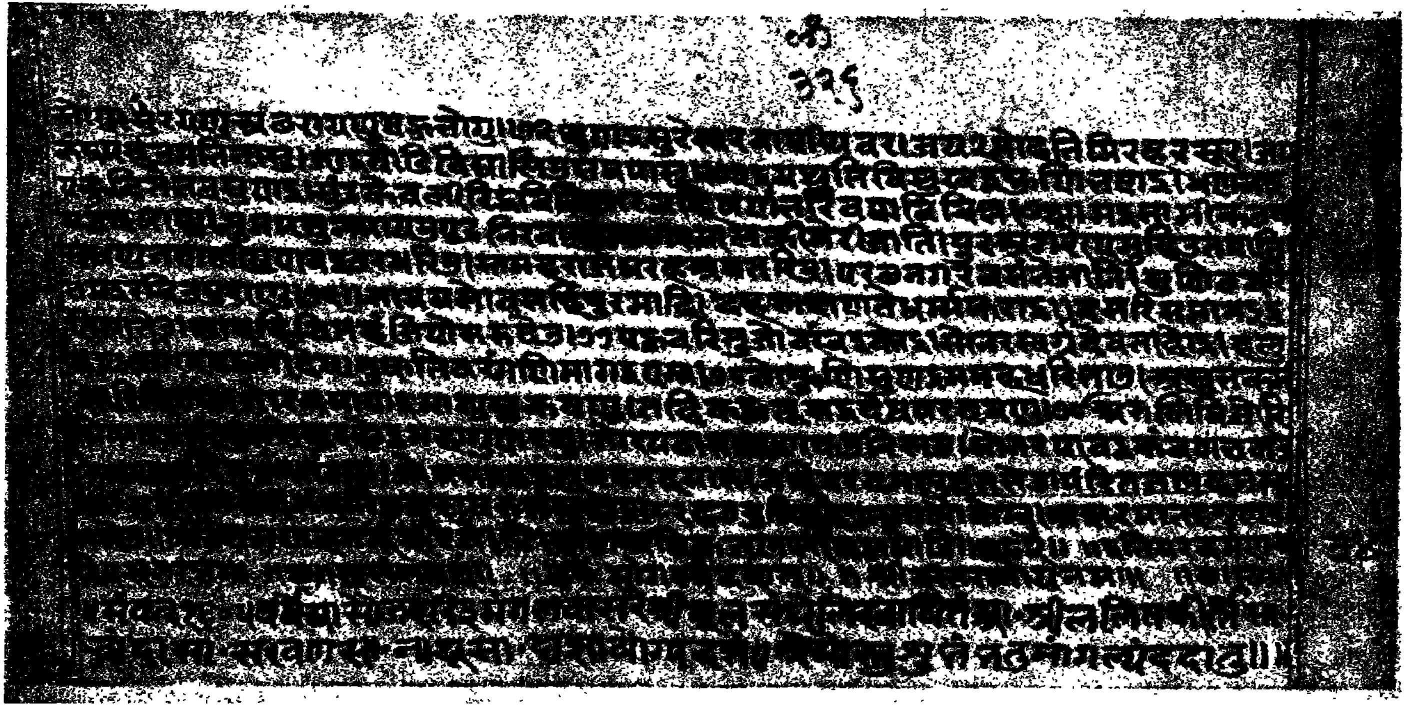

अन्तिम पत्र

(शास्त्र भण्डार श्री दि० जैन मन्दिर बधीचन्द जी जयपुर के व्यवस्थापकों के सौजन्य से प्राप्त)

देवि[1] पयाहिण करिउ वहूत, फुणि माधव[2] आरंभिउ[3] थुति ।
जय कंदर्प्प खयंकर देव, तइ सुर असुर कराए[4] सेव ॥६६६॥
जइ कम्मट्ठ दुट्ठ खिउकरण, जय महु जनम जनम जिनुसरणु ।
तुम पसाइ हउं दूतरु तिरउ, भव संसारि न वाहुडि परउ ॥६६७॥
करि स्तुति[1] मन[2] महि भाइ, फुणि नर कोठि वइठउ जाइ ।
तउ जिणवाणी मुह नीसरइ, सुर नर सयल जीउ मनि धरइ ॥६६८॥
धर्माधर्म सुणिउ दुठं वयण, आगम तणउ सूणिउ परदवणु ।
गणहर कहु पूछइ षण सिधि, छपनकोटि जादम की रिधि ॥६६९॥
नारायण मरण कहि पासु, सो मो कहु आपहु निरजासु ।
द्वारिका नयरी निश्चल होइ, सो आगमु कहि आफहु मोहि ॥६७०॥

गणधर द्वारा द्वारिका नगरी का भविष्य बतलाना

पूछि वात तउ हलहल रहइ, मन को सासउ गणहर कहइ ।
वारह वरिस द्वारिका रहहु, फुणि ते छपनकोटि संघरहु ॥६७१॥
द्वीपायन ते उठ इव जागि, द्वारिका नयरी लागइ आगि ।
मद[1] ते छपनकोटि संघरइ, नारायण हलहल[2] उवरइ ॥६७२॥

---

(६६६) १. देव कहीजे कथा बहुत्त (ग) २. आरंभिउ थुत्त (क) आरंभिउ थोउ (ख) पुणि केसउ आइरवउ थुत्त (ग) ३. मूलपाठ आएंभिउ पुत्तु ४. करहि तिसु सेव (ग)

(६६८) १. करिवइ थुति (क) करिय थुत्ति (ख) करिवि थुति (ग) २. मनिमहि (क ख ग) दूसरा और तीसरा चरण ग प्रति में नहीं है ।

(६७०) यह छन्द क प्रति में नहीं है ।

(६७२) १. बलिभद्र (ख) २. छपनकोडि समुद संघरहि (ग)

मुनि आगमु सो मेटइ कम्वणु, जरदकुमार[1] हाथ हरि[2] मरणु ।
भान सुभानु अरु सामिकुमारु,[3] आठ महादे संजमु भारु ॥६७३॥
सुणि वात जउ गणहर पासु, निहचे द्वारिका होइ विणासु ।
दीपायनु तपचरणह गयउ, जरदकुमारु[1] वनवासा लयउ ॥६७४॥

प्रद्युम्न द्वारा जिन दीक्षा लेना

दसदिसा खहु जादम भए, करि संजमु जिणवर पह गए ।
दीष्या लेइ कुमर परदवणु, चिंतावत्थु[1] भयउ[2] नारायणु[3] ॥६७५॥

प्रद्युम्न द्वारा वैराग्य लेने के कारण
श्रीकृष्ण का दुखित होना

विलख वदनु भयो[1] नारायणु, हा मुहि पूत पूत प्रदवनु ।
कवण बुद्धि उपनी तो आजु, लेहि द्वारिका भुंजइ राजु ॥६७६॥
राजधुरंधर जेठउ पूत, तोहि विद्यावल आहि वहुत ।
तोहि पवरिषु जाणइ सुरभवण, जिण तपु लेइ पूत परदवणु ॥६७७॥
कालसंवर जाणइ तो हियउ, हउ रण महतइ विलखो कीयउ ।
तइ रूपिणि हरी मुहुतणी, फुणि तइ सुहड पचारे घणे ॥६७८॥

---

(६७३) १. जरा (ग) २. होइ (ग) ३. सम्बु (क ख ग)

(६७४) १. जरासिंधु (क) जराकुमार वनवासी भया (ग)

(६७५) १. चिंतवन्त (क) चिंतावस्थ (ग) २. थयउ (क) ३. महमहण (क) महमहणु (ग)

(६७६) १. बोलइ तिस कवण (क) बोलइ नारायणु (ख) बोलइ महमहण (ग)

(६७७) १. मत (क)

नारायण के वयण सुरोइ, तं[1] पडि ऊतरु[2] कंद्रपु देइ ।
का[3] कउ राजुभोग घरवारु, सुपिनंतरु जइसउ संसारु ॥६७६॥
का कउ धन पौरिषु वलु घराउ, का कउ वापु कुटंव कहि तराउ ।
घडिक[1] मा जाइ विहडाइ, आव[2] क्षिपति को सकइ रहाइ ॥६८०॥

रुक्मिरिण का विलाप करना

नारायण वारि[1] विलखाइ, फुरिण रूपिरिण सपत्ती आइ ।
करण[2] कलाप करइ विललाइ, केमु पूत मन धरमु रहाइ ॥६८१॥
एकु पूत तू मोको भयउ, धूमकेत तवही हरी लयउ ।
कनकमाल[1] घर विरधि करंत, वाले सुखहू न देखिउ पूत ॥६८२॥
फुरिण मोहि घर आयो आनंदु, कुल उद्योत[1] जिम पून्यो चंदु ।
राज भोगत ए किए असेस, अव ए भूमिरु रहोगे[2] केस ॥६८३॥

(६७६) १. तंखिरिण (ग) २. कंद्रप उतर देइ (ग) ३. किसुका राज वेस घरवार (ग)

(६८०) १. घडी एक घाले (ग) २. उपति सपति के रहइ घराइ (ग) ग प्रति में प्रथम द्वितीय चरण नहीं है ।

(६८१) १. बाहुडि (क ख) २. बलत अगनि कउ लिउ बुझाइ (ग)

(६८२) १. स्तनपान मेरो नवि करिउ, नवि उछंगि कवहि महू धरिउ (क)

(६८३) १. उदयो जासु (ग) २. लहिंगे (ख ग)

क प्रति में निम्न प्रकार है—

रुपरिण मइ तय कउ मन कियउ, इव किस वेलि सहारउ हियउ ।
राजा एक कीता असेस, अब ए तुमिर सह केस ॥६८८॥

क प्रति में निम्न छन्द अधिक है—

पुरिण इव रुपरिण लागी कहरण, जिन तब लेहि पूत परवमरण ।
इसी कहि मइ तू डर धरिउ, अब किस वेलि सहारउ हियउ ॥

प्रद्युम्न द्वारा माता को समझाना

माता तरगउ वयरग निसुरगेइ, तव[1] प्रतिउतरु कंद्रपु देइ ।
लावरग रुप सरीरहु सारु, जम रूठे सो होइ है छारू ॥६८४॥
अवगी माइन कंदलु करइ, माया मोहु मागु परिहरइ ।
जिन सरीर दुख[1] धरहु वहुत, को मो माइ कवरग तुहि पूतु ॥६८५॥
रहटमाल[1] जिउ यहु जीउ फिरइ, स्वर्ग पताल पुहमि अवतरइ ।
पूव्व जनम को सनमधु आहि, दुजरग सज्जरग लेइ सो चाहि ॥६८६॥
हम तुम सन्मधु पुव्वहं[1] जम्म, सोहउ आरिग घटाउ कम्म ।
इम्व करि मनु समझावइ ताहि, रूपिरिग माइ वहुडि घर जाहि ।६८७।

प्रद्युम्न का जिन दीक्षा लेकर तपस्या करना

इम समुझाइ रूपिरिग माइ, फुरिग रिगमि[1] पास वइठउ जाइ ।
देसु कोसु[2] परिहरे असेस, पंचमुवीर[3] उमाले केस ॥६८८॥
तेरह विउ[1] चारितु चरेइ, दहु लक्षरग विहु[2] धरमु करेइ ।
सहइ परीसह वाइस[2] अंग, वाहिर भीतर छायउ अंग ॥६८९॥

---

(६८४) १. तउ पडि (ख ग) तउ परि (क)

(६८५) १. दुख (क ख ग) मूल पाठ दुष्ट

(६८६) १. रहडमाल (ख) अरहटमाल (ग)

(६८७) १. पूरव जनमि (ग)

(६८८) १. जिरग (क ख) मुनि (ग) २. वास (ग) ३. पंच मूठि उपाडे केस (क) पंच मुट्ठि सिर उपडि केस (ख) पंचमरुठुमउ लाये केश (ग)

(६८९) १. विरद्धि चारैं व्रतु चार (ग) २. वैसु संगु (ग)

प्रद्युम्न को केवल ज्ञान एवं निर्वाण की प्राप्ति

घाइ कम्मु को किउ विणासु, उपणउ केवलु षण निरजासु।
दीठउ लोयण लोयपमाणु, झायउ चित्तव[1] उच्छउ झाणु ॥६९०॥

तंखण आयउ चंद सुरिंदु विजाहर[1] हलहर धरणिंदु।
नारायण[2] वहु सजण[3] लोगु, सुरयणु अछरायणु वहु भोगु ॥६९१॥

थुणइ[1] सुरेस्वर वाणी पवर, जय जय मोहतिमिरहरसूर[2]।
जय कंद्रप हउ मति[3] नासु, जाइ[4] तोडिवि घालिउ भवपासु ॥६९२॥

इय[1] थुतिवि सुर वइ फुणि भणइ, धणवइ एकु चित भउ सुणइ।
मुंड केवली रिद्ध विचित्त[2], रचहि खणंतरि[3] वण्ण विचित्त ॥६९३॥

---

(६९०) १. जो चितवै सोचउ या मासु (ग)

(६९१) १. विद्याधर आया धरि आनन्दु (ग) २. नर सुर को तह हुव संजोग (क) ३. सूमरण (ग)

(६९२) १. सुणइ नारि सर (क) सुणइ सुबाणी प्रबले अपार (ग) २. करहु महु तिमिर (क) जइ जइ मोह तिमिरा हर हार (ग) ३. कउ कियो विणास (क) काम मनि नासु (ग) ४. जइ सुजाण तोडा भव पास (क) जउ भौ विया लीया पासु (ग)

(६९३) १. एम भणिवि सुर सामी भणइ, धणवइ एकइ चितइ सुणइ (क)
इय सुणि सुरवइ सो फुणि भणइ, ध्यावइ नवइ सुइकचिति सुणइ (ग)

२. पवित्त (ग) ३. पासपति (ग)

ग्रंथकार का परिचय

मइसामीकउ कीयउ वखाण, तुम पजुन[१] पायउ निरवाण ।
अगरवाल की मेरी जात, पुर अगरोए[२] मुहि उतपाति ॥६९४॥

सुधण[१] जणणी गुणवइ उर[२] धरिउ, सामहराज[३] घरह अवतरिउ ।
एरछ[४] नगर वसंते जानि, सुणिउ चरित मइ[५] रचिउ पुराणु ॥६९५॥

सावयलोय[१] वसहि पुर माहि, दह लक्षण[२] ते धर्म्म कराइ ।
दस रिस[३] मानइ दुतिया भेउ, झावहि[४] चितहं जिणेसरु देउ ॥६९६॥

---

(६९४) १. प्रसाद (ग) २. आगरोवइ (ग) अगरोवइ (ख) निम्न छन्द अधिक हैं—

विहरइ गाम नगर बहु देस, भविय जीव संबोहि असेस ।
पुणि तिनि आठ कम्म षण कियो, पुण पजुण नियवाणहु गयो ॥

हुउ मतिहीण विबुद्धि अयाणु, मइस्वामीकउ कियउ वखाणु ।
उछाह मन में कियउ चरित्तु, पढमइ उछाइ वे सो वित्तु ॥७००॥

पंडिय जण नमउं कर जोडि, हम मतिहीणु म लावहु खोडि ।
अगरवाल की मेरी जाति, अगरोवे मेरी उतपति ॥७०१॥

पुव्व चरितु मइ सुणे पुराण, उपनउ भाउ मइ कियो वखाण ।
अइ पुहमि इक चित कियो, साई समाइवि लियउ ॥७०२॥

चउपइ बंध मइ कियउ विचित्तु, भविय लोक पढहु दे चित्त ।
हूं मतिहीणु न जाणउ केउ, अखर मात न जाणउ भेउ ॥७०३॥

(६९५) १. सुधनु (ग) २. गभुं उरि धरयो (ग) ३. साहु महराज (क) समहराइ करिया अवतरयो (ग) ४. एलचि (क) एयरछ (ख) येरस (ग) ५. हम करिउ वखाण (क) मैं कीया वखाणु (ग)

(६९६) १. सवल लोग (ख) सब ही लोक (ग) २. नावहल ते राज कराइ (ग) ३. वरिसण मानहि दुतिया भेउ (क) दंसण जाणहि दूजउ भेउ (ख) दर्शन माहि नही तिन्ह भेउ (ग) ४. जयउ विचित्त (क) ध्यावहि चित्ति (ख) ध्यावहि इक मनि जिनवर देव (ग)

एहु चरितु जो वांचइ कोइ, सो नर स्वर्ग देवता होइ ।
हलुवइ[1] धर्म्म खपइ सो देव, मुकति वरंगणि मागइ[2] एम्ब ॥६९७॥
जो फुणि सुणइ मनह धरिभाउ, असुभ कर्म तें दूरि हि जाइ ।
जोर वखाणइ माणुसु कवणु, तहि कहु तूसइ देव परदवणु ॥६९८॥
अरु लिखि जो लिखियावइ साधु, सो सुर होइ महागुणराधु ।
जोर पढावइ गुण किउ निलउ, सो नर पावइ कंचण भलउ ॥६९९॥

---

(६९७) १. हलुव कर्मु गुणि होइ सो बोउ (ख) २. पावइ एव (ख) क प्रति में तथा ग प्रति में यह छन्द नहीं है ।

(६९९) क प्रति में उक्त छन्द के स्थान पर निम्न छन्द हैं—

पढहि गुणहि जे चित्तह धरइ, लिहहि लिहावइ जे सुखि करइ ।
सुणइ सुणावइ भव्वह लोय, तिह कउ पुन्न परापति होइ ॥७०५॥

ख प्रति—

खु फुणि सुणइ मनह धरि जाउ, जो वखाणइ माणसु कमणु ।
तिस कहु तूसइ सइ वेउ परदवणु,........................॥७११॥

अरु लिखि जोरु लिखावइ सुद्ध, सो सुरु होइ महागुणरिद्ध ।
जोरु पडावइ गुण कउ निलउ, सो नरु पावइ संजमु भलउ ॥७१२॥

एहु चरितुह पुन्न भडारु, जो नरु पढइ हु नर महं सारु ।
तहि परदवणु तूंरं सि फलु वेइ, संपति पुत्र अवरु जसु होइ ॥७१३॥

हउ बुधि हीणु न जाणउ भेउ, अखर मातह मुणिउ नभेउ ।
पंडित जणहं नवउ कर जोडि, हीण अधिक जिन लावहु खोडि ॥७१४॥

इति प्रद्युम्न चरित्रं समाप्तं । श्लोक संख्या १२००/शुभमस्तु

ग प्रति—

हउ हीण बुद्धि न जाणउ केव, अखित मंतु सु मुनिवर भेउ ।
पंडित जन विनवउ कर जोडि, अधिकउ हीनु जिन लावहु खोडि ॥७१२॥

मइ स्वामी का कीया वखाणु, पंडित जन मति होहु सुजाण ।
केवल उपजइ गुण संपुंनु, सुणहु श्रावगउ उपजइ पुन्नु ॥७१३॥

॥ इति परदवणु चउपई समाप्त ॥

यहु चरितु पुंन भंडारु, जो वरु पढइ सु नर महसारु ।
तहि परदमणु तुही फलदेइ, संपति पुत्र अवरु जसु होइ ।।७००।।
हउ बुधिहीणु न जाणौं केम्वु, अक्षर मातह गुणउ न भेउ ।
पंडित जणह नमू कर जोडि, हीण अधिक जण लावहु खोडि ।।७०१।।

।। इति परदमण चरित समाप्तः ।।

शुभं भवतु । मांगल्यं ददातु । श्री वीतरागायनमः । संवत् १६०५ वर्षे आसोज वदि ३ मंगलवारे श्री मूलसंघे लिखापितं आचार्य श्रीललितकीर्ति सा० चांदा सरवण सा० नाथू सा० दाशा योग्यदत्त । श्रेयोस्तु ।।

★
★★

हिन्दी-अर्थ

प्रथम सर्ग

स्तुति खण्ड

(१) शारदा के बिना कविता करने की बुद्धि नहीं हो सकती उसके बिना कोई स्वर और अक्षर को भी नहीं जान सकता। सधारु कवि कहता है कि जो सरस्वती को प्रणाम करता है उसी की बुद्धि निर्मल होती है।

(२) सब कोई 'शारदा शारदा' करते हैं किन्तु उसका कोई पार नहीं पाता। जिनेंद्र के मुख से जो वाणी निकली है उसे ही शारदा जानकर मैं प्रणाम करता हूँ।

(३) सरोवर में आठ पंखुडि वाले कमल पर जिसका निवास स्थान है, जिसका निकास काश्मीर से हुआ है; हंस जिसकी सवारी है और लेखनी जिसके हाथ में है उस सरस्वती देवी को कवि सधारु प्रणाम करता है।

(४) जो श्वेत वस्त्र धारण करने वाली है तथा पद्मासिनी है और वीणावादिनी है ऐसी महाबुद्धिमती सरस्वती मुझे आगम ज्ञान दे। मैं उस द्वितीय सरस्वती को पुनः प्रणाम करता हूँ।

(५) हाथ में दण्ड रखने वाली पद्मावती देवी, ज्वालामुखी और चक्रेश्वरी देवी तथा अम्बावती और रोहिणी देवी इन जिन शासन देवियों को कवि सधारु प्रणाम करता है।

(६) जो जिनशासन के विघ्नों का हरण करने वाला है, जो हाथ में लकड़ी लिये खड़ा रहता है और जो संसारी जनों के पापों को दूर करता है ऐसे क्षेत्रपाल को पुनः पुनः सादर नमस्कार करता हूँ।

(७) चौबीसों तीर्थंकर दुःखों को हरने वाले हैं और चौबीसों ही जरा मरण से मुक्त हैं। ऐसे चौबीस जिनेश्वरों को भाव सहित नमस्कार करता हूँ तथा जिनके प्रसाद से ही कविता करता हूँ।

(८) ऋषभ, अजित और संभवनाथ ये प्रथम तीन तीर्थंकर हुए। चौथे अभिनन्दन कहलाये। सुमतिनाथ पद्मप्रभ और सुपार्श्वनाथ तथा आठवें चन्द्रप्रभ उत्पन्न हुए।

(९) नवें सुविधिनाथ और दशवें शीतलनाथ हुए। ग्यारहवें श्रेयांसनाथ की जय होवे। वासुपूज्य विमलनाथ, अनन्तनाथ, धर्मनाथ और सोलहवें शान्तिनाथ हुए।

(१०) सतरहवें कुंथुनाथ, अठारहवें अरहनाथ, उगनीसवें मल्लिनाथ, बीसवें मुनिसुव्रतनाथ, इक्कीसवें नमिनाथ, बाईसवें नेमिनाथ, तेईसवें पार्श्वनाथ और चौबीसवें महावीर ये मुझे आशीर्वाद दें।

(११) सरस कथा से बहुत रस उपजता है। अतः प्रद्युम्न का चरित्र सुनो। संवत् १४०० और उस पर ग्यारह अधिक होने पर भादव मास की पंचमी, स्वाति नक्षत्र तथा शनिवार के दिन यह रचना की गयी।

(१२) जो गुणों की खान हैं, जिनका शरीर श्याम वर्ण का है, जो शिवादेवी के पुत्र हैं, जो चौतीस अतिशय सहित हैं, जो कामदेव के तीक्ष्ण बाणों का मान मर्दन करने वाले हैं, जो हरिवंश के चिन्तामणि हैं, जो तीन लोक के स्वामी हैं, जो भय को नाश करने वाले हैं, जो पांचवें ज्ञान केवलज्ञान के प्रकाश से सिद्धान्त का निरुपण करने वाले हैं, ऐसे पवित्र नेमीश्वर भगवान को भली प्रकार नमस्कार करता हूँ।

(१३) पहिले पञ्च परमेष्ठियों को नमस्कार कर फिर जिनेन्द्रदेव के चरणों की शरण जाकर तथा निर्ग्रन्थ गुरु को भाव पूर्वक नमस्कार कर उनके प्रसाद से कविता करता हूँ।

द्वारिका नगरी का वर्णन

(१४) चारों ओर लवणसमुद्र से घिरा हुआ सुदर्शन पर्वत वाला जम्बूद्वीप है। इसके दक्षिण दिशा में भरतक्षेत्र है जिसके मध्य में सोरठ सौराष्ट्र देश बसा हुआ है।

(१५) उस देश में जो गांव बसे हुये हैं वे नगरों के सदृश लगते हैं। जो नगर हैं वे देव विमानों के समान सुन्दर हैं। उन नगरों में प्रत्येक मंदिर धवल तथा ऊंचे हैं जिन पर सुन्दर स्वर्ण-कलश झलकते हैं।

(१६) समुद्र के मध्य में द्वारिका नगरी है मानों कुबेर ने ही उसे बनाकर रखी हो। जिसका बारह योजन का विस्तार है और जिसके दरवाजों पर स्वर्ण-कलश दिखाई पड़ते हैं।

(१७) चौबारों के विविध प्रकार के स्फटिक मणि के छज्जे चन्द्रमा की कान्ति के समान दिखाई देते हैं। वहां के किवाड़ मानों मरकत मणियों से जड़े हुये है तथा मोतियों की बंदनवार सुशोभित हो रही है।

(१८) जहां एक सौ उद्यान एवं स्वच्छ निवास स्थान है जिसके चारों ओर मठ, मन्दिर और देवालय हैं। जहां चोरासी बाजार (चौपड़) हैं जो अनेक प्रकार से सुन्दर दिखाई देते हैं।

(१९) जिसके चारों दिशा में खूब गहरा समुद्र हैं जिसका जल चारों ओर झकोला मारता है। जहां करोड़पति व्यापारी निवास करते हैं ऐसी वह द्वारिका नगरी है।

(२०) धर्म और नियम के मार्ग को जानने वाली जिसमें १८ प्रकार की जातियां रहती हैं, जिसमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, एवं वैश्य तीनों वर्णों के लोग रहते हैं, जहां शूद्र भी रहते हैं, तथा जहां छत्तीसों कुल के लोग सुख पूर्वक निवास करते हैं उस नगरी का स्वामी (राजा) यादवराज है।

(२१) जिसके दल, बल और साधनों की कोई गणना नहीं है। जब वह गर्जना करता है तो पृथ्वी कांपने लगती है। वह तीन खण्ड का चक्रवर्ती राजा शत्रुओं के दल को पूर्ण रूप से नष्ट करने वाला है।

(२२) और उनका बलभद्र सगा भाई है। उनके समान पुरुषार्थी विरले ही दीख पड़ते हैं। ऐसे छप्पन करोड़ यादवों के साथ जो किसी से रोके नहीं जा सकते थे वे एक परिवार की तरह राज्य करते थे।

(२३) एक दिन श्रीकृष्ण पूरी सभा के साथ बैठे हुये थे। चतुरंगिणी सेना के कारण जहां खाली स्थान नहीं सूझ रहा था। अगर आदि सुगन्धित पदार्थों की गंध जहां चारों ओर फैल रही थी। सोने के दण्ड वाले चामर (चंवर) शिर पर ढुल रहे थे।

(२४) जहां पांच प्रकार के (सितार, ताल, झांझ, नगाड़ा तथा तुरही) बाजे खूब बज रहे थे। अनेक प्रकार की सुंदर पायल पहने हुये भाव भरती हुई नृत्य करने वाली ताल, विनोद एवं कला का अनुसरण करती हुई पांव धर रही थी।

नारद ऋषि का आगमन

(२५) इतने में हाथ में कमंडल लिये हुए मुंडे हुये सिर पर चोटी धारण करने वाले, विमान पर चढ़े हुये प्रसन्न मन राजर्षि नारद वहां जा पहुँचे।

(२६; श्रीकृष्ण ने उनको नमस्कार करके बैठने के लिये स्वर्ण सिंहासन दिया। एकान्त पाकर नारायण ने उनसे पूछा कि आपका आगमन कहांसे हुआ।

(२७) हम आकाश में उड़ते हुये मर्त्य-लोक के जिन मन्दिरों की वन्दना करने गये थे। द्वारिका दीखने पर यह विचार उत्पन्न हुआ कि यादवराय से ही भेंट करते चलें।

(२८) तब नारायण ने विनय के साथ कहा कि अच्छा हुआ कि आप यहां पधारे। हे नारद ऋषि ? आपने हमारे ऊपर कृपा की। आज यह स्थान पवित्र हो गया।

(२९) बचनों को सुनकर नारद ऋषि मन ही मन हंसने लगे तथा उनने सत्यभामा की कुशलवार्ता पूछी। नारद जी आशीर्वाद देकर खड़े हो गये और फिर रणवास में चले गये।

(३०) जहां सत्यभामा शृंगार कर रही थीं तथा आंखों में काजल लगा रही थी। चन्द्रमा के समान ललाट पर जब वह तिलक लगा रही थी उसी समय नारद ऋषि वहां पहुँचे।

(३१) हाथ में कमण्डल लिये हुये ऋषि रूप और कला को देखते फिरते थे। वे सत्यभामा के पीछे जाकर खड़े हो गये और सत्यभामा का दर्पण में रूप देखा।

(३२) सत्यभामा ने जब ऋषि का विकृत रूप देखा तो मन में बहुत विस्मित हुई। उस मंद-बुद्धि ने कुतर्क किया कि वहां पर कोई मार डालने वाला पिशाच आ गया है।

नारद का क्रोधित होकर प्रस्थान

(३३) बड़ी देर तक ऋषि खड़े रहे। सत्यभामा ने न तो दोनों हाथ जोड़े और न उनसे बैठने के लिये ही कहा। तब नारद ऋषि को क्रोध उत्पन्न हो गया और वे उसे सहन नहीं कर सके। तब नारदजी फटकारते हुये वापिस चले गये।

(३४) बिना ही बाजा के जो नाचने लगता है यदि उसको बाजा मिल जावे तो फिर कहना ही क्या ? एक तो शृगाल और फिर उसे बिच्छू खा जाय ? एक तो नारद और फिर वह क्रोधित होकर चलदे ।

(३५) नारद ऋषि क्रोधित होकर उसी क्षण चल पड़े तथा पर्वत के शिखर पर आकर बैठ गये । वहां बैठे हुये मन में सोचने लगे कि सत्यभामा का किस प्रकार से मान भंग हो ?

(३६) जब नारद मुनि ये विचार करने लगे तो उनकी क्रोधाग्नि प्रज्वलित हो रही थी । मैं सत्यभामा का अभिमान कैसे खण्डित करूं ? या तो किसी से इसको भयभीत कराऊं अथवा इसको शिला के नीचे दाब कर छोड़ दूं लेकिन इससे तो श्रीकृष्ण को दुःख होगा । अन्त में यह विचार किया कि जो इससे भी सुन्दर स्त्री हो उसका श्रीकृष्ण के साथ विवाह करा दिया जावे ।

(३७) तब वे गांव गांव में फिरे और घूम घूम कर देश के सब नगर देख डाले ! एक सौ दस जो विद्याधरों की नगरियां थी उनको नारदजी ने क्षण भर में ही देख डाला ।

नारद का कुण्डलपुरी में आगमन

(३८) देशों में घूमते हुये मन में सोचने लगे कि अभी तक कोई रुपवती कुमारी दिखाई नहीं दी । फिर नारद ऋषि वहां आए जहां विद्याधर की नगरी कुण्डलपुरी थी ।

(३९) उस नगरी का राजा भीष्मराज था जो धर्म और नीति को खूब जानता था । जिसके अनेक लक्षणों से युक्त रुपवान पुत्र एवं पुत्री थी ।

(४०) दृष्टि फैलाकर मुनि कहने लगे कि इस कुमारी के यदि कोई योग्य वर हो और विधाता की कृपा से संयोग मिल जावे तो इसका नारायण से सम्बन्ध हो सकता है अर्थात् इसके लिये नारायण ही योग्य हैं ।

(४१) इस प्रकार मन में विचार करते हुए नारद ऋषि आशीर्वाद देकर रणवास में गए । उसी क्षण उनको सुरसुंदरी और कुमारी रुक्मिणी दिखाई पड़ीं ।

नारद से रुक्मिणी का साक्षात्कार

(४२) वह अत्यन्त रूपवती तथा अनेक लक्षणों से युक्त थी। चन्द्रमा के समान मुख वाली वह ऐसी लगती थी मानों चन्द्रमा ही उदय हो रहा हो। हंस के समान चाल वाली वह दूसरों के मन को लुभाने वाली थी। उसके समान कोई दूसरी स्त्री नहीं थी।

(४३) जब नारद को आता हुआ देखा तो सुरसुंदरी ने उन्हें नमस्कार किया। रुक्मिणी को देखकर वे बोले कि नारायण की पट्टरानी बनो।

(४४) भीष्म की बहिन सुरसुन्दरी ने कहा कि रुक्मिणी शिशुपाल को दे दी गयी है, इस सुन्दर नगरी में बहुत उत्सव हो रहे हैं, लग्न रख दी गयी है और विवाह निश्चित हो चुका है।

(४५) सुरसुन्दरी ने सत्यभाव से कहा कि अब आपके लिये ऐसा कहने का कोई अवसर नहीं है। जो शत्रु-राजाओं के मान को भंग करने के लिये काल के समान है ऐसा शिशुपाल सब कुटुम्बियों के साथ आ पहुँचा है।

(४६) उसके वचनों को सुनकर नारद ऋषि कहने लगे कि तीन खण्ड का जो चक्रवर्त्ति है तथा छप्पन करोड यादवों का जो स्वामी है ऐसे को छोडकर दूसरे के साथ विवाह करोगी ?

(४७) पूर्व लिखे हुए को कोई नहीं मेट सकता जिसके साथ लिखा होगा उसी के साथ विवाह होगा। अपनी बात को छोड दो, नारायण ही रुक्मिणी को ब्याहेगा।

(४८) तब सुरसुन्दरी मन में प्रसन्न हुई कि मुनि ने जो बात कही थी वही मिल रही है। नारदजी! सुनो और सत्यभाव से कहो। वह युक्ति बताओ जिससे विवाह हो जाय।

(४९) नारद ऋषि ने कहा कि तुम ऐसा करना कि पूजा के निमित्त मंदिर में चले जाना। नंदनवन को संकेत-स्थल बनाना, वहीं पर मैं तुमसे (श्रीकृष्ण) को लाकर भेंट कराऊंगा।

(५०) तब देवांगना सदृश रुक्मिणी ने कहा कि कृष्णमुरारी को कौन पहिचानेगा तब सुविज्ञ नारद ऋषि ने कहा कि मैं तुम्हें चिन्ह बतलाता हूँ।

(५१) जो शंख चक्र और गदा धारण करता है तथा बलिभद्र जिसका भाई है। अपने बाण से जो सात ताल वृक्ष को बींधता है, नारद ने कहा वही नारायण है।

(५२) (नारदजी ने) सुन्दर रत्नों से जड़ी हुई वज्र की अंगूठी दी और कहा कि जो उसे अपने कोमल हाथों से चकनाचूर कर दे वही गुणों से परिपूर्ण नारायण है।

नारद का श्रीकृष्ण के पास पुनः आगमन

(५३) इस प्रकार बात निश्चित करके रुक्मिणी का चित्रपट लिखवा कर उसे अपने साथ लेकर और विमान में चढ़ कर नारद ऋषि वहां आए जहां नारायण सभा में बैठे हुये थे।

(५४) महाराज बार बार चित्र पट दिखाने लगे उससे (श्रीकृष्ण) का मन व्याकुल हो गया। उनका शरीर कामबाण से घायल हो गया और वे बहुत विह्वल हो गये।

(५५) क्या यह कोई अप्सरा है अथवा वनदेवी है। अथवा कोई मोहिनी तिलोत्तमा है। क्या यह सुन्दर रूप वाली विद्याधरी है। इस स्त्री का यह रूप किसके समान है।

(५६) नारद ऋषि ने सत्यभाव से कहा कि कुण्डलपुर नामक एक नगर है। उसके राजा भीष्म से मैं तत्काल मिला और उसी की यह कन्या रुक्मिणी है।

(५७) उसको मैंने आपके लिये मांग लिया है। जाकर के विवाह करलो देर मत करो। कामदेव का मंदिर संकेत-स्थल है उसी स्थान पर लाकर भेंट कराऊंगा।

श्रीकृष्ण और हलधर का कुण्डलपुर के लिये प्रस्थान

(५८) तब श्रीकृष्ण बहुत संतुष्ट हुये। मन में हँस कर आनन्द मनाने लगे। रथ को सजवा कर स्वयं सारथी को बिठाकर अपने साथी (भाई) हलधर को बुला लिया।

(५९) तब सारथी ने क्षण भर में रथ को सजाया तथा वायु के वेग के समान कुण्डलपुर पहुँच गया। जहां वन में मन्दिर था वहीं पर कृष्ण एवं हलधर पहुँचे।

(६०) आपस में सलाह की। जरा भी देर नहीं लगायी। दूत के द्वारा समाचार भेज दिये। उस ने जाकर सब बात कह दी कि नंदनवन में श्रीकृष्ण आ गए हैं।

(६१) वचनों को सुनकर रुक्मिणी हंसी। मोती एवं माणिक आदि से थाल भरा, बहुत सी सखी सहेलियों को साथ लेकर पूजा के निमित्त मन्दिर में चली गई।

श्रीकृष्ण और रुक्मिणी का प्रथम मिलन

(६२) रुक्मिणी ने वहां जाकर श्रीकृष्ण से भेंट की और सत्यभाव से कहा कि हे यदुराज मेरे वचनों की ओर ध्यान देकर सात ताल वृक्षों को बाणों से बींधिये।

(६३) तब श्रीकृष्ण ने वज्र मूंदड़ी को लेकर हाथ से मसल डाला। मूंदड़ी फूट कर चून हो गई मानों गरहट के नीचे चांवलों के कण पिस गये हो।

(६४) तब नारायण ने धनुष लिया और हलधर ने आकर अंगूठा दबाया। दबाने से सातों सूधे हो गये और बाणों ने सातों ही ताल वृक्षों को बींध दिया।

(६५) तब रुक्मिणी के मन में स्नेह उत्पन्न हो गया और उसने मन में जान लिया कि यही नारायण हैं। उन्होंने रथ पर रुक्मिणी को चढाकर पुकारा और सब बात भीष्म राज को ज्ञात करा दी।

वनपाल द्वारा रुक्मिणी-हरण की सूचना

(६६) तब वनपाल ने आकर कहा कि पीछे कोई गर्व मत करना कि रुक्मिणी को चुराकर ले गये। जिसमें शक्ति हो वह आकर छुडाले।

(६७) रुक्मिणी को रथ पर चढा लिया तथा उसने (श्रीकृष्ण) पांचजन्य शंख को बजाया। शंख के शब्द को सुनकर सारा देवलोक शंकित हो गया तथा महिमंडल थर थर कांपने लगा। महिलाओं ने आकर यह पुकार की कि हे पृथ्वीपति सुनिये—देव मन्दिर में खड़ी हुई रुक्मिणी को श्रीकृष्ण हर ले गये।

(६८) तब भीष्मराव मन में कुपित हुए तथा स्थान स्थान पर नगाड़ा बजने लगा। घोड़ों पर काठी कसो, हाथियों को रवाना करो तथा काल रूप होकर सब चढ़ाई करो।

(६९) जब राजा शिशुपाल को पता चला कि रुक्मिणी चोरी चली गयी है तब बड़े गुस्से में आकर उस ने कहा कि शीघ्र ही सब घोड़ों पर ज़ीन कसी जावे।

(७०) रथों को सजाओ, हाथियों को तैयार करो। सभी सुभट तैयार होकर आज रण में भिड़ पड़ो। सब सामंत अपने हाथों में तलवार ले लें तथा धनुषधारी धनुष की टंकार करें।

(७१) शिशुपाल एवं भीष्मराव दोनों के दल की सेना के कारण स्थान (मार्ग) नहीं दीखता था। घोड़ों के खुरों से इतनी धूल उछली कि मानों भादों के मेघ मँडरा रहे हों।

(७२) ढुलते हुये राज–चिन्ह चंवर ऐसे मालूम होते थे मानों सैनिक हाथ में आग लेकर प्रविष्ट हो रहे हो। अथवा ढुलते हुए राज–चिन्ह चँवर ऐसे मालुम होते थे मानों अग्नि में कमल खिल रहे हों। चारों प्रकार की सेना इकट्ठी होकर वायु–वेग के समान रणभूमि में आ पहुँची।

(७३) अपरिमित दल आता हुआ दिखाई दिया। धूल उड़ी जिससे सूर्य चन्द्रमा छिप गये। आश्चर्य के साथ डर कर रुक्मिणी कहने लगी कि हे महामहिम्न ! रण में कैसे जीतोगे ?

(७४) हे रुक्मिणी ? धैर्य रखो, कायर मत बनो। तुमको मैं आज अपना पुरुषार्थ दिखलाऊंगा। शिशुपाल को युद्ध में आज समाप्त कर दूंगा और भीष्मराव को बांध करके ले आऊंगा।

(७५) बात कहते हुये ही सेना आ पहुँची। शिशुपाल क्रोधित होकर बोला, हे सरदार लोगो, अपने हाथों में तलवार ले लो। आज मुठभेड होगी, कहीं ग्वाला भाग न जावे।

(७६) शिशुपाल और श्रीकृष्ण की इस प्रकार भेंट हुई जैसे अग्नि में घी पड़ा हो। हाथ में धनुषबाण संभाल लिया। अब संग्राम में पता पड़ेगा। अपने मन में पहिले के वचनों को याद करो। तुमने चोरी से रुक्मिणी को हर लिया वही तुमने अन्याय किया। अब तुम मिल गये हो; कहां जाओगे ? अब मार कर ही रहूँगा।

(७७) जब दुष्ट ने दुष्टतापूर्ण वचन कहे तो श्रीकृष्ण को क्रोध आ गया और श्रीकृष्ण ने शिशुपाल को मारने के लिये हाथ में धनुष उठाया।

श्रीकृष्ण और शिशुपाल के मध्य युद्ध

(७८) हकाल और ललकार कर परस्पर दोनों वीर भिड़ गये और खूब बाण बरसने लगे मानों वर्षा हो रही हो। तब बलिभद्र ने हल नामक आयुध लिया और रथ को चूर्ण कर हाथी पर प्रहार किया।

(७९) शिशुपाल ने हाथ में धनुष लिया और एक साथ पचास बाण छोड़े। तब नारायण ने सौ बाणों से उनका संहार किया तो शिशुपाल ने दो सौ बाणों से प्रहार किया।

(८०) नारायण ने चार सौ बाणों से उस पर प्रहार किया तो उसने आठ सौ बाणों से उस पर वार किया। फिर नारायण ने सोलह सौ बाण धनुष पर रख कर चलाये तो उसने बत्तीस सौ बाणों से धावा किया जिसके कारण कोई स्थान नहीं सूझ रहा था।

(८१) इस प्रकार दोनों शक्तिशाली वीर खड़े हुये एक दूसरे पर दूने दूने बाणों से आक्रमण करते रहे। युद्ध बढता ही गया बंद नहीं हुआ तथा बाणों से पृथ्वी आच्छादित हो गयी।

श्रीकृष्ण द्वारा शिशुपाल का वध

(८२) तब नारायण ने सोचा कि धनुष बाण का अवसर नहीं है। तब हाथ में चक्र लेकर उसे घुमाया जिससे क्षण भर में ही शिशुपाल का सिर कट गया।

(८३) शिशुपाल को मरा हुआ जानकर भीष्म राज उदास हो गया। रण में भयकर मार सही नहीं जा सकी इसलिये चतुरंगिणी सेना वहां से भागने लगी।

(८४) तब रुक्मिणी ने सत्यभाव से कहा कि रूपचन्द और भीष्मराव की रक्षा करो। मन में वैर छोड़कर इनसे संधि करो तथा कुण्डलपुर नगर को वापिस चलो।

(८५) तब नारायण ने कृपा करके बंधे हुए भीष्मराव को छोड़ दिया। रूपचन्द से गले मिले और फिर अपने नगर को प्रस्थान किया।

श्रीकृष्ण और रुक्मिणी का वन में विवाह

(८६) जब मुड़कर हलधर और कृष्ण चले तो वन में एक मंडप को देखा। जहां अशोक वृक्ष की छाया थी वहां वे तीनों पहुँचे।

(८७) तब उनके मन में बड़ी खुशी हुई। आज लग्न है इसलिये विवाह कर लें। भ्रमर की ध्वनि ही मानों मंगलाचार हो रहा है तथा तोते मानों वेद पाठ कर रहे हैं।

(८८) बांसों का मंडप बनाया तथा भाँवर देकर हथलेवा किया। पाणिग्रहण करके रुक्मिणी को परण लिया और उसके पश्चात् कृष्णमुरारी अपने घर रवाना हो गये।

श्रीकृष्ण का रुक्मिणी के साथ द्वारिका आगमन

(८९) जब नारायण वापिस पहुँचे तब छप्पन कोटि यादवों ने मिलकर उत्सव किया। घर घर में गुड़ियों को उछाला गया तथा तोरण एवं बंदनवार बांधी गयी।

(९०) रुक्मिणी एवं श्रीकृष्ण हंसते हुये नगर में प्रविष्ट हुए। स्थान स्थान पर बहुत से लोग खड़े थे और वे दोनों अपने महल में जा पहुँचे।

(९१) भोग विलास करते हुये कई दिन बीत गए। सत्यभामा की चिंता छोड़ दी। सौत के दुख के कारण वह अत्यन्त डाह से भरी हुई अपने नित्य प्रति के सुख को भी दुख रूप समझती थी।

सत्यभामा के दूत का निवेदन

(९२) सत्यभामा ने एक दूत को उस महल में भेजा जहां बलिभद्रकुमार बैठे हुये थे। शीश झुकाकर उसने निवेदन किया कि हे देव! मुझे सत्यभामा ने भेजा है।

(९३) दूत ने महल में हाथ जोड़कर कहा कि सत्यभामा ने कहा कि विचार कर कहो कि मुझसे कौनसा अपराध हुआ है जो कि कृष्णमुरारी मेरी बात भी नहीं पूछते।

(९४) ये वचनों को सुनकर हलधर वहां गयें जहां नारायण बैठे हुये थे। हंस करके उन्होंने अत्यन्त विनय पूर्वक कहा कि तुमको सत्यभामा की सँभाल भी करनी चाहिये।

(९५) तब नारायण ने ऐसा किया कि रुक्मिणी का झूंठा उगाल गांठ में बांधा कर वहां पहुँचे जहां सत्यभामा का मन्दिर (महल) था।

(९६) सत्यभामा ने नेत्रों से श्रीकृष्ण को देखा और रुदन करती हुई बोली तथा अत्यन्त ईर्षा से भरे हुए वचन कहे कि हे कि हे स्वामी ! मुझे किस अपराध के कारण आपने छोड दिया है।

(९७) तब हंसकर कृष्णमुरारी बोले तथा मधुर शब्दों से उसे समझाया। फिर श्रीकृष्ण कपट निद्रा में सो गये और गांठ को झुलाकर खाट के नीचे लटका दी।

(९८) जब गठरी को झूलते हुए देखा तो सत्यभामा उठी और उसे खोला। गठरी से बहुत ही सुगंधित महक उठ रही थी। तब सुगंधित वस्तु को देखकर उसने अपने शरीर पर लगाली।

(९९) जब श्रीकृष्ण ने उसे अंग पर मलते देखा तो वे जगे और हंसकर कहने लगे यह तो रुक्मिणी का उगाल है। तुम अपने सब झंझटो को गया समझो।

सत्यभामा का रुक्मिणी से मिलाने का प्रस्ताव

(१००) सत्यभामा सत्यभाव से बोली कि मुझ से रुक्मिणी को लाकर मिलाओ। तब हंसकर श्रीकृष्णमुरारी ने कहा कि वन में उससे तुम्हारी भेंट कराऊंगा।

(१०१) नारायण उठकर महल में गये और रुक्मिणी के पास बैठ गये। और कहने लगे कि वन में बहुत सी फुलवाडियां है। चलो आज वहां जीमण करें।

(१०२) नारायण ने रुक्मिणी का जैसा रूप बना लिया और पालकी पर चढकर बगीची में गये। जहां बावडी के पास अशोक वृक्ष था वहीं रुक्मिणी को उतार दिया।

(१०३) श्वेत वस्त्र, उज्वल आभूषण तथा हाथों में कड़ों से सुशोभित रुक्मिणी को देवी का रूप बनाकर आले (ताक) में बैठा दिया। वह चुपचाप वहां बैठ गई और जाप जपने लगी। श्रीकृष्ण वहां से चले गये।

सत्यभामा और रुक्मिणी का मिलन

(१०४) फिर सत्यभामा को जाकर भेजा और कहा मैं रुक्मिणी को यहीं बुलवा लूंगा। तुम बावड़ी के पास जाकर खड़ी रहो जिससे तुम्हें रुक्मिणी से भेंट करा दूंगा।

(१०५) सत्यभामा बहुत सी सखी सहेलियों को साथ लेकर वाटिका में गयी जहां बावड़ी थी। तब अपनी आंखों से उसे देखकर सोचा कि क्या यह कोई वनदेवी बैठी है।

(१०६) दूध और चन्द्रमा के समान श्वेत कोई जल से ही निकलकर आई हो ऐसी उस देवी के उसने पैर छूए और बोली–हे स्वामिनी ! मुझ पर कृपा करो, जिससे मुझे श्रीकृष्ण मानने लगें।

(१०७) फिर वह देवी को मनाने लगी जिससे कि रुक्मिणी पति प्रेम से वंचित हो जावे। इस तरह अनेक प्रकार से वह अपनी बात प्रकट करने लगी, उसी समय हरि उसके सम्मुख आकर हंसने लगे।

(१०८) सत्यभामा तुम्हें क्या वाय लग गई है ? (तुम पागल हो गई हो क्या) बार बार क्यों पैर लग रही हो। इतनी अधिक भक्ति क्यों कर रही हो ? यह आले में (त.क, में रुक्मिणी ही तो बैठी है।

(१०९) सत्यभामा उसी समय कहने लगी मैंने इसके पैर छू लिये तो क्या हुआ। तुम बहुत कुचाल करते रहते हो, यह रुक्मिणी मेरी बहिन ही तो है।

(११०) तुम तो रात दिन ऐसे ही कुचाल किया करते हो ठीक ही है ग्वालवंश का स्वभाव कैसे जा सकता है। फिर सत्यभामा ने रुक्मिणी से कहा--चलो बहिन घर चलें।

(१११) यान (रथ) में बैठ कर वे महल में चली गई। सब सुख भोगने लगे और विलास करने लगे। जब राजकाज करते कुछ दिन निकल गये तब दोनों रानियां गर्भवती हुई।

(११२) तब सत्यभामा ने एक बात कही कि जिसके पहिल पुत्र उत्पन्न होगा वह जिसके पीछे पुत्र उत्पन्न होगा उसे हरा देगी। तथा वह उसके पुत्र के विवाह के समय सिर के केश भी मुंडवा देगी।

(११३) बलिभद्र आकर सत्यभामा और रुक्मिणी के लागना (साक्षी) बन गये। दोनों ने उनसे कह दिया तुम हमारा पक्ष मत करना। जो भी हार जावे उस ही के सिर आकर मूंड देना।

(११४) इधर कौरवों ने दूत भेजा वह नारायण के पास पहुँचा। उसने कहा कि आपके जो बड़ा पुत्र उत्पन्न हो उसके जन्म की सूचना दूत के हाथ भिजवा देना।

सत्यभामा और रुक्मिणी को पुत्र रत्न की प्राप्ति

(११५) इस प्रकार बहुत दिन बीतने पर दोनों ही रानियों के पुत्र उत्पन्न हुए। दोनों ही घरों में इस प्रकार लक्षणवान एवं कला संयुक्त पुत्र हुए।

(११६) सत्यभामा का (दूत) बधावा लेकर गया और वह जाकर सिर की ओर खड़ा हो गया। रुक्मिणी का बधावा लेकर जाने वाला दूत पैरों की ओर जाकर बैठ गया।

(११७) नारायण जगे और बैठे हुये। उस समय रुक्मिणी के दूत ने बधाई दी। दूत हंसता हुआ हाथ जोड़ कर बोला–रुक्मिणी के घर पुत्र उत्पन्न हुआ है।

(११८) दूसरे दूत ने भी बधाई दी और नारायण से निवेदन किया कि हे स्वामिन्! मुझे तुम्हारे पास यह सूचना देने के लिये कि सत्यभामा के पुत्र उत्पन्न हुआ है, भेजा है।

(११९) तब श्रीकृष्ण ने हलधर को बुलाया और जो बात हुई थी वह उनसे बैठाकर कह दी। झूंठ बोलकर कैसे टाला जा सकता है। प्रद्युम्न ही बड़ा पुत्र है।

(१२०) दोनों रानियों के पुत्र उत्पन्न हुये। इससे घर घर बधावा गाये जाने लगे। सभी मंगलाचार गाने लगे और ब्राह्मण वेद मंत्रों का उच्चारण करने लगे।

(१२१) भेरी एवं तुरहि खूब बजने लगे। महुवर एवं शंख के लगातार शब्द होने लगे। घर घर में केशर अथवा रोली के चिन्ह लगाये गये तथा स्त्रियां अपने २ घरों में मंगल गीत गाने लगीं।

धूमकेतु द्वारा प्रद्युम्न का हरण

(१२२) छठी रात्रि का जागरण करते समय धूमकेतु वहीं आ पहुँचा। जब क्षण भर में उसका विमान ठहर गया तब धूमकेतु मन में सोचने लगा।

(१२३) विमान से उतर करके प्रद्युम्न को देखा। यह कहने लगा कि यह कौन क्षत्रिय है। उसी समय अपना पूर्व जन्म का वैर याद करके उसने कहा कि इसी ने मेरी स्त्री को हरा था।

(१२४) प्रछन्न रूप से उसने प्रद्युम्न को इस तरह उठा लिया जिससे नगर में किसी को पता ही न लगा। विमान में रखकर वह वहीं चला गया जहां वन में शिला रक्खी थी।

(१२५) धूमकेतु ने तब कई विचार किये कि क्या करूं। क्या इसे समुद्र में डालकर शीघ्र ही मार डालूं? इतने में ही उसने एक ५२ हाथ लम्बी शिला देखी और सोचा कि इसे इसके नीचे रख दूं जिससे ये दुःख पाकर मर जावे।

(१२६) पहिले किये हुए को कोई नहीं मेट सकता। प्रद्युम्न अपने कर्मों को भोग रहा है। उसको शिला के नीचे दबाकर वह घर चला गया। तब रुक्मिणी जहां सो रही थी वहां जगी।

(१२७) छठी रात्रि को प्रद्युम्न हर लिया गया। तब रुक्मिणी को तीव्र वेदना हुई। अरे पहिरेदार तुम शीघ्र जागो और इस तरह खूब जोर से पुकारो कि नारायण एवं हलधर सुन लें। सत्यभामा को बड़ी खुशी हुई और उसने खूब शोर मचाया। जिसका पुत्र रात्रि को हर लिया गया था वह रुक्मिणी विलाप करने लगी।

(१२८) नगर में सूचना हो गई। यदुराज सोते हुए जाग उठे। छप्पन कोटि यादव पुकारते हुए देखने चले तो भी उसका (प्रद्युम्न) कहीं पता नहीं चला।

विद्याधर यमसंवर का भ्रमण के लिए प्रस्थान

(१२९) मेघकूट नामक एक स्थान था जहां यमसंवर राजा निवास करता था। जिसके पास बारह सौ विद्यायें थी। तथा जिसकी कंचनमाला स्त्री थी।

(१३०) उसका मन वन क्रीडा को हुआ तथा विमान पर चढ़कर अपनी स्त्री सहित गया। वे उस वन के मध्य पहुँचे जहां वीर प्रद्युम्न शिला के नीचे दबा हुआ था।

(१३१) वन के मध्य में रखी हुई पूरी बावन हाथ ऊंची (लंबी) शिला को देखी। वह क्षण में ऊंची तथा क्षण में नीची हो रही थी। वह विमान से उतर कर देखने लगा।

यमसंवर को प्रद्युम्न की प्राप्ति

(१३२) राजा ने विद्या के बल से शिला को उठाया। और अच्छी तरह देखा। जिसके शरीर पर बत्तीस लक्षण थे तथा जो सुन्दर था ऐसे कामदेव को यमसंवर ने देखा।

(१३३) कुमार को उठाकर गोद में लिया तथा लौट कर राजा विमान में गया। कचनमाला को पट्टरानी पद देकर उसे सौंप दिया।

(१३४) अत्यन्त रूपवान और अनेकों लक्षण वाले कुमार को कंचनमाला ने ले लिया। उसके समान रूप वाला अन्य कोई दिखाई नहीं देता था। वह राजा का धर्मपुत्र हो गया।

(१३५) वे विमान में चढ़कर वायु-वेग के समान शीघ्र ही (नगर में) पहुँच गये। नगर में सभी उत्सव मनाने लगे कि कचनमाला के प्रद्युम्न हुआ है।

(१३६) अत्यन्त रूपवान, गुणवान एवं लक्षणवान प्रद्युम्न सभी को प्रिय था। वह द्वितीया के चन्द्रमा के समान बढ़ने लगा और इस तरह १५ वर्ष का हो गया।

प्रद्युम्न द्वारा विद्याध्ययन

(१३७) फिर वह पढने के लिये उपाध्याय के पास गया तथा उसने लिखपढ़कर सब ज्ञान प्राप्त कर लिया। लक्षण छन्द एवं तर्क शास्त्र बहुत पढ़े तथा राजा भरत के नाट्यशास्त्र का भी पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लिया।

(१३८) धनुष एवं बाण-विद्या तथा सिंह के साथ युद्ध करना भी जान लिया। लड़ना, भिड़ना, निकलना तथा प्रवेश करने का सब ज्ञान प्रद्युम्न-कुमार को हो गया।

(१३६) प्रद्युम्न ऐसा वीर बन गया जिसके समान और कोई जानकार नहीं था। इस प्रकार वह यमसंवर के घर बढ़ रहा है। अब यह कथा द्वारिका आ रही है। (अब द्वारिका का वर्णन पढ़िये)

द्वितीय सर्ग

पुत्र वियोग में रुक्मिणी की दशा

(१४०) इधर द्वारिका में रुक्मिणी करुण विलाप कर रही थी। पुत्र संताप से उसका हृदय व्याकुल हो रहा था। वह प्रतिदिन कृष होती गयी एवं उदासीन रहने लगी। विधाता ने उसे ऐसी दुखी क्यों बनायी।

(१४१) कभी वह संतप्त होती थी तो कभी वह जोर से रोती थी। उसके नयनों में आंसू बहते हुये कभी थकते न थे। पूर्व जन्म में मैंने कौनसा पाप किया था। अब मैं किसे देखकर अपने हृदय को सम्हालूं ?

(१४२) क्या मैंने किसी पुरुष को स्त्री से अलग किया था ? अथवा किसी वन में मैंने आग लगायी थी ? क्या मैंने किसी का नमक, तेल और घी चुरा लिया था ? यह पुत्र संताप मुझे किस कारण से मिला है ?

(१४३) इस प्रकार जब वह रुक्मिणी सन्ताप कर रही थी उस समय नारायण एवं बलिभद्र वहां आकर बैठे और कहने लगे–हे सुन्दरि ! मन में दुखी न हो। हम बिना जाने क्या कर सकते हैं ?

(१४४) स्वर्ग और पाताल में से कोई भी यदि हमें प्रद्युम्न का पता बतादे तो वह हमसे मनचाही वस्तु प्राप्त कर सकता है। सम्पूर्ण शक्ति लगाकर उसे (ले जाने वाले को) मार डालेंगे तथा उसे श्मसान में से गीध उठावेंगे।

(१४५) जब वे इस तरह उसको समझाते रहे तो वह अपने मन के शोक को भूल गयी। इस प्रकार दुखित होते हुए कितने ही वर्ष व्यतीत हो गये तब नारद ऋषि द्वारिका में आये।

रुक्मिणी के पास नारद का आगमन

(१४६) जिसका सिर मुंडा हुआ है तथा चोटी उड रही है, हाथ में कमंडलु लिये राजर्षि नारद वहां आये जहां दुखित होकर रुक्मिणी बैठी हुई थी।

(१४७) जब नारद को आंखों से देखा तो व्याकुल रुक्मिणी उनसे कहने लगी–हे स्वामी ! मेरे प्रद्युम्न नामक पुत्र हुआ था पता नहीं उसे कौन हर ले गया ?

(१४८) हाथ जोड़कर रुक्मिणी बोली कि हे स्वामी तुम्हारे प्रसाद से तो मेरे ऐसा (पुत्र) हुआ था। किन्तु पेट का दाह देकर पुत्र चला गया उसकी तलाश कीजिये ।

(१४९) नारद ने तब हंसकर कहा कि प्रद्युम्न की सुधि लेने के लिये मैं अभी चला। स्वर्ग, पाताल, पृथ्वी अथवा आकास में जहां भी होगा वहां जाकर उसे ले आऊंगा ऐसा नारदजी ने कहा।

नारद का विदेह क्षेत्र के लिये प्रस्थान

(१५०) नारद ने समझाकर कहा कि शीघ्र ही पूर्व विदेह जाऊंगा जहां सीमंधर स्वामी प्रधान हैं और जिनको केवलज्ञान उत्पन्न हुआ है।

(१५१) नारद ऋषि सीमंधर स्वामी के समवशरण में गये। वहां चक्रवर्त्ति को बहुत आश्चर्य हुआ। नारद से वृत्तांत सुनकर चक्रवर्त्ति ने जिनेन्द्र भगवान से पूछा कि ऐसे मनुष्य कहां उत्पन्न होते हैं।

सीमंधर जिनेन्द्र द्वारा प्रद्युम्न का वृत्तान्त बतलाना

(१५२) तब जिनेन्द्र ने कहा कि जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में सोरठ (सौराष्ट्र) देश है। वहां जैन धर्म पूर्ण रूप से चल रहा है।

(१५३) जहां सागर के मध्य में द्वारिका नगरी है वह ऐसी लगती है मानों इन्द्रलोक से आकर गिर पड़ी हो। जहां नारायणराय (श्रीकृष्ण) निवास करते हैं ऐसे मनुष्य वहां पैदा होते हैं।

(१५४) उनकी रुक्मिणी रानी है जो धर्म की बात को खूब जानती है। उसके प्रद्युम्न पुत्र हुआ जिसको धूमकेतु हर कर ले गया।

(१५५) जहां एक बावन हाथ लम्बी शिला थी उसके नीचे वीर प्रद्युम्न को दबा दिया। पूर्व जन्म का जो तीव्र वैर था, धूमकेतु ने उसे निकाल लिया।

(१५६) मेघकूट एक पर्वतीय प्रदेश है वहां विद्याधरों का राजा रहता है। कालसंवर राजा वहां आया और कुमार को देख कर उठा ले गया।

(१५७) वहीं पर प्रद्युम्न अपनी उन्नति कर रहा है। इसकी किसी को खबर नहीं है। वह बारह वर्ष वहां रहेगा, फिर वह कुमार द्वारिका आ जावेगा।

(१५८) वचनों को सुनकर नारद मन में बड़े प्रसन्न हुये और नमस्कार कर वापिस चले गये। विमान पर चढ़कर मुनि वहां आये जहां मेघकूट पर्वत पर कामदेव प्रद्युम्नकुमार था।

(१५९) कुमार को देखकर ऋषि मन में प्रसन्न हुये तथा फिर शीघ्र ही द्वारिका चले गये। वहां जाकर रुक्मिणी से मिले और उसको पुत्र की सूचना दी।

(१६०) हे रुक्मिणी। हृदय में संताप मत करो। वह प्रद्युम्न बारह वर्ष बाद आकर मिलेगा। मुझे ऐसा वचन केवली ने कहा है इसलिए प्रद्युम्न निश्चय से आकर मिलेगा।

प्रद्युम्न के आने के समय के लक्षण

(१६१) सूखे हुये आम के पेड़ तथा सेंवार फिर से हरे भरे हो जावेंगे! स्वर्ण-कलश जल से पूर्ण सुशोभित होने लगेंगे। कूप एवं बावड़ी जो पूर्ण रूप से सूख गये हैं वे स्वच्छ जल से भरे दिखाई देंगे।

(१६२) सब दूध वाले वृक्षों में फूल आ जावेंगे। जब तुम्हारे आंचल पीले पड़ जावेंगे तथा दोनों स्तनों से दूध झरने लगेगा तब वह साहसी और धीर वीर प्रद्युम्न आवेगा।

(१६३) इस प्रकार जब प्रद्युम्न के आने के लक्षण बता कर नारद मुनि वहां से चले गये तब रुक्मिणी के मन को सन्तोष हुआ। वह पक्ष, मास, दिन और वर्ष गिनने लगी अब कथा का क्रम प्रद्युम्न की ओर आता है।

तृतीय सर्ग

यमसंवर द्वारा सिंहरथ को मारने का प्रस्ताव

(१६४) वहां एक सिंहरथ नामका राजा रहता था उससे यमसंवर का बड़ा विरोध चलता था। यमसंवर ने उपाय सोचा कि इसको किस प्रकार समाप्त किया जावे।

(१६५) उसने पांच सौ कुमारों को बुलाया और उनसे कहा कि सिंहरथ को ललकार कर युद्ध में जीतो। जो सिंहरथ से युद्ध करने का भेद जानता है वह शीघ्र आकर युद्ध का बीड़ा ले ले।

(१६६) कोई भी कुमार पास नहीं आया। तब हंसकर प्रद्युम्न ने बीड़ा लिया। उसने कहा कि हे स्वामी मुझ पर कृपा कीजिये। मैं रण में सिहरथ को जीतूंगा।

(१६७) तब राजा ने सत्यभाव से कहा कि हे कुमार तुम बच्चे हो अभी तुम्हारा अवसर नहीं है। तुम अभी युद्ध के भेदों को नहीं जानते जिससे कि मैं तुमको आज्ञा दूं।

(१६८) (प्रद्युम्न ने कहा)—बाल सूर्य आकाश में होता है लेकिन उससे कौन युद्ध कर सकता है। सर्प का बच्चा भी यदि डस ले तो उसके विष को दूर करने के लिये भी कोई मणिमंत्र नहीं है।

(१६९) सिंहनी बालसिंह को पैदा करती है वही हाथियों के झुंड को काल के समान है। यदि यूथ को छोड़कर अर्थात् अकेलासिंह भी वन को चला जावे तो उसे कौन ललकार सकता है।

(१७०) अग्नि यदि थोड़ी भी हो तो उसका पता किसी को भी नहीं लगता। किन्तु जब वह रौद्र रूप धारण करके जलती है तो पृथ्वी को भी जलाकर भस्म कर डालती है।

(१७१) वैसे ही यद्यपि मैं बालक हूँ किन्तु राजा का पुत्र हूँ। मुझे युद्ध करने की शीघ्र आज्ञा दीजिए। मैं शत्रुओं के दल का डटकर मारा करूंगा। यदि युद्ध से भाग जाऊं तो आपको लजाऊंगा।

(१७२) प्रद्युम्न के वचनों को सुनकर राजा सन्तुष्ट हुआ तथा मदनकुमार पर कृपा की। जब यमसंवर ने उसे बीड़ा दिया तो हाथ फैलाकर प्रद्युम्न ने उसे ले लिया।

प्रद्युम्न का युद्ध भूमि के लिए प्रस्थान

(१७३) आज्ञा मिली और प्रद्युम्न चतुरंगिनी सेना को सजा कर रवाना हो गया। बहुत से नगारे, भेरी और तुरही बजने लगे। कोलाहल मच गया एवं उछलकूद होने लगी तथा ऐसा लगने लगा कि मानों मेघ ही असमय में खूब गर्जना कर रहा हो। रथ सजा लिये गये। हाथी और घोड़ों पर हौदे तथा काठियां रख दी गयीं। जब तैयार होकर प्रद्युम्न चला तो आकाश में सूर्य भी नहीं दिख रहा था।

(१७४) अब प्रद्युम्न के चरित्र को ध्यान पूर्वक सुनिये कि जिस प्रकार उसने राजा सिंहरथ को जीता।

(१७५) कुमार प्रद्युम्न ने जब प्रयाण किया तो सारे जगत ने जान लिया। आकाश में रेत उछलने लगी। सजे हुये रथों के साथ जो बाजे बज रहे थे वे ऐसे लग रहे थे कि मानों भादों के मेघ ही गर्ज रहे हो। उसके प्रवल शत्रुओं के समूह को नष्ट करने वाले अनगिनत योद्धा चले। वे सब वीर एकत्र होकर समराङ्गण में जा पहुँचे।

(१७६) कुमार प्रद्युम्न को आता हुआ देखकर सिंहरथ कहने लगा यह बालक कौन है? इस बालक को रण में किसने भेज दिया है? मुझे इसके साथ युद्ध करने में लज्जा आती है।

(१७७) बार बार में मुड़ २ कर राजा ने कहा कि वह इस बालक पर किस प्रकार प्रहार करे। उसको देखकर उसके हृदय में ममता उत्पन्न हुई और कहा कि हे कुमार! तुम वापिस घर चले जावो।

प्रद्युम्न एवं सिंहरथ में युद्ध

(१७८) राजा के वचन सुनकर प्रद्युम्न क्रोधित हुआ और कहने लगा मुझ को हीन वचन कहने वाले तुम कौन हो? बालक कहने से कोई लाभ नहीं है अब मैं अच्छी तरह से तुम्हारा नाश करूंगा।

(१७६) तब राजा ने तलवार निकाली। मेघ के समान निरन्तर बाणों की वर्षा होने लगी। सुभट आपस में हाथ में तलवार लेकर भिड गये। रथ नष्ट हो गये और हाथी लड़ने लगे।

(१८०) हाथियों से हाथी भिड गये तथा घोड़ों से घोड़े जा भिड़े। इस प्रकार उनको युद्ध करते हुये पांच दिन व्यतीत हो गये। वह युद्ध क्षेत्र श्मशान बन गया और वहां गृद्ध उड़ने लगे।

(१८१) जब सेना युद्ध करती हुई थक गयी तब दोनों वीर रण में भिड गये। दोनों ही वीर सावधान होकर खड़े हो गये। दोनों ही सिंह के समान जम कर लड़ने लगे।

(१८२) वे दोनों ही वीर मल्लयुद्ध करने लगे तथा दोनों वीरों ने उस स्थान को अखाड़ा बना दिया। अन्त में सिंहरथ बिल्कुल हार गया और प्रद्युम्न ने उसके गले में पैर डालकर बांध लिया।

(१८३) जब प्रद्युम्नकुमार ने विजय प्राप्त की तो उस समय देवता गण ऊपर से देख रहे थे। सिंहरथ को बांध कर जब कुमार रवाना हुआ तो (यमसंवर ने) गुणवान कामदेव को तुरन्त ही बुलवाया जिससे सज्जन लोग आनंदित हुये। राजा भी देखकर आनंदित हुआ और कहने लगा कि तुमने इस अवसर पर बड़ी कृपा की है। मेरे जो पांच सौ पुत्र हैं उनके ऊपर तुम राजा हो।

(१८४) ऐसे कामदेव के चरित्र को जिसे सोलह लाभ प्राप्त हुये हैं सब कोई सुनो। विद्याधर ने कृपा कर बंधे हुये सिंहरथ राजा को छोड दिया और उससे पट (दुपट्टा) देकर गले मिला तथा सिंहरथ भी भेंट देकर घर चला गया।

(१८५) कुमारों के मन में दुःख हुआ कि हमारे जीते हुये ही यह हमारा राजा हो गया। राजा को इतना मान नहीं देना चाहिये कि दत्तक पुत्र को हम पर प्रधान बना दे।

(१८६) तब कुमारों ने मिलकर सोचा कि अब इसको समाप्त करना चाहिये। अब इसको सोलह गुफाओं को दिखाना चाहिये जिससे हमारा राज्य निष्कंटक हो जावे।

कुमारों द्वारा प्रद्युम्न को १६ गुफाओं को दिखाना

(१८७) इस युक्ति को कोई प्रकट न करे। प्रद्युम्नकुमार को बुलाकर सब कुमारों ने मिलकर सलाह की और खेलने के बहाने से वन-क्रीडा को चले।

(१८८) कुमारों ने प्रद्युम्न से कहा कि हे प्रद्युम्न सुनो विजयागिरि के ऊपर जिन मन्दिर है जो मनुष्य उनकी पूजा करता है उसको पुण्य की प्राप्ति होती है।

(१८९) प्रद्युम्न यह वचन सुनकर प्रसन्न हुआ और पहाड़ पर चढ़कर जिनमन्दिर को देखने लगा। परकोटे पर चढ़कर वीर प्रद्युम्न ने देखा तो एक भयंकर नाग फुंकारते हुये मिला।

(१९०) ललकार कर प्रद्युम्न नाग से भिड गया तथा पूंछ पकड़ कर उसका सिर उलटा कर दिया। उस पराक्रमी प्रद्युम्न को देखकर वह आश्चर्य चकित हो गया तथा यक्ष का रूप धारण कर खड़ा हो गया।

(१९१) वह दोनों हाथ जोड़कर कर सत्य भाव से कहने लगा कि तुम पहिले कनकराज थे। जब तुम (कनकराज) राज्य त्याग कर तप करने चले तो मुझे अपनी सोलह विद्याएं दे गये थे।

(१९२) (और कहा कि) कृष्ण के घर उसका अवतार होगा। तुम प्र ुम्न को देख लेना। उस राजा की यह धरोहर है। इसलिये अपनी विद्यायें सम्भाल लो।

१६ विद्याओं के नाम

(१९३-१९६) १. हृदयावलोकनी २. मोहिनी ३. जलशोषिणी ४. रत्नदर्शिणी ५. आकाशगामिनी ६. वायुगामिनी ७. पातालगामिनी ८. शुभदर्शिनी ९. सुधाकारिणी १०. अग्निस्थंभिणी ११. विद्यातारणी १२. बहुरूपिणी १३. जलबंधिणी १४. गुटका १५. सिद्धिप्रकाशिका (जिसे सब कोई जानते हैं) १६. धार बांधने वाली धारा बंधिणी ये सोलह विद्यायें प्राप्त की तथा उसने अपूर्व रत्न जटित मनोहर मुकुट लाकर दिया। मुकुट सौंप कर फिर प्रद्युम्न के चरणों में गिर गया तथा प्रद्युम्न हंसकर वहां से आगे बढा। वह प्रद्युम्न वहां पहुँचा जहां पांच सौ भाई हंस रहे थे।

(१९७) उन कुमारों के पास जब प्रद्युम्न गया तो मन में उनको आश्चर्य हुआ। वे ऊपर से प्रेम प्रकट करने लगे तथा उसे लेजा कर दूसरी गुफा दिखाई।

(१९८) उस गुफा का नाम काल गुफा था। कालासुर दैत्य वहां रहता था। पूर्व जन्म की बात को कौन मेट सकता है प्रद्युम्न उससे भी जाकर भिड़ गया।

(१९९) कुमार ने उसे ललकार कर जमीन पर गिरा दिया फिर वह हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया। प्रद्युम्न के पराक्रम को देखकर वह मन में बहुत डर गया तथा छत्र चँवर लेकर उसके आगे रख दिये ।

(२००) हंसकर प्रद्युम्न को सौंपते हुये किंकर बन कर उसके पैरों में गिर गया। फिर वह प्रद्युम्न आगे चला और तीसरी गुफा के पास आया।

(२०१) उस वीर ने नाग गुफा को देखा। उस साहसी तथा धैर्यशाली ने उस गुफा का निरीक्षण किया। एक भयंकर सर्प घनघोर गर्जना करता हुआ आकर प्रद्युम्न से भिड़ गया।

(२०२) प्रद्युम्न ने मन में उपाय सोचा और वह सर्प को पकड़ कर खूब मारने लगा तब उसका अतुल बल देखकर वह शंकित हो गया और हाथ जोड़कर खड़ा हो गया।

(२०३) प्रद्युम्न को बलवान जानकर चन्द्रसिंहासन लाकर सौंप दिया। नागशय्या, वीणा और पावड़ी ये तीन विद्याएं उसके सामने रख दी।

(२०४) सेना का निर्माण करने वाली, गेहकारिणी, नागपाश तथा विद्यातारिणी इन विद्याओं का उसे वहां से लाभ हुआ। फिर वहां से वह स्नान करने के लिए सरोवर पर चला गया।

(२०५) उसे स्नान करते हुये देखकर वहां के रक्षक दौड़े और कहा कि तुम कौन पुरुष हो जो मरना चाहते हो? जिस सरोवर की रक्षा करने के लिए देवता रहते हैं उस सरोवर में नहाने वाले तुम कौन हो?

(२०६) वह वीर क्रोधित होकर बोला कि आते हुये वज्र को कौन झेल सकता है? वही मुझ से युद्ध करने में समर्थ हो सकता है जो सर्प के मुख में हाथ डाल सकता है।

(२०७) अन्त में रक्षक कहने लगे कि यह भयंकर योद्धा है मानेगा नहीं। वे चुपचाप उसके मुख की ओर देखकर उसको मगर से चिन्हित एक ध्वजा दी।

(२०८) इसके पश्चात् जब वह वीर हृदय में साहस धारण कर अग्नि-कुण्ड में गया तो वहां का रहने वाला देव संतुष्ट होकर उसके पास आया और अग्नि का जिन पर प्रभाव न पड़े ऐसे कपड़े दिये।

(२०९) इनको लेकर वह वीर आगे चला और फलों वाला एक आम का वृक्ष देखा। उसके लगे हुये आम को तोड़कर खाने लगा तो वहां रहने वाला देव बंदर का रुप धारण कर वहां आ पहुँचा।

(२१०) आम तोड़ने वाला तू कौन वीर है ? मेरे से आकर पहिले युद्ध करो। तब प्रद्युम्न क्रोधित होकर उसके पास गया और उससे जूझकर बड़ा भारी युद्ध किया।

(२११) प्रद्युम्न ने उसे पछाड़ कर जीत लिया तो वह हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगा और दोनों हाथों में पुष्पमाला लेकर पावड़ी की जोड़ी उसे दी।

(२१२) तब वे कामदेव को कपित्थ वन में ले गये और उसको वहां भेज कर वे खड़े रह गये। जब वह वीर वन के बीच में गया तो एक उद्दण्ड हाथी चिंघाड़ कर आया।

(२१३) वह हाथी विशालकाय एवं मदोन्मत्त था। शीघ्र ही हाथी कुमर से भिड़ गया। प्रद्युम्न ने उसको पछाड़ कर दांत और सूंड तोड दिये और स्वयं कंधे पर चढ़ कर उसके अंकुश लगाने लगा।

(२१४) इसके पश्चात् प्रद्युम्न को वे बावड़ी में ले गये जहां काल के समान सर्प रहता था। वह वीर उसकी बंबी पर जा कर चढ़ गया जिससे वह सर्प उसमें से निकल कर प्रद्युम्न से भिड़ गया।

(२१५) वह उस सर्प की पूंछ पकड़ कर फिराने लगा जिससे वह सर्प व्याकुल हो गया। उस विषधर (व्यंतर) ने प्रद्युम्न की सेवा की और काम मूंदड़ी एवं छुरी दी।

(२१६) मलयागिरि पर्वत पर जब वह गया तो आश्चर्य से वहां खड़ा हो गया। अमरदेव वहां दौड़कर आया और अपने देह से संघात (वार) करने लगा।

(२१७) वह देव हार गया और उसकी सेवा करने लगा। उसने कंकण की जोड़ी लाकर सामने रख दी तथा सिर का मुकुट और गले का हार दिया।

(२१८) वरहासेन नामक जहां गुफा थी वहां उन कुमारों ने प्रद्युम्न को भेजा। वहां कोई व्यंतर देव था जिसने क्षण भर में वराह का रुप धारण कर लिया।

(२१६) वह वराह रूप धारी देव प्रद्युम्न से भिड़ गया। प्रद्युम्न भी उसकेदांतों से भिड़ गया तथा घात करने लगा। देव ने फूलों का धनुष एवं विजयशंख लाकर प्रद्युम्न को उस स्थान पर दिया।

(२२०) तब मदनकुमार उस वन में जाकर बैठ गया जहां दुष्ट जीव निवास करते थे। वन के मध्य में पहुँच कर उसने देखा कि एक वीर मनोज (विद्याधर) बंधा हुआ था।

(२२१) बंधे हुये वीर मनोज को उसने छोड़ दिया तथा मुड़ कर वह वन के मध्य में गया। जिस विद्याधर को प्रद्युम्न ने बांध लिया।

(२२२) फिर वह मनोज विद्याधर मन में प्रसन्न होकर मदनकुमार के पैरों पर पड़ गया। उसने हाथ जोड़ कर प्रद्युम्न से प्रार्थना की तथा इन्द्रजाल नाम की दो विद्यायें दी।

(२२३) तब बसंतराज के मन में बड़ा उत्साह हुआ। उसने अपनी कन्या विवाह में उसे दे दी। उस विद्याधर ने बहुत भक्ति की एवं उसके पैरों में गिर गया।

(२२४) जब वह वीर अर्जुन-वन में गया तब वहां एक यक्ष आ पहुँचा। उससे उसका अपूर्व युद्ध हुआ और फिर उसने कुसुम-बाण नामक बाण दिया।

(२२५) फिर वह विपुल नामक वन में गया तथा वृक्षलता के समान वह वहां खड़ा हो गया। जहां तमाल के वृक्ष थे प्रद्युम्न क्षण भर में वहां चला गया।

(२२६) उस वन के मध्य में स्फटिक शिला पर बैठी हुई एक स्त्री जाप जप रही थी। तब विद्याधर से प्रद्युम्न ने पूछा कि यह वन में रहने वाली स्त्री कौन है।

(२२७) बसंत विद्याधर ने मन में सोचकर कहा कि यह रति नाम की स्त्री है। यह अत्यन्त रूपवान एवं कमल के समान सुन्दर नेत्र वाली है, हे कुमार! आप इसके साथ विवाह कर लीजिए।

(२२८) तब प्रद्युम्न को बड़ी खुशी हुई तथा कुमार का उससे विवाह हो गया। फिर वह प्रद्युम्न वहां गया जहां उसके पांच सौ भाई खड़े थे।

(२२६) वे कुमार आपस में एक दूसरे का मुंह देख कर कहने लगे कि यह मानना पड़ता है कि यह असाधारण वीर है। हमने प्रद्युम्न को सोलह गुफाओं में भेजा किन्तु वहां भी उसे वस्त्राभरण मिले।

(२३०) प्रद्युम्न का अपार बल देख कर कुमारों ने अहंकार छोड़ दिया। सब ने मिलकर उस स्थान पर सलाह की कि पुण्यवान के सब पांवों पड़ते हैं।

(२३१) भगवान अरिहन्तदेव ने कहा है कि इस संसार में पुण्य बड़ा बलवान है। पुण्य से ही सुर असुर सेवा करते हैं। पुण्य ही सफल होता है। कहां तो उसने रुक्मिणी के उर में अवतार लिया; कहां धूमकेतु राक्षस ने उसे सिला के नीचे दबा दिया और कहां यमसंवर उसे ले गया और कनकमाला के घर बड़ा और महान् पुण्य के फल से सोलह विद्याओं का लाभ हुआ तथा सिद्धि की प्राप्ति हुई।

(२३२) पुण्य से ही पृथ्वी में राज्य-सम्पदा मिलती है। पुण्य से ही मनुष्य देव लोक में उत्पन्न होता है। पुण्य से ही अजर अमर पद मिलता है। पुण्य से ही जीव निर्वाण पद को प्राप्त करता है।

प्रद्युम्न द्वारा प्राप्त सोलह विद्याओं के नाम

(२३३ से २३६) सोलह विद्याओं को उसने बिना किसी विशेष प्रयत्न के ही प्राप्त कर लिया। चमर, छत्र, मुकुट, रत्नों से जटित नागशय्या, वीणा, पावड़ी, अग्निवस्त्र, विजयशंख, कौस्तुभमणि, चन्द्रसिंहासन, शेखर हार, हाथ में सुशोभित होने वाली काम मुद्रिका, पुष्प धनुष, हाथ के कंकण, छुरी, कुसुमबाण, कानों में पहिनने के लिये युगल कुण्डल, दो राजकुमारियों से विवाह, सामने आये हुये हाथी को चढ़ कर वश में करना, रत्नों के युगल कंकण, फूलों की दो मालायें, इनके अतिरिक्त अन्य छोटी वस्तुओं को कौन गिने। इन सब को लेकर प्रद्युम्न चला।

(२३७) प्रद्युम्न शीघ्र ही अपने घर को चल दिया और क्षण भर में मेघकूट पर जा पहुँचा। वहां जाकर यमसंवर से भेंट की और विशेष भक्तिपूर्वक उसके चरणों में पड़ गया।

(२३८) राजा से भेंट करके फिर खड़ा हो गया और रणवास में भेंट करने चल दिया। कनकमाला से शीघ्र ही जाकर भेंट की और बहुत भक्तिपूर्वक उसके चरण स्पर्श किये।

कनकमाला का प्रद्युम्न पर आसक्त होना

(२३६) उस श्रेष्ठ वीर प्रद्युम्न के अत्यधिक मनोहर रूप को देखकर कामवाण ने उसके (कनकमाला के) शरीर को छेद दिया। फिर उसने दौड़कर उसे अपनी छाती से लगाया किन्तु वह छुड़ाकर चला गया।

प्रद्युम्न का मुनि के पास जाकर कारण पूछना

(२४०) प्रद्युम्न फिर वहां पहुँचा जहां उद्यान में मुनीश्वर बैठे हुये थे। उनको नमस्कार कर पूछा कि जो उचित हो सो कहिये।

(२४१) कनकमाला मेरी माता है लेकिन वह मुझे देखकर काम रस में डूब गयी। उसने अपनी मर्यादा को तोड़कर मुझे आंचल में पकड़ लिया। इसका क्या कारण है यह मैं जानना चाहता हूँ।

(२४२) तब मुनिराज ने उसी समय कहा कि मैं वही बात कहूँगा जो तुम्हारे जन्म से सम्बन्धित है। सोरठ देश में द्वारिका नगरी है वहां यदुराज निवास करते हैं।

(२४३) उनकी स्त्री रुक्मिणी है जिसकी प्रशंसा महीमंडल में व्याप्त है। उसके समान और कोई स्त्री नहीं है। हे मदन, वही तुम्हारी माता है।

(२४४) धूमकेतु ने तुम्हें वहां से हर लिया और शिला के नीचे दबाकर वह चला गया। यमसंवर ने तुम्हें वहां से लाकर पाला। तुम वही प्रद्युम्न हो यह अपने आपको जान लो।

(२४५) कनकमाला ने जो तुम्हें अंचल में पकड़ना चाहा था वह तो पूर्व जन्म का सम्बन्ध है। यदि वह तुम्हारे प्रेमरस में डूबी हुई है तो छलकर उससे तीन विधायें प्राप्त करलो।

(२४६) मुनि के वचनों को सुनकर वह वहां से लौट गया तथा कनकमाला के पास जाकर बैठ गया और कहने लगा कि यदि तुम मुझे तीनों विद्याएं दे दो तो मैं तुम्हें प्रसन्न करने का उपाय कर सकता हूँ।

(२४७) कुमार से प्रेमरस की बात सुनकर वह प्रेम लुब्ध होकर व्याकुल हो गयी। उसने यमसंवर का कोई विचार नहीं किया और तीनों विद्यायें उसको दे दी।

(२४८) कुमार का मन दांव पूरा पड़ जाने के कारण बड़ा खुश हुआ। फिर वह विद्याओं को लेकर वापिस चल दिया। (उसने कहा) मैं तुम्हारा लड़का हूँ तथा तुम मेरी माता हो। अब कोई युक्ति बतलाओ जिससे मैं तुम्हें प्रसन्न कर सकूं।

(२४६) तब कनकमाला का हृदय बैठ गया और उसने सोचा कि मुझ से इसने कपट किया है। एक तो मेरी लज्जा चली गयी दूसरे कुमार विद्याओं को अपने हाथ लेकर चलता बना।

(२५०) कनकमाला मन में दुःखी हुई। वह सिर को कूटने एवं कुचेष्टा करने लगी। अपने ही नखों से स्तन एवं हृदय को कुरेच लिया तथा केश बिखेर कर बेसुध हो गयी।

(२५१) वह रोने और पुकारने लगी तथा उसने यमसंवर को सारी बात बतलाई। तभी पांच सौ कुमार वहां आये और कनकमाला के पास बैठ गये।

(२५२) कालसंवर से उसने कहा कि देखो इस दत्तक पुत्र ने क्या कार्य किया है? जिसको धर्मपुत्र करके रखा था वही मुझे बिगाड़ कर चला गया।

कालसंवर द्वारा प्रद्युम्न को मारने के लिये कुमारों को भेजना

(२५३) वचनों को सुनकर राजा उसी प्रकार प्रज्वलित हो गया मानों अग्नि में घी ही डाल दिया हो। पांच सौ कुमारों को बुलाकर कहा कि शीघ्र जाकर प्रद्युम्न को मार डालो।

(२५४) तब कुमारों की मन की इच्छा पूरी हुई। इससे राजा भी विरुद्ध हो गया। सब कुमार मिलकर इकट्ठे हो गये और वे मदन को बुलाकर वन में गए।

(२५५) तब आलोकिनी विद्या ने कहा कि हे प्रद्युम्न! तुम असावधान क्यों हो रहे हो। यह बात मैं तुमसे सत्य कहती हूँ कि इन सबको राजा ने तुम्हें मारने भेजा है।

(२५६) तब साहसी और धीर वीर कुमार क्रुद्ध हो गया और सब कुमारों के नागपाश डाल दी। ४६६ कुमारों को आगे रख कर शिला से बांध करके लटका दिया।

(२५७) उसने एक कुमार को छोड़ दिया कि जाकर राजा को सारी बात कह दे और कहला दिया कि अगर तुम में साहस हो तो सभी दलबल को लेकर आ जावो।

(२५८) यमसंवर राजा बैठा हुआ था वहां वह कुमार भाग कर पुकारने लगा कि सभी कुमारों को बावड़ी में डालकर ऊपर से वज्र शिला डाल दी है।

जमसंवर और प्रद्युम्न के मध्य युद्ध

(२५९) वचनों को सुनकर राजा बड़ा क्रोधित हुआ तथा उसने विचार किया कि आज प्रद्युम्न को समाप्त कर दूंगा। रथ हाथी को सजा लिया गया तथा घोड़ों पर काठी एवं हाथी पर झूल रख दी गयी।

(२६०) धनुषधारी, पैदल चलने वाले, खड्गधारी तथा अन्य सारी फौज को चलने में जरा भी देर नहीं लगी। प्रद्युम्न ने सेना को आते हुये देखकर मायामयी सेना तैयार करली।

(२६१) यमसंवर की बलशाली सेना वहां जा पहुँची तथा एक दूसरे को ललकारते हुये मदोन्मत्त होकर परस्पर भिड गई। युद्ध में राजा से राजा भिड गये तथा पैदल से पैदल लड़ने लगे।

(२६२) यमसंवर हार गया तथा उसकी चतुरंगिनी सेना को मार कर गिरा दिया गया। तब विद्याधर राजा बड़ा दुःखी हुआ और अपना रथ मोड करके नगर की ओर चल दिया।

(२६३) जब वह अपने महल में पहुँचा तो कालसंवर ने कनकमाला से जाकर यह बात कही कि तीनों विद्यायें मुझे दे दो।

(२६४) वचन सुनकर वह स्त्री बड़ी दुःखी हुई तथा ऐसी हो गई मानों सिर पर वज्र गिर गया। हे स्वामी ! उन विद्याओं का तो यह हुआ कि मुझ से प्रद्युम्न छीन ले गया।

(२६५) स्त्री के वचन सुनकर उसका हृदय कांप गया और उसके होश उड गये तथा हृदय विदीर्ण हो गया। मुझ जैसे व्यक्ति से भी इसने झूंठ बोली। वास्तव में प्रेम रस में डूबने के कारण इसने तीन विद्याएं उसको दे दी और मुझ से अब छल कर रही है कि कुमार छीन कर ले गया।

(२६६) उसका चरित्र देखकर राजा बोला कि अब उसकी (राजा की) मृत्यु का कारण बन गया। जो मनुष्य स्त्री में विश्वास करता है वह बिना कारण ही मृत्यु को प्राप्त होता है। स्त्री का चरित्र सुनकर वह विद्याधरों का राजा व्याकुल हो गया।

स्त्री चरित्र वर्णन

(२६७) स्त्री झूंठ बोलती है और झूंठ ही चलती है (आचरण करती हैं) वह अपने स्वामी को छोडकर दूसरे के साथ भोग विलास करती है स्त्री का साहस दुगुना होता है अतः स्त्री का चरित्र कभी भुलाने योग्य नहीं है।

(२६८) उसके मन में सदैव नीच बुद्धि रहती है। उत्तम संगति को छोडकर नीच संगति में जाती है। उसकी प्रकृति और देह दोनों ही नीच हैं। स्त्री का स्वभाव ही ऐसा है।

(२६९) उज्जैनी नगरी जो एक उत्तम स्थान था वहां पहिले बिंब नामका राजा स्त्री पर खूब विश्वास करता था इस कारण उसे अपना जीवन ही समर्पण करना पड़ा।

(२७०) दूसरे यशोधर राजा हुए जो कि अपनी पटरानी महादेवी से नाश को प्राप्त हुये। उसने राजा को विष पूर्ण लड्डू देकर मार दिया और स्वयं कुबडे से जाकर रमने लगी।

(२७१) अब तीसरी स्त्री की बात सुनिये। पाटन नामका एक स्थान था उस काल में वहां 'हया' नामका सेठ था जिसके 'तीनि' नाम की सुन्दर स्त्री थी।

(२७२) एक बार वह सेठ व्यापार को गया हुआ था। तब किसी ने उसे जीभ के वशीभूत कर लिया। सेठ की मर्यादा छोडकर उसने एक धूर्त्त को अपने यहां लाकर रख लिया।

(२७३) अपने पति के प्यार को छोडकर उस आये हुये धूर्त को उसने भर्त्तार बना लिया। इस प्रकार स्त्रियों के साहस का कोई अन्त नहीं है। इन स्त्रियों का चरित्र कितना कहा जाय।

(२७४) अभया रानी की नीचता के कारण सुदर्शन पर संकट आया तथा उसी के कारण महायुद्ध हुआ और अन्त में सुदर्शन को तपस्या के लिये जाना पड़ा।

(२७५) राम रावण में जो लड़ाई बढ़ी थी वह सूपनखा को लेकर ही बढ़ी। सीता को हरण करने के कारण ही लंका नष्ट हुई तथा रावण का संपूर्ण परिवार नष्ट हुआ।

(२७६) कौरव और पांडवों में महाभारत हुआ और कुरुक्षेत्र में महायुद्ध ठहरा। उसमें अठारह अक्षौहिणी सेना नष्ट हो गयी। उसका कारण दोनों दल द्रौपदी को बतलाते थे।

(२७७) फिर कालसंवर ने उससे कहा कि कनकमाला यह तेरा अपराध नहीं है। पूर्व कृत कर्मों को कोई नहीं मेट सकता। यही कारण है कि इन विद्याओं को प्रद्युम्न ले गया।

(२७८) अशुभ कर्म को कोई नहीं मेट सकता। सज्जन भी वैरी हो जाते हैं। हे कनकमाला ! तुम्हारा दोष नहीं है। अपने भाग्य में यही लिखा था।

गाथा

पुरुष के उल्टे दिन आने पर गुण जल जाते हैं, प्रेमी चलायमान हो जाते हैं तथा सज्जन बिछुड़ जाते हैं। व्यवसाय में सिद्धि नहीं होती है।

(२७९) कालसंवर के प्रवाह में कौन बच सकता है ? फिर वह राजा वापिस मुड़ा और उसने अपनी चतुरंगिणी सेना को एकत्रित किया तथा दुबारा जाकर फिर लड़ने लगा।

यमसंवर एवं प्रद्युम्न के मध्य पुनः युद्ध

(२८०) राजा ने मन में बहुत क्रोध किया तथा धनुष चढ़ाकर हाथ में लिया। जब उसने धनुष की टंकार की तो ऐसा लगा कि मानों पर्वत हिलने लग गये हों।

(२८१) जब दोनों वीर रण में आकर भिड़े तो विमानों में चढ़े हुये देवता गण भी देखने लगे। निरन्तर बाण बरसने लगे तथा ऐसा लगने लगा कि असमय में बादल खूब गर्ज रहे हों।

(२८२) तब प्रद्युम्न बड़ा क्रोधित हुआ तथा उसने नागपाश को फेंका। पूरा दल नागपाश द्वारा दृढ़ता से बांध लिया गया और राजा अकेला खड़ा रह गया।

(२८३) ऐसा करके प्रद्युम्न कहने लगा कि मैंने कालसंवर की सम्पूर्ण सेना को नष्ट कर दिया। जब प्रद्युम्न इस प्रकार कह रहा था तो नारद ऋषि वहां आ पहुँचे।

नारद का आगमन एवं युद्ध की समाप्ति

(२८४) प्रद्युम्न से उन्होंने कहा कि बस रहने दो। पिता और पुत्र में कैसी लड़ाई ? जिस राजा ने तुम्हारी प्रतिपालना की थी उससे तुम किस प्रकार लड़ रहे हो ?

(२८५) नारद ने सारी बात समझा करके कही तथा दोनों दलों की लड़ाई शान्त कर दी। कालसंवर तुम्हारे लिये यह उचित नहीं है क्योंकि यह प्रद्युम्न तो श्रीकृष्ण का पुत्र है।

(२८६) नारद के वचन सुनकर मन में विचार उत्पन्न हुआ। राजा का दिल भर आया तथा उसका सिर चूम लिया। राजा को बहुत पछतावा हुआ कि अपनी चतुरंगिनी सेना का संहार हो गया।

(२८७) तब प्रद्युम्न ने क्रोध छोड दिया। मोहिनी विद्या को हटा कर सब की मूर्च्छा को उतार दिया। नागपाश को जब वापिस छुडा लिया तो चतुरंगिनी सेना फिर से उठ खड़ी हुई।

(२८८) सेना के उठ खड़े होने से राजा प्रसन्न हुआ तथा प्रद्युम्न के प्रति बहुत कृतज्ञता प्रकट करने लगा। नारद ऋषि ने उसी समय कहा कि तुम्हारी घर प्रतीक्षा हो रही है।

(२८९) यदि हमारे वचनों को मन में धारण करो तो शीघ्र ही घर की ओर मुंह करलो। वायु के वेग के समान तुम द्वारिका चलो। आज तुम्हारा विवाह है।

(२९०) प्रद्युम्न ने नारद से कहा कि तुमने सच्ची बात कही है। मुझे जो केवली भगवान ने कही थी सो मिल गयी है। तब हंसकर के प्रद्युम्न बोला कि हमको कौन परणावेगा ?

नारद एवं प्रद्युम्न द्वारा विद्या के बल विमान रचना

(२९१) नारद ने क्षण भर में विमान रच दिया किन्तु प्रद्युम्न ने उसे हंसी में तोड डाला। मुनि ने विमान को फिर जोड दिया किन्तु प्रद्युम्न ने उसे फिर तोड़ दिया।

(२९२) जब नारद दुःखित मन हुये तो मदन ने हंस करके उपाय किया और माणिक और मणियों से सज्जित एक विमान क्षण भर में तैयार कर दिया।

(२९३) प्रद्युम्न ने जिस विद्या बल से विमान को रचा था उस विमान ने अपनी कान्ति से सूर्य और चन्द्रमा की कान्ति को भी फीका कर दिया। वह ध्वजा, घंटा एवं झालर संयुक्त था। उस पर नारायण का पुत्र प्रद्युम्न चढा।

(२९४) चढने के पूर्व कालसंवर को बहुत समझा करके अति भक्ति भाव से उसके चरणों का स्पर्श किया। कुमार ने तब क्षमा याचना की और कंचनमाला के घर गया।

(२९५) कुमार प्रद्युम्न एवं नारद मुनि विमान पर चढ़ कर आकाश में उड़े। बहुत से गिरि एवं पर्वतों को लांघ करके जिन मन्दिरों की वन्दना की।

(२९६) फिर वे बन मध्य पहुँचे तो उस स्थान पर उदधि माला दिखाई दी। प्रद्युम्न को मार्ग में बरात मिली जो भानुकुमार के विवाह के लिये द्वारिका जा रही थी।

(२९७) नारद ने प्रद्युम्न से बात कही कि यह कुमारी पहिले तुम्हीं को दी गयी थी। तुमको जब धूमकेतु हर ले गया तो उसे अब भानुकुमार को दे दी गई है।

(२९८) नारद ने कहा कि इसमें मुझे दोष कोई नहीं मालूम होता है। यदि तुम्हारे में शक्ति है तो इसको जबरन ले लो। ऋषिराज के वचनों को मन में धारण करके उसने अपना भील का भेष कर लिया।

प्रद्युम्न द्वारा भील का रूप धारण करना

(२९९) हाथ में धनुष तथा विषाक्त बाण ले लिया और उतर कर उनके साथ मिल गया। पवन के वेग के समान आगे जाकर उनका मार्ग रोक कर खड़ा हो गया।

(३००) मैं नारायण की ओर से कर लेने वाला हूँ इसलिये मेरी अधिक लाग है वह मुझे दो। जो मेरे योग्य अच्छी चीज है वही मुझे दे दो जिससे मैं सब लोगों को जाने दूं।

(३०१) महिलाओं ने कहा कि हमारी बात सुनो तुम कौनसी बड़ी वस्तु मांगते हो। धन सम्पत्ति सोना जो चाहे सो ले लो और हमको आगे जाने दो।

(३०२) भील ने क्रोधित होकर उनको जाने दिया तथा कहा कि ऐसे जाने से क्या लाभ है। जो भली वस्तु तुम्हारे पास है वही मुझे दे दो और आगे बढो।

(३०३) तब महिलाओं ने उसका मुंह देख कर कहा कि एक कुमारी जो हमारे पास है उसको तो हरि के पुत्र भानु से सगाई कर दी गयी है। अरे भील! तुम और क्या मांग रहे हो।

(३०४) उस भील वीर ने कहा यही (कुमारी) मुझे दे दो जिससे मैं आगे तुमको मार्ग दूं। महिलाओं ने क्रोधित होकर कहा कि अरे भील यह कहना तुझे उचित नहीं है।

(३०५) महिलाओं के वाक्यों को सुनकर विचार करके कहने लगा कि मैं नारायण का पुत्र हूँ इन वाक्यों में तुम सन्देह मत करो और उदधि माला को मुझे दे दो।

(३०६) महिला ने कहा कि हे नटखट तुम झूंठ बोलने में बहुत आगे हो। जो तीन खंड पृथ्वी का राजा है क्या उसके पुत्र का ऐसा भेष होता है?

(३०७) तब वे सीधे मार्ग को छोडकर टेढे मेढे मार्ग से चले तो उधर भी दो कोडी (४०) भील मिल गये। सधारु कवि कहता है कि तब भील ने कहा कि यदि मैं कन्या को बल पूर्वक छीन लूं तो मेरा दोष मत समझना।

प्रद्युम्न द्वारा उदधिमाला को बलपूर्वक छीन लेना

(३०८) तब उसने कुमारी को छीन लिया और मुड करके विमान पर चढ़ गया। भील को देखकर वह कुमारी मन में बहुत डरी और करुण विलाप करने लगी।

(३०९) पहिले मेरी प्रद्युम्न के साथ सगाई हुई फिर भानुकुमार के साथ विवाह करने के लिये चलो। हे नारद मेरी बात सुनो अब मैं भील के हाथ पड़ी हूँ।

(३१०) उदधि माला ने कहा अब मुझे पञ्च परमेष्ठियों की शरण है। यदि मृत्यु न होगी तो मैं सन्यास ले लूंगी। तब नारद के मन में संदेह हुआ कि इसने बहुत बुरी बात कही है।

(३११) नारद ने उसी समय कहा कि यह कामदेव अपनी कलाएं दिखा रहा है। तब प्रद्युम्न ने बत्तीस लक्षण वाले एवं स्वर्ण के समान प्रतिभा वाले शरीर को धारण कर लिया और जिससे उसका शरीर कामदेव के समान हो गया।

(३१२) उस सुंदरी उदधिमाला को समझा कर वे विमान से शीघ्र चलने लगे। विमान के चलने में देर नहीं लगी और वे द्वारिका के बाहर पहुँच गये।

(३१३) नगर को देखकर प्रद्युम्न बोले कि जो मोतियों और रत्नों से चमक रही है, धन धान्य एवं स्वर्ण से भरी हुई है। हे नारद! यह कौनसी नगरी है?

नारद द्वारा द्वारिका नगरी का वर्णन

(३१४) नारद ने कहा कि हे प्रद्युम्न सुनो यह द्वारिकापुरी है जो सागर के मध्य में दृढ़ता से बसी हुई है यह तुम्हारी जन्मभूमि है। शुद्ध स्फटिक मणियों से जड़ी हुयी उज्ज्वल है। कूवे, बावड़ी तथा सुन्दर भवन, बहुत प्रकार के जिनेंद्र भगवान के मन्दिर, चारों ओर परकोट एवं दरवाजे से वेष्टित यह द्वारिका नगरी है।

(३१५) यह सुनकर वीर प्रद्युम्न ने कहा कि हे नारद मेरे वचन सुनो। मुझे स्पष्ट कहो तथा कुछ भी मत छिपाओ। हे प्रद्युम्न ध्यान पूर्वक देखो जो जिसका महल है (वह मैं तुमको बतलाता हूँ।)

(३१६) नगर मध्य जो श्वेत वर्ण वाला एवं पांचों वर्णों की मणियों से जड़ा हुआ तथा सुन्दर महल है जिस पर गरुड़ की ध्वजा अत्यन्त सुशोभित है वह नारायण का महल है।

(३१७) जिसके चारों ओर सिंह ध्वजा हिल रही है उसे बलभद्र का महल जानो। जिसकी ध्वजा में मेंढे का चिन्ह है वह वसुदेव का महल है।

(३१८) जिसकी ध्वजा पर विद्याधर का चिन्ह है जहां ब्राह्मण बैठे हुये पुराण पढ रहे हैं तथा जहां बहुत कोलाहल हो रहा है वह सत्यभामा का महल है ।

(३१९) जिस महल पर सोने की मालायें चमक रही हैं जिस पर बहुत सी ध्वजायें फहरा रही हैं, जिसके चारों ओर मरकत मणियां चमक रही हैं वह तुम्हारी माता का महल है ।

(३२०) इन वचनों को सुनकर प्रद्युम्न जिसके कि चरित्र को कौन नहीं जानता बड़ा हर्षित हुआ । विमान से उतर करके वह खड़ा हो गया और नगर में चल दिया ।

प्रद्युम्न का भानुकुमार को आते हुये देखना

(३२१) चतुरंगिणी सेना से सुसज्जित उसने भानुकुमार को आते हुए देखा । तब प्रद्युम्न ने विद्या से पूछा कि यह कोलाहल के साथ कौन आ रहा है ?

(३२२) हे प्रद्युम्न ! सुनो मैं तुम्हें विचार करके कहती हूँ । यह नारायण का पुत्र भानुकुमार है । यह वही कुमार है जिसका विवाह है । इसी कारण नगर में बहुत उत्सव हो रहा है ।

प्रद्युम्न का मायामयी घोड़ा बनाकर वृद्ध ब्राह्मण का भेष धारण करना

(३२३) वहां प्रद्युम्न ने मन में उपाय सोचा कि मैं इसको अच्छी तरह पराजित करूंगा । उसने एक बूढे विप्र का भेष बना लिया तथा मायामयी चंचल घोड़ा भी बना लिया ।

(३२४) वह घोड़ा बड़ा चंचल था तथा जोर से हिनहिना रहा था । जिसके चारों पांव उज्ज्वल एवं धुले हुये दिखते थे । जिसके चार चार अंगुल के कान थे । जो लगाम के इशारे को पहिचानता था ।

(३२५) जिस पर स्वर्ण की काठी रखी हुई थी । वह ब्राह्मण उसकी लगाम पकड़ करके आगे चल रहा था । अकेले भानुकुमार ने उसको देखा कि ब्राह्मण वृद्ध है किन्तु घोड़ा सुन्दर है ।

(३२६) घोड़े को देखकर भानुकुमार के मनमें यह आया कि चल कर ब्राह्मण से पूछना चाहिये। फिर उसने ब्राह्मण से पूछा कि यह घोड़ा लेकर कहां जाओगे ?

(३२७) ब्राह्मण ने कहा कि घोड़ा अपना है। समंद जाति का ताजी बलख घोड़ा है। भानुकुमार का नाम सुन कर मैं घोड़े को उनके यहां लाया हूँ।

(३२८) भानुकुमार के मन में विचार हुआ और उसने ब्राह्मण को बहुत प्रसन्न करना चाहा। हे विप्र सुनो ! मैं कहता हूँ कि तुम जो भी इसका मोल मांगोगे वही मैं तुमको दे दूंगा।

(३२९) तब विप्र ने सत्यभाव से जो कुछ मांगा वह भानुकुमार के मन को अच्छा नहीं लगा। भानुकुमार बहुत दुखी हुआ कि इस विप्र ने मेरा मान भंग किया है।

(३३०) विप्र ने भानुकुमार को कहा कि मैंने तो मांग लिया है यदि तुम उतना नहीं दे सकते हो तो न देओ। मैंने तो तुमसे सत्य कह दिया। यदि इसे हंसी समझते हो तो इसे दौडा करके देख लो।

भानुकुमार का घोड़े पर चढना

(३३१) ब्राह्मण के वचन सुन कर कुमार (भानु) मन में प्रसन्न हुआ और घोड़े पर चढ़ गया। लेकिन वह उस घोड़े को सम्हाल नहीं सका और उस घोड़े ने भानुकुमार को गिरा दिया।

(३३२) भानुकुमार गिर गया यह बड़ी विचित्र बात हुई इससे सभा में उपस्थित लोगों ने उसकी हंसी की। वे कहने लगे यह नारायण का पुत्र है और इसके बराबर कोई दूसरा सवार नहीं है।

(३३३) विप्र ने कहा कि तुम क्यों चढ़े ? इन तरुण से तो हम वृद्ध ही अच्छे हैं। मैं बहुत दूर से आशा करके आया था किंतु हे भानुकुमार ! तुमने मुझे निराश कर दिया।

(३३४) हलधर ने विप्र से कहा डरो मत। तुम ही इस घोड़े पर क्यों नहीं चढते हो ? हे ब्राह्मण यदि तुम इसका ठहराव (बेचना) चाहते हो तो अपना कुछ पुरुषार्थ दिखलाओ।

प्रद्युम्न का घोड़े पर सवार होना

(३३५) कुमार ने दस बीस लोगों को ब्राह्मण को घोड़े पर चढाने के लिये भेजा तब ब्राह्मण बहुत भारी हो गया और उनके सरकाने से भी नहीं सरका।

(३३६) तब ब्राह्मण को घोड़े पर चढाने के लिये भानुकुमार आया। लेकिन वह लटक गया और उसे चढा नहीं सका। जब दस बीस ने जोर लगाया तो वह भानुकुमार के गले पर पांव रख कर चढ गया।

(३३७) जब ब्राह्मण घोड़े पर सवार हुआ तो वह घोड़ा आकाश में घूमने लगा। सभा के लोगों ने देखकर बड़ा आश्चर्य किया कि यह तो उसका चमत्कार ही है कि वह ऊपर उड़ गया।

प्रद्युम्न का मायामयी दो घोड़े लेकर उद्यान पहुँचना

(३३८) फिर उसने अपना रूप बदल लिया और दो घोड़े पैदा कर लिये। राजा का जहां उद्यान था वहां वह घोड़ों को लेकर पहुँच गया।

(३३९) जब प्रद्युम्न उस उद्यान में पहुँचा तो वहां के रक्षक क्रोधित होकर उठे और कहा कि इस उद्यान में कोई नहीं चरा सकता। यदि घास काटोगे तो किरकिरी होगी।

(३४०) प्रद्युम्न ने अपने क्रोधित मन को बड़ी कठिनता से सम्हाला और रखवालों से ललकार करके कहा, भूखे घोड़ों को क्यों नहीं चरने देते हो। घास का कुछ मुझ से मोल ले लेना।

(३४१) तब उनकी बुद्धि फिर गई और उनको प्रद्युम्न ने काम मूंदड़ी उतार कर दे दी। रखवाले हँसकर के बोले कि दोनों घोड़े अच्छी तरह चर लेवें।

(३४२) घोड़े फिर फिर के उद्यान में चरने लगे और नीचे की मिट्टी को खोद कर ऊपर करने लगे। तब रख वाले छाती कूटने लगे कि इन दोनों घोड़ों ने तो उद्यान को चौपट कर दिया।

(३४३) उन्होंने वह काम मूंदड़ी प्रद्युम्न को लौटा दी जिसको उसने अपने हाथ में पहनली। तब वह वीर वहां पहुँचा जहां सत्यभामा की बाड़ी थी।

(३४४) प्रद्युम्न बाड़ी में पहुँचा तो उस स्थान पर बहुत से वृक्ष दिखलायी दिये। वे कब के लगे हुए थे यह कोई नहीं जानता था। फुलवारी विविध प्रकार से खिली हुई थी।

उद्यान में लगे हुये विभिन्न वृक्ष एवं पुष्पों का वर्णन

(३४५) जिसमें चमेली, जुही, पाटल, कचनार, मोलश्री की बेल थी। कणवीर का कुंज महक रहा था। केवड़ा और चंपा खूब खिले हुये थे।

(३४६) जहां कुंद, अगर, मंदार सिन्दूर एवं सरीष आदि के पुष्प महक रहे थे। मरुवा एवं केलि के सैकड़ों पौधे थे तथा उस बगीचे में कितने ही नीबुओं के वृक्ष सुगंधि फैला रहे थे।

(३४७) आम जंभीर एवं सदाफल के बहुत से पेड थे। तथा जहां बहुत से दाडिम के वृक्ष थे। केला, दाख, बिजौरा, नारंगी, करणा एवं खीप के कितने ही वृक्ष लगे हुए थे।

(३४८) पिंडखजूर, लौंग, छुहारा, दाख, नारियल एवं पीपल आदि के असंख्य वृक्ष थे। वह वन कैथ एवं आंवलों के वृक्षों से युक्त था।

प्रद्युम्न का दो मायामयी बन्दर रचना

(३४९) इस प्रकार की बाड़ी देख कर उस वीर को बहुत आश्चर्य हुआ। उसने धैर्य और साहस पूर्वक विचार कर के दो बंदरों को उत्पन्न किया जिनको कोई भी न जान सका।

(३५०) फिर उसने दोनों बंदरों को छोड दिया जिन्होंने सारी बाडी को खा डाला। जो फूलवाडी अनेक प्रकार से फूली हुई थी उसे उन बंदरों ने नष्ट कर डाला।

(३५१) फिर उन बंदरों को मुला कर दूसरी ओर भेजा जिन्होंने वहां के सब वृक्ष तोड डाले। फूलबाड़ी का संहार करके सारी वाटिका को चौपट कर दिया।

(३५२) जिस प्रकार हनुमान ने लंका की दशा की थी वैसे ही उन दोनों बंदरों ने बाडी की हालत कर दी। तब माली ने जहां भानुकुमार बैठा हुआ था वहां जाकर पुकार की।

(३५३) माली ने हाथ जोड़कर कहा कि हे स्वामी मुझे दोष मत देना। दो बन्दर वहां आकर बैठे हैं जिन्होंने सारी बाड़ी को खा डाला है।

(३५४) ज्यों ही माली ने पुकार की, भानुकुमार हथियार लेकर रथ पर चढ गया तथा पवन के समान वहां दौड़ करके आया जहां बन्दरों ने बाड़ी को चौपट कर दिया था।

प्रद्युम्न द्वारा मायामयी मच्छर की रचना

(३५५) तब प्रद्युम्न ने एक मायामयी मच्छर की रचना की। जहां भानुकुमार था उस स्थान पर उसे भेज दिया। मच्छर के काटने से भानुकुमार वहां से भाग गया।

(३५६) भानुकुमार भाग करके अपने मन्दिर में चला गया। उस समय दिन का एक पहर बीत गया था। प्रद्युम्न को बहुत सी स्त्रियां मिली जो भानुकुमार के तेल चढ़ाने जा रही थी।

प्रद्युम्न द्वारा मंगल गीत गाती हुई स्त्रियों के मध्य विघ्न पैदा करना

(३५७) तेल चढा करके उन्होंने शृंगार किया और वे भले मंगल गीत गाने लगी। कुमार रथ पर चढा तथा स्त्रियां खड़ी हो गई और फिर कुम्हार के यहां (चाक) पूजने गई।

(३५८) तब प्रद्युम्न ने एक कौतुक किया और रथ में एक घोड़ा और एक ऊंट जोत कर चल दिया। ऊंट और घोड़ा अरडा करके उठे और भानुकुमार को गिरा कर घर की ओर भाग गये।

(३५९) भानुकुमार के गिरने पर वे स्त्रियां रोने लगी तथा जो गाती हुई आयी थीं वे रोती हुई चली गयीं। जब ऊंट और घोड़ा अरड़ा कर उठे उससे बड़ा अपशुकुन हुआ जिसको कहा नहीं जा सकता।

प्रद्युम्न का वृद्ध ब्राह्मण का भेष बनाकर सत्यभामा की बावड़ी पर पहुँचना

(३६०) फिर प्रद्युम्न ने ब्राह्मण का रूप धारण कर लिया और धोती पहिन कर कमंडलु हाथ में ले लिया। स्वाभाविक रूप से लकड़ी टेकता हुआ चलने लगा और कुछ देर पश्चात् बावड़ी पर जा पहुँचा।

(३६१) वहां जाकर वह खड़ा हो गया जहां सत्यभामा की दासी खड़ी थी। वह कहने लगा कि भूखे ब्राह्मण को जिमाओ तथा जल पीने के लिये कमंडलु को भर दो।

(३६२) उसी क्षण दासी ने कहा कि यह सत्यभामा की बावड़ी है यहां कोई पुरुष नहीं आ सकता है। हे मूर्ख ब्राह्मण तुम यहां कैसे आ गये ?

(३६३) तब ब्राह्मण उसी समय क्रोधित हो गया। उसने किसी का सिर मूंड लिया, किसी का नाक और किसी के कान काट लिये। फिर उसने बावड़ी में प्रवेश किया।

विद्या बल से बावड़ी का जल सोखना

(३६४) उसने अपनी बुद्धि से कोई उपाय सोचा और जल सोषिणी विद्या को स्मरण किया। वह ब्राह्मण कमंडलु को भर कर बाहर निकल आया जिससे बावड़ी सूख कर रीती हो गई।

कमंडलु से जल को गिरा देना

(३६५) बावड़ी को सूखी देख कर स्त्रियों को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह ब्राह्मण बाजार के चौराहे पर चला गया। दासी ने दौड़ करके उसका हाथ पकड़ लिया जिससे कमंडलु फूट गया और उसका जल नदी के समान बहने लगा।

(३६६) पानी से बाजार डूब गया और व्यापारी लोग पानी २ चिल्लाने लगे। नगर के लोगों के लिए एक कौतुक करके वह वहां से चल दिया।

प्रद्युम्न का मायामयी मेंढा बनाकर वसुदेव के महल में जाना

(३६७) फिर उस प्रद्युम्न ने मन में सोचा और उसने एक मायामयी मेंढा बना लिया। उसे वह वसुदेव के महल पर लेकर पहुँचा। तब काठीया (पहरेदार) ने जाकर सूचना दी।

(३६८) वसुदेव ने प्रसन्नता से उससे कहा कि उसे शीघ्र ही भीतर बुलाओ। काठीया ने जाकर सन्देश कहा और वह मेंढा लेकर भीतर चला गया।

(३६९) उसने मेंढे को बिना शंका के खड़ा कर दिया। राजा ने हंस कर अपनी टांग आगे कर दी। तब प्रद्युम्न ने कहा कि इस प्रकार टांग फैलाने का क्या कारण है ?

(३७०) प्रद्युम्न ने हंस कर कहा कि मैं परदेशी ब्राह्मण हूँ। हे देव। यदि तुम्हारी टाँग में पीड़ा हो जावेगी तो मैं कैसे जीवित बचूंगा।

(३७१) फिर वसुदेव ने हंसकर उससे यह बात कही कि तुम्हारा दोष नहीं है तुम अपने मन में शंका मत करो। मेरी टाँग कैसे टूट जावेगी!

(३७२) तब उसने मेंढे को छोड़ दिया। सभा के देखते देखते उसने वसुदेव की टांग तोड दी। टांग तोड़ कर मेंढा वापिस आ गया और वसुदेव राजा भूमि पर गिर पड़े।

(३७३) जब वसुदेव भूमि पर गिर पड़े तो छप्पन कोटि यादव हँसने लगे। फिर वह उस पूरी सभा को हंसा करके सत्यभामा के घर की ओर चल दिया।

प्रद्युम्न का ब्राह्मण का भेष धारण कर सत्यभामा के महल में जाना

(३७४) पीली धोवती तथा जनेउ पहिन कर चन्दन के बारह तिलक लगाये। चारों वेदों का जोर से पाठ पढ़ता हुआ वह ब्राह्मण पटरानी के घर पर जा पहुँचा।

(३७५) वह सिंह द्वार पर जाकर खड़ा हो गया तो द्वारपाल ने अन्दर जा कर सूचना दी। सत्यभामा ने अपने अन्य ब्राह्मणों को (वेद पाठ आदि क्रियाओं से) रोक दिया।

(३७६) सत्यभामा ने जब उसको पढ़ता हुआ सुना तो उसके हृदय में भाव उत्पन्न हुआ और उसको अन्दर बुला लिया। जब रानी का बुलावा आया तो वह लकड़ी टेकता हुआ भीतर चला गया।

(३७७) हाथ में अक्षत एवं जल लेकर रानी को उसने आशीर्वाद दिया। रानी प्रसन्न होकर कहने लगी कि हे विप्र! कृपा करो और जिस वस्तु पर तुम्हारा भाव हो वही मांग लो।

(३७८) फिर सिर हिलाते हुये ब्राह्मण ने कहा कि तुम्हारी बोली सच्ची हो। मैं तुमसे एक ही सार बात कहता हूँ कि भूखे ब्राह्मण को भोजन दो।

(३७९) रानी ने पटायत से कहा कि यह भूखा खड़ा चिल्ला रहा है। इसे अपनी रसोईघर में ले जाओ और जो भी मांगे वही खिलादो।

(३८०) उसने वहां एकत्रित अन्य ब्राह्मणों से कहा कि तुम बहुत से हो और मैं अकेला हूँ। वेद और पुराण में जिसको अच्छा बतलाया गया है उस एक उत्तम आहार को तुम बतलादो।

(३८१) वहां ब्राह्मणों को लड़ते हुये देख कर सत्यभामा ने कहा कि अरे तुम व्यर्थ ही क्यों लड़ रहे हो। एक तो तुम एक दूसरे के ऊपर बैठे हो और फिर आपस में लड़ते हो?

(३८२) अब प्रद्युम्न की बात सुनो। उसने अपनी जृम्भणी विद्या को भेजा जिससे ब्राह्मण आपस में लड़ने लगे तथा एक दूसरे का सिर फोड़ने लगे।

(३८३) रानी ने बात समझ करके कहा कि इन लड़ने वालों को वायु लग गई है जो दूर हो जावें उसे भोजन डाल दो नहीं तो उसे बाहर निकाल दो।

(३८४) तब प्रद्युम्न ने कहा कि भूखे साधुओं की भूख शान्त कर दो। सुनो हमें भूख लग रही है हमको एक मुट्ठी आहार दे दो।

(३८५) सत्यभामा ने तब क्या किया कि एक स्वर्ण थाल उसके आगे रख दिया। हे ब्राह्मण! बैठ कर भोजन करो तथा उनकी सब बातों की ओर ध्यान मत दो।

(३८६) वह ब्राह्मण अर्द्धासन मार कर बैठ गया और अपने आगे उसने चौका लगाया। हाथ धोने के लिये लौटा दिया। थाल परोस दिया तथा नमक रख दिया।

प्रद्युम्न का सभी भोजन का खा जाना

(३८७) चौरासी प्रकार के बनाये हुये बहुत से व्यञ्जन उसने परोसे। बड़े बड़े थाल के थाल परोस दिये और वह एक ही ग्रास में सबको खा गया।

(३८८) चावल परोसे तो चावल खा गया। स्वयं रानी भी वहां आकर बैठ गयी। जितना सामान परोसा था वह सब खा गया। बड़ी कठिनता से वह पत्तल बची।

(३८९) उस ब्राह्मण ने कहा कि हे रानी सुनो। मेरे पेट में अधिक ज्वाला उत्पन्न हुई है। उन लोगों को परोसना छोड़ कर मेरे आगे लाकर सामान डाल दो।

(३६०) जितने लोग जीमन के लिये आमंत्रित थे उन सबका भोजन उस ब्राह्मण को परोस दिया गया। नारायण के लिये जो लड्डू अलग रखे हुये थे वे भी उसने खा लिये।

(३६१) तब रानी मन में बड़ी चिन्ता करने लगी कि इसने तो सभी रसोई खा डाली है। यह ब्राह्मण तो अब भी तृप्त नहीं हुआ है और भूखा भखा कह कर चिल्ला रहा है।

(३६२) उस वीर ने कहा कि यह तो बड़ी बुरी बात है कि तूने नगर के सब लोगों को निमंत्रित किया है। वे आकर क्या जीमेंगे। तू एक ब्राह्मण को भी तृप्त नहीं कर सकी।

(३६३) रानी के चित्त में विचार पैदा हुआ कि अब इसको कहां से क्या लाकर परोसूंगी अब भूखे ब्राह्मण ने क्या किया कि अपने मुंह में अंगुली डाल कर उल्टी कर दी।

(३६४) उस ब्राह्मण ने क्या कौतुक किया कि सब खाली बर्तनों को उल्टी से भर दिया। इस प्रकार वह रानी का मान भंग करके वहां से खड़ा हो गया।

प्रद्युम्न का विकृत रुप धारण बनाकर रुक्मिणी के घर पहुँचना

(३६५) मूंड मुंडा कर तथा कमंडलु हाथ में लेकर झुका हुआ वह कुबड़ा बन गया। वह वहां से लौटा। उसके बड़े बड़े दांत थे तथा कुरूप देह थी। वह अपनी माता के महल की ओर चला।

(३६६) रुक्मिणी क्षण क्षण में अपने महल पर चढती थी और क्षण क्षण में वह चारों ओर देख रही थी कि मुझ से नारद ने यह बात कही थी कि आज तेरे घर पुत्र आवेगा।

(३६७) मुनि ने जिन जिन बातों को कही थी वे सब चिन्ह पूरे हो रहे हैं। मनोहर आम्र के वृक्ष फले हुये देखे तथा उसका आंचल पीला दिखाई देने लगा।

(३६८) सूखी बावड़ी नीर से भर गयी। दोनों स्तनों में दूध भर आया तब रुक्मिणी के मन में आश्चर्य हुआ इतने ही में एक ब्रह्मचारी वहां पहुँचा।

(३६६) तब रुक्मिणी ने नमस्कार किया तथा उस खोड़े ने धर्म वृद्धि हो ऐसा कहा। विनय पूर्वक उसने उस ब्रह्मचारी का आदर किया तथा स्वर्ण सिंहासन बैठने के लिये दिया।

(४००) रुक्मिणी ने तो समझा करके क्षेमकुशल पूछा किन्तु वह भूखा भूखा चिल्लाता रहा। रुक्मिणी ने अपनी सखी को बुलाकर सब बात बता दी तथा इसका जीमन कराओ और कुछ भी देर मत लगाओ ऐसा कहा।

(४०१) तत्काल वह जीमन कराने के लिये उठी तो प्रद्युम्न ने अग्नि स्तंभिनी विद्या को याद किया। उस कारण न तो भोजन ही पक सका और चूल्हा धुआं धार हो गया तथा वह भूखा भूखा चिल्लाता रहा।

(४०२) मैं सत्यभामा के घर गया था लेकिन वहां भी खाना नहीं मिला तथा उलटा भूखा रह गया। जो दिया वह भी छीन लिया। इस प्रकार मेरे तीन लंघन हो गये हैं।

(४०३) रुक्मिणी ने चित्त में सोचा और उसको लड्डू लाकर परोस दिये। एक मास तक खाने के लिये जो लड्डू रखे हुये थे वे सब कुबड़े रुप धारी प्रद्युम्न ने खा लिये।

(४०४) जिस आधे लड्डू को खा लेने पर नारायण पांच दिन तक तृप्त रहते थे। तब रुक्मिणी ने मन में विचारा कि कुछ कुछ समझ में आता है कि यही वह है अर्थात् मेरा पुत्र है।

(४०५) तब रानी के मन में आश्चर्य हुआ कि इस प्रकार का पुत्र किस घर में रह सकता है। ऐसा पुत्र उत्पन्न हो सकता है यह कहा नहीं जा सकता। नारायण को कैसे विश्वास कराया जाय।

(४०६) तब रुक्मिणी के मन में संदेह पैदा हुआ कि यह कालसंवर के घर बड़ा हुआ है वहां उसने कितनी ही विद्याएँ सीख ली है यह उसी विद्या बल का प्रभाव है।

(४०७) यह विचार कर रुक्मिणी ने उससे पूछा कि हे महाराज आपका स्थान कौनसा है। आपका आगमन कहाँ से हुआ है तथा किस गुरु ने आपको दीक्षा दी है।

(४०८) आपकी कौनसी जन्मभूमि है तथा माता पिता के सम्बन्ध में मुझे प्रकाश डालिये। फिर उसने विनय के साथ पूछा कि आपने यह व्रत किस कारण ले रखा है?

(४०९) तब वह क्रोधित होकर बोला कि बाह्य गुरु के देखने से क्या होगा। गोत्र नाम तो उससे पूछा जाता है जिसका विवाह मंगल होने वाला होता है।

(४१०) हम परदेशी हैं देश देशान्तर में फिरते रहते हैं। भिक्षा मांग करके भोजन करते हैं। तू प्रसन्न होकर हमको क्या दे देगी और रूठ जाने पर हमारा क्या ले लेगी।

(४११) जब वह खोडा क्रोधित हुआ तो उससे रुक्मिणी मन में उदास हो गयी। वह हाथ जोड़कर उसे मनाने लगी। मेरी भूल हो गयी थी आप दोष मत दीजिये।

(४१२) तब प्रद्युम्न ने उस समय कहा कि हे माता मुझे मन से क्यों भूल गयी हो। मुझे सच्चा प्रद्युम्न समझो तथा मैं पूछूं जिसका जवाब दो।

(४१३) तब मन में प्रसन्न होकर उसने (रुक्मिणी) जिस प्रकार अपना विवाह हुआ था तथा जिस प्रकार प्रद्युम्न हर लिया गया था सारा पीछे का कथान्तर कहा।

(४१४) उसे धूमकेतु हर ले गया था फिर उसे यमसंवर घर ले गया। मुझे यह सब बात नारद ने कही थी तथा कहा था कि आज तुम्हारा पुत्र घर आवेगा।

(४१५) और जो मुनि ने वचन कहे थे उसके अनुसार सब चिह्न पूरे हो रहे हैं। लेकिन अब भी पुत्र नहीं आवे तो मेरा मन दुखित हो जावेगा।

(४१६) सत्यभामा के घर पर बहुत उत्सव हो रहा है क्योंकि आज भानुकुमार का विवाह है। मैं आज होड़ में हार गयी हूँ तथा कार्य की सिद्धि नहीं हुई है। इसी कारण मेरा मस्तक आज मूंडा जावेगा।

(४१७) प्रद्युम्न माता के पास पूरी कथा सुनकर हाथ से पकड़ कर अपना माथा धुना। मन में पछतावा मत करो तथा मुझे ही तुम अपना पुत्र मिला हुआ जान लो।

(४१८) इसी समय प्रद्युम्न ने विचार किया और बहु रूपिणी विद्या को स्मरण किया। अपनी माता को उसने ओझल कर दिया और दूसरी मायामयी रुक्मिणी बना दी।

सत्यभामा की स्त्रियों का रुक्मिणी के केश उतारने के लिये आना

(४१९) इतने में सत्यभामा की ओर से बहुत सी स्त्रियां मिल कर तथा नाई को साथ लेकर चली और जहां मायामयी रुक्मिणी थी वहां वे आ पहुँची।

(४२०) पांव पडकर उससे निवेदन किया कि उन्हें सत्यभामा ने उसके पास भेजी हैं। हे स्वामिनी तुम अपने मन में हीनतामत लाओ तथा भंवरों के समान अपने काले केशों को उतारने दो।

(४२१) वचनों को सुनकर सुंदरी ने कहा कि तुम्हारा बोल सच्चा हो गया है। अब कामदेव (प्रद्युम्न) का चरित्र सुनो कि नाई ने अपना ही सिर मूंड लिया।

प्रद्युम्न द्वारा उनके अंग काट लेना

(४२२) उस नाई ने अपने हाथ की अंगुली को काट लिया और साथ की स्त्रियों को भी मूंड लिया। उनके नाक कान खोड़े कर दिये फिर वे सब वापिस अपने घर की ओर चल दीं।

(४२३) वे स्त्रियां गाती हुई नगर के बीच में से निकलीं। किस पुरुष ने इन स्त्रियों को विकृत रूप कर दिया है ? सबको यह बड़ा विचित्र अचंभा हुआ और नगर के लोग हँसी करने लगे।

(४२४) उसी क्षण वे रणवास में गयीं और सत्यभामा के पास जाकर खड़ी हो गयीं। उनका विपरीत रूप देखकर वह बोली कि किसने तुम्हारा विकृत रूप कर दिया है ?

(४२५) तब वे दुःखित होकर कहने लगी कि हम रुक्मिणी के घर गयी थीं। अब उन्होंने टटोल कर अपने नाक कान देखे तो वे नाई की तरह रोने लगीं।

(४२६) इस घटना को सुनकर खबर देने वाले गुप्तचर वहां आये जहां रणवास में रुक्मिणी बैठी हुई थी तथा कहने लगे कि बहुत सी स्त्रियों के सिर मूंडकर और नाक कान काट कर विकृत रूप बना दिया है, ऐसा हमने सुना है।

(४२७) इस बात को सुनकर रुक्मिणी ने कहा कि निश्चय रूप से यही प्रद्युम्न है। हे वीरों में श्रेष्ठ एवं साहस तथा धैर्य को रखने वाले सब कार्य छोड़कर प्रकट हो जाओ।

प्रद्युम्न का अपने असली रूप में होना

(४२८) तब प्रद्युम्न प्रकट हो गया जिसके समान रूप वाला दूसरा कोई नहीं था। वह अत्यन्त सुंदर एवं लक्षण युक्त था। तब रुक्मिणी ने समझा कि यह उसका पुत्र है।

(४२९) जब रुक्मिणी ने प्रद्युम्न को देखा तो उसका सिर चूम लिया और गोद में ले प्रसन्न मुख होकर उसे कंठ से लगा लिया तथा कहा कि आज मेरा जीवन सफल है। आज का दिन धन्य है कि पुत्र आ गया। जिसे १० मास तक हृदय में धारण कर बड़ा दुःख सहन किया था, मुझे यह पछतावा सदैव रहेगा कि मैं उसका बचपन नहीं देख सकी।

(४३०) माता के वचन सुनकर वह पांच दिन का बच्चा हो गया। फिर वह क्षण भर में बढ़ कर एक महीने का हो गया तथा फिर वह प्रद्युम्न बारह महीने का हो गया।

(४३१) कभी वह लौटने लगा, कभी हठ करने लगा और कभी दौड़कर आंचल से लगने लगा। वह कभी खाने को मांगता था और इस प्रकार उसने बहुत भेष उत्पन्न किये।

(४३२) वहां इतना चरित करने के पश्चात् फिर वह अपने रूप में आ गया। उसने कहा कि हे माता तुम्हें मैं एक कौतुक दिखलाऊंगा।

सत्यभामा का हलधर के पास दूती को भेजना

(४३३) अब दूसरी ओर कथा आ रही है। सत्यभामा ने स्त्रियों को बलराम के पास भेजा और कहलाया कि हे बलराम रुक्मिणी के ऐसे कार्य के लिये आप साक्षी बने थे।

(४३४) स्त्रियां जाकर वहां पहुँची जहां बलराम कुमार बैठे हुये थे। बड़ी ही युक्ति के साथ विनय पूर्वक कहा कि रुक्मिणी ने ऐसे काम किये हैं।

हलधर के दूत का रुक्मिणी के महल पर जाना

(४३५) बलराम ने क्रोधित होकर दूत को भेजा और वह तत्काल पवन-वेग की तरह रुक्मिणी के पास पहुँचा। सिंह-द्वार पर जाकर खड़ा हो गया और रुक्मिणि को इसकी सूचना भेज दी।

(४३६) तब मदन (प्रद्युम्न) ने फिर विचार किया और मूंडे हुये ब्राह्मण का भेष धारण किया। उसने स्थूल पेट एवं विकृत रूप धारण कर लिया तथा वह आड़े होकर द्वार पर गिर गया।

(४३७) तब दूत ने उससे कहा कि हे ब्राह्मण उठो जिससे हम भीतर जा सकें। फिर उत्तर में ब्राह्मण ने कहा कि वह उठ नहीं सकता। लौट करके फिर आना।

(४३८) उसके वचनों को सुनकर वे क्रोधित होकर उठे और उसका पैर पकड़ कर एक ओर डाल दिया। तब उसने कहा कि ऐसा करने से यदि ब्राह्मण मर गया तो उनको गोहत्या का पाप लगेगा।

प्रवेश न प्राप्त कर सकने के कारण दूत का वापिस लौटना

(४३९) इस प्रकार जानकर वह वापिस चला गया तथा बलभद्र के पास खड़ा हो गया। द्वार पर एक ब्राह्मण पड़ा हुआ है वह ऐसा लगता है मानों पांच दिन से मरा पड़ा हो।

(४४०) हम उन तक प्रवेश प्राप्त नहीं कर सके क्योंकि वह पोल (द्वार) को रोक कर पड़ा हुआ है यदि उसके पैर पकड़ कर एक ओर डाल दिया जावे और वह मर जावेगा तो ब्राह्मण हत्या का पाप लगेगा।

स्वयं हलधर का रुक्मिणी के पास जाना

(४४१) बात सुनकर बलभद्र क्रोध से प्रज्वलित होकर चले। तथा उनके साथ दस बीस आदमी गए और वे पवन-वेग की तरह रुक्मिणी के घर पहुँच गए।

(४४२) वे सिंह द्वार पर जाकर खड़े हो गये और ब्राह्मण को द्वार पर पड़ा हुआ देखा तब बलभद्र ने उसे निवेदन किया कि हे ब्राह्मण उठो भीतर जावेंगे।

(४४३) तब ब्राह्मण ने बलभद्र (बलराम) से कहा कि वह सत्यभामा के घर जीमने गया था। उसने उदर को सरस आहार से इतना भर लिया है कि पेट अफर गया है और वह उठ भी नहीं सकता।

(४४४) तब बलभद्र (बलराम) हंस कर कहने लगे कि तुम एक ही स्थान पर बैठ कर खाते रहे। ब्राह्मण खाने में बड़े लालची होते हैं तथा बहुत खाते हैं यह सब कोई जानते हैं।

(४४५) तब वह ब्राह्मण क्रोधित होकर बोला कि बलराम तुम बड़े निर्दयी हैं। दूसरे तो ब्राह्मण की सेवा करते हैं लेकिन तुम दुःख की बात कैसे बोलते हो?

(४४६) तब बलभद्र क्रोधित होकर उठे और उसके पैर पकड़ कर निकालने के लिये चले। ब्राह्मण ने कहा कि मुझे गाली क्यों देते हो? आओ मुझे बाहर निकाल दो।

(४४७) तब हलधर उसे निकालने लगे तो प्रद्युम्न ने अपनी माता रुक्मिणी से कहा। एक बात मैं तुमसे पूछता हूँ यह कौन वीर है, मुझे कहो।

रुक्मिणी द्वारा हलधर का परिचय

(४४८) यह छप्पनकोटि यादवों के मुख मंडल की शोभा है और इन्हें बलभद्रकुमार कहते हैं। यह सिंह से युद्ध करना खूब जानते हैं। यह तुम्हारे पितृव्य (बड़े पिता) है यह मैं तुम से कहती हूँ।

(४४६) पैर पकड़ कर वह (बलराम) बाहर खैंच ले गया किंतु वह (प्रद्युम्न) पैर बढ़ाकर धड सहित वहीं पड़ा रहा। यह आश्चर्य देखकर बलभद्र ने कहा कि यह गुप्त वीर कौन है?

प्रद्युम्न का सिंह रुप धारण करना

(४५०) पांव टेक कर वह भूमि पर खड़ा हो गया और उसी क्षण उसने सिंह का रुप धारण कर लिया। तब हलधर ने अपने आयुध को सम्हाला। फिर वे दोनों वीर ललकार कर भिड़ गये।

(४५१) युद्ध करने लगे, भिड़ने लगे, अखाड़े बाजी करने लगे दोनों वीर मल्ल युद्ध करने लगे। सिंह रूप धारी प्रद्युम्न संभल कर उठा और बलभद्र के पैर पकड़ कर अखाड़े में डाल दिया।

(४५२) जहां छप्पन कोटि यादवों के स्वामी नारायण थे वहां जाकर हलधर गिरे। सभी लोग आश्चर्य चकित हो गये और कृष्ण भी कहने लगे कि यह बड़ी विचित्र बात है।

चतुर्थ सर्ग

रुक्मिणी के पूछने पर प्रद्युम्न द्वारा अपने बचपन का वर्णन

(४५३) इतनी बात तो यहां ही रहे। अब यह कथा रुक्मिणी के पास के प्रारम्भ होती है। वह अपने पुत्र से पूछने लगी कि इतना बल पौरुष कहां से सीखा ?

(४५४) मेघकूट नामक जो पर्वतीय स्थान है वहां यमसंवर नामका राजा निवास करता है। हे माता रुक्मिणी! सुनों मैंने वहीं से अनेक विद्यायें सीखी हैं।

(४५५) मैं आपसे कहता हूँ कि मेरे वचन सुनो। नारद ऋषि मुझे यहां लाये हैं। फिर प्रद्युम्न हाथ जोड़ कर बोला कि मैं उदधि माला को ले आया हूँ।

(४५६) तब माता रुक्मिणी ने हंसकर कहा कि भैया, नारद कहां है। हे पुत्र सुनो मैं तुमसे कहती हूँ कि उदधिमाला कहां है उसे मुझे दिखलाओ।

प्रद्युम्न द्वारा रुक्मिणी को यादवों की सभा में ले जाने की स्वीकृति लेना

(४५७) तब प्रद्युम्न ने रुक्मिणी से कहा कि हे माता मैं तुमसे एक वचन मांगता हूँ। मैं तुम्हें तुम्हारी बाँह पकड़ कर के सभा में बैठे हुये यादवों को ललकार करके ले जाऊंगा।

यादवों के बल पौरुष का रुक्मिणी द्वारा वर्णन

(४५८) माता ने उस साहसी की बात सुनकर कहा कि ये यादव लोग बड़े बलवान हैं बलराम और कृष्ण जहां है उनके सामने से तुम कैसे जाने पाओगे।

(४५६) पांचों पाण्डव जो पंच यति हैं तुम जानते ही हो ये कुन्ती के पुत्र हैं तथा अतुल बल के धारक हैं। अर्जुन, भीम, नकुल और सहदेव इनके पौरुष का कोई पार नहीं है।

(४६०) छप्पन कोटि यादव बड़े बल शाली हैं उनके भय से नव खंड कांपता है। ऐसे कितने ही क्षत्रिय जहां निवास करते हैं तुम अकेले उन्हें कैसे जीत सकोगे ?

(४६१) तब प्रद्युम्न क्रुद्ध होकर बोला कि मैं अशेष यादवों के बल के अभिमान को चूर कर दूंगा, और पाण्डवों को जिनके सभी नरेश साथी हैं युद्ध में हरा दूंगा। नारायण और बलभद्र सभी को रण में समाप्त कर दूंगा केवल नेमिकुमार को छोड़कर जो कि जिनेन्द्र भगवान ही हैं।

(४६२) मदनकुमार का चरित्र सब कोई सुनो। प्रद्युम्न नारायण से युद्ध कर रहा है। पिता और पुत्र दोनों ही रण में युद्ध करेंगे यह देखने के लिये देवता भी आकाश में विमान पर चढ कर आ गये।

रुक्मिणी की बाँह पकड़ कर यादवों की सभा में ले जाकर उसे छुड़ाने के लिए ललकारना

(४६३) तब प्रद्युम्न क्रोधित होकर तथा माता की बाँह पकड़ कर ले गया। जिस सभा में नारायण बैठे थे वहां मायामयी रुक्मिणी के साथ पहुँच गया।

(४६४) सभा को देखकर प्रद्युम्न बोला कि तुम में कौन बलवान क्षत्रिय है उसको दिखाकर रुक्मिणी को ले जा रहा हूँ। यदि उसमें बल है तो आकर छुडा ले।

सभा में स्थित प्रत्येक वीर को सम्बोधित करके युद्ध के लिए ललकार

(४६५) हे नारायण ! तुम मथुरा के राजा कंस को मारने वाले कहे जाते हो। जरासंध को तुमने पछाड कर मार दिया था। अब मुझ से रुक्मिणी को आकर बचा लो।

(४६६) दशों दिशाओं को संबोधित करके वह कहने लगा, कि हे वसुदेव! तुम रण के भेद को खूब जानते हो। तुम छप्पन कोटि यादव मिल कर के भी यदि शक्ति है तो रुक्मिणी को आ कर छुडा लो।

(४६७) हे बलभद्र! तुम बड़े बलवान एवं श्रेष्ठ वीर हो। रण संग्राम में बड़े धीर कहे जाते हो। हल जैसे तुम्हारे पास हथियार हैं। मुझ से रुक्मिणी आकर छुडालो।

(४६८) हे अर्जुन! तुम खांडव वन को जलाने वाले हो, तुम्हारे पौरुष को सब कोई जानते हैं। तुमने विराट राज से गाय छुडायी थी। अब तुम रुक्मिणी को भी आकर छुडा लो।

(४६९) हे भीम! तुम्हारे हाथ में गदा शोभित है। अपना पुरुषार्थ मुझे आज दिखलाओ। तुम पांच सेर भोजन करते हो। युद्ध में आकर अब क्यों नहीं भिड़ते हो।

(४७०) हे ज्योतिषी सहदेव! मेरे वचन सुनो। तुम्हारे ज्योतिष के अनुसार क्या होगा यह बतलाओ। फिर हंसकर प्रद्युम्न ने पूछा कि तुम्हारे समान कौन रण जान सकता है?

(४७१) हे नकुल! तुम्हारा पुरुषार्थ भी अतुल है। तुम्हारे पास कुन्त (भाला) नामक हथियार है। अब तुम्हारे मरने का अवसर आ गया है। मुझ से रुक्मिणी आकर छुडाओ।

(४७२) तुम नारायण और बलभद्र होकर भी छल से कुंडलपुर गये थे। उसी समय तुम्हारी बात का पता लग गया था कि तुम रुक्मिणी को चोरी से हर कर लाये थे।

(४७३) प्रद्युम्न उस अवसर पर बोला कि अब रण में आकर क्यों नहीं भिडते हो। मैं तुम से एक अच्छी बात कहता हूँ। एक ओर तुम सब क्षत्रिय वीर हो और एक ओर मैं अकेला हूँ।

प्रद्युम्न की ललकार सुनकर श्रीकृष्ण का युद्ध के प्रस्ताव को स्वीकार करना

(४७४) तब श्रीकृष्ण सुनकर बड़े क्रोधित हुये जैसे अग्नि में घी डाल दिया हो। मानों सिंह ने वन में गर्जना की हो अथवा सागर और पृथ्वी हिलने लगे हों। तब सब यादव अपनी सेना सजाने लगे। भीम ने गदा ली, अर्जुन ने अपने कोदंड धनुष को उठा लिया और नकुल ने हाथ में भाला ले लिया जिससे तमाम ब्रह्माण्ड कंपित हो गया।

(४७५) तैयार हो ! तैयार हो ! इस प्रकार का चारों ओर कहला दिया। यदुराज श्रीकृष्ण तैयार हो गये। घोड़ों को सजाओ, मस्त हाथियों को तैयार करो तथा सुभट सुसज्जित हो जाओ ! आज रण में भिड़ना होगा। ऐसा आदेश दिया।

(४७६) आज्ञा मिलते ही सुभट रण को चल दिये। ठः ठः चारों ओर ये शब्द करने लगे, किसी ने हाथ में तलवार तथा किसी ने हथियार सजाये।

युद्ध की तैयारी का वर्णन

(४७७) कितनों ही मदोन्मत्त हाथी चिंघाड़ रहे थे। कितने ही सुभट तैयार हो कर रण करने चढ़ गये। कितनों ने घोड़ों पर जीन रख दी और कितनों ने अपने हथियार संभाल लिये।

(४७८) कितने ही ने युद्ध करने के लिये 'टाटण' ले लिये। कितनों ही ने अपने सिरों पर टोप पहिन लिये। कितनों ही ने शरीर में कवच धारण कर लिया और इस प्रकार वे सब राजा सजधज के चले।

(४७६) किसी ने हाथ में भाला सजा लिया और कोई सान पर चढी हुई तलवार लेकर निकला। किसी ने अपने हाथों में सेल ले लिया और किसी ने कमर में छुरी बांध ली।

(४८०) कुछ लोग बात समझा कर कहने लगे कि क्या इन सुभटों को वायु लग गयी है। जिसने रुक्मिणी को हरा है वह मनुष्य तुम्हारे स्तर का नहीं है।

(४८१) एक ही स्थान पर सब क्षत्रिय मिल गये और घटाटोप (मेघ जैसे) होकर युद्ध के लिए चले। तुच्छ बुद्धि से उपाय मत करो अब यह मरने का दाव आ गया है।

(४८२) शीघ्र ही चतुरंगिनी सेना वहां मिल गयी। वहां घोडे, हाथी, रथ और पैदल सेना थी। अप्रमाण छत्र एवं मुकुट दिखने लगे तथा आकाश में विमान चलने लगे।

(४८३) इस प्रकार ऐसी असंख्यात सेना चली और चारों ओर खूब नगाड़े बजने लगे। घोड़ों के खुरों से जो धूल उछली उससे ऐसा लगता था मानों तत्काल के भादों के मेघ ही हों।

सेना के प्रस्थान के समय अपशकुन होना

(४८४) सेना के बायीं दिशा की ओर कौवा कांव कांव करने लगा। तथा काले सर्प ने रास्ता काट दिया। दाहिनी ओर तथा दक्षिण दिशा की ओर शृगाल बोलने लगे।

(४८५) वन में असंख्य जीव दिखाई दिये। ध्वजायें फकड़ने लगी एवं उन पर आकर पक्षी बैठने लगे। सारथी ने कहा कि शकुन बुरे हैं इसलिये आगे नहीं चलना चाहिये।

(४८६) तब उस अवसर पर केशव बोले कि हम कोई विवाह करने थोड़े ही जा रहे हैं जो शकुनों को देखें। वे सारथी को समझाने लगे कि जो कुछ विधाता ने लिखा है उसे कौन मेट सकता है।

(४८७) नारायण शकुनों की परवाह किये बिना ही चले। जब प्रद्युम्न ने सेना को देखा तो मन में कुछ चिंता हुई। माता रुक्मिणी को विमान में बैठा दिया और फिर मायामयी सेना खडी कर दी।

विद्या बल से प्रद्युम्न द्वारा उतनी ही सेना तैयार करना

(४८८) तब प्रद्युम्न ने मन में चिन्तन किया और युद्ध करने वाली विद्या का स्मरण किया। जितनी सेना सामने थी उतनी ही अपनी सेना तैयार कर दी।

युद्ध वर्णन

(४८९) दोनों दल युद्ध के लिए तैयार हो गये। सुभटों ने धनुषों को सजाकर अपने हाथों में ले लिया। कितने ही योद्धाओं ने तलवारों को अपने हाथ में ले लिया। वे ऐसे लगने लगे मानों काल ने जीभ निकाल रखी हो।

(४९०) हाथी वालों से हाथी वाले योद्धा भिड़ गये तथा घुड़सवार सेना युद्ध करने लगी। पैदल सेना से पैदल सेना लड़ने लगी। तलवार के वार के साथ २ वे भी पड़ने एवं उठने लगे।

(४९१) कोई ललकार रहा है कोई लड़ रहा है। कोइ मारो मारो इस प्रकार चिल्ला रहा है। कोई वीर युद्ध स्थल में लड़ रहा है और कितने ही कायर सैनिक भाग रहे हैं।

(४९२) कोई वीर दोनों भुजाओं से भिड़ गये। कोई ललकार करके लड़ रहा था। कोई धनुष की टंकार कर रहा था। कोई तलवार के वार से शत्रुओं का संहार कर रहा था।

(४९३) युद्ध देखकर नारायण बोले, हे अर्जुन और भीम! आज तुम्हारा अवसर है। हे नकुल और सहदेव! मैं तुमसे कहता हूँ कि आज अपना पौरुष दिखलाओ।

(४९४) तब श्रीकृष्ण दशोंदिशाओं तथा वसुदेव को सुनाकर ललकार कर कहने लगे। हे बलिभद्र! तुम्हारा अवसर है, आज अपना पौरुष दिखलाओ।

(४९५) भीमसेन क्रोधित होकर घोड़े पर चढ़ा तथा हाथ में गदा लेकर रण में भिड़ गया। वे हाथी के समान प्रहार करने लगे जिससे उनके सामने क्षत्रिय भागने लगे और कोई बचा नहीं।

(४९६) तब अर्जुन क्रोधित हुआ और धनुष चढाकर हाथ में लिया। वह चतुरंगिनी सेना के साथ ललकार कर भिड़ गया। कोई भी अर्जुन को रण से नहीं हटा सका।

(४९७) सहदेव ने हाथ में तलवार ली और नकुल भाला लेकर प्रहार करने लगा। हलधर से कौन लड़ सकता था। वे अपने हलायुध को लेकर प्रहार करने लगे।

(४९८) सभी यादव एव योद्धा रणभूमि में साहस के साथ भिड़ गये। वसुदेव चारों ओर लड़ने लगे जिससे बहुत से सुभट लड़कर रण में गिर पड़े।

प्रद्युम्न द्वारा विद्या-बल से सेना को धराशायी करना

(४९९) तब प्रद्युम्न ने मन में बड़ा क्रोध किया और मायामयी युद्ध करने लगा। सारे सुभट रण में विद्या से मूर्छित होकर गिर पड़े जिसे विमानों में चढ़े हुये देवों ने देखा।

(५००) स्थान स्थान पर रथ और घुड़सवार गिर पड़े। रत्नों से परिवेष्ठित छत्र टूट गये। स्थान स्थान पर अगणित हाथी पड़े हुये थे जो लड़ाई में मदोन्मत्त होकर आये थे।

(५०१) जब सभी सेना युद्ध करती हुई पड़ गयी तब श्रीकृष्ण खिन्न चित्त हो गये। वे हाहाकार करने लगे तथा सोचने लगे कि यह कौन बलवान वीर है।

रण क्षेत्र में पड़ी हुई सेना को दशा

(५०२) देखते देखते सभी यादव वीर गण गिर पड़े तथा साथ २ सभी सेनायें गिर पड़ी। जिनसे देवता लोग कांपते थे तथा जिनके चलने से पृथ्वी थर २ कांपती थी। जिन वीरों को आज तक कोई नहीं जीत सका था वे सभी क्षत्रिय आज हारे हुये पड़े थे यह बड़े आश्चर्य की बात है। यह यादव कुल को नाश करने के लिये मानों काल रूप होकर ही अवतरित हुआ है।

(५०३) श्रीकृष्ण चारों ओर फिर फिर करके सेना को देखने लगे। चारों ओर क्षत्रियों के पड़े रहने के कारण कोई स्थान नहीं दिखायी देता था। केवल मोती और रत्नों की माला से जड़े हुये छत्र रण में पड़े हुये दिखलाई दिये।

(५०४) अगणित हाथी, घोड़े और रथ पड़े हुये थे। मदोन्मत्त हाथी स्थान स्थान पर पड़े हुये थे। जगह जगह पर निरन्तर खून की धारा बह रही थी और वेताल स्थान २ पर किलकारी मार रहे थे।

(५०५) गृद्धिणी और सियार पुकार रहे थे मानों यमराज ही उनको यह कह रहा था कि शीघ्र चलो रसोई पड़ी हुई है, आकर ऐसा जीमलो जिससे पूर्ण तृप्त हो जाओ।

श्रीकृष्ण का क्रोधित होकर युद्ध करना

(५०६) जब श्रीकृष्ण क्रोधित होकर रथ पर चढ़े तो ऐसा लगा मानो सुमेरु पर्वत कांपने लगा हो। जब वे संग्राम के लिये चले तो सकल महीतल कांपने लगा एवं शेषनाग भी हिल गया।

युद्ध भूमि में रथ बढ़ाने पर शुभ शकुन होना

(५०७) जब अपने रथ को उनने युद्ध में आगे बढ़ाया तब उनका दाहिना नेत्र तथा दाहिना अंग फड़कने लगा। तब श्रीकृष्ण ने सारथी से कहा कि हे सारथी सुनो अब शुभ क्या करेगा ?

(५०८) क्योंकि रण में सभी सेना जीत ली गयी है और रुक्मिणी को भी हरण कर लिया गया है। तो भी क्रोध नहीं आ रहा है तो इसका क्या कारण है इस प्रकार रण में धैर्य रखने वाले श्रीकृष्ण ने कहा।

(५०६) उस समय वह सारथी बोला यह आश्चर्य है कि यह कौन है ? तुम्हारी ललकार से यदि यह सुभट भाग जाये तो तुम्हारे हाथ रुक्मिणी आ सकती है ।

(५१०) उससे वीर शिरोमणि केशव बोले हे क्षत्रिय ! मेरे वचन सुनो । तुमने सभी मदोन्मत्त सेना का संहार कर दिया और अब ! मेरी स्त्री रुक्मिणी को भी ले जा रहे हो ।

श्रीकृष्ण द्वारा प्रद्युम्न को अभयदान देने का प्रस्ताव

(५११) तुम कोई पुण्यवान क्षत्रिय हो । तुम्हारे ऊपर मेरा क्रोध उत्पन्न नहीं हो रहा है । मैं तुम्हें जीवन दान देता हूँ लेकिन मुझे रुक्मिणी वापिस कर दो ।

प्रद्युम्न द्वारा श्रीकृष्ण की वीरता का उपहास करना

(५१२) तब प्रद्युम्न हँस कर बोला कि रण में ऐसी बात कौन कहता है तुम्हारे देखते देखते मैंने रुक्मिणी को हरण किया और तुम्हारे देखते देखते ही सारी सेना गिर गयी ।

(५१३) जिस के द्वारा तुम रण में जीत लिये गये हो अब क्यों उसको अपना साथी बना रहे हो ? हे श्रीकृष्ण तुम्हें लज्जा भी नहीं आ रही है कि अब कैसे रुक्मिणी मां रहे हो ।

(५१४) मैंने तो सुना था कि युद्ध में आगे रहने वाले हो लेकिन अब मैंने तुम्हारा सब पुरुषार्थ देख लिया है । तुम्हारे कहने से कुछ नहीं हो सकता । तुम्हारी सारी सेना पडी हुई है और तुमने हृदय से हार मान ली है ।

(५१५) फिर प्रद्युम्न ने हंस कर कहा कि तुम पृथ्वी पर पड़े हुए अपने कुटुम्ब को देख कर भी सहन कर रहे हो । मैंने तुम्हारी आज मनुष्यता (पुरुषार्थ) जांचली है तुमको रुक्मिणि से कोई काम नहीं है अर्थात् तुम रुक्मिणि के योग्य नहीं हो ।

(५१६) तुमने परिग्रह की आशा छोड़ दी है तो रुक्मिणी को भी छोड दो । प्रद्युम्न कहता है कि अपना जीव बचाकर चले जाओ ।

प्रद्युम्न के उत्तर के कारण श्रीकृष्ण का क्रोधित होना एवं धनुष बाण चलाना

(५१७) यदुराज मन में पछताने लगे कि मैंने तो इससे सत्यभाव से कहा था लेकिन यह मुझ से बढ़ २ कर बातें कर रहा है अब इसे मारता हूँ यह कहीं भाग न जावे क्रोध उत्पन्न हुआ और चित्त में सावधान हुये तथा सारंग पाणि ने धनुष को चढा लिया।

(५१८) वे सोचने लगे कि अर्द्ध चन्द्राकार नामक बाण से मैं इसे मारूंगा और अब इसका पराक्रम देखूंगा। जब प्रद्युम्न ने श्रीकृष्ण को धनुष चढ़ाते हुये देखा तो उसे भी क्रोध आ गया।

(५१९) प्रद्युम्न ने तब उससे कहा कि हे कृष्ण तुम्हारा धनुष तो छिन गया है। जब श्रीकृष्ण का धनुष टूट गया तो उन्होंने दूसरा धनुष चढाया।

(५२०) फिर प्रद्युम्न ने बाण छोड़ा जिससे श्रीकृष्ण के धनुष की प्रत्यंचा टूट गयी। तब श्रीकृष्ण ने क्रोधित होकर तीसरे धनुष को अपने हाथ में लिया।

(५२१) श्रीकृष्ण जब जब प्रद्युम्न पर वार करने के लिए बाण चढ़ाते तब तब बाण टूट कर गिर जाता। विष्णु ने जब तीसरा धनुष साधा लेकिन क्षण भर में ही प्रद्युम्न ने उसे भी तोड़ डाला।

प्रद्युम्न द्वारा श्रीकृष्ण की वीरता का पुनः उपहास करना

(५२२) प्रद्युम्न ने हंस हंस करके श्रीकृष्ण से बात कही कि आपके समान कोई वीर क्षत्रिय नहीं है? आपने यह पराक्रम किससे सीखा? आपका गुरु कौन था यह मुझे भी बताइये।

(५२३) तुम्हारे धनुष बाण छीन लिये गये तथा तुम उन्हें अपने पास नहीं रख सके। तुम्हारा पौरुष मैंने आज देख लिया है क्या इसी पराक्रम से राज्य सुख भोग रहे थे?

(५२४) फिर प्रद्युम्न उनसे कहने लगा कि तुमने जरासिंध तथा कंस को कैसे मारा? यह सुनकर श्रीकृष्ण बहुत खिन्न हो गये तथा दूसरा मायामयी रथ मंगाकर उस पर बैठ गये।

श्रीकृष्ण का क्रोधित होकर विभिन्न प्रकार के बाणों से युद्ध करना

(५२५) रथ पर चढकर यदुराज ने क्रोधित होकर अपने हाथ में धनुष ले लिया। प्रज्वलित अग्निबाण को फैंका जिससे चारों दिशाओं में तेज ज्वाला पैदा हो गई।

(५२६) प्रद्युम्न की सेना भागने लगी। वह अग्नि बाण से निकलने वाली ज्वाला को सहन नहीं कर सकी। घोड़े हाथी रथ आदि जलने लगे और इस प्रकार उसकी सेना के पैर उखड़ गये।

(५२७) प्रद्युम्न को क्रोध आया उसकी रण की ललकार को कौन सह सकता है। उसने पुष्प माला नामक धनुष हाथ में ले लिया और उस पर मेघबाण को चढ़ाया।

(५२८) घन घोर बादल गर्जने लगे और पृथ्वी को जल से भरने लगे जब जल ने अग्नि को बुझा दिया तब इस जल से श्रीकृष्ण को सेना बहने लगी।

(५२९) जो क्षत्रिय श्रेष्ठ रथ पर सवार थे वे जल के प्रवाह में बहने लगे। सारे हाथी घोड़े रथ वगैरह बह गये तथा बहुत से क्षत्रिय राजा भी बह गये।

(५३०) तब प्रद्युम्न ने श्रीकृष्ण को कहा कि यह अच्छी चाल चली गयी है ? नारायण के मन में संदेह पैदा हुआ कि यह मेह कैसे बरस गया ?

(५३१) यह जानकर श्रीकृष्ण को बड़ा आश्चर्य हुआ और मारुत (वायु) बाण हाथ में लिया। जब बाण तेजी से निकल कर गया तो मेघों का समूह समाप्त होने लगा।

(५३२) मायामयी सेना भी कांप गयी और छत्र उड उड कर जमीन पर गिरने लगे। चतुरंगिणी सेना भागने लगी तथा हाथी, घोड़े एवं रथों को कोई संभाल नहीं सके।

(५३३) तब प्रद्युम्न मन में क्रोधित हुआ तथा पर्वत बाण को हाथ में लिया। बाण को धनुष पर चढाया जिससे पर्वत ने आड़े आकर हवा को रोक दिया।

(५३४) प्रद्युम्न का पौरुष देखकर श्रीकृष्ण बड़े क्रोधित हुये । वे उसी क्षण वज्र प्रहार करने लगे जिससे पर्वत के टुकड़े २ होकर गिर गये ।

(५३५) प्रद्युम्न ने दैत्य बाण हाथ में लिया और नारायण को यमलोक भेजने का विचार किया । तब श्रीकृष्ण को बड़ा आश्चर्य हुआ कि अभी तक वे इसका चरित्र नहीं जान सके ।

(५३६) इस प्रकार बड़ा भारी युद्ध होता रहा जिसमें कोई किसी को नहीं जीत सका । दोनों ही बड़े बलवान योद्धा हैं जिनके प्रहार से ब्रह्मांड भी फटने लगा ।

श्रीकृष्ण द्वारा मन में प्रद्युम्न की वीरता के बारे में सोचना

(५३७) तब क्रोधित होकर श्रीकृष्ण मन में कहने लगे कि मेरी ललकार को रण में कौन सह सकता है ? मेरे सामने कौन रण क्षेत्र में खड़ा रह सका है ? संभव है कुलदेवी इसकी सहायता कर रही है ।

(५३८) मैंने युद्ध में कंस को पछाड़ा और जरासिंध को रण में ही पकड़ कर मार डाला । मैंने सुर असुरों के साथ युद्ध किया है । जिस शत्रु ने गर्व किया वही मेरे सम्मुख खेत रहा ।

श्रीकृष्ण का रथ से उतर कर हाथ में तलवार लेना

(५३९) तब उसने धनुष को छोड़कर हाथ में चन्द्रहंस ले लिया । वह खड्ग बिजली के समान चमक रहा था मानों यमराज ही अपनी जीभ को फैला रहा हो ।

(५४०) जब हाथ में खड्ग लिया तो ऐसा लगने लगा मानों श्रीकृष्ण ने चमकते हुए चन्द्र रत्न को ही हाथ में पकड़ा हो । जब वे रथ से उतर कर चलने लगे तो तीनों लोक भयभीत हो गये ।

(५४१) इन्द्र, चन्द्रमा तथा शेषनाग में खलबली मच गयी तथा ऐसा लगने लगा मानों सुमेरु पर्वत ही काँप रहा हो । देवाँगनायें मन में कहने लगी कि देखें अब इसे कैसे मारता है ?

(५४२) जब श्रीकृष्ण क्रोधित होकर दौड़े तो रुक्मिणी ने मन में सोचा कि दोनों की हार से मेरा मरण है । श्रीकृष्ण के युद्ध करने से प्रद्युम्न गिर जायगा ।

(५४३) रुक्मिणी ने कहा नारद ! सुनो मैं सत्यभाव से कहती हूँ कि अब तो मृत्यु का अवसर आ गया है । जब तक दोनों सुभट ललकार करके न भिड़ जाते हे नारद ! शीघ्र ही जाकर रण को रोक दो ।

रण भूमि में नारद का आगमन

(५४४) रुक्मिणी के वचनों को मन में धारण करके वह ऋषि विमान से उतरा । नारद वहीं पर जाकर पहुँचा जहां प्रद्युम्न और श्रीकृष्ण के बीच लड़ाई हो रही थी ।

(५४५) विष्णु और प्रद्युम्न का रथ खड़ा दिखाई दिया । प्रद्युम्न वार करना ही चाहता था कि नारद शीघ्र ही वहां पहुँचे और बाँह पकड़ कर कुमार को रोक दिया ।

नारद द्वारा प्रद्युम्न का परिचय देना

(५४६) तब हँसकर नारद कहने लगे हे कृष्ण ! मेरे वचन सुनिये । यह प्रद्युम्न तुम्हारा ही पुत्र है । इस सम्बन्ध में बहुत कुछ कहना है ।

(५४७) छठी रात्रि को यह चुरा लिया गया था तथा यह कालसंवर के घर बढा है । इसने सिंहरथ को जीता है । हे कृष्ण ! यह बडा पुण्यवान् है ।

(५४८) इसको सोलह लाभों का संयोग हुआ है तथा कनकमाला से इसका विगाड़ हो गया है । इसने कालसंवर को भी उसी स्थान पर जीत लिया तथा पन्द्रह वर्ष समाप्त होने के पश्चात् तुमसे मिला है ।

(५४९) यह प्रद्युम्न बड़ा भारी वीर है तथा रण संग्राम में धैर्यवान एवं साहसी है । इसके पौरुष का कौन अधिक वर्णन कर सकता है ? ऐसा यह रुक्मिणी का पुत्र है ।

(५५०) इसी प्रकार प्रद्युम्न के पास जाकर मुनि ने समझा कर बात कही । यह तुम्हारे पिता हैं जिनने तुम्हारा खूब पौरुष आज देख लिया है ।

प्रद्युम्न का श्रीकृष्ण के पांव पड़ना

(५५१) तब प्रद्युम्न उसी स्थान पर गया और श्रीकृष्ण के पैरों पर गिर गया । तब नारायण ने हृदय में खूब प्रसन्न होकर, प्रद्युम्न को उठाकर अपनी गोद में ले लिया ।

(५५२) उस रुक्मिणी को धन्य है जिसने इसे धारण किया तथा उस सुरांगना (विद्याधरी) को भी धन्य है जिसके यहां यह अवतरित हुआ तथा उस स्थान पर इसने वृद्धि प्राप्त की। आज के दिन को भी धन्य है जब मिलाप हुआ है।

(५५३) धनुष और बाण को उन्होंने उसी स्थान पर डाल दिये तथा घूमकर कुमार को गोदी में उठा लिया। जिसके घर पर ऐसा सुपुत्र हो उसकी सब कोई प्रशंसा करता है।

नारद द्वारा नगर प्रवेश का प्रस्ताव

(५५४) तब नारद ने इस प्रकार कहा कि मन को भाने वाले ऐसे नगर की ओर चलना चाहिये। प्रद्युम्न के नगर प्रवेश के अवसर पर नगरी में खूब उत्सव करो।

(५५५) श्रीकृष्ण के मन में तो विषाद हो रहा था कि सभी सेना युद्ध में पड़ी हुई है। सभी यादव एवं कुटुम्बी रण में पड़े हुये हैं। तब क्या नगर प्रवेश मुझे शोभा देगा ?

(५५६) नारद ने तब प्रद्युम्न से कहा कि तुम अपनी मोहिनी को वापिस उठा लो जिससे युद्ध में अति कुशल सभी योद्धा एवं सुभट उठ खड़े हो।

मोहिनी विद्या को उठा लेने से सेना का उठ खडा होना

(५५७) तब प्रद्युम्न ने मोहिनी विद्या को छोड़ा जिसने जाकर सब अचेतना दूर कर दी। सभी सेना उठ खड़ी हुई तथा ऐसा आभास होने लगा मानों समुद्र ही उमड रहा हो।

(५५८) वीर एवं श्रेष्ठ पाण्डव, दशों दिशाओं को वश में करने वाला हलधर, कोटि यादव एवं सभी प्रचंड क्षत्रिय गण उठ खड़े हुए।

(५५९) हाथी, घोड़े, रथवाले तथा पदाति आदि सभी उठ गये मानों विमान चल पड़े हों ? इस प्रकार पृथ्वी पर जो सारे क्षत्रिय गण थे वे सभी खड़े हो गये। सधारु कवि कहता है कि ऐसा लगता था मानों सभी सो कर उठे हों।

प्रद्युम्न के आगमन पर आनंदोत्सव का प्रारम्भ

(५६०) प्रद्युम्नकुमार को जब देखा तो श्रीकृष्ण पुलकित हो उठे। सीने से लगाकर उसके मस्तक को चूम लिया जिस पर चोट के निशान हो रहे थे। प्रद्युम्न के शरीर पर जो निशान हो गये थे वे भी मन को अच्छे लगने लगे। उनका जन्म आज सफल हुआ है जबकि प्रद्युम्न घर आया है। सभी कहने लगे कि आज परिजनों का दैव मानों प्रसन्न हुआ है। श्रीकृष्ण मन में प्रफुल्लित हो रहे हैं जब से प्रद्युम्न उनके नयनों में समा रहा है।

(५६१) भेरी और तुरही खूब बज रही है तथा आनन्द के शब्द हो रहे हैं। जैसी रुक्मिणी है वैसा ही आज उसको पुत्र मिला है। सकल परिजन एवं कुल का आभूषण स्वरुप पुत्र उसको मिला है। बड़ा योद्धा एवं वीर है। सज्जनों के नेत्रों को आनन्द दायक है। सकल जन समूह नगर के सम्मुख चलने लगे जिससे बहुत शोर हुआ तथा तुरही एवं भेरी बजने लगी जिससे ऐसा मालूम होने लगा कि मानों बादल गर्ज रहे हैं।

(५६२) मोतियों का चौक पूरा गया तथा सिंहासन लाकर रखा गया जिस पर प्रद्युम्न को बैठाया गया। इस घर को आज पुन्यवाला समझो। उस घर को भाग्यशाली समझो जहां प्रद्युम्न बैठा हुआ है। मोती और माणिक से भरे हुये थालों से आरती उतारी गई। युवराज बनाने के लिये तिलक किया गया जो सभी परिजनों को अच्छा लगा। जहां मोतियों का चौक पूरा हुआ था तथा लाया हुआ सिंहासन रखा हुआ था।

(५६३) घर घर तोरण एवं मोतियों की बंदनवार बँधी हुई थी। घर घर पर गुड़ियां उछाली जा रही थी तथा मंगलाचार हो रहे थे। नवयुवतियां पुन्य (मंगल) कलश लेकर प्रद्युम्न के घर आयी। अगर एवं चंदन से सुशोभित कामिनियां गीत गा रही थी। घर घर मोतियों के बंदनवार एवं तोरण थे।

(५६४) सकल सेना घर जाने के लिये उठी तथा छप्पनकोटि यादव घर चले। जिस द्वारिका को सजाया गया था उसमें क्षोभ हीन होकर चले।

प्रद्युम्न का नगर प्रवेश

(५६५) प्रद्युम्न नगर मध्य पहुँचा तो सूर्य की किरणें भी छिप गयीं। गृहों की छतों पर चढ़ कर सुन्दर स्त्रियों ने प्रद्युम्न को देखने की इच्छा की।

रुक्मिणी को धन्य है जिसने ऐसा पुत्र धारण किया तथा जो नारायण के घर पर अवतरित हुआ। जिसके आगमन पर देव एवं मनुष्य जय जय कार कर रहे थे तथा मनोहर शब्द हो रहे थे। घर घर पर तोरण द्वार बँधे तथा छप्पनकोटि यादवों ने खूब उत्सव किया।

(५६६) नगर में इतने अधिक उत्सव किये गये कि सारे जगत ने जान लिया। शंख बजने लगे तथा घरों में नृत्य होने एवं पंच शब्द बजने लगे।

(५६७) जब प्रद्युम्न घर के लोगों के पास गया तो नगर के प्रत्येक घर में बधावा गाये जाने लगे। गुडियां उछाली गयीं तथा कामिनियों ने घर घर मंगलाचार गीत गाये।

(५६८) ब्राह्मणों ने चतुर्वेदों का उच्चारण किया तथा श्रेष्ठ कामिनियों ने मंगलाचार किये। पुन्य (मंगल) कलशों को सजाकर सुन्दर नारियां अगवानी को चलीं।

(५६९) नगर में बहुत उत्सव किया गया जब से प्रद्युम्न नगर में दिखाई दिया। सिंहासन पर बैठा कर सभी पुरजनों ने उसके तिलक किया।

(५७०) दूध, दही एवं अक्षत माथे पर लगाया गया। मोती माणिक के थाल भर कर आरती उतारी गई तथा आशीर्वाद देकर सुन्दर स्त्रियां वहां से चलीं।

यमसंवर का मेघकूट से द्वारिका आगमन

(५७१) इतने में ही मेघकूट से विद्याधरों का राजा यमसंवर पुत्रों एवं कनकमाला सहित द्वारिका नगरी में आ पहुँचा।

(५७२) वह विद्याधर पवन के वेग की तरह आया जिसकी सेना से (उड़ती हुई धूल के कारण) कोई स्थान नहीं दिखाई दिया। वह अपने साथ रति नाम की पुत्री को लेकर द्वारिका पुरी में आया।

यमसंवर एवं श्रीकृष्ण का प्रथम मिलन

(५७३) यमसंवर से श्रीकृष्ण ने भेंट की तब वे भक्ति पूर्वक सत्यभाव से बोले कि तुमने बालक प्रद्युम्न का पालन किया इसलिये तुम्हारे समान अन्य कौन स्वजन है ?

(५७४) तब रुक्मिणी उसी समय कनकमाला के पैर लगकर बोली कि तुम्हारे घर से मैं कैसे ऊऋण होऊंगी क्योंकि तुमने मुझे पुत्र की भिक्षा दी है ।

प्रद्युम्न का विवाह लग्न निश्चित होना

(५७५) उनके आगमन पर बहुत से उत्सव किये गये तथा प्रद्युम्न-कुमार का विवाह निश्चित हो गया। ज्योतिषी को बुलाकर लग्न निश्चित किया तब मन में श्रीकृष्ण बड़े सन्तुष्ट हुये ।

(५७६) हरे बांसों का एक विशाल मंडप रचा गया तथा कितने ही प्रकार के तोरण द्वार खड़े किये गये। लम्बे चौड़े वस्त्र तनाये गये तथा स्वर्ण कलश सिंह द्वारों पर रखे गये ।

विवाह में आने वाले विभिन्न देशों के राजाओं के नाम

(५७७) सारे सामान की तैयारी करके श्रीकृष्ण ने सभी राजाओं को निमन्त्रित किया। जितने भी मांडलीक राजा थे सभी द्वारिका नगरी में आये।

(५७८) अंगदेश, बंग (बंगाल), कलिंग देश के तथा द्वीप समुद्र के जितने राजा थे वे सभी विवाह में शामिल हुये। लाड देश के चोल प्रदेश के, कान्यकुब्ज प्रदेश के, गाजणवइ (गजनी ?) मालवा और काश्मीर देश के राजा महाराजा आये।

(५७९) गुज्जर देश के नरेश अत्यधिक सुशोभित हुये तथा सांभर के वेलावल अच्छे थे। त्रिपाडती कान्यकुब्ज के अच्छे थे। पृथ्वी के अन्य सभी राजा नमस्कार करते हुये देखे गये।

(५८०) शंखों के मधुर शब्द होने लगे तथा स्थान स्थान पर नगाड़े बजने लगे। भेरी और तुरही निरन्तर बजने लगी तथा माधुरी वीणा एवं ताल के शब्द होने लगे।

(५८१) विद्वान् ब्राह्मण चारों वेदों का उच्चारण करने लगे तथा कामिनियां घर २ मंगलाचार गीत गाने लगी। नगरोत्सव के कारण कल कल शब्द होने लगे जब प्रद्युम्न विवाह करने के लिये चले।

(५८२) रत्नों से जड़ा हुआ छत्र सिर पर रखा गया तथा स्वर्णदंड वाला चँवर शिर पर ढुरने लगा। सोने का मुकुट शिर पर ऐसा चमक रहा था मानो बाल-सूर्य ही किरणें फेंक रहा हो ?

(५८३) तब रुक्मिणी ने ईर्ष्या भाव से कहा कि सत्यभामा के केश लाओ। तीनों लोक भी यदि मुझे मना करे तो भी मैं उसके केश उतरवाऊँगी।

(५८४) केश उतार कर उन्हें पांव से मलूंगी तब प्रद्युम्न विवाह करने जावेगा। लेकिन इतने में ही सब परिवार के लोगों ने मिल करके दोनों में मेल करा दिया।

(५८५) सभी कुटुम्बी जनों के मन में उत्साह हुआ कि प्रद्युम्नकुमार का विवाह हो रहा है। भांवर देकर हथलेवा किया और इस प्रकार कुमार का पाणिग्रहण हुआ।

(५८६) विवाह होने के पश्चात् लोग घर चले गये तथा राज्य करने लगे और अनेक प्रकार के सुख भोगने लगे। सत्यभामा को व्याकुल देख करके सभी सौतें उसका परिहास करती थी।

सत्यभामा द्वारा विवाह का प्रस्ताव लेकर पाटण के राजा के पास दूत भेजना

(५८७) तब सत्यभामा ने सलाह करके ब्राह्मण को शीघ्रता से सन्देश लेकर भेजा। उस स्थान पर जहां रत्नसंचय नामक नगर था तथा रत्नचूल नामक राजा रहता था।

(५८८) ब्राह्मण ने शीघ्रता से वहां जा कर विनय पूर्वक कहा कि सत्यभामा ने मुझे यहां भेजा है। रविकीर्त्ति से उन्हें अत्यधिक स्नेह है इसलिये उसी लड़की को भानुकुमार को दे देवें।

भानुकुमार के विवाह का वर्णन

(५८९) सभी राजा और विद्याधर मिल करके कल कल शब्द करते हुये द्वारिका को चले। नगर में बहुत उत्सव किये गये जैसे ही भानुकुमार का विवाह होने लगा।

(५६०) (लड़की वाले का) सारा परिवार मिलकर तथा विद्याधर व राजा लोग सब विवाह करने को चले। वे सब द्वारिका नगरी पहुँचे जहां मंडप बना हुआ था।

(५६१) घर घर पर तोरण लगाये गये तथा सिंह द्वार पर स्वर्ण-कलश स्थापित किये गये। सब कुटुम्ब ने मिलकर उत्सव किया और भानुकुमार का इस प्रकार विवाह हो गया।

(५६२) इसके बाद वे राज्य करने लगे तथा विविध प्रकार के भोग विलास करने लगे। प्रद्युम्न को सब राज्य के भोग प्राप्त होने लगे। उसके समान पृथ्वी पर दूसरा अन्य कोई राजा नहीं दिखता था।

पंचम सर्ग

विदेह क्षेत्र में क्षेमंधर मुनि को केवलज्ञान की उत्पत्ति

(५६३) अब दूसरी कथा चलती है। पूर्व विदेह में शंबुकुमार (अच्युत स्वर्ग का देव) गया जहां पुंडरीक नगरी थी तथा जहां क्षेमंधर मुनि निवास करते थे।

(५६४) जो नियम, धर्म और संयम में प्रधान थे उनको केवलज्ञान उत्पन्न हुआ। अच्युत स्वर्ग में जो देव रहता था वह मुनीश्वर की पूजा करने के लिये आया।

अच्युत स्वर्ग के देव द्वारा अपने भवान्तर की बात पूछना

(५६५) उसने नमस्कार किया तथा अपने पूर्व भव की बात पूछी। हे गुणवान् मुनि! पूर्व जन्म का जो मेरा सहोदर था वह किस स्थान पर पैदा हुआ?

(५६६) संशय हरने वाले उन (केवलज्ञानी) ने सभा में कहा कि पृथ्वी पर पांचवां भरत क्षेत्र उत्तम स्थान है। उसमें सोरठ देश में द्वारिकावती नगरी है। भरत क्षेत्र में इसके समान दूसरी नगरी नहीं दिखती है।

(५६७) उस नगरी का स्वामी महिम्न श्रीकृष्ण है जो सपूर्ण नियम धर्म को पालन करने वाला है। उसकी भार्या बड़ी गुणवती है और उसका नाम रुक्मिणी है।

(५६८) उसके घर पर क्षत्रिय मदन (प्रद्युम्न) पैदा हुआ। उस पुण्यवान् को सभी कोई जानते हैं। सुन्दरता में उससे बढ़ कर कोई नहीं है और वह पृथ्वी पर राज्य करता है।

देव का नारायण की सभा में पहुँचना

(५६६) केवली के वचन सुनकर देव वहां गया जहां सभा में नारायण बैठे थे। देवता ने मणि रत्न जटित जो हार था उसे नारायण को देकर कहा।

देव द्वारा अपने जन्म लेने की बात बतलाना

(६००) फिर वह रविदेव कहने लगा कि हे महमहण! (महामहिम्न) मेरे वचन सुनिये। जिसको तुम अनुपम हार भेंट देओगे उसी की कुक्ष से मैं अवतार लूंगा।

श्रीकृष्ण द्वारा सत्यभामा को हार देने का निश्चय करना

(६०१) तब यादवराय मन में आश्चर्य करने लगे तथा मन को भाने वाली मन में चिन्तना करने लगे। चन्द्रकान्त मणियों से चमकने वाला यह हार सत्यभामा को दूंगा।

प्रद्युम्न द्वारा रुक्मिणी को सूचित करना

(६०२) तब प्रद्युम्न के मन में यह विचार उत्पन्न हुआ और वह पवन वेग की तरह रुक्मिणी के पास गया। माता से कहने लगा कि मेरी बात सुनिये मैं तुम्हें एक अनुपम बात बताता हूँ।

(६०३) जो मेरा पूर्व भव में सहोदर था वह मुझसे बहुत स्नेह करता था। अब वह स्वर्ग में देव हो गया है और वह रत्नजटित हार लाया है।

(६०४) अब उस हार को जो पहिरेगा उसके घर पर वह आकर पुत्र होगा। हे माता अब तू स्पष्ट कह कि यह हार तुझे प्राप्त करा दूं?

(६०५) तब रुक्मिणी ने उससे कहा कि मेरे तो तुम अकेले ही सहस्र संतान के बराबर हो। बहुत से पुत्रों से मुझे कोई काम नहीं है। तुम अकेले ही पृथ्वी का राज्य करो।

जामवंती के गले में हार पहिनाना

(६०६) फिर विचार करके रुक्मिणी बोली कि मेरी बहिन जामवंती है। हे पुत्र ! तुम्हें विचार कर कहती हूँ कि उसे जाकर हार दिला दो।

जामवंती का श्रीकृष्ण के पास जाना

(६०७) तब ही प्रद्युम्न ने विचार कर कहा कि जामवंती को यहां बुला लाओ। जो काममुंदड़ी पहिन लेगी वही सत्यभामा बन जावेगी।

(६०८) स्नान करके उसने कपड़े और गहने पहिने। उसके शरीर पर स्वर्ण कंकण सुशोभित हो रहा था। जामवंती वहां गयी जहां श्रीकृष्णजी बैठे थे।

(६०९) तब सत्यभामा आ गयी, यह जानकर केशव मन में प्रसन्न हुये। तब कृष्ण ने मन में कोई विचार नहीं किया और उसके वक्षस्थल पर हार डाल दिया।

(६१०) हार को पहिना कर उससे आलिंगन किया और उससे कहा कि तुम्हारे शंबुकुमार उत्पन्न होगा। जब उसने अपना वास्तविक रूप दिखलाया तो नारायण मन में चकित हुए।

(६११) तब महमहण ने इस प्रकार कहा कि मेरा मन विस्मित और अचंभित कर दिया। यदि यह चरित सत्यभामा ने जान लिया तो विकृत रूप करके मोह लेगी। वास्तव में जो विधाता को स्वीकार है उसे कौन मेट सकता है। श्रीकृष्ण कहने लगे कि पुण्यवान ही निष्कंटक राज्य करता है।

(६१२) जब जामवंती के पुत्र उत्पन्न हुआ तो उसका नाम शंबुकुमार रखा गया। वह अनेक गुणों वाला था तथा चन्द्रमा की कांति को भी लज्जित करने वाला था।

सत्यभामा के पुत्र उत्पत्ति

(६१३) जिसकी सेवा सुर और नर करते थे ऐसा प्रथम स्वर्ग का देव आयु पूर्ण होने से चय कर सत्यभामा के घर पर उत्पन्न हुआ।

(६१४) जो वहां से चयकर अनेक लक्षणों वाला गुणों से पूर्ण अत्यधिक सुन्दर एवं शीलवान सत्यभामा के घर पुत्र हुआ उसका नाम सुभानु रखा गया।

(६१५) दोनों कुमार जिन्होंने एक ही दिन अवतार लिया था। चन्द्रमा के समान वृद्धि को प्राप्त होते हुये एक ही स्थान पर पढ़ने लगे।

शंबुकुमार और सुभानुकुमार का साथ साथ क्रीडा करना

(६१६) एक दिन दोनों ने जुआ खेला तथा करोड़ सुवंद (मोहर) का दांव लगाया। उस दांव में शंबुकुमार जीता तथा सुभानु हार करके घर चला गया।

द्यूत क्रीडा का प्रारम्भ

(६१७) तब सत्यभामा हँसकर मन में विचार करने लगी। उसने कहा कि इस मुर्गे से फिर खेल खेलो अर्थात् लड़ाओ और जो हार जावे वही दो करोड़ मोहर देवे।

(६१८) तब उसने मुर्गा छोड़ दिया और मुर्गे आपस में भिड़ गये। इस खेल में सुभानु का मुर्गा हार गया तब शंबुकुमार ने दो करोड़ मोहर जीत ली।

(६१९) इसके पश्चात् उसने बहुत से खेल किये। (सत्यभामा) दूसरों से भी काफी मंत्रणा करने के पश्चात् दूत को बुलाकर वहां भेजा जहां विद्याधर रहता था।

(६२०) दूत ने वहां जाने में जरा भी देर नहीं लगायी और जाकर विद्याधर को सारी बात बता दी। वहां दूत ने कहा कि जो इच्छा हो वही ले लो और अपनी पुत्री केवल सुभानुकुमार को ही देओ।

सुभानुकुमार का विवाह

(६२१) विद्याधर के मन में बड़ी प्रसन्नता हुई और अपनी कन्या को विवाह के लिये दे दिया। जब सुभानु का विवाह हुआ तो द्वारिका नगरी में सुन्दर शब्द होने लगे।

(६२२) जब सुभानु का विवाह हो गया तब रुक्मिणी के मन में विचार हुआ और मंत्रणा करके उसने दूत को बुलाया और रूपकुमार के पास भेजा।

रुक्मिणी के दूत का कुंडलपुर नगर को प्रस्थान

(६२३) वह दूत शीघ्र कुंडलपुर गया और रूपचन्द से कहा कि हे स्वामी ! मेरी बात सुनिये मुझे आपके पास रुक्मिणी ने भेजा है।

(६२४) शंबुकुमार तथा प्रद्युम्नकुमार के पौरुप को सब कोई जानते हैं। दोनों कुमारों को आप कन्याएं दे दीजिये जिससे आपस में स्नेह बढ़े।

(६२५) तब उस अवसर पर रुपचन्द ने कहा कि तुम रुक्मिणी को जाकर समझा दो कि जो यादव वंश में उत्पन्न होगा उसको कौन अपनी लड़की देगा ?

(६२६) उसने (रुपचंद) पुनः समझा कर बात कह दी कि तुम रुक्मिणी से जाकर इस प्रकार कहना कि संभल कर बात बोला करो, ऐसी बात बोलने से तुम्हारा हृदय क्यों नहीं दुखित हुआ।

(६२७) तूने हमारा सारा परिवार नष्ट करा दिया तथा तू शिशुपाल को मरा कर चली गई। आज फिर तू यह वचन कहती है कि मदनकुमार को बेटी दे दो।

(६२८) उसके वचनों को सुनकर दूत वहां से तत्काल चला और द्वारिका नगरी पहुँच गया। उससे जो कुछ बात कही थी वह उसने जाकर रुक्मिणी से कह दी।

(६२९) नारायण से ऐसा कहना कि हम तुम्हारे मध्य कैसे सुखी रह सकते है ? तुम्हारे कितने अवगुणों को कहें। तुमको छोड़ कर हम डूम को देना पसन्द करते हैं।

(६३०) यह वचन सुनकर वह व्यथित हो गयी और दोनों आंखों से आंसू बरसने लगे। इस तरह उसने मेरा मान भंग किया है और उसने मेरा हृदय दुखी कर बहुत बुरा किया है।

(६३१) रुक्मिणी को व्यथित बदन देखकर प्रद्युम्न ने अपनी माता से कहा कि तू किसकी बोली से दुखी है यह मुझे शीघ्र कह दे।

(६३२) हे पुत्र ! मैंने मंत्रणा करके दूत को कुंडलपुर भेजा था। वहां दूत से उसने जो दुष्ट वचन कहे हैं, हे पुत्र ! उन्हीं से मेरा हृदय बिंध गया।

(६३३) मैने तो यह जाना था कि वह मेरा भाई है किन्तु उसने नीच बनकर ऐसी बात कही है। वह मुझे विषय वासिनी मानता है। भला ऐसी बात कौन कहता है ?

(६३४) रुक्मिणी के वचन सुनकर प्रद्युम्न बड़ा क्रोधित हुआ कि उसने माता से नीच वचन कहे। अब रूपचन्द को रण में पछाड़ कर उसकी प्राणों से प्यारी पुत्री को छलकर परणूंगा।

प्रद्युम्न का कुंडलपुर को प्रस्थान

(६३५) उसी समय प्रद्युम्न ने विचार किया और बहुरुपिणी विद्या को स्मरण किया। शंबुकुमार और प्रद्युम्न पवन वेग की तरह कुंडलपुर गये।

दोनों का डूम का भेष धारण कर लेना

(६३६) नगरी के द्वार दिखलाई देने पर दोनों ने डूम का रूप धारण कर लिया। मदन ने तो हाथ में अलावणि ले ली तथा शंबुकुमार ने मंजीरा ले लिया।

(६३७) फिर वे दोनों वीर चौराहे की ओर मुड़े तथा सिंहद्वार पर जाकर खड़े हो गये। वहां राजा अपने बहुत से परिवार के साथ दिखलाई दिया तब मदन ने अपनी माया फैलाई।

(६३८) फिर मदन ने बहुत से गीत एवं कवित्त जो यादवों के सम्बन्ध के थे उत्तेजित हो हो कर गाये। गीतों को सब ने ध्यान से सुना लेकिन श्रीकृष्ण की प्रशंसा के गीत उन्हें अच्छे नहीं लगे।

(६३९) जब उसने यादववंश का नाम लिया तो रूपचंद का मन दुखित हुआ। रूपचंद ने पूछा कि मैं तुम्हारे गीतों का सार जानता हूँ पर तुम कहां से आये हो, यह बतलाओ !

रुपचंद को अपना परिचय बतलाना

(६४०) हमारे स्थान का नाम द्वारिका नगरी है और जहां यदुराज श्रीकृष्ण राज्य करते हैं। जिनके रुक्मिणी पटरानी है। हे राजन् ! जो तुम्हारी बहिन भी है।

(६४१) उस राणी ने जो तुम्हारे पा र दूत भेजा था उसने तुम्हारी बहुत सराहना की थी। उसी ने वहां जाकर तुम्हारा उत्तर कहा। और उसी के कारण हम यहां आये हैं।

(६४२) अपने कहे हुए वचनों को प्रमाण मानो क्योंकि सत्यवक्ता के वचन प्रमाण होते हैं। हे भाग्यवान् हम से स्नेह (संबंध) करके अपनी दोनों कन्यायें दे दो।

रुपचंद का उन दोनों को पकड़ने का आदेश देना

(६४३) यह सुनकर राजा क्रोधित होकर खड़ा हो गया। ऐसा लगने लगा मानों अग्नि में घी डाल दिया हो। उसका सम्पूर्ण अ ंग एवं मस्तक काँप गया तथा बोलते २ प्राण भी उडने लगे। ऐसे बोल तुमने किससे कहे हैं? उसने आदेश दिया कि इनको बाहर लेजा कर शूली पर चढा दो। यदि यदुराज में ताकत है तो वह इनको आकर छुडा लेंगे।

(६४४) तब उन्होंने पकड़े जाने पर जोर २ से पुकार की कि हम डूम हैं डूम हैं। ये शब्द चारों ओर छा गये। उसके हाथ में अलावणि (अलगोजा) थी जिसके सुनने के लिये सारे बाजार एवं हाट भर गये थे।

(६४५) उसी समय कुमार रुपचन्द ने सब राजाओं को पुकारा तथा सब बातें बताई। वे हाथी घोड़ों को साथ लेकर एक ही क्षण में वहां आ पहुँचे।

(६४६) तब राजा रुपचंद वहां आये जहां प्रद्युम्न और शंबुकुमार थे। वे दोनों एक साथ अपने हाथ में एक तारा (सितार) अलावणि (अलगोजा) ौर वीणा लेकर गाने लगे।

(६४७) डूम को देखकर राजा के मन में शंका पैदा हुई कि वह नीच जाति पर किस प्रकार प्रहार कर सकता है। धनुष साध करके जब उसने बाण छोड़े तब दूसरों ने भी चौगुणे बाण छोड़े।

प्रद्युम्न और रूपचंद के मध्य युद्ध

(६४८) तब प्रद्युम्न बड़ा क्रोधित हुआ तथा धनुष चढा कर हाथ में ले लिया। उसने क्रोधित होकर अग्निबाण छोड़ा जिससे लड़ते हुये सभी क्षत्रिय भागने लगे।

(६४९) सेना भाग गयी तथा मामा के गले में पांव रख कर उसे बांध लिया। सब दल के भागने पर कन्या को अपने साथ ले लिया और द्वारिका नगरी आ पहुँचे।

(६५०) रूपचंद को लेकर महलों में पहुँचे जहां श्रीकृष्ण बैठे हुये थे। श्रीकृष्ण को रूपचंद ने आंखों से देखा और कहा हमें नारायण का (दर्शन) लाभ कराया गया है ?

रूपचंद को पकड़ कर श्रीकृष्ण के सम्मुख उपस्थित करना

(६५१) तब मधुसूदन ने हंस कर कहा कि यह तुम्हारा भानजा है। इसमें बहुत पौरुप एवं विद्यावल है। इसने अपने पिता को भी रण में जीता है।

श्रीकृष्ण द्वारा रूपचंद को छोड़ देना

(६५२) तब प्रसन्न होकर श्रीकृष्ण ने कृपा की और बंधे हुये रूपचंद को छोड़ दिया। प्रद्युम्न ने हंसकर उसे गोद में उठा लिया। फिर उसे रुक्मिणी के महलों में ले गया।

रूपचंद और रुक्मिणी का मिलन

(६५३) वहां जाकर उसने अपनी बहिन से भेंट की। रुक्मिणी ने बहुत प्रेम जताया। बहुत आदर के साथ जीमनवार दी गयी जिसमें अमृत का भोजन खिलाया।

(६५४) भाई, बहिन एवं भानजा अच्छी तरह से एक स्थान पर मिले। रुक्मिणी की बात सुन कर रूपचन्द को बड़ी प्रसन्नता हुई तथा उसने कन्या को विवाह के लिये दे दी।

प्रद्युम्न एवं शंबुकुमार का विवाह

(६५५) तब हरे बांस का मंडप तैयार किया गया तथा बहुत प्रकार के तोरण द्वार खड़े किये गये। छप्पन कोटि यादव प्रसन्न होकर दोनों कुमारों के साथ विवाह करने चले।

(६५६) बहुत भांति के शंख एवं भेरी बजी। मधुर बीणा एवं तूर बजा। भांवर डाल कर हथलेवा लिया गया तथा चारों का पाणिग्रहण संस्कार पूरा किया गया।

(६५७) नगरी में घर घर उत्सव किया गया और इस प्रकार दोनों कुमारों का विवाह हो गया। जो सज्जन लोग थे वे तो खूब प्रसन्न थे किन्तु अकेली सत्यभामा ऐसी थी जिसका मन जल रहा था।

(६५८) रूपचन्द को जाने की आज्ञा हुई और वह समधी नारायण के यहां से घर गया। वह कुंडलपुर में राज्य करने लगा। अब कथा का क्रम द्वारिका जाता है। उनका (प्रद्युम्न) मन उस घड़ी धर्म में लगा तथा जिन चैत्यालय की बंदना करने के लिये कैलाश पर्वत पर चले गये।

छठा सर्ग

प्रद्युम्न द्वारा जिन चैत्यालयों की वंदना करना

(६५९) तब प्रद्युम्नकुमार ने चिंतवन किया कि संसार समुद्र से तैरना बड़ा कठिन है। मन में धर्म को दृढ़ करना चाहिये तथा कैलाश पर्वत पर जो जिन मन्दिर हैं उनकी शुद्ध भाव से पूजा करनी चाहिये। भूत भविष्यत तथा वर्तमान तीर्थंकरों के चैत्यालयों को देखा और कहा कि जिनने जिनेन्द्र भगवान के ये चैत्यालय बनाये हैं वे भरत नरेश धन्य हैं।

(६६०) फिर प्रद्युम्न ने चैत्यालयों की वंदना की जिनकी ज्योति रत्नों के समान चमकती थी। अष्ट विधि पूजा एवं अभिषेक करके प्रद्युम्न द्वारिका वापिस चले गये।

(६६१) इसके पश्चात् दूसरी कथा का अध्याय प्रारम्भ होता है। कौरव और पाण्डवों में कुरुक्षेत्र में महाभारत युद्ध हुआ। तब भगवान नेमिनाथ ने संयम धारण किया।

(६६२) फिर प्रद्युम्न द्वारिका जाकर विविध भोग विलासों को भोगने लगे। षटरस व्यंजन से युक्त अमृत के समान भोजन करने लगे।

(६६३) वहां सात मंजिल के सुन्दर श्वेत महल थे उनमें वे नित्य नये भोग विलास करते थे। वे महल अगर तथा चन्दन की सुगन्धि से युक्त थे तथा सुन्दर फूलों के रस से सुवासित थे।

नेमिनाथ को केवल ज्ञान होना

(६६४) इस प्रकार बहुत समय व्यतीत हुआ और फिर नेमिनाथ भगवान को केवलज्ञान उत्पन्न हुआ। तब उनके समवशरण में सुरेंद्र, मुनीन्द्र, एवं भवनवासी देव आदि आये।

(६६५) छप्पन कोटि यादव प्रसन्न होकर, नारायण एवं हलधर के साथ चले जहां नेमिनाथ स्वामी समवशरण में विराजमान थे। वहीं श्रीकृष्ण तथा हलधर जा पहुँचे।

(६६६) देवताओं ने बहुत स्तुति की। फिर श्रीकृष्ण ने (निम्न प्रकार) स्तुति प्रारम्भ की। हे काम को जीतने वाले तुम्हारी जय हो! तुम्हारी सुर असुर सेवा करते हैं (हे देव तुम्हारी जय हो।)

(६६७) दुष्ट कर्मों को क्षय करने वाले हे देव! तुम्हारी जय हो! मेरे जन्म जन्म के शरण, हे जिनेन्द्र! तुम्हारी जय हो। तुम्हारे प्रसाद से मैं इस संसार समुद्र से तिर जाऊं तथा फिर वापिस न आऊं।

(६६८) इस प्रकार स्तुति करके, प्रसन्न मन हो मनुष्यों के कोठे में आकर बैठ गये। तब जिनेन्द्र के मुख से वाणी निकली जिसे देवों, मनुष्यों एवं सब जीवों ने धारण किया।

(६६९) धर्म और अधर्म के गहन सिद्धान्त को सुना तथा प्रद्युम्न ने भी आगम की बात सुनी। उसके पश्चात् गणधर देव से छप्पन कोटि यादवों की ऋद्धि के बारे में पूछा।

(६७०) हे स्वामिन् मुझे बताइये कि नारायण की मृत्यु किस प्रकार से होगी? द्वारिका नगरी कब तक निश्चल रहेगी? हे देव! यह मुझे आगम के अनुसार बतलाइये।

गणधर द्वारा द्वारिका नगरी का भविष्य बतलाना

(६७१) इस प्रकार बात पूछ कर बलराम चुप हो गये। मन में विचार कर गणधर कहने लगे कि बारह वर्ष तक द्वारिका और रहेगी। इसके बाद छप्पन कोटि यादव समाप्त हो जावेंगे।

(६७२) द्वीपायन ऋषि से ज्वाला निकल कर द्वारिका नगरी में आग लग जावेगी। मदिरा से छप्पन कोटि यादव नष्ट हो जावेंगे। केवल श्रीकृष्ण और बलराम बचेंगे।

(६७३) मुनि के आगमन एवं श्रीकृष्ण की जरदकुमार के हाथ से मृत्यु को कौन रोक सकता है ? भानु, सुभानु, शंबुकुमार, प्रद्युम्नकुमार एवं आठ पट्टरानियां संयम धारण करेंगी।

(६७४) गणधर के पास बात सुनकर तथा द्वारिका का निश्चित विनाश जानकर द्वीपायन ऋषि तप करने के लिये चले गये तथा जरदकुमार भी वन में चला गया।

प्रद्युम्न द्वारा जिन दीक्षा लेना

(६७५) दशों दिशाओं में बहुत से यादव इकट्ठे हो गये और संयम व्रत लेने के लिये भगवान नेमिनाथ के पास गये। प्रद्युम्नकुमार ने जिन दीक्षा ली तो नारायण चिंतित हुये।

प्रद्युम्न द्वारा वैराग्य लेने के कारण श्रीकृष्ण का दुखित होना।

(६७६) श्रीकृष्ण शोकाकुल होकर कहने लगे हे मेरे पुत्र ! हे मेरे पुत्र प्रद्युम्न ! तुम्हारे में आज कौनसी बुद्धि उत्पन्न हुई है ? तुम द्वारिका लेओ और राज्य का सुख भोगो।

(६७७) तुम राज्य कार्य में धुरंधर हो, जेष्ठ पुत्र हो, तुम्हें बहुत विद्याबल प्राप्त है। तुम्हारे पौरुष को देव भी जानते हैं। हे पुत्र प्रद्युम्न ! तुम अभी तप मत धारण करो।

(६७८) कालसंवर तुम्हारा साहस जानता है। तुमने मुझे रण में बहुत व्यथित किया। तुमने मेरी रुक्मिणी को हरा था तथा बहुत से सुभटों को पछाड़ दिया था।

(६७९) नारायण के वचन सुनकर प्रद्युम्न ने उत्तर दिया कि राज्य कार्य एवं घर बार से क्या करना है, संसार तो स्वप्न के समान है।

(६८०) धन, पौरुष एवं अपार बल का क्या करना है। माता पिता अथवा कुटुम्ब किसके हैं। एक ही घड़ी में नष्ट हो जावेंगे। आयु के नष्ट हो जाने पर कौन रख सकता है ?

रुक्मिणी का विलाप करना

(६८१) नारायण को दुखित देख फिर रुक्मिणी वहां दौड़ी आई। वह करुण विलाप करके चिल्लाने लगी तथा कहने लगी कि हे पुत्र किस कारण संयम धारण कर रहे हो ?

(६८२) तू मेरे केवल एक ही पुत्र हुआ और तुझे भी होते ही धूमकेतु हर ले गया। हे पुत्र ! तू कनकमाला के घर पर बड़ा हुआ जिस कारण मैं तेरे बचपन का सुख भी नहीं देख सकी।

(६८३) फिर आनंद प्रदान करने वाले तुम आये और पूर्णिमा के चन्द्रमा के समान तुमने कुल को प्रकाशित किया। तुमने सम्पूर्ण राज्य-भोग प्राप्त किये। अब इस भूमि पर कौन रहेगा ?

प्रद्युम्न द्वारा माता को समझाना

(६८४) माता के वचन सुनकर प्रद्युम्न ने उत्तर दिया कि यह सुन्दर शरीर काल के रूठ जाने पर समाप्त हो जावेगा।

(६८५) इसलिये हे माता अब विषाद मत करो तथा माया, मोह और मान का परिहार करो। व्यर्थ शरीर को दुःख मत दो। कौन मेरी माता है और कौन तुम्हारा पुत्र है ?

(६८६) रहट की माल के समान यह जीव फिरता रहता है और कभी स्वर्ग, पाताल और पृथ्वी पर अवतरित होता रहता है। पूर्व जन्म का जो संबंध होता है उसी के आधार पर यह जीव दुर्जन सज्जन होकर शरीर धारण करता रहता है।

(६८७) हमारा और तुम्हारा सम्बन्ध पूर्व जन्म में था। उसी को कर्म ने यहां भी मिला दिया है। इस प्रकार माता के मन को समझाया। फिर रुक्मिणी अपने घर पर चली गई।

प्रद्युम्न का जिन दीक्षा लेकर तपस्या करना

(६८८) माता रुक्मिणी को समझा कर फिर प्रद्युम्न नेमिनाथ के पास जाकर बैठ गये। उनने द्वेष क्रोध आदि को छोड़कर पंचमुष्टि केश लौंच किया।

(६८९) उन्होंने तेरह प्रकार के चारित्र को धारण किया तथा दश लक्षण धर्म का पालन किया। बाईस प्रकार के परीषह को उन्होंने सहन किया जिसके कारण बाह्य एवं अभ्यंतर शरीर क्षीण हो गया।

प्रद्युम्न को केवलज्ञान एवं निर्वाण की प्राप्ति

(६६०) घातिया कर्मों का नाश करने पर उन्हें तुरन्त केवलज्ञान उत्पन्न हो गया। फिर अपने ज्ञान-नेत्र द्वारा लोका-लोक की बात जानने लगे तथा उनका हृदय अलौकिक ज्ञान के प्रकाश से चमकने लगा।

(६६१) उसी समय इन्द्र, चन्द्र, विद्याधर, बलभद्र, धरणेन्द्र, नारायण, सज्जन लोग, एवं देवी और देवता आये।

(६६२) इन्द्र उत्कृष्ट वाणी से स्तुति करने लगा। हे मोह रूपी अन्धकार को दूर करने वाले ! तुम्हारी जय हो। हे प्रद्युम्न ! तुम्हारी जय हो, तुमने संसार जाल को तोड़ डाला है।

(६६३) इस प्रकार इन्द्र ने स्तुति कर धनपति से कहा कि एक बात सुनो। इन मूक केवली की विचित्र ऋद्धियां हैं अतः क्षण भर में ही गन्ध कुटी की रचना करो।

ग्रंथकार का परिचय

(६६४) हे प्रद्युम्न ! तुमने निर्वाण प्राप्त किया जिसका कि मेरे जैसे तुच्छ-बुद्धि ने वर्णन किया है। मेरी अग्रवाल की जाति है जिसकी उत्पत्ति अगरोव नगर में हुई थी।

(६६५) गुणवती सुधनु माता के उर में अवतार लिया तथा सामहराज के घर पर उत्पन्न हुआ। एरछ नगर में बसकर यह चरित्र सुना तथा मैंने इस पुराण की रचना की।

(६६६) उस नगर में श्रावक लोग रहते हैं जो दश लक्षण धर्म का पालन करते हैं। दर्शन और ज्ञान के अतिरिक्त उनके दूसरा कोई काम नहीं है मन में जिनेश्वर देव का ध्यान करते हैं।

(६६७) इस चरित को जो कोई पढ़ेगा वह मनुष्य स्वर्ग में देव होगा। वह देव वहां से चय करके मुक्ति रूपी स्त्री को वरेगा।

(६६८) जो केवल मन से भी भाव पूर्वक सुनेंगे उनके भी अशुभ कर्म दूर हो जावेंगे। जो मनुष्य इसका वर्णन करेगा उस पर प्रद्युम्न देव प्रसन्न होंगे।

(६६६) जो मनुष्य इसकी प्रतिलिपि करेगा अथवा तैयार करवाकर अपने साथ रखेगा तथा महान् गुणों से परिपूर्ण, रचना को पढावेगा वह मनुष्य स्वर्ग भण्डार को प्राप्त करेगा।

(७००) यह चरित्र पुण्य का भण्डार है जो इसे पढ़ेगा वह महापुरुष होगा तथा उसको संपत्ति, पुत्र एवं यश प्राप्त होगा और प्रद्युम्न उसे तुरन्त फल देंगे।

(७०१) कवि कहता है कि मैं बुद्धि हीन हूँ और अक्षर तथा मात्रा के भेद को भी नहीं जानता हूँ। विद्वानों को मैं हाथ जोड़ कर नमस्कार करता हूँ कि वे मेरी (अक्षर मात्रा की) हीनाधिकता की त्रुटियों पर ध्यान न दें।

शब्दानुक्रमणी

अ

अइसइ—१२, ४६, ४०५
अइसउ—४६, १६८
अइसो—४३६
अकाल—१४३, २८१
अकुलाणउ—५४
अकुलाणी—२४७
अकुलानी—२६४
अकुलाणे—४८७
अकुलाने—५४०
अंकुश—२१३
अकेलउ—२८२
अकेलो—४६०
अक्षत—२७७
अक्षर—७०१
अखएहु—३२८
अखाडो—१८२
अखारउ—४५१
अखारि—३३१
अखालि—४५१
अगनिबाण—५२५
अगर—२३, ५६३, ६६३
अगरवाल—६६४
अगरोए—६६४
अंग ६८, ५७८, ६८६
अगलाइ—५१७
अगहुडे—३०२
अग्निबाण—६४८
अग्नि—४०१
अगिनि—२०८
अगिनी—१६२
अगिवाणी—६
अंगु—६६, १३२, ३११, ५०७
अंगुहडो—२८०
अंगूठा—६४
अगोडो—२०६
अघाव—३४१, ३६१, ३६२
अघाणउ—३८४
अचगले—३०६
अचंकित—२५५
अचंतउ—१५१
अचंभउ—४२३
अचंभिउ—३४६
अचंभी—३६५
अचंभो—१६४, ३३७, ५३१
अचंभ्यो—४५२
अचल—२४५
अचुल—२३६
अचरिउ—५०२
अंचल—४३१
अछइ—४१६
अछरायणु—६६१
अछोहु—५६४
अजर—२३२
अजहु—३६१, ४१५, ६२७
अजितु—८
अजोडि—२६८, ४६६

अठबल—३
अठार—२७६
अट्ठारह २०
अणखुटइ—२६६
अणंगह—४२१
अणंगु—१८२, ३११, ३७०
अणंत—३४६
अणुसरइ—२४
अति—३६, ४२, १३४, १३६, २०१, २२७, ३३५, ४२८, ६१४
अतिगले—३०६
अतिवंत—२६१
अतिवल—२६०
अतिसरूप—४२८
अतीत—६५६
अतुल—२०२, ४५६ ४६१, ५०२
अतुर—५६१
अंत—२७३
अंतरिख—३२५
अंतरीख—४८२
अंतु—२, ४६
अथि—३१४
अथिरु—२७३
अधिक—११, ३८६, ७०१
अधिकु—२५३
अन गानत—१४३
अनंत—१०, ३४६, ५००, ५०४, ६०६
अनंतु—६
अनंदु—५६१
अनागत—६५६
अनिवार—२२, १२१, २३६, ६११
अनूपम—६००, ६०२
अपमाण—४८३
अपथ—३६८
अपयालु—७३
अप्रमाणु—१७५
अप्पहि—२०७
अपाण—४८२
अपार—१८, १६५, २३३, २३४, ३५७, ५५६, ६४४
अपारु—२३०, ५६१
अपूरब—१६२, २२४
अफासु—६०४
अफालिउ—७६
अभया—२७४
अभिनंदणु—८
अभेडउ—२७६
अंबमाइ—५
अमइ—२७०
अमृत—६५३, ६६२
अमर—२३२, २८१, ४६२
अमरदेउ—२१८
अमरदेव—२१६, २१७
अमिगिभ—५२६
अयसउ—५३६
अयाण—३६२
अर—२११, २३६, ४२२, ५१०
अरजुन—२२४
अर्जुन—४५६, ४६८, ४७४, ४६३
अरडाइ—३५८
अर्थ—३०१
अर्थु—३७६
अर्द्ध—५१८
अरराइ—३५६
अरहंत—२३१
अरि—५३८
अरिवल—१७५

अरियसवल · २१

अरियजु—१७१

अरिराउ—४५

अरु—६, २०, ३४, ४१, ५१, ७१, ६०, ६६, ११३, १६२, १६२, २५१, २६०, २६५, ३४५, ३६७, ४१६, ४२०, ५०७, ५०८, ५१६, ५५६, ६७३, ६६६,

अरुजे—५०२

अरे—३०३

अला—१०३

अलावणि—४, ५८०, ६३६, ६४४, ६४६

अलिउ—२६४

अलिउलि—४२०

अलियउ—२६७

अलोकणि—२५५

अव—७६, १०७, १४१, १७८, १८६, २५२, २६४, २६५, २६७, ३०६, ३१०, ३११, ३२३, ४२६, ४६८, ४६६, ४७१, ४७३, ४८१, ५१४, ५१८, ५४१, ५४३, ५५१, ६०३, ६०४, ६८३

अवगी—६८५

अवगुण—६२६

अवटाइ—६२७

अवठालि—५५३

अवतरइ—६८६

अवतरणु—१६२

अवतरिउ—२३१, ५०२, ५५२, ५६५, ६१२, ६६५

अवतार—६१५

अवतारु—६०१

अवधारि—६७

अवर—३३२, ४१५, ४१८, ४४५, ५६१, ५६५, ६३८, ६४७, ६६४

अवरइ—३८१

अवरु—८, २२, २४६, २६७, ३६३, ५६३, ५६६, ६६१, ७००

अवलोइ—५४२

अवसइ—११०

अवसर—४३३

अवहि—५१३, ५६१

अवास—१८, ६६, १११, ३१४, ३६६, ५६५, ६६३

अविचार—२३३

अविचारु—२१७, ५६६

अविलेखियउ—५६५

अवेसि—२८८

असगुन—३५६

असंखि—४८५

असराल—२८१, ५८०

असरालु—६

असवारु—३३२

असवारिउ—३३७

असिवर—१७६, ४७६, ४६२

असीणी—२३३

असीस—१० २६, ४१, ५७०

असुभ—६६८

असुर—२३१, ५३८, ६६६

असुहु—२७७

असेस—६८, १६४, ५२६, ५७७, ६८३, ६८८

असेसु—३७, १५२, ५३४, ५५४, ५६७

असेसह—४६१
असोग—८६, १०२
अहु—७३
अहइ—१४, ३७६, ४०४, ४७२, ४४६, ४५६, ६३३, ६५१
अहउ—३७८
अहब—३६
अहनहइ—१४६
अहंकाब—२३०
अहार—४४३, ६५३
अहाब—३८४
अहि—१६६, २३०, ३०८
अहो—३६६
अहोबी—३०७

आ

आइ—२५, ६४, ६६, ७२, ७५, १०७, ११३, ११५, १२२, १३६, १६०, १६५, १६८, २००, २०१, २०६, २१०, २१६, २२०, २२४, २५१, २६२, २८१, २६७, ३०२, ३४०, ३५६, ३५६, ३८८, ३६२, ४१६, ४१७, ४३७, ४६५, ४६७, ४६६, ४७३, ५०५, ५४८, ५७१, ६१८, ६२८, ६४३, ६४५, ६४६, ६४६, ६६४, ६८१
आइत—५६४
आइस—१६७, १७१, ४३३, ६५८
आइसी—३०४
आइसे—१४५
आउ—२०६
आए—३६८, ४२६, ५६५, ५७७, ६४१
आकउ—१८४, २५६, ४२६
आकास—२७, २१४
आखित—५७०
आखउ—३३०, ३७८, ४५५, ४५६
आखइ—२६६
आखक—१
आखहि—४४६
आगइ—१०७, १६६, १६६, ३८६, ४३६, ४५८
आगम—४, ६६६, ६७०
आगमइ—२६, ४०८
आगमु—६७३
आगलउ—५१४, ६१२
आगली—३६
आगय—२६६
आगासइ—१६८
आगि—४७८, ५२८, ६७२
आंगुल—३२४
आगुली—३६३, ४७२
आगे—३८६, ५६८
आगै—५७७
आघाइ—४०४
आचल—२४१, ३६७
आचलइ—१६२
आचूक—३७५
आछर—५४
आज—२८, ७४, २८६, ४२६, ४३२, ४६६
आजि—१०१, ४६१
आजु—६६, ८७, १८६, २५६, ५१४, ४१६, ४१७, ४७५, ४६३, ५१५, ५२३, ५५२, ६७६

आठ—८०, ६७३
आठमउ—८
आठयउ—५८७
आठयौ—६३२
आडहु—५३३
आडौ—५३६
आणइ २५७, ३७९, ६११
आणंदियउ—१८३
आणन्दु—५८
आणि—२६, ४९, ५७, ६३, १००, ११३, १३३, १८५, १९२, १९७, २०३, २०७, २०८, २१७, २४४, २४७, २७२, २७३, ३८८, ३९३, ४०३, ४७१, ४७२, ५६२, ६८७
आणिउ—३२७, ३८६
आणिजउ—३४
आणिह—५८३
आंणी—५७२
आण्यो—६०३
आणौ—६३
आथि—५६, २७१
आदम—६३८
आदर—३९९
आदि—३४४
आधासण—३८६
आधु—४०४
आनंद—१२७
आनंदिउ—५६०
आनंदु—६८३
आप—२४४, २८३
आपइ—२२४
आपण—२९८, ४४१, ४८७
आपणउ—१५५, २७८, ३२७, ३३४, ४०७, ४२१, ४३२, ४८८, ४९४, ६५१
आपणी—४७, १९२, ६३१, ६५३
आपणे—९०, २७१, ३५५, ५२३
आपणं—३११
आपते—२०८
आपनउ—५०७
आपनो—४५३
आप्यउ—२०३
आपसु—१७३
आपहु—६७०
आपि—८४
आपिउ—१३३, २०८, २१७
आपी—५२, २६४
आपु—३००
आपुण—३८८
आफइ—२००
आफउ—१९२, ४१२
आफरयउ—४४३
आफह—२६१
आफहु—५५, ६०१, ६०२
आफि—१९३, ३०२
आफी—६३, १९१, २१५, २४७
आफीह—३०४
आफुहु—६७०
आभरण—१०३, २२९, ६०८
आभिडई—२६१
आम—२१०, ३४७
आय—३५३
आयउ—२८, ३२, ५३, २१६, २१७, २६३, ३०३, ३६२, ४२८, ५६०, ५६३, ५७५, ६९१

आयस—६२९
आयसु—४७६
आयिउ—२१९
आयो—३८, ४५, ६०, १४६,
१५६, १५८, ३३६, ४५५,
५९४, ६८३
आयी—२८६
आरति—५६२, ५७०
आरंभिउ—६६६
आरूढो—५२५
आलि—४३१
आलिगनु—६१०
आलु—९९
आलोक—१९२
आव—१३६, ६८०
आवइ—३२१, ३९६, ४१४, ४१५
आवत—४३, ७०, २०६, २६०
आवतु—१७६
आवते—३९७
आवथ—४७७, ४९७
आवले—३४८
आंव—२०८
आवधु—४५०
आवंतु—३२१
आवहु—२५३, ४४६
आविउ—५९९
आवै—१६६
आस—३३३, ५१६
आसोका—३७७
आसुपासु—६३०
आसू—१४१
आहार—३७८, ३७९, ३८०
आहि—३९, ५६, १५२, १५४,
१६८, २२९, २४३, २५७,
२८९, २९८, ३०३, ३०४,
३३६, ३७०, ३८०, ४०६,
४०९, ४४०, ४६७, ४७१,
५००, ५०१, ५१०, ५१६,
५३७, ५५०, ६०५, ६०९,
६१०, ६७७, ६८६

इ

इक—३४, ३७, ६०, १४१, २५१,
३०१, ३२५, ६१५, ६४५,
इकु—३४, २४९, ४३०
इकुइ—३९२
इकुसोवन—१८
इंगुल—१५
इणि—२६५, ३६२
इणी—१२३
इतडउ—४३२
इतनउ—२३६, ३३०
इतडो—१८५, २८६
इत्यही—६२६
इतु—३८३
इथंतरि—६६१
इंदु—५४१
इंदजालु—२२२
इन्द्रलोक—१५३
इन—४८०
इनउ—४८९
इन्हु—३३४, ४३८, ४५८
इनके—४५९
इनको—१८६
इनडो—२०४
इनी—६०६
इम्ब—५८५, ६८७

इम—४१, १४३, १४५, १४६, २८३
इराम्बत—६८
इय—६६३
इव—६७२
इह—२८, ३६, ७६, ६६, २७८, ३०५, ३२३, ३३६, ४३८
इहइ—४५३, ५४१
इहर—४५३
इहि—४०, ४४, १२५, १६४, २५२, २५४, ३२२, ३२६, ३३३, ४३८, ५१७, ५२३, ५३७, ५४७, ५४८, ६३०, ६५१
इहिर—३७१
इहिसउ—१७६

उ

उइ—६०, ३५६
उकठे—१६१
उखलं—३६३
उगालु—६५, १००
उच—१३१
उचंग—१५
उचरइ—३६६, ५८१, ६३१
उच्चरइ—५६८
उची—१३१
उछल्यउ—१७३
उछलिउ—५८१
उछली—७१, ८६, १७५, ४८३, ५६३, ५६७
उछंगह—१३३, ५५१
उछंगि—५६०
उछव—५६५
उछहु—५५४
उछाहु—१३५
उछाऊ—२२३
उछाव—८६
उछाह—४१६, ५८६
उछाहु—४४, ८७, २२८, ३२२, ४१३, ५६६, ५६६, ५७५, ५८५, ६२१, ६५४, ६५७
उज्जल—१०३, ३१४
उजाखु—१३८
उजैणि—२६६
उझाइ—१७०
उझावलि—१३६
उझिल—४१८
उठ—३८१, ६७२
उठइ—४४४, ४६० ५१३, ५५६
उठहि—४३७, ४४२
उठाइ—१३२, १३३, १५६, ५५१
उठावइ—१२४, १४४
उठि—६८, १०१, २४४, २७२, ४३७, ४४३, ५५७, ५५६
उठिउ—२१२, ४४६
उठियोउ—५५१
उठी—४००, ४२५, ५६४
उठीयउ—१८०
उठे—३३६, ३५६, ४३८, ५५८, ५५६
उठो—२८७, २८८
उडी—७३
उणहारि—४०
उतपाति—६६४
उतरइ—५४४
उतरि—१२३, ३२०, ५४०
उतरु—२३६, ४१२, ६५१

उतंग—१५
उतंगु—३१६
उतारउ—५६२, ५८३
उतारण—४२०
उतारि—३४१, ४२२, ५७०, ५८४
उतार्यो—२८७, ५५७
उतारी—१०२
उतिमु—३८०
उतिरि—२६६
उथल्यउ—५५७
उदउ—४२, ५८२
उदिधिमाल—२६६, ३०५, ३१२ ४५५, ४५६
उदो—३१६
उदोत—२६३
उधोत—६८३
उद्यान—५६, ३२८, २४०
उपए—२६५
उपजइ—११, १५१, १५३, २३२, ४०५, ५०८
उपजावइ—४३१
उपजी—३८६
उपणउ—६, ५६४, ५६८, ६६०
उपणि—२७
उपणी—३६३
उपवेस—६१०
उपनउ—२७, ११७, ५१७, ५५७
उपनी—१७७, ४०३, ६७६
उपनो—३३, ३२८, ३७६
उपनौ—२८६
उपर—११, १८३, १८७, २१४, २५८, ३३७, ३४२, ३७७, ३८१
उपरा—३८१, ३८२
उपराउपरू—१६७, २०७
उपरि—३८१, ५११
उपाइ—३६३
उपाउ—७६, १६४, १८६, २०२, २५२, २६२, ३२३, ४८१, ५६१
उपाय—८२
उबरइ—६७२
उभउ—२१६, २६६, ३२०, ४५०
उभी—६७, ३५७, ४२४
उभे—८६, २१२, ४३५, ४४२, ५६३, ५६५, ६३७
उभो—२०२, २३८, ३६१, ३७५
उभौ—६
उमइ—२८६
उमाले—६८८
उर—२३०, २५०, ५५२, ६६५
उरइ—५३२
उरणि—५७४
उरषु—२६५
उल—४२०
उलगाणे—३३६
उवरउ—३७०
उवरू—२०७, ४४३
उवरै—२८८
उवसंत—२२३
उवार—४६५
उवारि—४६५
उवारू—४६७
उविहारू—२१७
उहु—८१, ३१३
उहटे—५२६

ऊ

ऊंदु—३५८
ऊटू—३५६
ऊण—४२०
ऊतर—६७६
ऊपरऊपर—६१८
ऊभी—२३५
ऊवट—२३५

ए

एक—३०३, ३८०, ४४४, ४४८, ५८१, ६०२, ६१६
एकइ—५३६, ६५७
एकठा—२५४
एकत—६५४
एकलउ—३८०
एकहि—६१५, ६४६
एकलाक्क—६४६
एकोलो—४७३
एकु—२५७, २७२, ३५६, ३७८ ३७६, ४३६, ४५७, ५३६, ६०५, ६२०, ६८२, ६६३
एकुइ—३८८
एकुउ—३७६
एकुह—४७३
एगुणसीआर—१०
एतइ—१२६, ४१६, ५८४, ५६३
एतउ—२२१, २६४, ४३३
एतह—११४, ११५, ६१३
एतहि—५५०
एतहु—५७१
एते—३६८, ४२४
एम—३६६, ५५४, ६११
एम्व—३६, ६६७
एरछनगर—६६५
एसी—६३३, ६५४
एसे—१५१, ४३४, ४६०, ४७८
एसैं—१५३
एसो—२६८, २८३
एसौ—१३६, १४८
एस्यो—१४४
ऐह—१८७, २५५, २६५
ऐहु—६५, ३२८, ४०६, ६६७
ऐसी—४८३, ५१२
अैसो—३६४
ऐहु—६२१, ६४३

ओ

ओरइ—६१६

क

कइ—६५
कइथ—३४८
कइवं—३३०
कइसइ—३५
कइसी—५४१
कउ—२, २८४, ३२३, ३३६, ४०२, ४३०, ४८१, ५१६, ५६५, ५८५, ६०६, ६१२, ६५७, ६७६, ६८०, ६६४
कणकंकण—६०८
कंकण—२३६
कंकणु—२१७
कचनाक—३४५
कंचण—१६, १६१, ३१३, ६६६

कंचणमाल—२६४, ५७१
कंचणमाला—१२६, १३३, १३४
कच्छु—५१४
कच्छुक—१११
कच्छुस—३४०
कजल—३०
कठिया—३६८, ३७५
कडिहा—२३४
कठीया—३६७
कठाइ—४३८, ४४६, ४४७
कण्णखउराउ—१६१
कणय—२६. ३११, ३६६
कणयमाल—१३५, २४१, २४५, २४६, २५०, ५४८
कणयमुकटू—१६५
कणयवीरू—३४५
कणिक—६३
कणौ—३३४
कत—१०८, २३०, ३६२
कतहुती—१
कथंतर—४१७, ४३३, ५६३
कथंतरु—४१३, ६६१
कथा—११, १३६, १६३, ४५२, ६५८
कन्ह—५०, ५६२, ५७५, ६०६
कंन्ह—६०, ६३, ६६, ६७
कनउ—६०३
कनक—३७४, ५७६, ५६१
कनकथालु—३८५
कनकवंड—२३, ५८२
कनकमाल—२३, २४६, २५१, २६३, २७७, ५७४, ६८२
कनय—५८२
कनयमाल—२३०
कन्या—२२३, ३०७, ६४६, ६५४
कनवजी—५७६
कंदपु—६८४
कंदर्प—६६८
कंद्रप—२१६, २४३, २६१, ४१८, ५६०, ५६२, ५६३, ६३५, ६३७, ६६२
कंद्रपु—५३०, ६३७
कंदलु—६८५
कंधि—२१३
कपट—६७
कंपइ—५०२
कंपत—३७८
कंपिउ—६७, २६५, ६४३
कमण—६२६
कमखु—२७६, २८४
कम्मु—२७८, ६८७, ६६०
कमल—३
कमंडल—२५, ३१, १४६
कमंडलु—३६०, ३६१, ३६४, ३६५
कम्मट्ठु—६६७
कम्वण—४२३
कम्वखु—१४४, २२६, ३८४, ५२२, ५६८, ६७३
कयउ—४३०
कपड—१०८, २३३
कयथ—२१२
कर—३, ५, ३३, ६३, ७०, ७२, ७६, ७६, १०३, १६१, २११, २३४, २३५, ३५३, ३६०, ३६५, ३८३, ४११, ४५५, ४६६, ४७४, ४७६, ४७६, ४८६, ५३३, ५३६, ५४०, ७०१

करइ—२, २१, ३०, ३६, ५२, ६६, ७६, ८२, ८४, ८५, ८७, ९४, ९५, ९६, ९७, १०९, ११०, १२५, १२७, १४०, १४४, १५७, १६४, १६८, १८१, १८४, १८८, १९०, १९१, २०२, २०८, २५०, २५१, २६४, २६६, २६९, २८३, २९१, २९२, २९४, २९८, ३०८, ३२३, ३३२, ३३७, ३४२, ३५५, ३५७, ३७७, ३८५, ३९३, ३९४, ३९९, ४०५, ४१०, ४१३, ४१८, ४२३, ४३६, ४४५, ४५१, ४७६, ४९२, ४९५, ४९७, ४९९, ५०५, ५०७, ५३४, ५६८, ५६९, ५८९, ५९७, ५९८, ६०१, ६११, ६१२, ६१७, ६३९, ६४१, ६३७, ६८१, ६८५

करई—५०७

करइस—५६४

करउ—७, १३, २७९, ४६१, ६४७

करंकइ—४८४

करकंकण—१०३

करटहा—३७९

करण—४९, ६१, १९१, ३०८, ४०१, ५४५, ५९४, ६४६, ६८१,

करत—३२, १११

करतउ—६०३

करंत—४२, ९१, ३०१, ३१९, ५२९, ५८२, ६८२

करंति—५६३

करंतु—१२२, २९२, ५२६

करम—५८८

करमबंध—१२६

करयउ—५८४

करवहु—५६९

करवाल—७०, १७९, ४८९

करलेहि—७२

करहं—४

करहि—१११, १२१, १४३, १८२, १८८, ६२६

करह—४९, ७०, ११३, १४८, १६६, १७०, ३०५, ३६१, ३८५, ३८९, ४००, ४८१, ५५४, ६१७, ६४२

कराइ—१३६, १३९, ४३१, ६५८,

कराउ—४९, ५७, १००, ३६८

कराए—६६६

करावहु—११४

कराहि—५९२

करि—१६, २६, २७, ५३, ८२, ८८, १५८, १६७, १७७, १७९, १८९, २१३, २१६, २३७, २३८, २३९, २४०, २४५, २४६, २५२, २७०, २८०, २९४, ३०७, ३२३, ३३७, ३५१, ३७७, ३९९, ४०५, ४०८, ४१८, ४४८, ४६६, ४७०, ४७२, ४९६, ५१५, ५२५, ५३१, ५३३, ५४०, ५७५, ५७७, ६११, ६४८, ६५५, ६६८, ६७५, ६८७

करिवालु—४९७

करिहा—४७९

करिहि—११०

करी—६५, १४०, १६६, २१५, २७६, ३५१, ३५४, ४१८, ४१६, ४८८, ६३६
करण—३४७
करेइ—८०, २२२, ३६६, ६८६
करै—१३५, २६०, ३५८, ३७८, ५०१, ६६२
कर्म—६६८
कलकमाल—३१६
कलयर—१२७
कलयरू—५६१
कलयल—५८६
कलयलु—३२१, ६२१
कलस—१६, ५६३, ५६८, ५७६, ५६१
कलसइ—१६१
कला—२४
कलाप—६८१
कलाधु—३०८
कलि—३१
कलिगह—५७८
कलियरु—५६१, ५८१
कलियलु—१७३, ३१८
कवरण—६६, १४२, १४७, २०५, २४१, ३१३, ४४७, ५०६, ५३७, ५७३, ५७६, ६८५
कवरणई—४२४
कवरणु—१२३, १२६, १३५, १३६, १५७, १८७, १६८, २१०, २३६, २५७, ३२०, ४०७, ४६४, ४६८, ४७०, ५०१, ५२२, ५२७, ५६२, ६२४, ६४३, ६६८
कवस्यु—६३
कवतिगु—४३२
कवि—३, ५५६
कवित—६३८
कवितु—१, ७, १३
कसु—१४१, ५२४
कंसु—५३८
कसमीर—५७८
कह—११५, १६६, २६०
कहइ—४०, ४४, ५०, ६६, ११६, १२३, १४४, १४६, २२७, २६३, २७७, ३०५, ३०६, ३१४, ३६६, ३७८, ३७६, ३६३, ४०५, ४२७, ४३७, ४४३, ४४५, ४४६, ४५६, ४५७, ५०८, ५२२, ५३७, ५४१, ५५०, ५६६, ६०७, ६२७, ६३३, ६४१, ६५१, ६७५
कहउ—४८, ६३, २५२, ५४६, ६२६
कहरण—७३, १४७, ५०६, ५४६
कहत—७५, १७८, ३८०, ६२६
कहि—७४
कहलाउ—४७५, १२८
कहसा—४०५
कहहि—६२६
कहहु—४८, ६३, २४०, २४२, २८३, २८६, ४०७, ५४६, ६०४
कहा—२६, ७६. १०६, १५१, २२२, ३२६, ४१०, ४१२, ४४६, ४४८, ४५६, ५०७, ५०८, ६२६, ६३६
कहि—३६, ४८, ६०, १४०, १६३, २३०, ५६५, ६७०

कहिउ—३३, ३६८, ३८०, ४१३, ४१४, ५७०, ६२८, ६६६
कहिए—१९८, ४४८, ६४०
कहिठार—५९५
कहियउ—१९०
कही १५०, १५९, २९०, २९७
कहीए—५९७
कहु—५७, ८५, १००, १०६, १६६, १६७, १७०, २५२, २५४, २६२, २९०, २९७, २९८, ३०१, ३०३, ३०५, ३०९, ३२६, ३२८, ३३०, ३८४, ३९०, ३९४, ४१०, ४३८, ५४३, ५४५, ५९४, ६०७, ६२४, ६२५, ६२९, ६४२, ६६९, ६७०, ६९८
कहुं—३४, १०४
कहे—३९७, ४१५, ५१४, ६३२,
कहै—१६९, २८५, ३३५, ४२१, ४४४, ४५५, ४८५, ५१२, ६२८
कहो—३२२
कहौ—२५५, ६०६
कह्यउ—२०५, २५५, ३४०, ३९६, ५१५
कह्यो—६२३
काके—५५
कागु—४८४
काज—४२७, ६०५
काजु—४१६, ५१५
काटइ—३३९
काटे—४२६
काटिगो—४८४
काढइ—१७९
कांड—२९९
कान—३२४, ३६३, ४२२, ४२५, ४२६
कानकेजि—५७८
कान्ह—९०, ९९, १००, ४५२, ६६५
कान्हु—५९, ४५८, ५४२, ६०८
कांपइ—४५०
कापइ—४५३
कापरछाए—५७६
कांति—६१२
काणि—११३, २४१, २४७, २७२, ३९१, ५१७
काम—५७, ३४१, ३४३, ४३३, ४३४
कामबाण—१२, ५४, २३९
काममुदरी—२३४
काममूंदरी—२१५, ६०७
कामरस—२४१
कामिणि—१२१
कामिणी—३५६, ४१९, ५६३, ५६७, ५६८, ५८१
कारण—२६५, ३६९, ४०६ ४१५, ४१६, ५०८
कारणु—१२७, १४०, २४१,
कारणं—२६५
काल—३१, ६८, १९८, २०५, २७९, ४८९, ५०२, ५३९
कालसंवर—१३९, १५६, १७२, २५१, २५२, २८५, ५४७, ५४८, ६७८
कालसंवरु—२७७
कालासुर—१९८
कालि—४४६
कालु—१६९

कालुगत—६६४
कालू—४५
काली—३८४
कायर—४६१, ५७६
कासमीर—३
काहु—५६०
काहुउ—१४१, २७२
काहा—४०८
काहुस्यउ—३६
काहे—२५५, ३३३, ३८१
काहो—१०८, ३५८, ३६२, ३६३
काहो—१२५, १४३, ३५५, ३८५, ३६३, ४७०
किउ—६६०, ६६१
किए—६८३
किकर—२००
किछु—४०४
किजइ—५६६
किज्जइ—६५६
किन—३१०, ३३४, ३४०, ३७१, ४७१, ४७३
किन्हहु—३६३
किम—४८, ७३, १७७, ३०३, ४५८, ६४७
किमइ—४४०
किम्व—३०२, ४६०, ५५५
किम्वहउ—५७४
किमाड—१७
किमि—२८४
किमु—४०५, ४०६
कियउ—१४१, २१०, ३२८, ३२६, ३३६, ३६७, ४३२, ५३३, ५६२, ६१०, ६१६, ६२६, ६५०, ६५६
कियो—८८, १८७
किरणि—५६५
किलकइ—५०४
किसन—५४२
कीए—२७४, ४४४, ६३०
कीमइ—१४२
कीम्वहुं—४३८
कीयउ—२८, ३२, ४३, ५८, ७६, ८६, १७६, १८५, १८६, २२१, २४८, २५२, २७२, २७३, २८४, ३४२, ३६४, ४३६, ४८८, ५८५, ६०६, ६१६, ६३०, ६५२, ६७८, ६६४
कीयहु—५३०
कीयो—८८, २८८, ५६१
कीर—५७८
कीरति—५८८
कीरती—२४३
कीहु—४७
कीडा—१३०, १८७
कुकडहि—६१७
कुकडा—६१८
कुकुवार—३८२
कुकुवारठ—२५०
कुटम—५५५, ५८५
कुटमु—५६०
कुटंब—५६१, ६८०, ६६०
कुंड—२०८
कुंडल—२३५
कुंडलपुर—५६, ५६, ८४, ४७२, ६२३, ६३२, ६५८
कुंडलपुरि—३८, ६३५
कुंडु—३४६

कुलालु—३२, ६५, ११०
कुंभु—१०
कुमर—१७६, १८३, १८७, २५१, २६४, ६२४, ६७५
कुमरहि—२६४, ५६६
कुमरन्हि—१६७
कुमरु—२६८
कुमार—२५७, ३०५
कुमारु—३३३,४६१
कुम्वर—२२२, २२७, २५८, २४८, २५७, २५८, ३५४, ५८५
कुम्वरन्हि—१८५, २१८, २३०,
कुम्वरु—१३३, २१३
कुँम्वार—२१४
कुम्वरि—४०, ४१, ३०३, ३०७,
कुम्वारु—३६, १३४, १३८
कुरवइ—११४
कुरवि—४६१
कुरुखेत—२७६, ६६१
कुल—६८३
कुलदेवी—५३७
कुलमंडनु—५६१
कुलहु—५०२
कुली—२०
कुवडउ—२७०
कुवडा—३६५
कुवर—६२, १३६, १५७, १६५, १६६, १६७, १७२, १७५, १७७, १८६, १६२, १६६, २०३, २२६, २३७, २४७, २५३, २५४, २६४, २६६, ३०६, ३३१, ३३५, ४३५, ४६४, ५४५, ५५३, ५५४, ५७५, ६१४, ६१५, ६१८, ६२२, ६२४, ६४५, ६५५, ६५७, ६५६
कुवरहि—५८५
कुवरि—३८, ५६, ६६, २१६, ३०८, ३५५, ६२१
कुवरु—१५६, १५६, २३८, २५८, २६५, ३२२, ४७१, ५६०, ६३७
कुसमबाण—२२४
कसमरस—६६३
कुसल—२६
कुसुमबाण—२३५, ५१६
कूंकू—१२१
कूवि—६००
कूंअउ—३४५
कूटइ—२५०, ३४२
कूटहि—३८२
कूटि—४१७
कूड—२४६
कूडीवूघी—१०६
कूडीया—३२, २४६
कूर—४०२
कूवा—१६१, ३१४
कके—७
केउ—४७६, ४७७, ४७८, ४६१, ४६२
केतउ—२७३
केते—६२६
केसु—६८१
केम्बु—७०१, ३७०
केला—३४७
केलि—३४६
केव—४४५

केअरउ—३४५
केवल—६६४
केवलनाण—५६४
केवलभानु—१५२
केवलणाण—१२
केवली—१६०, २६०
केवलु—६६०
केस—२५०, ४२०, ५८३, ५८४,
  ६८३, ६८८
केसइ—५८३
केसव—४८६, ५०१, ५१०, ५२४,
  ५३५, ५५१
केसु—५०६
केसे—६४
कंलासहि—६५६
कोइ—१, ३८, ४०, ४७, ५५, ६६,
  १०५, १२५, १३४, १६६,
  १६८, १६६, १७६, १८३,
  १६२, २१८, २४३, २६७,
  २७८, ३३६, ३५४, ३५६,
  ४४४, ४८६, ४६७, ५११,
  ५३६, ५५३, ५६६, ५६८,
  ६६३, ६६७
कोउ—२, ४७६
कोट—३१४
कोठि—६६८
कोण—१६६, ४४६
कोडि—२२, ५१६, ६१७, ६१८
कोडिधुज—१६
कोडी—३०७, ३८६
कोद्ध—१७६
कोंत—४७१, ४७४
कोंलिगु—३६५
कोंतु—४७६
कोम—४६६, ५०८, ५१७, ५२०
कोपा—३३१
कोपाकुल—७६, ४४१, ४६३, ५१८,
  ५२७, ६४८
कोपाहद्दु—३३१; ५२५
कोपि—६८, २१०, ३४०, ४३५,
  ४७४, ५०६, ५११, ५२७,
  ५४२
कोपिउ—६७, २५६, ३६३, ६४३
कोपिय—३०४
कोपु—३३, ५३३
कोप्यो—१७२, ४६०, ४७४, ४८०,
  ५१६
क्यो—५१३, ५२५
कोमलि—५२
कोवंड—४७४
कोवंडु—६५
कोवानल—३६
कोवि—५०२
कोसु—६८८
कोह—२८७
कौंत—४६७
कौंतीनन्दना—४५६
कौपारूढ—४६६, ५२०
कौंरो—२७६, ६६१
कौसाव—२३५
क्षण—३७, ४४०
क्षत्री—५५६
क्षिपति—६८०
क्षिम—५८५

ख

खइ—३५, २७०
खउ—४४४, ६११

खग—३७, २६७, ५६०
खग्गी—५३
खण—३५, १२२, १३१, २१८, २२१, २२५, २३७ २८८, २६१, २६२; ३६०; ४०२, ४२४, ४३०, ४३१, ५३४, ५४५, ६२८, ६६६, ६६०
खत्री—२०, ४६०, ४६४, ४७३, ४६५, ५३०, ५१०, ५११; ५१२, ५२२, ५३०, ५५६; ६०६, ६४८
खंड—४६, ३०६, ५३४
खंडउ—३६
खंडव—४६८
खंधार—३६७
खपइ—६६७
खयंकर—६६६
खयंतु—५०२
खर—५०६, ५३२
खरउ—३१६, ६४३
खरग—५४०
खरी—६१, ६८, १३१, १४०
खरे—८१, १६१, १८३, ४५८, ५३६, ६१५, ६३२
खरौ—४४५
खल—५४१
खली—३६४
खाइ—३४, २०६, ३५०, ३५३, ३६१, ४०४, ४४४, ५६६
खाची—३३८
खाजतू—३५५
खाट—६७
खात—४४४
खारि—४६६
खिउकरण—६६७
खिण—२६४, ५२१
खित्रपालु—६
खिरणी—३४८
खीप—३४७
खीर—१६२, ४०८
खुटी—३६३
खुधा—३८४
खुर—७१
खुररइ—४८३
खूडउ—३६४, ४११
खूडा—३६६
खूडे—४०३
खेउ—५७, २१६
खेत—५३७, ५३८
खेमु—६५४
खेयउ—५८७
खेव—५५२
खेल—६१७, ६०६
खेलण—१८७
खेमंकर—१५०, ५६३
खेह—७३, १७५, ४८३
खोडा—४८३
खोडि—३०७, :५३, ७०१
खोडी—२७७, २६८, ३७१. ४११
खोल—३०५
खोहणी—२७६

ग

गइ—१०५, १११, २५५, ३५६, ४५३, ६०८
गई—४२४, ४२५
गउ—२०८, ३७२, ३८८

गऊ—६३
गए—६६, १२०, १६६, ३३५, ४३५, ४३६, ४४१, ५६७, ६१५
गगन—१६३
गज—३१६
गजा—५१, ४६६, ४७४, ४६५
गणल—२०
गणहर—५६६, ६७१, ६७४
गणाइ—१६३
गणे—३१२, ५७६
गणं—२३६
गंजहि—१७५
गंभीर—१६
गम्बहि—२०
गय—४८२, ५०४, ५२७, ५३०, ५३२, ५५६, ६४५
गयउ—२६, ४१, ५३, ५६, ६७, ६६, १०३, ११६, १३३, १३५, १३७, १४५, १४८, १५०, १८२, १६१, १६७, २१०, २१२, २१६, २२५, २३०, २६२, २६४, २६८, २७०, २८३, २६६, ३२०, ३३७, ३५६, ३६५, ३६८, ३७६, ३६८, ४०२, ४१४, ४४२, ५१६, ५५२, ५५५, ५८६, ६०२, ६३६, ६४६, ६४३, ६५८, ६६४, ६७४, ६७५
गयणि—१७३
गयणिहि—१७५
गयबर—७०
ग्यारह—६, ११
गये—११, ६४, ६१, १०२, १११, ११५, २१२, २१४, २२१, २५४, २७४, ४७२
गयो—८२, ८६, १०१, १६३, २०४, २४४, २५२, २६५, ४४६, ५२०, ६२०, ६२३
गजं—२१
गजंइ—१७३
गरहु—३१६
गर्भ—१११
गरब—६६
गरबो—२१३
गरहद—६३
ग्रसइ—५०५
गरहु—५३८
गरबो—५४६
गलि—३३६
गले—३०६, ६४६
गलै—१८२
गहपउ—२८२
गहबरइ—१४०, ५८६
गहबरि—१४७
गहि—२०२, २१५, ३२३ ४३८, ४४०, ४४६, ४४६, ४५१
गहिउ—२४१, २४५, ५४०
गहिर—१६
गहीव—३४५
गहे—६४४
गाइ—४६८
गाउ—२८४
गाउ गाउ—३७
गाए—६३८
गावइ—३८१
गाजिउ—४७४

गाजण—४७८
गाजहि—७१
गाजे—५६१
गांठि—६५
गाठी—६७, ६८
गाम्ब—१५
गामति—४२३
गावइ—१२०, ४५७, ५६७
गावत—३५६
गावहि—१२१
गावु—३८७
गिरवरि—१८६
गिरि—२८०, २६५, ३७३, ५४१
गिरिवर—५०६
गीत—५६३, ६३८
गीव—१४४, १८०
गीवीरणि—५०५
गीम्व—६४४
गुम्फु—३१५
गुटिकालिपि—१६४
गुडहि—४७७
गुडहु—६८
गुडी—५६३, ५६७
गुडे—१७३, २५६
गुण—५२, १३६, १४२, ३११, ५२०, ६६६
गुणउ—७०१
गुणगिलउ—१२
गुणवइ—६६५
गुणवंत—५६५, ५६७, ६१२, ६१४
गुणहु—६२
गुणे—६४७
गुणें—६१७
गुपत—४५६
गुफा—१८६, १६७, १६८, २०० २०१, २१८, २२६
गुवालु—७५, ११०
गुर—४०६, ५२१
गुरहु—७०, ४७५
गुरु—१३, ४०७
गूजर—५७६
गूडी—८६
गेह—११४
गैयर—६७, १७३, २३५, ४६५
गैयरु—२१२, २१३
गैवर—२५६, ४७५, ४७७
गोडइ—४४६
गोडउ—४३८, ४४०, ४४६, ४५१
गोतु—४०७
गोहलु—४४१
गोहिव—५३८
गोहिल—५८, ६१, १०५, १२६ ४२२
गोहिणी—४१६

घ

घटइ—४०
घटाउ—६८७
घटाटोप—४८१
घडिक—६८०
घरण—१२, १७३, २८१
घरणउ—११, ३६, २६६, ३००, ३१६, ३१८, ४०६, ४४८ ५४६, ५५०, ५६६, ६५१, ६८०
घरणघोर—२०१

घणी—६४, १०८, १०६, १४४
२४१, २४३, २४७, २८८
३६४, ४३४, ४४४,
घणे—२४, ६०, ३४७, ३४८
३५५, ४२६, ५२६, ५७८,
६७८
घणौ—१५५, ४५३
घंट—२६३
घर—८८, ११५, १२६, १३६
१७७, १८४, १६२, २३७
२८८, २८६, २६४, ३५८
३८३, ३८४, ३६६, ४०६
४१४, ४१६, ४२२, ४२५
४४३, ५५३, ५६०, ५६२,
५६३, ५६४ ५६५, ५६६,
५६७, ५७२, ५७४, ५८६,
५६६, ५६६, ६०४, ६१३
६५२, ६८२, ६८३, ६८७
घरइ—४०५
घर घर—८४, १२० ५६३, ५८१,
५६१ ६५७
घरणि—१५४, २४३
घरबार—६७५
घरह—११७, ६६५
घरि—२३०, ४०२, ६१६
घरिघरि—१२१
घाइ—३६५, ६६०
घाउ—६८, १७७, ५४५, ५६० ६५७
घाघरी—२६३
घानी—५३१
घारइ—२६१
घालइ—३८३, ३८८, ५२१
घालउ—१२५
घालहु—४७
घालि—१२४, २५६, २५८, ३६३,
४७१, ४८७, ५३८, ६१०
घालिउ—२६२, ५३६, ६०६, ६६२
घालियउ—६२७, ४५१
घाली—१४२, २८७, ३५०, ३५३
घाले—३५१, ५५३
घालं—१७७
घाल्यो—२५६, ३३१
घीउ—२५३, ६४३
घृत—४५५
घृतु—१४२
घेह—७१
घेडउ—७१, ३५८
घोडे—३३१, ३३४, ३३८, ३४१
घोडो—३४२
घोडौ—३२७
घोमि—१२२
घोर—१६८
घोरो—३२६, ३३७
घ्रत—७६

च

चइ—३१४
चउ—५२६, ६५७
चउक—५६२
चउत्थउ—८
चउतीसह—१२
चउपास—१८, ३१६
चउवारे—१६
चउरंग—१७३, २८६, २८७, ४६६,
५३२
चउरंगु—२६२, २७६
चउरासी—३८८

चउवल—२३

चउवीस—७

चउवीसउ—७

चकचूर—५२

चक्र—५१, ८१

चकला—३८७

चकवइ—४६, १५३

चक्कवति—१५०

चक्केसरि—२१

चकेसरी—५

चडाइ—६७

चढाइयउ—५१७

चडिउ—५२१

चडिवि—२१३, ३३६

चढइ—२१४, ३३७, ३५८, ३६६, ४३८, ४७७, ५०६, ५०६

चढउ ३३४

चढहु—६८

चढाइ—६५

चढाई—२८०, ४६६, ६४८

चढावण—३३५, ३३६, ३५६

चढावहि—३५७

चढि—१११, १३०, १३५, १५८ १८६, २३५, २६५, ३५७

चढिउ—२५, ३३१

चढी—३, १८७, ३४३, ३५४

चढोइ—५६५

चढे—१०२, २८१, ४६२, ४६६

चढयो—२६३

चतुरंग—७२

चंचल—३२३, ३२४

चंद—१३६, ६४१

चंद्रकांति मणि—६०१

चंदन—३७३, ५६३, ६६६

चंदप्पउ—८

चंद्र—२०३, २३४, ५१८, ५४०

चंद्रवयणि—४२

चंद्रहंस—५३६

चंदु ५४१

चमकइ—५३६

चमक्यउ—६०२

चमतकार—३३७

चंपइ—६२

चंपउ—३४५

चंपि—३६

चंपिउ—२३१

चमर—७२

चमरंत—७२

चम्बर—२३३

चयउ—६१३, ६१४

चर—४२६

चरण—३३६, ३४०

चरणु—३७४

चरहु—३४१

चरित—२६६, २६७, ४२१, ६६२ ६६५

चरितु—११, १३४, १८३, १६८ २६५, २७३, ३२० ४२६, ४३२, ४६२, ५३५, ६६७, ७००

चरेइ—६८६

चलंत—५०२

चलइ—८५, १५२, २०६, २६७ २६४, ४७६, ५८४

चलई—३२

चलउ—१७३, १६६, ३०८, ४४८
५१०, ६५२
चलत—२६०, ३१२
चलहु—४६, १०१, ४८१, ५०५
५५४, ५८६
चलिउ—१२४, १५८, १६४ १७३
२४८. २४६, ३१२, ३२६
३५५, ३६०, ३६५, ४४१,
५०६, ५३२, ५५१, ५६४,
५८१, ५६०, ६५८
चल्लिउ—१८३
चलियउ—२०८
चली—६१, ८५, २६६. ३०६, ३५६
४१६, ४८३. ५२८, ५६३,
५६८
चलीउ—३४, १३०, ४४७
चले—१२८, १७५, १८७, ३०७
४८२, ५२६, ५२६, ५४०
५६१, ६४८, ६५५, ६६५
चल्यौ—३५, ८३, २३७, ६२७
चल्योउ—३३, २३६
चवइ—४६, ११२, ३४३
चवर—१६६
चवरंग—३२०
चवरंगु—८३
चहि—५३
चहु—१८६
चाउ—८०, २८०, ४८१, ४६६
५१६, ५२०, ५२५, ६४८
चाउरंगु—४८२
चापि—१२६, ३४४
चाप्यौ—१३०, १५५
चाम्बइ—५४०
चामर—२३
चारि—३२४, ४५७, ५८१
च्यारि—८०, ३७४, ३६७, ५६८
चारिसौ नानाणी—२५६
चारु—३४७
चारयो—३२४
चालइ—११०, ५७०
चालि—१४५, ५१५
चाले—८८, ४७८, ५६४
चालं—४८७
चाल्यो—१४६, ६२८
चावर—५८२
चाहि—१४४, १६७, २२६, ३०३,
६०५, ६०६, ६८६
च है—५४५
चाहो – ३३४
चित—१७७, ५१६, ६५६. ६६३
चितव—६६०
चितह—३६३, ४०३
चिंत—६१, ६०१
चिंतइ—३५, ३८, ३४६, ६२२
चितइत—३६
चितयउ—३६७
चितयऊ—६११
चितवइ—४१
चितावत्यु—६७५
चिंतिउ—१२२
चिसु—३१५
चिन्ह—७२
चिललाइ—४००, ४०१
चीतइ—६३८
चेडी—३६२
चेताले—६६०
चेरी—३६१
चेली—१०६

चुटी—१४६
चुंमइ—४२६
चुंमियउ—५६०
चुरइ—४०१
चूटी—२५
चून—६३
चूरइ—७८, १७६
चूल्हि—४०१
चोपडु—३४२
चौयास—३१४, ३१७, ३६६
चोर—५७८
चोरी—६६, ६६, ७६
चौहटे—१८, ३६५, ६३७, ६४४
चौवहसे—११
चौरी—४७२
चोहुजण—६५६

छ

छइ—८६, ६३२
छठि—१२२, १७७
छठी—५४७
छण—६४५
छणंतरि—६६३
छत्र—१६६, २३३, ५०३, ५०२
५८२,
छत्रजि—५००, ५२६
छत्री—२५, १४६, ४८१
छंबु—१३७
छपनकोटि—१२८, ३७३, ४४८
४५३, ४६०, ५५८,
६५५, ६६५, ६६६,
६७१, ६७२,
छपनकोडि—२२, ४६, ४६६, ५६४,
५६५
छपनकोडी—८६
छल—४७२
छलि—६३४
छलु—२४५
छवाइ—५६०
छहरस—६६२
छाइ—८१
छाए—१७, ५७६
छाडइ—८४
छाडि—१६६, १६१, २४१
छाडी—२७२, ३६६
छात—४८२
छाडघो—५५७
छारू—६८४
छायउ—६८६
छिनि—८२
छीनि—२६५, ३०८, ४०२, ५१६,
५२१
छीनी—२६४
छीने—५२३
छुडावहु—६४३
छुरी २१५, २३४
छुरीकार—२६०
छुहारी—३४८
छूटउं—२७६
छूरी—४७६
छेव—४५६
छोटो—३६६
छोडइ—२६७
छोडउ—८५
छोडहि—४२७

छोडि—४६, ४७, ५४, १८४, २६८, २७३, ३०७, ३७२, ५१६, ६२६
छोडिउ—२३०, ६५२
छोडी—६१, २२१, २५०, ५१६, ५२०
छोडो—२८७
छोरी—६८, २८७

ज

जइ—७, ४०, १०६, २५५, ३०० ३०४, ३१७, ३२२, ३३०, ३४६, ४०५, ४४८, ४८८, ५८३, ६४३, ६५४, ६६७ ६७६
जइउ—४२६
जइसो—३५२
जइसे—३००
जउ—१२, ७६, २१२, २४६, २५७ २८८, ४४०, ५१६, ५६० ६७५
जक्ष—१६
जक्षु—१८३
जगत—५६६
जगु—१७५
जडिउ ३१६, ५६६
जडित—१६२
जडी—५२
जडे - १७, ५८२
जण—३३५, ३३६, ५४१, ५६२, ६२८, ६३२, ६३६, ६५६, ६५७, ७०१
जणि—२४३
जणणी—२४८, ६६५
जणव—६२६
जणह—७०१
जणा—४५६
जणाइ—५५, ६६, २५७, ३६२, ३७५, ४००, ४३५, ६२०
जणावहि—५०५
जणिउ—१७५
जणित - ३१४
जणु—८७, १५३, ४१७, ५६०
जणो—८६
जणे—१६६
जत—१०५
जन—५६३
जनकु - ६३
जननी —६३१
जन्म—१४१, ५६०
जन्मभूमि—५०८
जनम—१३५, २५५, ६६१, ६८६
जनु—७१, ५०५, ५०६, ५६१
जनेउ - २७५
जपइ—१०३, २२६
जपिउ - २३१
जम्बूदीप —१५२
जंबूदेश—१४
जंपइ—५०, १७७, २५२, २६८, ३०३, ३१५, ३१७, ३६२ ३७१, ४१२, ४१३, ४२५ ४७३, ५१०, ५१२, ५२४ ५३०, ६११
जंपाण—५८२
जंपाणु—५५६

जंपिउ—२६५, ६४३
जम—५०६, ६८४
जमगंथि—७७
जमपाधि—५३५
जमराइ—५०५
जंभीर—३४७
जंवइ—६१२
जंववती—६०६, ६०७
जमसंवर—१२६, १३२, २४४, २४७ २५८, २६२ २६२, २८३ ४०६, ४४४
जमसंवरु—२३१, २३७, २६४, ४१४ ५७१, ५७३
जम्मह—२४२
जंमि—३१४
जम्मु—६८७
जंवु—४३
जय—६६६, ६६७, ६६२
जयङ—६
जयजयकार—५६५
जयन—१५२
जर—७
जरवकुमार—६७३
जरवकुमारु—६७४
जरासंध—४६५, ५२५, ५३८
जरी—२३३
जल—२०५, ३६४, ५२६
जलमहु—१०६
जल सोखणी—१६३,
जलहर—५६१
जव—६८, ६६, १४७, १६३, १६४, १६७, २०८, २१६, २६५, २६६, २६७, ३७२, ४२६, ४६३, ५४०, ५४३ ५६०, ५८१, ६४७, ६१२
जवइ—५६७
जवते—५६६
जवहि—१८३
जवसंवर—१६४
जस—३१६
जसु—७००
जसोधर—२७०
जह—२४३, ३१६,
जहां—३८, ६०, ६२, ६४, ६५ १०५, १२४, १३०, १५३, १५५, १६६, २१८, २२०, २२५, २२८, २४०, २५८, ३३८, २४३, ३५२, ३५४, ३६१, ४१६, ४२६, ४३४, ४५२, ४६३, ५४४, ५६३, ५६६, ६४०, ६४६, ६६५
जहि—३०, ६६, १२६, १४०, १५० १७४, २२१, २६३, ३१५ ३१७, ३१८, ३४६, ३६० ४०६
जाइ—३५, ५८, ६०, ६२, ६७, ८५, ७६, ८१, ८३, १०१, १०४, ११०, ११४, ११६, १३०, १३६, १४१, १४३, १५०, १५७, १५६, १६३, १७५, १६८, २२०, २२४, २३२, २३७, २३८, २४६, २५१, २५७, २६१, २६३, २७६, २८७, २६४, ३३८, ३४४, ३४५, ३३६, ३५२, ३५८, ३५६, ३६०, ३६१, ३६७, ३६८, ३७१, ३७३, ३७५, ३७७, ४०५, ४३४,

४३५, ५६३, ४८६, ५१७, ५२६, ५४३, ५४४, ५५०, ५५१, ५५७, ५६०, ५६३, ६०६, ६१६, ६२६, ६२८, ६४३; ६५३, ६५८, ६६०, ६६२, ६६८, ६८०, ६६२, ६६८

आइति—४५२

आके—११२

आगइ—१२६

आगरण—१२२

आगहु—१२७

आगि—६६, ११७, ६७२

आगिउ—१२८

आल—१६०

आण—१३८, ३००, ३०१, ३०२, ३०४, ३४७, ३६०, ४६०

आणइ—३६, १२६, १५४, १५७, १७७, १६६, १६२, ३१७, ३४४, ४४८, ५३५, ५६६, ६०७, ६१०, ६२४, ६७७, ६७८

आणउ—१४६, ४०५, ४६६

आणहि—२०

आणहु—६३६

आणि—४, १३३, १३८, १६५, २०३, २०८, २४१, २४४, ३८७, ५६२

आणिउ—६५, ७६, ४२६, ५६५

आणिए—१६

आणिक—४७४, ४८६

आणिति—४३६

आणी—२४१, ४५८, ६४५

आसु—१३८

जाणै—१६५, १७५, २५३, ३२०, ४६८, ४७४

जाणघोउ—६३३

जाणी—१७, ७२, ७७, २८०, ३८१, ४२७, ४८३, ५३६, ५४१, ५५७, ५८२, ६४३, ७०१

जात—६६४

जाति—६४७

जादउ—२२, ४६

जादउराइ—६२

जादउराउ—२७, १०६, ६०१

जादउवीर—५४

जादऊराउ—१७

जादम—४६१, ५२६, ५५५, ५६०, ६३८, ६५५, ६६५, ६६६, ६७५

जादम्ब—५०२

जादमराउ—४७५, ५१७

जादमराय—२४२, ६३६

जादमुराउ—६४०

जादव—४६८, ५५८

जादवन्हि—४७४

जादवराउ—१२८

जादौ—४६६

जादौ—४३८, ४६०, ५०२, ६२५, ६४३

जादौनी—४५७

जादौराउ—५२५

जानि—६६५

जाप—१०३, २२६

जाम—३२, ४४, ६८, १२२, १४५, १६३, १८१, २८०, २८२, २६२, ४११, ५०१, ५१८, ५१६, ५४०, ५४२, ५६४, ६२२

जामवंती—६०८
जाम्ब—५२८
जायो—२७४
जालइ—४४०
जालामुखी—५
जासु—४१
जाहू—१७७
जाहि—१०१, ११२, ३०१, ४३७, ४४२, ४६४, ५१६, ६८७
जाहु—३८६
जिउ—५४३, ६८६
जिउजाहुति—५७६
जिण—७, ११३, १८७, २६६, २६७, ३३४, ५१७, ६७७
जिणइ—४६२, ४७०
जिणऊ—४६१
जिणभवण—२६५
जिणभवणु—१८७, १८६
जिणभूवण—२७
जिणमु—१६६
जिणवर—२, ३१४, ६५६, ६७५
जिणवरु—१२, ४६१
जिणवाणी—६६८
जिणसासण—६
जिणहु—६६४
जिणि—५५२, ६२७, ६५१
जिणिउ—२११, ५१४
जिणिंद—६५६
जिणिवि—१७४, ४६१
जिणु—६५८
जिणी—५०८
जिणे—५०२, ६१८
जिणेसरु—६६६
जित्तइ—५०२
जित्यो ५४७
जिन—६६, ७५, ११६, १५६, ३०५, ३५३, ३७१, ४११, ४२०, ४८१, ६६४
जिनके—४६०
जिनुतरणु—६६७
जिन्हहि—५०२
जिन्हि—५३६
जिम्ब—४१२, ४१३, ६६०,
जिम—१०४, १०६, ४६०, ५०५, ५८६, ६८३
जिमहि—५५६
जिमू—१८१
जिमि—१०७, १३६
जियउ—१८३
जियत—१८५
जिसकी—५७२
जिहां—८६
जिहि—४७, १२७, २६४, २६६, २७३, २८४, ३१८, ४८०, ५१३, ५५०, ५५२, ५५३, ५६५, ५६०, ६००
जीउ—२२०, २२६, ६६८, ६८६
जीतइ—५३६
जीतहु—१६५
जीतहुगे—७३
जीतिउ—५३८, ६५१
जीत्यो—५४८
जीभ—२७२, ४८६, ५३६
जीव—२३२, ४८५
जीवण—४०१
जीवत—३७०
जीववाचु—५११

जुगत—३०४
जुगतउ—२४०, २४८
जुगति—४८, ४३४
जुगती—२४६
जुगल—३६८
जुगलु—२११, २३६
जुझ—१६७, २७४, ४६७
जुझइ—५४२
जुझणह—२०६
जुझत—४६६, ६५८
जुझु—२१०, ५३६
जुध—१६५
जुवल—२३५
जुवलु—२१७
जुही—३४३
जूझ—१३८, १६८, १८२, २२४,
४४८, ५१४,
जूझइ—४५१, ४६२
जूझण—४७८
जूझि—१८१, ४६८, ५०१, ५५५
जूझू—१८०
जूवा—६१६
जूह—१६६
जेठउ—११४, ११६, ६७७
जूत—२८५
जूधु—४६६
जेत्वसु—४३१
जेते—३७५
जेम्वरण—३६०, ४ ३
जेम्वसु—३६१
जेम्वहिगे—३६२
जेमि ५६०
जेनि—५५२
जेवण—४००
जैसे—१२४, १८६
जैहहि—३२६
जोइ—४०, ३०४
जोइस—४७०
जोइसी—४७०, ५७५
जोगु—२६, ४०, ६४, ३७०, ५४८
जोजए—१६
जोड—३३
जोडइ—२११
जोडि—६३, १४८, १६१, २०२,
२२२, ३५३, ४५५, ७०१
जोति—४५८, ६१२
ज्यो—४०४
ज्योति—६६०
ज्योनार—६५३, ६६२
जोवइ—१८६ ३६६

झ

झकोलइ—१६
झणी—३६२
झपाण—४८७
झल—५२५
झाणु—६६०
झायउ—६६०
झाल—१७०, ३८६
झावहि—६६६
झुणकार—१२०
झुरत—१४५
झुलाइ—६७
झूठउ—११६
झूलति—६८

ट

टंक—३६६, ३७०, ३७१

टंकारिउ—२८०

टंकाक—७०, ४६५

टलटलयउ—५४१

टलिउ—६७

टलै—११६

टलयउ—२४६

टांग—३७२

टाटण—४७८

टाल—२५८

टीको—३६२

टेकतु—३६०, ३७६

टोइ—४२५

टोपा—४७८

ठ

ठयउ—४४, २७६, ४३६, ५२४, ५६२, ५७५, ५७६, ५८७, ६१६

ठयहु—२२३

ठये—६५५

ठयो—६०, ५२८, ५६२, ६१६, ६२२

ठवइ—३०

ठवहुक—३२७

ठाइ—२०, ३०, १०६, १२६, १५७, २३०, २८३, २६५, २६६, ३२७, ३४४, ३८६, ४१२, ४३७, ४७३, ४८१, ४८६, ५०४, ५३७, ५४८, ५५१, ५७४, ५८७, ६१५, ६१६, ६२५,

ठाउ—२३, २८, ४५, ५६, ५८, ७१, ८०, ८२, १२६, १५२, १५५, १५६, १६७, १६६, १७८, १६८, २३७, २४२, २६६, २६६, ४१२, ४५४, ४७१, ४६३, ४६४, ५०३, ५४३, ५५२, ५७२, ६४०,

ठाउष्ठ—५२२

ठाठा—६८, ६०, ४७६, ५००, ५८०

ठाढउ—२६, ३३, ११६, २८२

ठाडे—४३६

ठाढी—१०४

ठाढो—१६०, १६६

ठाण—१८१

ड

डरइ—१६६, ३०८

डरहु—३३४

डसइ—१६८

डहगु—४६८

डाभहि—५२६

डोम—१२६, ६३६, ६४४, ६४७

डोरे—४१६

डोलइ—३१७

डोलहि—५७६

डोले—२८०

ढ

ढलइ—२३, ५८२

ढलीय—६४३

ढलयउ—७६, ४७४

ण

णंकालु—२१४
णंदण—१८३, ६१४
णयर—८५, ५६५
णवि—१
णविवि—१२
णमेसु—६७
णयणाणंदणु—५६१
णाणु—१२
णारि—२२६, ४१६
णिच्चल—३१४
णिगाय—२
णिमि—६८८
णिय—८५, २६३, ३१५, ३५६, ६१०
णिलउ—१२
णिवसइ—२१४
णिव्वाणा—२३२
णिसुणहु—२७१
णोगांयु—१३

त

तइ—७६, २१४, ३०३, ३६२, ४६५, ५१०, ५१५, ५१६, ५२३, ५५०, ५७३, ५७४, ६२६, ६६६, ६७८
तउ—२७, २८, ३३, ३६, ४८, ५०, ५८, ५६, ६३, ६५, ६८, ८५, ६४, ६५, ६६, ६७, ६६, ११६, १०२, १५२, १६७, २१२, २१५, २२६, २२७, २४६, २५०, २७७, २७८, २८३, २६७, २६८, ३०३, ३०७, ३२७, ३६८, ३७१, ३८४, ३८५, ३६८, ४०३, ४०५, ४०६, ४१३, ४२८, ४३७, ४३८, ४४२, ४५७, ४७१, ४७४, ४८६, ५०६, ५०८, ५१०, ५१५, ५५१, ५८३, ६०१, ६१८, ६३७, ६६८, ६७१
तणउ—११, ६६, ११६, १६७, २६८, २६६, ३००, ३०५, ३१५, ३१८, ३१६, ३२२, ३७६, ३७६, ४२१, ४४८, ४६६, ४६४, ५४६, ५५०, ६०३, ६१८, ६२८, ६६६, ६८०, ६८४
तउनि—४०
तउपट—३५१
तक—१३७, ६४३, ६५३
तजिउ—३२७
तण—८६
तणउ—३६, ६५, २२५, २६८, २७८, ३२७, ४०६
तणो—४४, ५६, ६४, १२३, १२८, १४८, १५६, १६२, २४१, २४२, ३६२, ३८२, ४३३, ४७२, ५०६, ५१६, ५६७, ६०६, ६२३, ६४०, ६७८
तणुउ—३१४
तणे—३४६, ४३०, ५२३, ५२६, ५७८
तणं—६३८
तणो—१६६, ५३४
तणी—११३, ३६७

तत्तपि--३६
तत्तूर---५६१
तंखरण---५०८, ६४५, ६६१
तंखिरणी---४१
तंखरणी-- २८८, ४०१, ४१८
तंखिरणी---१२३, २४२, ५६५, ६३५
तन --४२२
तनी---५६५
तनो --३३२
तप---१६१, २७४
तपचरणहु---६७५
तपु---६७७
तर---६७, ३४२
तरुणे---३३३
तल---६३, १२५, १२६, १६२, २४४, ३८१, ५८४
तलही---१२६
तव---५०, ६६, ७८, ८३, ८४, ८७, १००, ११२, १२६, १४८, १६२, १६६, १७१, १७२, १७६, १८३, १८४, १८५, २.२, २०७, २१०, २२८, २३०, २४६, २५४, २५६, २६३, २८२, २८७, ३०२, ३२०, ३५६, ३५१, ३६६, ३७२, ३६६, ४०४, ४०७, ४२५, ४२८, ४४२, ४४४, ४४७, ४५३, ४५६, ४६६, ४६६, ५०२, ५०७, ५१६, ५२०, ५२४, ५२७. ५३०. ५३१, ५३५, ५३६, ५४६, ५५१, ५५४, ५५८, ५७५. ५८३, ५८७, ६०५, ६०६, ६११, ६२२, ६४८, ६५१, ६५२, ६५४, ६५५, ६६४, ६८४
तवइ---६८, २६६, २५५, ३४१, ३५८, ४३७, ४४५, ४४६, ४८८, ५३३, ५३७, ६०२, ६१६
तव्व---५८४
तवहि---१८५, २२०, ३२६, ४०८, ४१२, ४७२, ६०६
तवही---६८२
तवु---२६४
तस---३८५
तसु---५४, ५६, १४८, १५६, १६२, १६५, २३६, ५०७, ६१२
तह---३६, १२७, १४७, १५१, २१७, २२०, २३६, २६३, ३४७, ४२१, ४८८, ५६८, ५६७, ६०४, ६१३, ६२१, ६३४
तहतह---२२६
तहा---२५, ३८, ५३, ५६, ६२, ८६, ६२, ६४, ६५, १०२, १०३, १२२, १२४, १४६, १५१, १५२, १५३, १५५, १५८, १८०, १६६, २१४, २१८, २२०, २२५, २२८, २४०, २५८, २६१, ३२३, ३२६, ३३८, ३४३, ३५२, ३५४, ३५५, ३६१, ३६८, ३६८, ४१६, ४२६, ४३२, ४३४, ४५२, ४५४, ४६३, ४७४, ५४४, ५६६, ६०८, ६०६, ६१४, ६१६, ६५०, ६६३ ६६५

तहि—८, २१, १२६, १५०, १५२, १५५, १५६, १६४, १७३, १८०, १६०, २०८, २१५, २१६, २१६, २२४, २३०, २४१, ३२६, ३६३, ४१५, ४२८, ४५०, ४५४, ५१७, ५६१, ५८६, ५८८, ५६६, ६१६, ६४७, ६६८, ७००
तहरि—५६२
ताको—१५४, २४३, २७१
ताके—१६८, ३२५
ताकौ—१५४
ताज—४२७
ताजे—४८३
ताम—३२, ३६, ७७, १२२, १४५, १६३, १८१, २६१, २८०, २८२, ४११, ५०१, ५१८, ५१६, ५२८, ५५०, ५५२, ५५५, ५६४, ६१०
तारणी—१६२, २०४
ताल—२५, ६२, २६५, ३६३, ५८०
तालु—५१, ६४
तास—६१३
ताहु—१६२
ताहि—५०, ५२, १७७, ३०५, ३७०, ४०६, ४४०, ४५२, ५२४, ५६१, ६८७
तिउ—३६४
तिजयणाहु—१२
तिण—६०३
तिणि—६४१
तितउ—३६०
तिन—१६७, १७०, ३५०, ४८५, ५६५
तिनको—३४४
तिनके—२४
तिनसु—३४३
तिनस्यो—४०२
तिन्हि—१, ६५, ३७२, ६६०
तिन्हु—३४१
तिन्हहि—१६७
तिनहु—४२२
तिनि—४६, ८८, २६६, ६१६
तिनो—२६
तिपत—५०५
तिम्वइ—२६८
तिम—१६७, १७०, ३५२
तिमुतिमु—३८६
तिय—२६४
तियवर—२०
तिरउ—६६७
तिरिय—४२, २६७, २६६
तिरियहि—२६७
तिरी—२४३
तिलकु—२६, ५६२, ५६६
तिलोत्तम—५५
तिवइ—२६८
तिस—२, ३६, १२८, १५७, ४७३ ४८६, ६२५
तिसके—१३४
तिसको—६२५
तिहु—२०४, २८३, २६३
तिहा—२०४
तिहारउ—२४३, २८८
तिहारे—५१४
तिहारैं—४८०
तिहारो—३७८, ५४६
तिहारौ—२८६, ४२१, ४६३

तिहि—१४, २०, २२, ३०, ३७, ४१, ४२, ४६, ५७, ८६, ६४, १०६, ११२, ११३, १२६, १५६, १५७, १६४, १७०, १८३, १८८, १६८, २०१, २०५, २११, २१५, २१८, २२५, २३७, २४२, २४३, २७१, २७३, २७६, २८४, ३०६, ३२०, ३२७, ३३५, ३४५, ३५२, ३५५, ३७३, ३६१, ४१२, ४१६, ४३२, ५१३, ५३६, ५४८, ५५१, ५५२, ५७४, ५८७, ६००, ६०८, ६०६, ६१०, ६२४, ६४१, ६६१

तिहिठा—६०८

तिहिस्यो—५५०, ५५३

तिहु—२१०

तीजी—२००

तीजे—२७१

तीन—४०२

तीनखंड—२१

तीनि—२०३, २४५, २४६, २७१, ३०६, ५२१, ५४०, ५८३

तीनिउ—२४७

तीन्यो—२६३

तीस—१२८

तुजि—५२१

तुटि—३७१, ५२१

तुंडहि—२६१

तुणह—४२६

तुन्ही—३८५

तुम—२८, ४६, ६२, ११३, ११४, ११७, १२७, २८६, २६०, २६७, ३०२, ३३२, ३३३, ३३४, ३८०, ४२४, ४३३, ४६४, ४६६, ४७३, ५१५, ५२३, ५५०, ६२३, ६२४, ६२८, ६२६, ६६७, ६६४

तुमि—१०८, ३०५, ४४८, ४६४

तुम्ह—१२७, ४२०

तुम्हारउ—२६

तुम्हारी—३७०

तुम्हि—२४८, ३४०, ३८०, ४०७, ४२०, ६४१

तुमहि—४७०

तुम्हो—४७२

तुरंग—३५६

तुरंगु—३२७, ३३१, ३५८

तुरंत—६२३

तुरंतु—१३५, १७१, २१३, २३७, २६२, ४८२

तुरय—५२६

तुरगह—३३१

तुरिय—६८, २५६, ३२३

तुरिहय—१७३

तुरोय—६७, ३३५

तुरीयउ—३२४

तुरी—३३५, ३४०, ४६५

तुरीन—४७७

तुव—३१४, ६११

तुह—२४२, ५०६, ५४६, ५११, ६४०

तुहारे—६२६

तुहि—५०, १४८, १६७, १६२, २५७, २७८, ३१६, ३२२,

३७१, ४०७, ४७२, ५१५,
५३३, ६८५
तुही—७००
तुहु—५११
तूटे—५००
तूटिगो—५१६
तूठउ—१७२, ५५७, ५६०
तूठी—३७७
तूर—३४
तूरी—५०३
तूव—२५५
तेउ—३६०, ५८६
तेज—५२५
तेगा—१५६
तेरउ—६६, १७८, १६७, १७८
तेरह—६८६
तेरे—५१६
तेल—१४२, ३५६, ३५७
तेसो—५७६
तोडइ—२१३, २६१
तोडहि—२१०
तोडि—२६१, ३५१, ३७२, ५२०
तोडिवि—६६२
तोडी—२०६
तोपहु—४६७, ४७१, ५३०
तोरण—८६, ५६३, ५६५, ५६१,
६५५
तोरणु—५७६
तोरी—३५४
तोहि—७४, २४६, २६३, ३०४,
३३०, ३७२, ३६६, ४०८,
४१४, ४४७, ४५५, ४५६,
४५७, ४६६, ४६३, ५११,
५१२, ५२२, ५७४, ५८३,
६०२, ६०४, ६०६, ६४३,
६६७
तौहि—६०६

थ

थणाहर—१६२, २५०
थंभ—१६४
थंभीणी—४०१
थरहरइ—६६२
थल—४७४, ५२६
थाके—१४१
थाविउ—२५२, २७२
थावे—१२१, ५६१
थाल—३८७, ५५२, ५७०
थालु—६१
थुतिवि—६६३
थुरे—४२२

द

दइ—२८, ४१, २७०, ३१५, ३३०,
४२७, ५८५, ६४६
दउ—२००, ५४२
दक्खण—४८४
दगु—२५७
दंत—२१६
दंड—५
दम्व—१४२
दम्वण—३४६
दरउ—४८३
दर्वण—३१
दवुं—३०१

दल—२१, ७१, ७५, २६१, २७६, २८३, २८५, ३२०, ४८६, ५२६
दलबल—२१
दलु—७२, ७५, ८३, १७१, २६२, २८२, २८६, ५३२, ६४६
दस—६, १३६, ३३५, ३३६, ४२६, ४४१, ५२६, ५५६, ६६६
दसइ—४६८
दसदिसार—६७५
दसहु—४६६
दहि—५७०
दाउ—२४८, २५४
दाख—३४७, ३४८
दाण—३००
दाडिम्ब—३४७
दांत—३६५
दावानल—६२
दाहिण—१४
दाहिणइ—५०७
दाहिणउ—५०७
दाहिनी—४८४
दाहु—१४८
दिखलाउ—२३४
दिखलावहि—४५६
दिखलावहु—४६४
दिखाइ—४६४
दिखाउ—७४
दिखालइ—१८६, १६७
दिखालउ—४३२
दिखालि—६१०
दिखालिउ—५४
दिखंया—४०६
दिखावइ—४६६
दिखावहिं—४६३
दिखि—२५२
दिखियावइ—६६६
दिगु—५८७
दिजइ—६५६
दिहु—१२३
दिठ—४२६
दिठउ—३२, ३३७
दिठि—७६
दिठु—२८२, ४११
दिढु—६५६
दिन—११, १११, ११५, १६३
दिनउ—३८५
दिनि—६२१
दिपइ—३१३, ६०१, ६६०
दिवस—११०, ४०३, ४०४, ४३०, ६१६
दिवसु—३५६
दिवावइ—६०६
दिस—१६, ४८४
दिसइ—१६१
दिसंतर—४१०
दिसा—४६६, ४८४, ४६४, ४६८, ५५८
दिसि—१४
दीख—४०६
दीखया—६७५
दीजइ—४४६
दीजै—४८५
दीठ—५६
दीठउ—६२, ८६, ६६, १४७, २०६, ३२०, ४४२, ५१४, ५१८, ५२३, ५४५, ५५०, ५६०, ६३६, ६३७, ६६०,

दीठि—४०, ६३१
दीठी—२७, ४१, ६८, ६६, २०१, २६६
दीठे—३७, ३४४, ३६७, ६५६
दीधउ—६४८
दीनउ—२६, २१६, ३३०, ३३६, ३७२, ३८७, ५११, ५२०
दीनी—४४, २२३, २२८, २५८, २६७, ३४३, ४०८, ५७४, ६५४
दीनै—३५०
दीप—५७८
दीपइ—१६१
दीयो—४०२
दीस—२२४, ६६३
दीसइ—१६, १८, २२, ७२, २१७, ३१३, ३१६, ५०३, ५२६, ५६२, ५६६
दीसहु—१७
दीसांहि—१६२, ४८२
दुइ—३३, ७१, ७६, २११, २२२, २३५, ३०६, ३४१, ३४६, ३५३, ४०१, ६१७
दुइज—१३६
दुइजे—४, २७०
दुइजो—२७६
दुख—१२५, ४२६, ४४५,
दुखइ—३७०
दुजण—६८६
दुजे—३०६
दुठ—६६६
दुद्ध—६६७
दरिद—६
दुवार—४४२
दुवारि—४३६
दुवाइ—४४१
दुवारे—६३६
दुष्ट—७६, १२०, ६३२, ६८५
दुह—७, १६१
दुहागिणि—१०७
दुहु—१११, ११५, १२०, ५८४, ६२४, ६५७
दूखित—६२६
दूण्यो—६३०
दूजइ—११८, ५२३
दूजउ—५२४
दूजो—१६७
दूणे—८१
दूत—६०, ११४, ११७, ११८, ४३७ ६१६, ६२०, ६२८, ६४१
दूतरु—६६७
दूतह—११४
दूतु—४३५
दूयरु—२१२
दूरउ—३८३
दूरह—३३३
दूरि—६६८
दूव—५७०
दूवाह—४६२
दूह—६८६, ६६६
देइ—३, ५, ६४, ७६, ११७, ११८, १६७, १७२, १८४, २११, २१३, २१७, २२२, २६८, २६६, ३००, ३०१, ३०२, ३४१, ३७६, ३७७, ४७८, ४६२, ५७०, ६००, ६१७,

६१८, ६२५, ६२६, ६८४, ७००
देउ—२११, ३२८, ६०३, ६१३, ६६६
देखइ—३८, १०५, १३१, १३२, १८३, १८६, २८१, ४२५, ५०३
देखत—३१, ३७२, ५१२
देखयउ—१३२
देखह—१३४
देखाहि—३३०
देखि—३२, ४३, १२५, १४१, १५६, १५६, १७६, १७७, १८४, १६०, १६६, २०२, २०५, २३०, २३६, २६०, २६६, ३०८, ३१३, ३१५, ३२६, ३६५, ४२४, ४३६, ४५२, ४६४, ४८७, ४६३, ५०५, ५३४, ६४८
देखिउ—६८२
देखित—५८६
देखियउ—३१, ४३, ५१८
देखी—६८, १३१, ३४६
देखीयउ—४८८
देतु—३०५
देव—१५, २८, ५७, ६२, ३१७, ३७०, ५४७, ५८८, ५६४, ६६६, ६६७, ६६८
देवता—६६७
देवतु—५३५
देवल—१८
देवलहि—६७
देवि—६६६
देवी—५, १०३, १०६, १०७
देस—१४, ३७, ३८, ३४४, ५६६
देसु—१५२, ६८८
देह—१२१, ३६५
देहरउ—५७
देहि—१०, २४६, २४८, ३८२, ३८३
देहु—४, १०६, १७१, ३०५, ३४०, ३६६, ४२०, ५८८, ६२४, ६२७
देहुरइ—४६
देहुरे—५७, ६१
दैयतु—१६८
दैव—५६०
दोइ—१८१, १८२, ४५१, ५३६, ६१५
दोउ—८१, १८१, १८२, २८१, ४६२, ४८६, ६३६, ६४२, ६५५
दोवइ—२७६
दोस—६६, २७८
दोसु—६३,
दौडाइ—३३०
द्रुइ—२३६
द्वावस—३७४
द्वार—४४२
द्वारिका—५८६, ५६०, ६२१, ६२८, ६४०, ६४६, ६५८, ६६०, ६६२, ६७०, ६७१, ६७२, ६७४, ६७६
द्वारिकापुरी—१६, २७, १३६, १४५ १५२, १५७, २८६, २६६, ३१४, ५३४, ५६४, ५७१, ५७७
द्वीपायन—६७२

ढोआयनु—६७४
ढेढ—७६, २७६
ढुंसे—३५३

ध

धउउ—४४६
धण—२६६, ३६३
धणुक—६४७
धणय—१६
धणुह—७०
धन—५६५, ६८०
धनकु—५२०
धनष—४६२, ५१७, ५१६, ५२३
धनसु—५३३
धनहर—७८, ५१६, ५२१, ५२८, ५३६
धनि—५५२
धनिसु—५५३
धनियउ—५१८
धनु—५५२, ६५६
धनुक—२६०
धनुके—३१३
धनुष—७६, ८२, १३७, २८०, ४८६, ५५३
धम्मु—६
धंर—८१, १६८, २३०, २४४, २६७, ४१४
धरइ—२४, ३१, ६७, १४३, १६६, २१७, २५०, २५६, २८५, १६१, २६२, २६८, ३०१, ३५५, ३८५, ४१८, ४३६, ४६६, ५४५, ६३१, ६६८
धरउ—१२५
धरख—१६१
धरणि—५१५, ५६८
धरणिसु—६६१
धरनी—६३८
धरम—२६, १५४, २५२, ३६६
धर्म—२०, १५२, ५६४
धर्म्म—५६२, ६५६, ६६६, ६६७
धर्मपूत—१३४
धर्म्मह—६५८
धर्माधर्म—६६६
धरमु—६७१, ६८६
धरयउ—६१२
धरयो—५३५, ५६०, ६५३
धरहि—२५
धरहु—२८६, ६४२, ६८५
धरि—७, ६३, ८०, १७४, २७१, ४०७, ५७५, ६५२, ६६७
धरिउ—४२६, ५६५, ६६५
धरी—१६, ४४, १३१, २०३, ३६६, ४२२
धरीउ—२१६, ५५५
धरे—३६०, ४०३
धरैं—१४६
धवलहर—१५, १८
धवलहरु—३१६
धवहर—३१४
धसक्यो—२४६
धाइ—२१६, २१७, २३६, ४३१
धाइयौ—५३१
धाए—२०५
धाजइ—१४१
धाणुक—७०
धायउ—५५४, ५२६, ५३२
धाराजंकसी—१६५

धीरइ—१४०

धीम—५८८, ६२५

धीर—२५६, ३४६, ४२७, ४५८, ४६७, ४६८, ५१०, ५५८, ५६६

धीरू—१६२, २०१

धुजा—२६३, ३१६, ३१७, ३१८, ४८५

धुणि—६४३

धुंधाइ—४०१

धुरंधर—६७७

धूजा—३१६

धूतु—२७२, २७३

धूम्योउ—४१७

धूमकेतु—१२२, १२५, १५४

धोइ—६०८

धोरो—३२५, ३२६

धोवती—३६०, ३७४

धोल—६६३

न

नइ—५६३

नउ—७, १३

नकुल—४७४

नक्षत्र—११

नगर—४२३

नदी—३६५

नन्दण—११८, १२०

नंदणवण—४६

नंदणवन्न—६०

नंदन्नु—१२

नंदन—१०४, ११५, ४५३

नंदनु—५५३

नमस्कार—२६, ४३, १५८, २४०, ५६५

नमस्कारु—३६६

नमस्तु—४०८

नमि—१०

नंभू—७०१

नयण—३०, १०५, १४१, १४१, २२७, ५६०, ६५०

नयणा—६६

नयन—५६६

नयर—१५, ३७, ६०, १२४, १२८, २६२, ३२०, ३६२, ४२३, ५६१, ५६३, ५६५, ५८६

नयरि—१२०, १३५, २६६, ३१६, ५६७, ५६६, ५८१, ६२८, ६४६

नयरी—४४, ३२०, ५५४, ५६४, ५७१, ५६०, ६२१, ६४०, ६५७, ६७०, ६७२

नयरु—५६, ८४, २७१, ३१३, ६३६

नर—६५, १६८, ५६५, ६१३, [illegible] ६६७

नरनाह—४७८

नरवइ—५४, २५३, २६५, २८०, ६००

नरवै—१६७

नरायण—२८५

नरिंद—१३२, ६५६

नरेस—६६, ५७६

नरेसह—४६१

नरेसु—१६४, ५३४

नव—२२६, ४८०

नवइ—५

नबउ—६
नवखंड—४६०
नवणी—१३
नवि—६३६
नहि—१६७, ३०७
नहीं—१४७, ४८०, ४६५, ५७३
६२०
नहु—६०, २७८, ५०२, ६२६
न्हवगु—६६८
नाइ—६२
नाइंउ—११६
नाउ—३२७, ४१६, ४२१, ४२५,
५६७, ६१२
नाक—३६३, ४२२, ४२५
नाग—२०१
नागपासी—२०४, २५६, २८२, ३८७
नागसेज—२०३, २३३
नागु—१८६, २०१, ४८४
नाचरण—३४
नाचणि—२४
नाचहि—५६६
नाचु—४०१
नाटक—१३७
नाण—२०४
नातह—६६०
नानारिषि—२५, २८, ३०, ३३, ३५
३८, ५६, १४५, १४६,
१५१, २८३, २८८,
४४५, ५४५, ५५४,
५५६
नाम—४०६, ६१४
नामु—१६८
नारद—२६, ३१, ३७, ५१, ४६,
४८, ५१, १४७, १४६,
१५०, १५२, २८५, २६१,
२६२, २६७, १०६, ३१३,
३१४, ३६६, ४१४, ४५६,
५४३, ५४६
नारदु—३४, ४३, ५३, २६५, ५४४
नारदुरिषि—५०
नारायण—२८, ४३, ४७, ५१,
१०१, १०२, ११४, ११८,
१२७, २६३, ४००, ३०५,
३०६, ४०४, ४०५, ४५२,
४६१, ४६५, ४७२, ५३०,
५३५, ५४४, ५५१, ५५५,
५५५, ५६५, ५६६, ६१०,
६२६, ६६५, ६७०, ६७२,
६७६, ६८१, ६६१
नारायणु—२६, २६, ५३, ६४, ६५,
७६, ८५ ८६, ६४, ६५,
११७, १५३, ३३२, ३६०,
४६२, ६४०, ६५०, ६७६
नारायनु—५२
नारायुण—८२
नारि—५५, ८८, ६७, ११५, १२०,
१४२, २२६, २२७, २७१,
२७६, ३६५, ४२२, ४२३,
४२६, ५४१, ५६३, ५६५,
५७०, ५८४, ६०८, ६३४
नारिण—३४७
नारी—१२३
नासु—६६२
नाहि—४५, ८३
नाही—२०७, २६८, २७७, ३३२,
३७१, ४५६, ५१५, ५२२,
६०५
न्हाइ—२०५, ६०८

न्हानी—२३६
निकंटकु—१८६
निकलइ—४६१
निकलिउ—३६४
निकली—२१४, ४२३
निकालि—३८३, ५४८
निकासु—३, ८, १३८
निकुलाइ—१३२, ५७७
निकुल—४५६, ४७१, ४६३
निगहहु—६४३
नीघरण—६४७
निपाति—३५०
निचू—६३३
निज—६५
निजिणि—२१६
निजु—७०, ४१८
निति नित—६१, १४०
निद्रा—६६
निपजावइ—३३८. ३४६
निपाए—६५६
निमजंत—७२
निमजि—७५
निमति—५७७
निमते—५७६
निमस—२४२
निमसइ—१५२, २७१, ५८७, ५६३, ६१६
निमसं—११६, १६४, ६५४
निम्मल—१६१
नियमरण—७६
नियनिय—६६३
नियरी—१६६
—१०५, १६२
निरआसु—६७०, ६६०
निरखासु—६६४
निरास—२३३
निरुत—११२, २१३, ३६६, ४१४
निलउ—६१३, ६६६
निवली—३४६
निवारि—५४३
निवसइ—१५६, २२०
निवसहि—१६, २०
निश्चल—६७०
निश्चे—१६०, ४२७
निसाण—४८३
निसाणह—५६०
निसाणा—६८, ५६०, ५७६
निसि—१२२
निसिपूत—१२७
निसिहि—५४७
निसुणइ—३०५
निसुणउ—२६६
निसुणहु—११, १७४, ४०१, ५६२, ५४६
निसुणि—२६, ४२, ४८, ५१, ६४, १२७, १५८, १७२, १७८, १८३, १८७, १८६, २४६, २५३, २५६, २६४, २८६, ३०१, ३१४, ३१५, ३२०, ३२२, ३२८, ३३१, ३८६, ४२१, ४२६, ४२७, ४३८, ४४१, ४४५, ४५६, ४७४, ५०७, ५४३, ५६६, ६००, ६०६, ६२८, ६३०, ६३४, ६४३, ६५४
निसुणिउ—३२७
निसुणी—३०६, ५१०

निसुणेइ—४३०, ६८४
निसुणो—४६६
निसुणौ—४५४, ५६५
निसुनहु—३८२
निहचे—६७४
निहाउ—५८०
निहालिउ—२०१
निहुडिउ—३६५
नीकलइ—४७६
नीच—२६८
नीचो—२६८
नीवू—६५४
नीर—५२८, ५२६
नीरु—१६, ७८, ३७७
नीसरइ—६६८
नेम—२२, ३६, ५८४
नेम्म—५६७
नेमि—१०, ४६१, ६६४
नेमीस्वर—६६१
नैमिसव—१२
नेहु—६२४
न्योते—३६०
न्योत्यो—३६२

प

पइ—६०, ३०४, ३७०, ४८७
पइठउ—३६३
पइठे—३५१, ३५३
पइंपइ—४४२
पइसरइ—२००
पइसार—१३८
पउ—२४
पउलि—३१४
पएसु—५५४
पकडि—१६०
पकरि—४५७, ४६३, ५४५
पखारे—३२४
पंखि—४८५
पगाह—१८६
पचारि—३२, १६२, २११, ४५०,
४६५, ४६०, ४६४, ४६६,
५३०, ५३८, ५४३, ५४७,
६३४
पचारे—६७८
पचारै—५४२
पचास—७६
पछिताइ—४१७
पछिताउ—३६
पछितावउ—५१७
पछित्तावउ—४२६
पछितावो—२८६
पजलइ—३६
पजुलंतु—५२५
पजुन—६६४
पजून—५३३
पजूनहा—५२६
पजूसह—११
पटरानी—३७४
पटु—१८२
पठइ—८७, १०४, १२०, ७०१
पठउ—७७
पठए—६०, २५५, ६३६ ६४१,
पठयउ—४३३
पठयो—५८८
पठायो—२१८, २२६, ६१६
पठावइ—६६६
पठिवु—१३७

पठे—६०
पठयो—६२, ६२२, ६२३
पठइ—४२०
पडइ—४२०, ५५१
पडउ—४३६
पडल्पड—५०५
पडणु—१३८
पडह—६३८
पडहु—१७३
पडाइ—५३२
पडि—४२६, ४७६, ५१५
पडिउ—७५ १६६, ३३२, ३५६,
३७३, ४१२, ४४०, ५५१
पडिगयउ—३७२
पडियउ—१७३
पडियो—४५२
पडिहाव—४८४
पडी—६३, १५३, ५१४
पडे—४६८, ४६६, ५००, ५०२,
५५५, ५५६
पढइ—३१८
पढण—१३७
पढम—६१३
पढमथ—१३
पढायतु—३७६
पढावइ—१७६
पढं—६१५
पणमइ—१
पणवइ—४
पणवहु—२
पणि—२६६
पत्थय—२६५
पताल—६८६
पतिगइ—२६६
पतियाइ—४०५
पथंतरि—५६२
पदमवतीए—४
पदमपूत—१४७
पदमावती—५
पदमुप्रभु—८
पवारथ—५२, ३१३
पच—१३, २४, १६६, ३११, ३१६,
४०४, ४३०
पंचकउ—४३६
पंचइ—११
पंचज—१२
पंचति—४५६
पंचमु—५६६
पंचमुवीर—६८८
पंचसय—१८३
पंचावणु—१८०
पंडव—४५६
पंडित—७०१
पंडो—५०२
पढंत—३७५
पढंतउ—३७६
पंथ—४६६
पंथि—७७
पंडह—५४८
पभणइ—२२६
पभणेइ—३
पम्वण—१३५
पम्वाण—४१५
पम्वाणु—६४२
पय—१३, १६, १०६, २७१
पयठइ—२१२
पयडी—२६८
पयंपइ—३७०, ४२४, ४६३

पयसार—४४०
पयाइ—१६४
पयार—१०७
पयाल—५६२
पयालि—१४४, १४६
पयासइ—१०७
पयासउ—४१२
पयासहु—१०८
पयासु—१२
पयासो—४०८
पयाहिण—६६६
पर—२१६, ४४५, ४६१, ४८८, ५२७
परइ—५४२, ६६७
परंखिउ—५१५
परगट—४२७
परचंड—५५८
परजलइ—६५७, २७५
परजल्यउ—४४१
परजलीउ—२५३
परजलै—१७०
परठ्यो—६२२
परणइ—४७
परणउ—५७, ६३४
परणाउ—३६
परणी—८८, ३०३
परबमणु—४१३, ५६६, ६४६, ७००
परबमनु—६३५
परबम्भण—१४४
परबम्भुण—१३०
परबम्भनु—३२०
परबवण—२२५, ३१४, ३२०, ५८४
परबवणु—१५५, १५७, १६०, १७३
१७६, १७८, १८२, १८७
१८६, ४२८, ४२६, ४६४
५४२, ५७३, ६५६, ६६६
६६८
११६ १२३, १२७ १३५,
१३६, १४६, १५४, १८७
१६२, ४६२, १६८, २६०
२२७, २३६, २७७, २६०
४६२, ५५१, ६२४, ६७५
६७७
परदवन—३८२
परदवनु—६३४
परदेस—४०८
परदेसी—३७०
परधानु—१८५
परपंचु—२६५
परभाव—४०६
परम—३१०
परमेसरु—६६५
पर्वत—३५
पर्व्वतउ—५४१
परवतवाण—५३३
परघउ—७६, १४२
परयो—५३०
परसपर—३८१
परहरी—१६
परहि—५३२
प्रछन्न—१२४
प्रजलंतु—७५
प्रजलेइ—२०६
प्रतिउतरु—६८४
प्रतिपालिउ—२८४
प्रबवण—५४६
प्रबवणु—५२२

प्रबवन—४५५
प्रबवनु—६७६
प्रबुवनु—१३६, १३८
प्रमाण—३६७
प्रभणइ—४६१
प्रवाहु—५२६
प्रहार—४६५, ५३४
प्रहारु—४६७
पराइ—२६०
पराण—१४४, ३०८, ४७०, ५२२
पराणु—५१८
पराम—२७४
परापति—१८३, १८८, २३०
परि—२८६, ३०२, ३६१, ६४७, ६६२
परिउ—२५३
परिगहु—२४८, ५१६, ५७७
परिगहु—५५५, ६२७
परिणइ—२३५
परिपूनु—५२
परिभानहो—५८८
परिमल—६६३
परिमलइ—२३
परिमलु—६८
परिमहु—४५
परिरहे—६४४
परियण—२७५, ५६०, ५६१, ५६२
परिसांणि—२
परिहुरे—६८८
परिवार—२२, ६३७
परिहुरइ—६८५
परिहरयउ—३८६
परिहरहु—३८५
परिहस—६१, ६६, १४५
परिहसु—५८६, ६१७
परिहाजउ—३२०
परी—३०६, ५०१, ५१२
परीघर—१८१
परीबल—१७५
परीसहु—६८६
पारुति—३८२
परे—२५६, ५०३
परोसइ—३८८
परोसिउ—३८६, ३६०
परोसे—३८७, ४०३
परोसो—३६३
पलणाइ—६४५, ६४६
पलणाहु—२५७
पलाइ—८३, ३५२, ५१६, ५२५, ६४८
पलाणहु—६८, ६६
पलाणिउ—१७५
पलाणु—१७३
पलाणे—२५८
पलि—१४४
पव्वउ—५०६
पवण—५६, ७२, २५२, २६६, ३५४, ३८६, ४३५, ४४१, ६०२, ६३५
पवणि—२०
पवणु—५३३
पवन—५७२
पवय—२८०
पवर—६६२
पवरिष—३३४, ४५६, ४६८, ४६६, ५५०
पवरिषु—४७१, ४६३, ५३३, ६५१, ६७७

पवरिशु—७४, १९९, ४९४
पवरिसु—५३४, ६२४
पवसि—४४०
पवहि—१५६
पवाडउ—६२६
पवाण—६४२
पवित्त—२८
पसाइ—१४८
पसइ—५९४
पसाउ—७, १३, २८, ८५, १०६, १६६, १७२, १८३, १८४, २८८, ३२८, ३७७, ६५२
पसारि—४०
पसारी—४८९
पसारे—५३९
पह—२६, ११४, ११८, १६३, २५६, २४७, २५१, ३०२, ३०७, ४३५, ४४०, ४४१, ४५३, ४६५, ५२२, ६०२, ६२३, ६४७, ६५२, ६७५
पहइह—३०३
पहचाणइ—३२४
पहण—५१
पहर—३५२
पहरइ—४७८, ४९६, ६०७
पहरे—६०८
पहरेइ—७८, ८०, १७९, २३५
पहासु—१५०, ५९४
पहार—५३६
पहिचाणइ—५०
पहिलइ—११२
पहु—५३
पहुंत—९, २५, ७२, ११४, १२२, १३५, २६३
पहुतउ—१३०, २०९, २२०, २२४, २६१, ३३८, ३३९, ३४३, ३४४, ३६७, ४३४, ६४५
पहुतो—४१९
पहुते—५९, १७५, २५१, २९६, ५९०, ६४९, ६६५
पहुतो—५४५, ६४६, ६५०
पहुपचाप—२३४
पहुपयाल—३१४
पहुममालु—२११
पहूत—५७१, ६२८
पहूतउ—३६०
पाइ—१०६, १०८, १०९, १२८, २००, २२३, २३०, २३७, २३८, २९४, ४२०, ४५४, ५७४, ५५१
पाइक—२६०, २६१, ४९०
पाइकस्यौ—२६१
पइात—११६
पाउ—१८२, २६८, ३३६, ४८५, ५४५, ६४९
पाख—१६३
पाखर—२५९, ६५०
पांच—१३६, ४९९
पाचसइ—२५३
पांचसं—२५१
पाचसो—१६५
पाछइ—३१, ६६, ११२, ४१४, ६१९
पाछिलउ—४१३
पाटघरणि—४३
पाटण—२७१, ५८७
पाटमहावे—६४०
पाठइ—४५४
पाठए—३३५

पाठयंउ—५८७
पाठयो—४३५, ६५२
पाडल—३४५
पाडिउ—१६७
पांडव—६६१
पांडवह—४६१
पांडो—२७६, ५५८
पाण—६३४
पाणभ—६४३
पाणिउ—३६१
पाणिगहनु—६५६
पाणिगहणु—५८५
पाणिग्रहन—८८
पाणी—१६१, ५२८
पाणीविंवणी—१६४
पातलि—३८८
पातालगामिनी—१६३
पाथि—५३५
पाप—३२४, ५८४
पापह—१६६
पावउ—६७५
पायो—४०२
पार—१३३, ५६२
पालक—२५२
पालकु—१८५
पालि—६४२
पालिउ—२४४, ५७३
पाव—३३६
पावइ—३६२, ३६२
पावडी—२०३, २११, २३३
पावय—५८२
पावहु—४५८
पास—१०१, २६५, ४१७, ५५०, ६२२, ६८८
पासि—१६७
पासु—१०, १२६, ४२०, ६७०, ६७४
पाहुइ—१२७
पिउ—२६७
पिंडखजूरी—३४८
पिता—४०८, ५५०, ६५१
पियउ—३६१
पियरे—१६२
पीतियउ—४४८
पीयरे—३६७
पुकार—६२७, १२८, २५१, ३५४, ५०५, ६४४, ६४५
पुकारिउ—६६
पुकारियउ—६७, २५८
पुकारी—६५
पुकारयो—३५२
पुड़—५४
पुण—११६, २३०
पुणु—४, ५४
पुणि—८५, १०३, १०६, २१४, २६३, ५६४
पुत्री—६२०, ६४२
पुत्रु—४१३, ४२६, ६६६
पुन—१८८
पुंन—५६३, ७००
पुनवंत—२३०
पुंनवंत—५४७, ५६२, ५६८, ६११
पुंनवंतु—५११
पुन्नइ—२३२
पुन्नहि—२३२
पुन्नु—३३१
पुर—३, ६६४, ६६६

पुरयन—५५३
पुराइयउ—५६२
पुराण—३१८, ३८०, ६६५
पुरायउ—५६२
पुरि—२०, ३४२, ५५५
पुरिसु—३६२
पुरी—१६, १५२, ३१३
पुव—७६
पुव्व—२५५
पुव्वह—२६६
पुप्प—२३६
पुप्पचाप—२१६
पुहपमाल—५२७
पुहमि—१४६, १७०, ३०६, ५५६,
५७७, ५७६, ५६२, ६८६,
पुहमिराय—६७
पुहिमि—८१
पूए—६३२
पूछ—१६०, २१५
पूछइ—२६, ६३, २२६, २४०,
३२०, ३२६, ४००, ४०७,
४०८, ४०६, ४४७, ४७०,
६६६
पूछउ—४४७
पूछहु—१६१
पूछि—२६, ६३१, ६७१
पूछिउ—१५१, २२६, ४५३
पूछो—४०८
पूज—१८८
पूजइ—४२, २४३, ४२८, ४६७,
५६८
पूज्जइ—६५६
पूजण—३५७
पूजा—४६, ५१
पूजी—५६५
पूंडरीकणी—५६३
पूत—११२, ११५, ११७, ११६,
१२७, १४२, १७१, २५२,
२८५, ३७४, ३६६, ४१४,
४१७, ४०८, ४५६, ४६०,
४६१, ४६२, ५४६, ५७४,
६०४, ६१२, ६३२, ६७६,
६७७, ६८१, ६८३
पूतउ—४०५
पूतहि—२८४, ३०६
पूतु—२४८, ४१५, ५४६, ५६१,
६८५
पूत्र—१४०
पून्न—५६८
पून्यो—६८३
पूरउ—२५४, ४४२
पूर्व—४७, १२६, १४२
पूरब—१५०, १५५, १६८, २०८,
२७७
पूरि—२२, ३६२
पूरिब—१४२, ४२३
पूरिहि—५६६
पूरे—७७, ३६७, ४१५
पूव—५६५, ६०३
पूव्व—५६३, ६८६
पूव्वह—६८७
पेखि—१२५, २४१
पेट—१४८, ३८६, ४३६, ४४३
पेम—२६५
पेमरस—२४५
पेलिउ—५०७
पेसलु—२४६, २४८

पेंठा—६०
पेम—२४७
पेखणो—२४
पोरिष—५२२
पौरिष—४५३, ५४६
पौरिशु—२३०
पौरिसु—६८०

फ

फटिक—१७, ३१४
फटिकसिला—२२६
फण—५४१
फरक्रिउ—५०७
फरहरइ—२५
फरहरं—१४६
फरहि—३८२
फरी—४७५
फल—३५१, ७००
फलु—२३०
फले—१६२, ३४८, ३६७
फल्यउ—२०६
फंहरंत—३१६
फाडियउ—२६५
फाटहि—५३६
फारह—२५०
फिरइ—३१, ३३७, ६८६
फिरत—३८
फिरहि—४१०
फिरावइ—२१५
फिरि—३७, ३४२, ५०३, ६६०
फिरे—३७, ६३७
फुंकार—१८६
फुनि ६३
फुडउ—६०४, ३१४
फुणवइ—२१५
फुणि—३८, ८८, ११०, ११८, १२८, १३७, १५७, १५६, १७७, १८४, १६६, १६६, २००, २०२, २०४, २१२, २१५, २१६, २२१, २२२, २२३, २२५, २२८, २३०, २३५, २३८, २३६, २४०, २४८, २७०, २७१, २७६, २६३, २६६, ३०८, ३१२, ३२०, ३२६, ३३८, ३५१, ३५७, ३६०, ३६२, ३६३, ३६४, ३६७, ३७३, ३६५, ४०८, ४१४, ४१६, ४२२, ४२७, ४२६, ४३०, ४३२, ४३६, ४३८, ४५०, ४५५, ४७२, ४६४, ५१५, ५२०, ५२४, ५८४, ५६६, ६००, ६०६, ६१०, ६५२, ६६८, ६६६, ६७१, ६७८, ६८१, ६८३, ६८८, ६६३, ६६८
फुणिर—६६४
फुनि—२६
फुलइ—२६७
फुलवाडि—१०१, ३४४, ३५०
फुलि—३६५
फूटि—५३४
फूलो—३४४
फेकरइ—४८४
फेरहु—८२
फेर—१४
फोकल—३४८

ब

बतीस—८०
बलिभद्र—५१
बहुत—२३७, २८०, २८८
बाढी—८१
बाण—७६
बांधि—२५६
बांधिउ—२२०, २२१
बांधशो-११८४
बात—२४२, २४७, २५५, २८५, २९०
बुलाइ—२५४
बोलइ—७५, २६७, २९०, ३०६
बोलु—१७८

भ

भइ—६३, ६९, १४६, २४९, ३४१, ३५७, ३५९, ३८९, ४२५, ५१७, ६५५, ६९२,
भई—४२४
भउ—२६६, ५६०, ६४७, ६५९
भए—११, ६४, ६८, १०२, १२०, २१२, ४३२, ४३५, ४३९, ४७२, ४८९, ५४८, ५६७, ५७९ ६३७, ६५२
भगति—१०८, २२३, २३७, २३-, २९४, ५७२
भज्ज—५९७
भजहु—४९५
भणइ—४४, ५१, १२३, १७५, २८२, २८४, ३०१, ३०४, ३०७, ३१४, ३२०, ३३३, ३३४, ४५२, ४५८, ४८०, ४८५, ५१६, ६२०, ६९२
भणंत—५६०
भणहि—१८७
भणें—१७६
भंग—३५
भंगु—३२९, ३९४
भंजइ—१७५
भंडारु—३७९, ३९३
भंति—१७
भंती—५७६
भय—१२
भयउ—८, ९, २८, ३३, ११२, ११६, ११८, ११९, १२७, १२८, १३९, १४७, १४८, १५१, १७३, १८०, १८५, २१६, २२३, २४५, २५४, २५५, २६४, २७०, २७५, २७६, २८०, २८६, २९९, ३२०, ३२९, ३३७, ३५६, ३६०, ३६१, ३७२, ३७६, ३९४, ३९८, ४०२, ४१३, ४३०, ४३२, ४३३, ४५०, ४६३, ४७५, ४७६, ४८१, ४९६, ५२०, ५२४, ५४७, ५४८, ५५२, ५५५, ५६०, ५६१, ५६५, ५६६, ५८०, ५८५, ५८६, ५९१, ५९३, ६०२, ६०३, ६१३, ६१४, ६२१, ६३५, ६३९, ६४८, ६५४, ६५६, ६५७, ६५८, ६६१, ६६४, ६७५, ६८२
भयो—२८, ६५, ७२, ८७, १०९, १५४, २०४, २३८, २६२,

२७३, ३५६, ४०६, ४२८,
४७२, ५१६, ५२७, ५३१,
५४३, ५६१, ६२१, ६७६
भये—११५, १८३, २५४
भए—६७५
भर—५४१
भरइ—८५, २५६, ३६४
भरथ—१३७
भरत—५२८
भरह—६५६
भरहखेत—१४, १५२, ५६६
भरह्न—३६१
भरिउ—४४३, ५५२, ५६२
भरिभाउ—२६६, २८४
भरिवाउ—२१, ७४, ७६, ८३,
१६४, १६६, १७१,
१७८, १८२, १८६, २०२
२५६, ३२३, ३३६,
४६५, ६४६
भरि—२८६, ३१३, ३६८
भरिहि—२४
भरो ६१, ६६, ३४८
भरे—१६१
भरेइ—६१, ५७०
भरोसउ—२५७
भलउ—२८, ३२५, ३८०, ५१४,
६६६
भल्यउ—५४२
भली—२६०, ३०२
भले—२३३, ५२६, ५७६, ६५४
भलो—४७३
भव—६६७
भवंतर—५६५
भवपासु—६६२
भवियह—६
भवणु—२६५, ५८३
भहराइ—५३१
भाइ—२४, २६, ६५६,
भाउ—७, १३, २७, १७४, २७०,
२७१, २८६, २६६, ३२८,
३४१, ३७६, ३७७, ४०७,
६०१, ६५२, ६६८
भाख—६४२
भाग—३८८
भागिउ—२५८
भागी—६४६
भाजि—३५६, ४६१
भाजउ—१७१
भाणइ—१६४
भाणिज—६५४
भाणु—२६३, ३३६
भाणेजु—६५१
भांति—१८, २४, ३४४, ३५०,
६५५
भावु—३८८
भादो—१७५
भाबन्व—४८३
भान—३२६, ३३६, ६१८, ६७३
भानइ—१८, २८४, ३५६, ६२०
भानउ—१७१, १७८, १८६, ३२६,
३५६
भानकुम्वर—३२७, ३५२
भानकुमार—३२०, ३२८, ३२६,
३३३, ४१६, ४८६,
५६१
भानकुमाद—३२२
भान्यउ—२०२

भान्यो—४६५
भानहि—२६७
भानिउ—७६
भानु—३०६, ३३१, ३३२, ३५५, ३५६, ३५८
भानुइ—३८८
भानौ—२५६
भामिनी—५१०, ५१३
भायउ—५६०, ५६२, ६३३, ६५४
भारउ—३३५
भारथ—२७६
भारहु—६६१
भाव—६७३
भावरि—८८, ५८५, ६५६
भावहु—५५७
भासमु—१७०
भिटाउ—१००, १०४
भिडइ—७८, १७६, १८०, २१४, ४६६, ४६२
भिडिउ—२०१, २१६
भिरे—४६२, ४६०
भिडे—२८१, ४६८
भिभिउ—६१०, ६११
भिरइ—१६५, २६१, ४५१, ४६०, ४६८
भिरउ—२१३
भिरहु—४७३
भिरे—६१८
भिलु—३०४, ३०८
भीरइ—५४३
भीरहि—४६१
भील—२६८, ३०७, ३०६
भीलु—३०२
भीष्म—८३
भीवमराइ—६५
भीवमु—४४
भीवमुराउ—५६, ६८, ७१, ८३, ८५
भुइ—४५०
भुंजइ—६५७
भूंजही—५७८
भूंजै—६०५
भूंजिउ—५२३
भुवण—३१४, ६५६
भुवन—५४१
भूलउ—३६१, ३७८, ३७६, ३६१, ३६३, ४००, ४०१, ४०२
भूले—३४०, ३८४
भूंजइ—१२६
भूंजहि—११?
भूमि—३७२, ३७३
भूमिय—३१४
भूमिह—६८३
भूली—४११
भेउ—१६५, १६७, ४६६, ६६६, ७०१
भेट—४४
भेटइ—१८७
भेंटि—२३८
भेटिउ—२७, ६२, २३७, ५७३
भेटी—१५६, ६५३
भेरि—१२१, १७३, ५६१, ५८०, ६५६
भेस—२६८
भोग—६१, ५६२, ६६२, ६६३
भोगत—६८३
भोगवइ—२६७
भोगु—२३२, ५८६, ६६१

भोजन—३८५, ४१८, ४६९, ६५३, ६६२

म

मइ—५६, ३३०, ४२९, ४४३, ४४५, ४९९, ५३३, ६३२, ६३३, ६९४
मइगल—७८, १७९
मइयासहु—५१७
मछइ—३५५
मझार—८६, ९०, १००, १४२, २१२, २२६, ३६५, ४२३, ५६५, ५७२, ६३७
मडउ—४३९
मढ—१८
मण—२९६, २९७, २९८, ५१८
मणइ—३९२
मणि—१२, १७, १६८, २९२, ३१४, ३१६, ३१९, ५९९
मणोजो—२२०
मत—२४९
मति—१
मथुराराउ—४६५
मद—६७२
मद्दण—१२
मदसूदनु—६५१
मधुर—९७
मंगल—१२१, ५६६
मंगलचार—१२०, ५६३, ५६७
मंगलचारु—८७
मंगलु—५६८, ५८१
मंगलुचारु—३५७
मंजीरा—६३६
मंडप—६५५
मंडपु—८६, ८८, ५७६, ५९०
मडलीक—५७७
मंत—२७, ६१९
मंतु—६०, १६८, १८७
मंत्र—१८७, ६१७, ६२२, ६३२
मंत्रु—५८७
मंद—५८०
मंदारु—३४६
मंदिर—१५, १८, ९०, ९५, २६३, ३१७
मंदिरि—३५६
मन—२५, २९, ३२, ३६, ३८, ५४, ५८, ६५, ६८, ८४, ८७, १३०, १४३, १४५, १५९, १६६, १७२, १८९, १९४, १९७, २०२, २२७, २२८, २४८, २५९, २८०, २८६, २८७, २८८, २८९, २९१, ३२२, ३२६, ३२८, ३२९, ३३१, ३४०, ३४९, ३७१, ३७३, ३९२, ३९८, ४०४, ४०५, ४११, ४१२, ४१३, ४१७, ४८८, ४९९, ५३०, ५३३, ५३५, ५४१, ५४२, ५४४, ५५४, ५५५, ५६०, ५६५, ५७५, ६०१, ६०२, ६०७, ६०९, ६१०, ६११, ६१७, ६२०, ६२१, ६२२, ६४२, ६५२, ६५५, ६६५, ६७१, ६८१,
मनमा—३५, ४१, ४८, ६५७,

मनवि—६४७
मनह—२२२, ५३१, ६९८
मनाइ—६२५
मनावइ—४११
मनावहि—१०७
मनि—१२२, १५८, २२३, २६८, ३०४, ५३८, ५८५, ६६८
मनु—४२, ३०८, ३२९, ४१३, ५६५, ६५८
मनुइ—५१५
मनुहारि—३१४
मनोजउ—२२१, २२२
मय—३११
मयउवउ—२९२
मयगल—४९०, ५०४
मयण—५७, १७२, १७४, १८२, १८३, २०२, २०३, २११, २१२, २१४, २१८, २२०, २२२, २२८, २२९, २३७, २३९, ३५४, २५५ २५९ २६०, २८३, २८७, २८८, २९५, २९७, ३०९, ३२२, ३३८, ३४४, ३५८, ३६७, ४०१, ४३०, ४३६, ४६३, ४८८, ५१८, ५२१, ५३५, ५४५, ५५०, ५५४, ५५६, ५५७, ५६५, ५६७ ५७५, ५८५, ६०१, ६३६, ६४८, ६६०, ६६२
मयणकुवर—६२७
मयलधइ—५५७
मयणाहु—२३०
मयणाहि—५३४
मयणु—१७२, १७३, १९०, १९७, २००, २१०, २२०, २२५, २३८, २४०, २८४, २९२, ३१५, ३२०, ३२२, ३९४, ४१२, ४४७, ४६२, ५१२, ५१६, ५६०, ५९२, ५९९, ६०७
मयमंत—२६१, ५००
मयमंतु—२०१, २१३, ५०४
मयरध—२०७
मयरधउ—३५५
मयरद्धु—२२५, ३६०, ४९९, ५१५, ५२१, ५४४
मयरद्धउ—२८३, ३६९, ४५७, ५२१, ५२४, ५६२
मयरद्धहु—१६८
मयरुद्धु—४६१
मयरद्धु—११६, ५८१
मयरद्धे—५२६, ६५२
मया—१७१
मय.इ—४१८, ४१९
मयायउ—३२३, ५२४
मरइ—१२८, २६६, ४४०
मरउ—१२५, ४३८
मरण—७, २६६, ४८१, ६७०
मरणा—३११, ४७१
मरणु—५४२, ६७३
मरवाइ—६२७
मरुवा—३४६
मल्ल—५६१
मलति—९९
मलयद्धउ—२९१
मलयागिरि—२१६
मलावझ—४५१

मलावहु—४००
मल्लिनाथु—१०
मसु—६२
मसाहण—५६०
मह—४६, ५८, १६७, २५०, २५८, २६२, ४८६, ५८६, ७००
महइ—३४६
महकइ—६८, ३४५
महणुरिव—५८
महणी—२८६
महतइ—६७८
महंत—२३०, ४२६
महंतु—५०२
महमंडल—२४३
महमहइ—३४६
महमहण—६०, ७३, ४७४, ५०६, ५३०, ५६७, ६००, ६११
महमहणु—५०१, ५१६, ५४६
महमहनु—५०६
महल—३०५
महलई—३०४
महलउ—६१, ३०१, ३०३, ३०६, ४३३, ४३४
महले—६७, ८३
महागुणराथु—६६६
महावे—१३३, २७०, ६७३
महाहउ—२१०, २७४, २७६, ५३६, ६६१
महि—२३२, ५०२
महिमंडल—५३२
महियल—५२८
महियलु—५०६
मही—६०५
महु—१०, ८५, १८३, ३०१, ५१०, ६०६, ६६७
महुयरि—१२१, ४८५, ५८०, ६५६
माइ—४१२, ४४७, ४५४, ४५६, ४५७, ४५८, ६३४, ६८५, ६८७, ६८८
माइन—६८५
माग—३०१
मागइ—३०३, ३२८, ३२६, ३७६, ४३१, ५१३, ६६७
मागि—३७६
मागित—४१०
मागी—५६
मागो—४५७
माजि—४७६
मांझ—३१, १२४, १३०, १३१, १५२, २६६, ३१४, ३१६
माटी—३४२
माड—३६४
माडे—३८८
माणस—१५१, १५३, २६६
माणिउ—५६०
माणिक—६१, २६३, ५६२, ५७०, ५७१
माणु—३३६, ६८५
माणुसु—६६८
मातह—७०१
माता—२४१, ३१६, ४०५, ४०८, ४१७, ४१८, ४३०, ४३२, ५६३, ४८७, ६०२, ६०४, ६८४
माते—४७७
माथे—४७८
माथो—५१७

माधव—६५२—६६६
मान—१२, ३५, ३६, ४५, १८५, २०७, ३२६, ३६४, ४६१, ४८०
मानइ—१०६, ६३३, ६६६
मानन—२२६
मानभंग—६३०
मानहि—४८७
मानू—६४६
माया—३६७, ४६६, ६८३
मायामइ—३५५
मार—४६१
मारउ—५१७
मार्ग ज—१७
मारण—२५५
मारि—८३, १४४, २५३, २६२, ३८७, ५३८, ५४१
मारिउ—२११, ५२४
मारिवंतु—२१३
मारुत—५३१
मारयो—२७०
माल—२३६, ३१६, ४५५, ५०३
मालव—५७८
माला—१२६
मालाहि—१३३
मालि—३५२, ३५३
माली—३५४
मास—१६३, ४०३
मासइ—४२४
माहु—४३०, ४६५, ६२६, ६४५
माहि—१४, १६, १०१, १२८, ६६६
मित्र—३६७
मिल—१२८, १८६
मिलइ—३४, २०७, ५६२
मिलयउ—१८६, २६६
मिल्यो—४१७
मिलहि—२२६
मिलहु—४६६, ४८१, ५८६
मिलाइ—४६८
मिलावऊ—५६१
मिलि—८६, २३०, २५४, २६६, ५८४, ५६१
मिलिउ—४८२, ५६१, ५६०
मिलिसइ—१६०
मिली—४८, ६१, १०५, २६०, ३५६, ४१६, ५४८
मिले—१६०, १८७, ३०७ ६४७, ६५४
मिलि १८७
मीच—५४३
मुकट—१६६, २३३, ५८२
मुकटू—२१७
मुकति—६६७
मुकराइ—६४८
मुकलाइ—२८२, ३५०, ३८२
मुक्के—७
मुखमंडल—४४८
मुखह—२
मुगण्णा—२३२
मुभ—३१५
मुंड—१४६, २६१
मुंडइ—४१६
मुंडुकेवली—६६३
मुणि—१५१, ५६५
मुणिउ—१४४, १८०
मुणियर—२४२
मुणिवर—४८

मुनि—४०, ५३, १५८, १६२, २९८, ३९७, ४१५, ५५०, ५९३, ६७३
मुनिराइ—३६
मुनिसर—५९४
मुंबडी—५२, ६३
मुवरी—३४३
मुंबरीं—६३
मुनिस्वरु—२४०
मुनिवर—१५२
मुरारि—५०, ६७, ८६, ८८, ९०, ९७, १००, १०३, ५४७, ५७२, ५७५, ६०८
मुह—२०७, २४१, ३००, ५११, ६०५, ६३०, ६६८, ६७८
मुंह—१२, १९७
मुहवंतु—९६
मुहवि—४६१
मुहामुह—२२९
मुहि—१०६, १२३, १४८, २१०, २४१, २९८, ३००, ३०२, ३०३, ३०७, ४१४, ५५५, ५२३, १३३, ६७९, ६९४
मुहो—२९०
मुहु—६२
मूठिक—३८४
मूड—२५
मूडउ—४३६
मूंडहु—११३
मूंडि—११२
मूंडिउ—४२१
मूंडो—३९५, ४२२
मुणिसुव्वु—१०
मूसु—३०१
मूंडे—२५, १४६, ३६३
मूवरी—३४१
मेइ—३१८
मेघ—१७९, २८१
मेघकूट १२९, १५६, २३७, ४५४, ५७१
मेघनादु—५२८
मेघवाण—५२७
मेघमाली—५३१
मेटइ—४७, १९८, २७८, ४८६, ६७३
मेटण—१२६, २७७
मेटणहारु—६११
मेडे—३१७
मेडो—३६७
मेदनी—२१
मेरउ—३२९, ६३०
मेरी—३७१, ५३७, ६९४
मेरु—१४, ६७
मेरो—५४२
मेलइ—८०
मेलउ—५५२
मेल्हइ—७९
मेलीउ—५३३
मेह—७१, १७३, ४८३
मेहउ—३७२
मेहकूटि—१५४
मेहु—५३०
मंगल—१८०, ४९०, ५००
मंडो—३६४, ३६९, ३७२
मंदन—१८१
मंलइ—५२१
मोकली—४२४
मोडि—२६२, ३५१

मोडी—६१८
मोती—१७, ६१, ३१३, ५०३, ५६२, ५६३, ५७०
मोपहु—२६४, ४६७, ४७१
मोलु—३४०
मोस्यो—२६५
मोसहु—२०६
मोसिहु—१६०, ५२२
मोहु—२८७, ६८५, ६९२
मोहण इ—६११
मोहणी—५५, १९३, २८७
मोहतिमिरहरसूर—६९२
मोहि—१७१, २४६, २४८, २६३, २६५, ३०४, ३११ ३३०, ३८९, ४०८, ४१२, ४२२, ४४७, ४५५, ४५६, ४६९, ४९३, ५११, ५४६, ५७४, ५८३, ६०२, ६०३, ६०४, ६७०, ६८३
मोहिणी—५५७
मोहहि—१५
मोहु—४३१
मोहे—४९९

य

यउ—६११
य :—१५, ५५, १०८, १०९, १९२, २०७, २१०, २२६, २२७, २२९, २८५, २९७, ३०४, ३१४, ३२०, ३२२, ३२६, ३३२, ३३३, ३६२, ३९१, ४०६, ४२८, ४२९, ४४७, ४४८, ४५२, ४५५, ४५६, ५०१, ५०२, ५०९, ५३८, ५४६, ५४७, ५४९, ६८६
यहुर—४२३
यहु—१२३, ३३२, ३९२, ५०२, ५४१, ७००
याको—५३५
याण—१११

र

रए—६५५
रखवाल—२०५
रखवाले—२०७, ३३९, ३४०, ३४१, ३४२
रखहि—३१५
रचतु—१२२
रचहि—६९३
रचि—१६, २९१, २५३, २९२
रचिउ—३९५
रचित—४७, २७७
रचितु—१२६
रची—४७, २६०
रच्यो—२९३
रण—७२, ७३, ८१, ८३, १६५, १६६, १७४, १७६, १८१, २६१; २८१, ४६१, ४६२, ४६७, ४७५, ४७६, ४७७, ४९०, ४९१, ४९२, ४९६, ४९८, ४९९, ५०१, ५०२, ५०६, ५०७, ५१२, ५३७, ५३८, ५४२, ५४४, ५४९, ५५५, ५५६, ६३४, ६७९
रणधीर—५०८
रणव—७०

रणवासहू—२६, ४१, २३८
रणहांक—५२७
रणि—४६१
रतिनामा—२२७, ५७२
रथ—५३, ५६, ६५, ३५४, ३५७, ३५८, ५२४, ५४०, ५४५
रथु—५०७
रम्यो—२७०
रयण—३१३, ५०३, ५८७, ५६६, ६६०
रयणचूलु—५८७
रयणजडित—६०३
रयणसरसणी—१६३
रयणहू—१६२
रयणि—१२७, २३६
रयण—५४०
रयणनि—५००
रलइ—६५७
रलउ—३२६
रलयउ—१३०, १५८, २४८, ३३१
रली—४८, ६५८
रले—३३३, ६५५, ६६५
रस—२४७, ६६३
रसु—११
रसोई—३६१
रह—७८, १७३, १७६, ४०५, ४८२, ५३२, ६४५
रहइ—२६८, ४०४, ४५०, ६७१
रहउ—३४०, ४४६, ५७६
रहटमाल—६८५
रहटान—४४३
रहयउ—५३३, ५३८
रहवर—५५६
रहवइ—२६२
रहस—२६
रहस्यउ—१२७
रहहु—६७१
रहाइ—१४४, १५७, २१६, २८५, ५४५, ४६५, ६८०, ६८१
रहाए—६०
रहायो—२८४
रहि—७४, ८१
रहिउ—२०५, ६२६
रहिवर—७०, १७५, २५६, ५००, ५०४, ५२६, ५२६
रहे—६४४
रहै—५३७
रहोगे—६८३
राइ—६६, १८५, ५७७, ५७६, ६४१
राइर—१६
राउ—२१, ६४, १२६, १३३, १३७, १५३, १६६, १७२, १७४, १७७, १८३, १८४, १६१, २३८, २५४, २५६, २६६, २६६, २७०, २८२, २८४, २८६, २८८, ३६६, ३७२, ३७३, ४५४, ५०३, ५६०
राको—१७१
राखि—८४, २०५, ५२३
राखिउ—२५७
राखियउ—१८५
राग—३२४
राज—२२, २२२, ५६२, ५६८, ६०५, ६११, ६५८, ६७७
राजकुवरि—२३५
राजु—६६, १३४, १६२, २५१, २५७, २५८, २६६, ६५५,
राजु—१११, १८६, ३३१, ५२३,

५७६,-५८६, ५६१
राजभोग—६७६
राडि—२७५
राडी—८१
राणी—६१, १११, १३३, २७४, ३७६, ३७७, ३७६, ३८३, ३८८, ३६१, ३६३, ३६४, ३६५, ४०५
राणे—५२६
राति—११०
राम—२७५
रामहिउ—२६४
राय—२५५, २५७, ५६०, ५८६, ६४०
रालि—३५८, ३८३, ५३६, ५५३
रालयउ—३६५, ४३८
रालियाउ—४४६
रावण—२७५
रावत—७०, ७५, १७८, २६१, ४६०
रावतस्यौ—२६१
रावल—४२४, ४२६
रावलइ—६५०
रावलुहो—३३८
रिघि—६६६
रीति—६६३
रिद्ध—३६३
रिस—६६६
रिषभु—८
रिषि—२६, ३२, ३३, ४६, ४६, १५६, २६८, ५४५
रिसाइ—३४, ३५, ३०२, ३३६, ४३८, ४४५, ४४६, ५८३, ६३४
रिसाणउ—४११
रिसाणा—२५६
रिसानो—२८२
रीति—३६४
रीष्य—५४४
रुक्मणी—५०६
रुक्मिणी—४४७, ५०८, ५८३, ५९६ ६४०, ६५३
रुकमिणी—४७, १०४, १०७, १०८, १०६, १४८, २४३, ४७२, ५४६
रुकिमिणि—१०२
रुक्मीणी—१५४
रुकिमीणी—१५६
रुकुमिणी—६२१
रुल—३५१
रुधि—५३३
रुवनु—६६
रूप—३१, ३२, ३६, ३६, ५५, ६८, ६७, १०३, १३४, १६०, ३१८, २१६, ३११, ३३८, ४०३, ४५०, ५०२, ५६८, ६१२, ६३४, ६३६, ६५०, ६८४
रूपचंद—८५ ६२३, ६३६, ६४५, ६४६, ६५८
रूपचंदु—८४, ६२५, ६३४, ६५०
रूपणि—४०३
रूपि—४५१
रूपिणि—५०, ६१, ६२, ६५, ६७, ६६ ८४, ६०, ६५, ६६, १०२, १०४, ११६, ११७, १२७, १४०, १४३, १४६, १५०, १६०, १६३, २३१,

३९९, ४०५, ४०७, ४११,
४१३, ४१७, ४१८, ४१९,
४२५, ४२६, ४२८, ४२९,
४४१, ४४६, ४६३, ४६५,
४६६, ४६७, ४६८, ४७१,
४८०, ५१०, ५११, ५१२,
५१५, ५४२, ५४४, ५६१,
५६५, ५७४, ६०२, ६०५,
६२५, ६५२, ६७८, ६८१,
६८७, ६८८
रूपिणी—५६, ७३, ११०, १२६,
३९८, ४०६, ४१८, ४२७,
४५३, ४५४, ५५२, ५९७,
६०६, ६२३, ६३१
रूपिन—४२८
रूपी—३६७
रूपीणि—५३, ७६, ४२५, ६२२,
रूपीणी—७४, ४३४
रूपु—६१०
रूपुकुवर—६२२
रूपो—४३२
रूठे—६८४
रूसइ—४१०
रूहइ—१२
रूहडे—२६५
रूहिर—५०४
रेख—३०
रोइ—४२५
रोपहु—६४३
रोपे—५९१
रोवइ—१४१, २५१
रोवति—३५९
रोस—२८०
रोहिणि—५

ल

लइ—६९, ७१, ७६, १०२, २१२,
२३३, २४८, २४९, २७४,
३०८, ३२६, ४७४, ४४७,
४४०, ४९७, ५६०, ५६३,
६४९, ६५०
लइय—६७, ३०७
लउ—२२१, ४७४, ५३५
लए—१६५, ३५४, ४८९, ४९५,
६३६, ६४४
लक्खणवंत—४२
लखण—३९, १३४, १३६, १३७,
४२८, ६८९, ६९६
लक्षणवंतु—४२८, ६१४
लकुटि—६
लखण—१३२, ३११
लगन—४४, ८७, ४७५
लगाई—९८
लगि—२७४, ३२२
लडइ—३८२
लडणु—१३८
लडहि—३७१
लडहु—३८१
लडी—३६५
लंका—३७५, ३५२
लंघे—२९५
लयउ—१३३, १३४, १८४, २७०,
२८०, २८६, ३६०, ३९५,
४०८, ४१३, ५२०, ५२५,
५३३, ५४०, ५४७, ५५१,
५५३, ६४८, ६३१, ६७४,
६८२
लयो—४५०, ५३१

लरइ—४५१, ४६१, ५२५,
लवंग—३४८
लवण बुहि—१४
लहु—५८०
लहइ—२, ५५३
लहउ—२७३
लहणौ—२७८
लहरि—१६
लाइ—६०, १०६, २७५, ६२०,
लाउ—५७८
लाए—६४६
लागइ—१०८, ११२, २२२, २२३, २६४, ३००, ४३१, ४७२,
लागउ—६००
लागणहु—११३
लागने—४३३
लागहु—१२७
लागि—२७५
लागी—७३, १०८, १४७, २३६, २६०, ३१२, ३८३, ५७४, ६८४
लागे—२३०, ४८७
लागो—२३७, २३८, ५०६, ५४६
लाघण—४०२
लाज—१७६, २४६, ५१३
लाजइ—१७१
लाठी—३६०, ३७१
लाडु—४०३
लाडू—२७०, ३६०, ४०३, ४०४
लाभ—१८३, २०४, २३१, ५४८
लाभइ—१७८, २७८, ३०२
लाभु—६५०
लायउ—४२६
लालची—४४४
लावण—६८४
लावहु—५७, ३५३, ४००, ४११, ७०१
लिउ—३११
लिखाइ—५३
लिखि—६८६
लिखितु—१३७
लिखियावइ—६६६
लिखी—५५
लिख्यो—४८६
लियउ—५३, १३७, १८७, ४१४, ५८५, ६१५
लियो—५८, ८२, २४४
लिलाट—३०
लीए—४६३
लीजहि—२४५
लीय—३६५
लीयउ—४२६, ४६६, ५२७
लीयो—४०२, ५३६
लुवधि—२४७, २७२
लुवधं—२६५
लेइ—५, ६४, ६६, ७८, ८६, ११६, १६६, १७२, १७६, १६२, २०६, २११, २२७, २३५, २३६, ३७७, ४६८, ४७७, ४७८, ४७६, ४६७, ५६८, ६२०, ६२५, ६७५, ६८६
लेउ—१०४, १६५, ६०० ६२६
लेकर—३८७
लेखणि—३
लेगयो—१५४
लेचल्यउ—५१०
लेचल्यो—४६४

लेण—१४२, १४६
लेजइ—४५७
लेतइ—२०६
लेनि—२३६
लेहि—७२, १४४, २६८, ३०१, ४१०, ६०७, ६७६
लेहु—६६, ७५, १४६, ३४०, ४२०, ४६४, ४६६, ४७४, ६२०
लेहे—२७७
लैगय—१५६
लोइउ—६७
लोग—२७, ६०, ३४६,
लोगु—३००, ३३२, ३८६, ३६०, ३६२, ४२३, ४५२, ५८६, ६६१
लोटइ—४३१
लोणु—३८७
लोपि—२६३
लोपियउ—५६५
लोपी—७३
लोयण—६६०
लोयपमाणु—६६०
लोयणु—५०७

व

वइ—३६, ५७८, ५६०, ५६६, ६००, ६४१, ६६३, ६६७
वइठइ—१४३
वइठउ—२३, ३५, ६४, २४८, २५८, ४६३, ६६८
वइठे—६२, २५१, ३१८, ४३४, ६०८
वइठो—३५, ११७, ५६६, ६५०
वइसाइ—३४१
वइसारि—१०३
वइसारिउ—५६२, ५६६
वइसि—३८५
वखाणइ—६६८
वखाणु—६६४
वचन—५४६, ६२८, ६३२
वछथलि—६०६
वजइ—१७३
वज्र—५२, ६३, २०६, २५८, २६४, ५२४
वजहि—५६६
वटवाल—३००
वडउ—३३२, ३६२, ४२३, ४३६, ४५३
वडी—३३, ३०१
वडे—३८७, ३८८, ३६५,
वण—५६, १०१, १३०, १३१, १६६, १८७, २१२, २२०, २२१, २२४, २२६, २४०, २५४, ३३६, ३४२, ४८५, ६६६
वण्ण—६६३
वणवेइ—५५
वणदेवी—१०५
वणवर—३१४
वणवाल—६६
वणवासी—६६४
वणह—८६, १००, १४२, २१२, २२४, २२६, ३३८
वणिज—२७२
वणिसण—३३
वतीस—
वत्तीस—८०
वत्तीसी—१३२

बवनि—६३१
बवतु—२१५
बंवे—२७
बघाए—५६७
बघावउ—११६, ११७, ११८, ५६३
बघावा—१२०
बघु—४५०
बघौ—४६५
बन—१३०, २२५, ३३८, ४७४,
बनखंड—१२४
बन्नंयउ—८
बनवासा—६७४
बंग—५७८
बंबनमाल—१७, ८६
बंबर—३५०, ३५१, ३५३, ३५४
बंबरवेउ—२०६
बंवल—३५०
बंबे—२६५, ६६०
बंभउ—१६३
बंधि—१८३
बंधिवि—३४६
बंस—११०, ५७६, ६२५, ६५५
बपु—१२
बभंगु—१६८
बंभए—१२०, ३१८, ३६३, ३७८, ३८२, ४४३
बंभगु—३६०, ३६३
बयठउ—५३, ११६, २२०, ५६०
बयरी—१०८, २२६
बयग—२६, ४६, ६१, ६२, ७७, ६६, ६७, १४१, १५८, १७२ १७६, १८६, १६२, २४०, २४६, २५३, २५६, २८६, २८६, २६८, ३१६, ३७१, ३६७, ४२१, ४२७, ४३८, ४४१, ४५४, ४५५, ४७०, ५१०, ५५६, ५६६, ६००, ६०२, ६२७, ६२८, ६३०, ६३१, ६३४, ६५४, ६७६, ६८४
बयणु—६०, ६४, १४६, १६०, २६५, ३०१, ३१५, ३३१, ३७८, ३८४, ४१२, ४२६, ४३०, ४३२, ५१६
ब्यंजन—३८८
बयर—१२३
बयराउ—४६८
बयरु—८४
बयसंवरु—१७०
बयसरि—५८
बयसारि—११६
बयसारियउ—५६२
बर—४४, २०१, २०६, २२६, २३६, २५६, ३१५, ३४३, ३५६, ४११, ४२८, ४६७, ५०२, ५४६, ५५६, ५५८, ५६१, ५६८, ५७०
बरजइ—५८३
बरजे—३७५
बर्ग—३१६
बर्गाइ—५४६
बरत—२६६, ६५६
बरतु—४०८
बरंगिणि—६६७
बरम्हंड—५३६
बरम्हंडु—४७४
बररंगिणी—५६५

बरस—१३६, ५५३
बरसइ—७८
बरसहि—२८१
बरहासेण—२१८
ब्रह्मचारि—३६८
ब्रह्माउ—६३७
बुद्धि—१३६, ५४७
बराह—२१८
बरि—६०५
बरिस—१५७, १६०, १६३, ५४८, ६७१
बरिसउ—५३०
बरिसहि—१७६
बरिसुहु—१४५
बरी—२६, ३०६,
बरु—७००
बल—१३२, २०२, २८७, २६३, ४०६, ४५३, ४५६, ४६१, ५०२, ५७६, ६४३, ६८०
बलि—११६, ४६६
बलिबंड—४६०, ५५८
बलिभद्र—२२, ७८, ६२, ११३, ३१५, ४३३, ४३४, ४४४, ४४५, ४४६, ४४८, ४६७, ४६४
बलियउ—२३०
बलियो—४६४, ४६७, ५०१
बलिवंत—१२७, ५३६
बलिवंतउ—२०३
बलो—४५८
बलीभद्र—४४२
बलु—६६, २७६, ३०७, ४६४, ४८८, ६६६, ६५१
बवलु—३४५
बवलसिरि—३४५
बसुविउ—३६८
बसुवेउ—३७३
बसइ—१४, १५, २०, १०१, ३१३, ३१४, ४६०
बसई—२१६
बसते—६६५
बसंत—२२७
बसंतु—२२१
बस्त—१६२, २१७, २३६, ३०१, ३०२
बस्त्र—४, १०३, २२६
बस्त्रु—३००
बसहि—२०, ६६६
बसा—८८
बसारि—४५७
बसी—४७०
बसुण—२००
बसुवेउ—३७१, ३७२
बसुवेव—३१७, ३६७, ४६६, ४६४, ४६८
बहु—७६, ८०, १०५, १०७, २४५, ३१६, ३१७, ३१८, ३१६, ३७६, २२३, २४५, ३१६, ३१७, ३१८, ३१६, ३७६, ४००, ६०४
बहुइ—५२०, ५२६
बहुउ—३६५
बहुत—१४१
बहुयउ—२८२, ५३८

बहुहि—५०४, ६४३
बहि—१३०, ५२८, ५२९
बहिरा—११०, २७९, ६०६
बहिरि—६४३, ६५४
बहिरी—१०९
बहु—३९, ४२, ९१, ९६, १०१, १०५, १३७, १७३, २२३, २९२, ३१४, ३१९, ३४८, ३५०, ३५६, ३८०, ४१८, ४१९, ४३८, ४५०, ४५१, ४९९, ५२४, ५५७, ५६१, ५६३, ५७५, ५७६, ५८१, ५८६, ५९०, ५९७, ६०३, ६१२, ६३७, ६५६, ६५८, ६६३, ६७५, ६९१
बहुडि—८४, ८५, २९१, ५१३, ६८७
बहुडी—२७९
बहुत—१८, २४, ४४, ६१, १०५, ११५, २३७, २३८, २९४, ३२२, ३४४, ३४७, ३८८, ४१६, ४३१, ४४३, ५७३, ५७६, ५८९, ६०५, ६१९, ६३२, ६३९, ६५५, ६७७, ६८३
बहुतई—४९८
बहुतु—५४६, ५६१
बहुपरि—१९४
बहुमती—४
बहुरि—४११, ६१९
बहुरु—३२८
बहुरूपिणी—६३४
बहूत—४६०, ६४१, ६६६
बहूतु—१२७
बहे—५२९
बहै—१६२
बहोडि—४३७
बहोडी—२२१, २७७, ३७१, ४३७, ६१७
बहोरी—२८७
बाइ—१०८, ४८०, ४८४
बाइस—८९, ६८९
बाखर—३२५
बाखर्यउ—३२५
बाग—३२४
बाचइ—६९७
बाजइ—२४, ५८०
बाजरण—४८३
बाजंत—६५६
बाजहि—४, १२१, १७५, ५६१
बाजे—१७५
बाट—३०४, ३०७, ४८४
बाडह—४३९
बाडि—१०२, ३४४
बाडिउ—३१४
बाडी—१०५, ३४३, ३४९, ३५०, ३५१, ३५३, ३५४
बाढइ—६२४
बाढिउ—५०६
बाढी—२७५
बाण—७८, ७९, ८२, १३८, १७९ २८१, ५१८, ५२१, ५२३, ५३१, ५३३, ६४७
बाणनि—५१, ६२, ८१
बाणि—२
बाहि ये—१९
बाणी—६९२

वाधु—५३५, ५५३
वात—२९, ४२, ४८, ५३, ७५, ९३, ९४, ९६, ११९, १५०, १५४, २९७, ३२६, ३६९, ३८२. ३८३, ४४४, ४४७, ४५३, ४७०, ४७२, ४८०, ५१२, ५२२, ५५०, ५९५, ६२३, ६२६, ६३०, ६३१, ६३३, ६७१, ६७४
वावर—३४९
वाधि—७०, ९५
वाधित—८५, ५१७, ६४९, ६५२
वांधि—४४९
वाप—४६२
वापहि—२८५
वापी—२५८, ३६२, ३९८
वापु—६८०
वांभण—३२५, ३३५, ३६५, ३७०, ३७५, ३७६, ३७८, ३८०, ३९०, ३९३, ३९४, ४३७, ४३९, ४४२, ४४३
वाभणु—३२६, ३२७, ३६३, ३८०, ३९१, ४३८
वाम्बन—१३१
वामन १२५
वामा—७४
व्याहु—४०९, ६२१
व्याहु · ६२१
वार—११, ४३, ६०, ७९, ८९, २६०, ३१२, ३८३, ४००, ५६५, ५६७, ५९१, ६२०
वारवइ—१९
वारवार—१०८
वारमइ—१५९, २४२, ५७२, ५९६
वारम्बइ—३१२
वारह—१६, १५७, ६७०
वारहसइ—१२९
वारहै—१६०
वाह्मण—२०
वारि—७८, १६१, ६८१
वारु—११
वाल—१७७, २६४, ३००
वालउ—१६८, १७०, १८८, ४३०, ५७३
वालखयंत—३५२
वाला —४२९
वालु—१६९
वालुका—३२७
वाले—१६७, ३८२, ६४२
वालेहि—१७७
वालं—१७१
वालो—१७६
वावण—१५५
वावडी—१०५, ३६०, ३६३, ३६४
वावरी—१०२, १०४
वावी—२१४
वावीस—११
वास—२३, ६६३
वासु—३
वासुपूसु—९
वाह—४०१, ४५७, ४६३, ५४५
वाहिर—३८३, ४४६, ६४३, ६८९
वाहिरी—४०९
वाहु—३६९
वाहुड—५११
वाहुडि—८६, १७७, २४६, ३०८, ४३९, ५५३, ६०९, ६६०, ६६६

बाहुडिउ—३७२
बाहुडी—१३३, १५८, ३६५, ६०६
बाहुरि—१४०, १६३, २४८, ४५३, ६२५, ६५८, ६६६
बाहुरी—१७७, ३४३
बाहुरे—४२२
बिउ—६८६
बिउलखण—२२५
बिकाहइ—११२
बिगतिहि—४३४
बिग्रह—३७६
बिगहु—१६४
बिगाह—२८५
बिगुचीन—३३६
बिगोइ—२५२, ४२४, ५१३
बिघन—६
बिचारि—३६, ६३, २१२, २२७
बिचारु—३०५, ३२०, ३८४, ६०६, ६०७, ६०६
बिचाहरण—४८६
बिचित्त—६६३
बिछोही—१४२
बिजउ—४२३
बिजउरे—३४७
बिजयसंख—२३४
बिजयसंखु—२१६
बिजयागिरि—१८७
बिजाहर—३८, १८४, २२६, २६५, ३१८, ५७२, ६१६, ६२१, ६६१
बिजाहरनी—६२०
बिजाहरि—५५, २२१
बिजाहरु—२२३, २६२, ५७१
बिजु—५८६
बिजोगु—३३२, ३६२, ४५२, ५४८
बिठु—७६
बिणवइ—२११
बिणहु—३४
बिणासु—६७४, ६६०
बिधु—१
बिथारि—५७६
बिदेह—१५०, ५६३
बिद्या—१२६, १३२, १६१, २०३, २०५, २२२, २३३, २४५, २४६, २४७, २४८, २४६, २५५, २६३, २६५, २६३, ३६४, ३८२, ४०६, ४१८, ४५४, ४८८, ६५१
बिद्यातारणी—१६४
बिद्याधर—५८६
बिद्यावल—६७७
बिधाता—१४०
बिनइ—६२, ६४, ४३४
बिनउ—३६६
बिनवइ—२७, ११८, ४२०, ५८८
बिनाण—२७३
बिनोद—२४
बिप्र—३२३, ३२६, ३२८, ३३३, ३३४, ३३७, ३६२, ३७७, ३८०, ३८१, ३८५, ३६०, ३६५, ४३५, ४३६, ४३७, ४४२, ४५६, ५६८, ५७१
बिप्रइ—४४५
बिप्रहु—३४५
बिपरित—३२, ४२४
बिप्रु—३२६, ३३०, ३८७, ३६२
बिभउ—३६६, ५०१
बिभिउ—१६०

विमलु—६
विमाण—२५, ५३, २६१, २६२, २६५, ३१२, ३२०, ४८५, ४८७, ५५६
विमाणह—४६२, ५४४
विमाणा—१३३, ६५५
विमाणि—१२४
विमाणु—१३३, १३५, १८६
विमाना—४६६
विंव—२६६
विम्वाण—१३०, ३१८
विम्वाणहु—१३१
विम्वाणु—१२२, २६?
वियउ—३१
वियाण—२६६
वियापइ—३८४
विटमी—४२३, ५२६
विरस—८४, १०२, १६२, ३४४, ३४७, ३५१
विर्ल—२०६
विरचि—१५७, ३६६, ४०६, ४३०, ६१७, ६८२
विंधि—१३६
विरसु—२२५
विरूवउ—२५४
विरूप—३१
विरूपी—३६५
विलल—८३, २१५, २६६, २६२, ५०१, ५२४, ६३१, ६७६
विलसउ—२६२, ३२६, ४१५
विलसहि—१४३
विलसाइ—१६०, ३६१, ६८१
विलसाणी—६३०
विलसी—६०, १४०, ३५६, ३६१, ४७५
विलसो—६७८
विलतरंग—२२५
विललाइ—४००, ६८१
विलसइ—५८६
विलसाइ—५६२, ६६२
विलास—११३, ६६२, ६६३
विलिस—१४६
विवाण—१५८
विवाणहि—२८१
विवाहण—३०६, ५८१, ५८४
विवाहहि—४६, ४७
विवाहि—२२७
विवाहे—६२२
विवाहु ४४, ४८, ८७, २२३, २८६, ४१३, ५८५, ५८६, ५८६, ६५४, ६५५
विविहु—१०७
विष्णु—७६
विषमु—२०१, २०७, २२६, ३३१
विषय वासिणी—६३३
विस—१६६ २७०
विसखाती—४७६
विस्तार—१६
विसथाइ—६६
विसमइ—५३५
विसमउ—१४३, १८५, २५०, ४०५, ५५५, ६११, ६३१
विसमादी—३२
विसरयो—१४५
विसहर—१६०, २०२, २०६, २१४, २१५
विसहरु—२१४

विसाइ—२२२
विसाले—२६६
विसाहु २१६
विसुर—५६६
विसूरइ—४१२
विसेषइ—१५
विस्नु—५२१, ५४५
विसास—२६६
विहडाइ—५३१, ६८०
विहडाउ—४६१
विहलंघण—५४
विहलंघन—२५०
विहसि—५६, ६४, २६०, ३७०, ४२६, ४५८
विहसत—६०
विहसंतु—२५, ११७
विहसिउ—६०६
विहसाइ—२६, १५६, २००
विहसेइ—६१
विहि—४०, ४८६
विहिणा—६६१
विहिसाइ—६६८
विहु—६८६
वीजाहराउ—१५३
वीछु—५३६
वीडा—१७२
वीण—४, ५८०
वीणा—३०३, २३३
वीधा—२७७
वीनयो—६३
वीय—१३
वीर—७८, ८१, १३६ १५५, १६३, १८१, १८२, १८६, २०१, २०६, २१२, २२१, २३६, ३४३, ४०३, ४२७, ४४७, ४४६, ४५८, ४६७, ४६२, ४६८, ५०२, ५१०, ५४६, ५५६, ५५८, ५६१, ६३७
वीरा—३५२
वीरु—१०, १३०, १६०, १६६, २०७, २०८, २०६, २१०, २१४, २२०, २२४, २२५, २२६, २५६, ३१५, ३४५, ३४६, ३६२, ५०१
वीवो—१६७
वीस—३३५, ३३६
वीसक—४४१
वुझाण—१८५
वुझाइ—५२८
वुझिवि—१३७
वुधि—१, २६८, ३६४, ४३५, ४८८ ७०१
वुद्धि—४१८, ६३५, ६७६
वुरो—६३०
वुलाइ—१८७, ६२२
वुलाय—१०४
वुल्लिउ—१८३
वूवइ—२२७, २६६, ६४०
वूझइ—१, १३६
वूझिउ—१३८
वूढउ—३२५, ३३४
वूढे—३३२
वूधी—४८१
वूंद—३११
वूरे—४८५
वूलाइ—४००
वेग—५६, ७२, १३५, २६८, ३५४, ५७२, ५८७, ५८६

वेगउ—३६८

वेगि—६१, १६५, १७०, २५३ २८९, २९०, ४३५, ४४१, ६०२, ६०५, ६३६

वेगु—६३४

वेगे—२८९

वेगो—५४३

वेटा—३९

वेटी—३९, ६२४, ६२७

वेवियउ—१४

वेण—६५६

वेताल—५०४

वेतालु—३२

वेधि—६४

वेव—८७, ३२८, ३७४, ३८०, ५६८ ५८१

वेब्हुउ—४३०

वेल—३४८

वेलउ—१२५

वेला—५७९

वेलु—३४५

वेसु—३०६

वंकार—६३९

वंडउ—१०१, ३८७

वंठि—३८१

वंठी—१०५, ३८८, ४२६

वंठो—३५२

वंध—१५५

वंरूप—६११

वंधु वरू—४७४

वंस—२०

वंसइ—४८५

वंसण—३९९

वंसंवर—७६

वंसु वर—६४३

वंसरहि—३८१

वोछी—४८१

वोल—४५, ३७८, ४२१, ४५७ ४७३, ५९०, ६३१

वोलइ—४३, ४५, ५६, ८४, ९६ ९७, ९९, १००, १०९ ११७, १४९, १५२, १६७ २०६, २६६, २८८, ३०६ ३१३, ३६८, ३८४, ४०९ ४४५, ४४७, ४६४, ४९३ ५४४, ५५४, ५५६, ५७३ ५७४, ५८३, ६०७, ६२५ ६३४,

वोलत—६४३

वोलति—६४२

वोलते—६४३

वोलि—११९

वोलिउ—५१९

वोलियउ—६९

वोल्यउ—५१७

वोले—६०५

वोलैं—१४८, ६०६

वोलो—४७३

वोल्यो—१७८, ५०१

श ष स

शौंगी—३५

षयेंमु—९

षण—३०, ५९

सइन—२३
सउ—३७, ७६, १६८, १७६, २२४
२५२, ४८८, ६२६, ६७६
सकइ—१६८, ३६२, ४६६, ५३२
६३०
सकउ—३३१, ४३७, ४४३
सकति—२६८
सकयहु—३३
सकलतउ—१३०
सकहि—३३०
सके—५२३
सकेलइ—५५६
सकयो—२०२
सखी—४००
सगलो—४५२
सगि—६१३
सगुन—४८५
सघण—७८
सचउ—५८७
सचभामु—३६
सजिउ—४७५
सजण—६८६, ६६१
सजहु—७१
सजूत—२६३
सज्जण—१८३
सज्जेह—१७३
सभूत—१७५
सटकइ—३३५
सठ—७७
सजे—६३८
सतजण—६६३
सतभाइ—२६, ३३०
सतभाउ—४५, ८४, ३६८
सतभामा—३०, ३१, ६१, ६८
१०८, ६१३
सतरह—१०
सति—६४
सतिभाउ—४८, ५६, ६२, १००
१५२, १६१, २२३, २७४
३२६, ५१७, ५४३ ५७३,
५८५
सतिभाम—४०२
सतिभामा—६३, ६४, ६५, ६६, ६६
१०३, १०४, १०६
११२, ११३, ११६
११८, १२७, ३१८
३४३, ३६१, ३६२
३७३, ३७५, ३८५
४१६, ४२०, ४२४
४३३, ४४३ . ८६,
५८७, ५८८ ५६७,
६०१, ६०६ ६११,
६१४, ६१७ ६५७
सतीभामा—६२
सतुवाची—६४२
सदा—६६३
सदाफल—३४७
सधाणि—६४७
सधार—१, ३, ५५६
सधारु—५, ३०७
सघे—६४
सघेहि—१८३
सन—५३२
सनघु—१७३
सनद्धच—४७५
सनमथ—२४५

सनमथु६८६
सनबधु—४०६
सनाहु—४७८
सनीश्चर—११
सनेहु—६०३
सनेहु—५८८, ६४२
संक—३६६, ३७१
संख—५१, १२१, ३४८, ५६६
५८०, ६५६
संगइ—२६८
संग्राम—२१०, ४६७, ४६६, ४६३
४६८, ५००, ५०६, ५४६
५५५, ५५६
संग्रामु—२६६, ५०८
संघरइ—२७५, २८३, ३८८, ६७२
संघरहु—१६५, ६७१
संघर्‌षउ—५१०
संघरि—२८६
संघरी—३५१
संघरे—४०३
संघार—४६१
संघारू—४६२
संघारणु—७६
संघासरण—२३४
संचरइ—३०
संचारिउ—५१६
संजमु—५६४, ६६६, ६७३, ६७५
संजुत—७२
संजुत—३२०, ४८२, ५७१
संजोमु— ४०
संति—६
संतापु—१४०, १४२
संतोषी—१६३
संदेसउ—३६८
संदेह—४०६
संदेहु—१६, ३०५, ५३०
संधाण—८०
सन्मथु—६८७
सन्यास—३३१
संसार—६५६
संसारि—६६७
संसारु—२३१
संहरे—३६०
संहार—१६१
सपतउ—१५६, २२८, २४०, ३५५
४६३, ५४४
सपत्तउ—१५०
सपत्ती—६८१
सपते—८४
सपराण—८१, १८१
सपराणु—२६
सपरान—४५८
सफलु—२३१,४२६, ५६२
सब—२२, १११, १६२, १७५ १८७
२५४, २५५, ३५०, ३५६
३५३, ३६४, ४२५, ४७३
४८१, ५०२, ५१२, ५८६
५६३, ६३८
सबदु—२४
सबहू—२३०
सभा—२३, ५३, ३३२, ३३७
३७२, ३७३, ४५७, ४६३
४६४,
सभाइ—११०, २५५, ३१२, ३६०
४५८
सभाउ—२५७, ५६६
सभालइ—५२१

समालि—४७७, ५३६
समालिउ—७६
सम—७२, २४३, ४२८, ५२२, ५६२
समउसरण—६६५
समझाइ—६६, १४५, ३६२, ६२८
समझावइ—६८७
समथ—२०६
समवि—२६४
समाविउ—१८४
समविनारायण६५८
सम्वरि—३०३, ४०६
समयमुहं—१२
समरंगिणि—७६
समराण—१७५
समरी—४८८
समवसरण—१५१, ६६४
समहाइ—२७६
समाण—१५
समाधान—४००
समान—१५
समु—३३२, ५७३
समुझार—१५०, २८५, ३८३, ४००
४८०, ५५०, ६८८
समुझावै—४८६
समुइ—३२७
समुदु—५५७, ६५६
समुद्र—१२५, ५५७
समूंद—५७८
समेलि—३८६
संपतउ—६५, २२५
संपति—७००
सबु—४५, ६६, १६७, २८३, ५०८
५५३, ५६४, ५६६; ६२४
६४६
संभयउ—५६३, ६१०
संभये—१११
संभरि—५७६
संबकुम्वाव—६१२, ६२४
संबकुवर—६१६, ६१८
संवतु—११
सम्वल—२३५
सम्हारइ—४७६
संसयह—५६६
सम्हालि—१२३, १६२, ४५०, ४५१
सयपंच—२२८
सयन—२६०, ३२०, ४७४, ४८३,
४८८, ५१०, ५१४, ५२६,
५२८, ५५६, ५७७, ६४६
सयना—५१२, ५६४
सयनु—४८७, ५०८, ५७२,
सयल—२५८, ३५०, ३८५, ३६०,
३६१, ४६६, ५२६, ५५८,
५६१, ५६३, ५६४, ५८६,
५८७, ५८६, ५६१, ६१४,
६६८
सयलह—४६१
सयलु—३७, ३८६, ४१३, ५१०,
५५५, ५७७
सर—६४, १७६, २२४
सरण—१३
सरणा—३११
सरलि—१४४
सरधंगु—६४३
सरवरु—२०८
सरस—११, ६६३
सरसती—४
सरसुती—१
सरस्वती—६२८

सरिस—१०२, २६५, २६४, ४२५, ४६३, ४७०, ५३६, ५६१
सरिसो—४६५
सरीर—५४, ५०८, ६८५
सरीरहु—६८४
सरीरु—२३६, ३४६
सरु—१, ५२०
सरुप—३८, ३६, ४२, १३६, २२७, २३८, ४२८, ६१४
सरुपु—१३४
सरे—२८१, ३२०
सरोवर—२०४
सरोवरु—३, २०५
सल—६४, २१३, ५५६
सलकिउ—५०६
सलहण—६३६, ६६१
सलहिउ—२३०
सलि—२१६
सव—५७६, ६३८, ६४३, ६४६
सवई—३६७, ४१५
संवइ—६११
सवत्तिसाल—६१
सवत्तिसालु—५८६
सवइ—५६६
सवनि—३७५
सवनु—४८७
सवल—१७५, ४५१, ५०२, ६४३
सवसिद्धि—१६४
सवारि—५६८
सव्व—४२२
सव्वहु—४६१
सवु—२, १३५, १३६, १३८, १८३, १६२, २७६, ३००, ३८७, ३८८, ३८६, ३६०, ३६१, ४४४, ४६२, ४६८
सवुव—५८०
सव्वु—५८४
सरिसु—१३६
ससि—१७, ४२, ७३, १०६, २६३
ससिगलहु—८२
ससिभाइ—३०, ६१५
ससिहर—६१२
सहइ—५३७, ६८६
सहण—५२६
सहदेउ—४५६
सहयो—४७०, ४६७
सहल—८३
सहनाण—१३३
सहनाणु—५०
सहस—६०५
सहाइ—५३७
सहाउ—११०, २६८
सहारइ—५२७
सहारउ—१४१
सहारि—३३, ३३१, ३४०, ४६६, ५३२
सहि—३१६
सहिउ—१२
सहिनाण—३१८, ३६७
सहिनाणु—४१५
सहिओ—४६३
सहिलडी—६१, १०५
सहीए—४२६
सहु—११०, २१०, ३४०, ५१६, ५६०
सहेट—४६, ५७, ६४१
सहोवर—५१

सहोवरि—४४
सहोवरु—२१
सहोयर—१९६, २२८
सहोवरि—६४०
सहोवरु—५९५, ६०३
सही—१३१
सहुपउ—५१५
सागालाए—६४६
साचउ—३७८, ४२१,
साज—४८९
साजइ—४७६
साजहुइ—४७५
साजि—४७६, ४७७, ४७९, ४८९
साजिउ—५८, १७३
साजियउ—५९
साजहि—१७५
साजहु—६९, ४७५
साजे—२५९
साजुह—४७५
साजें—४७९
साण—२०७
सात—५१, ६२
सातउ—६४
सांति—३२
साथ—८४, २९९, ५०२, ५३८, ६४६
साथि—५१३
साधु—६९९
साधु—५५७
साधिउ—५१८, ५२७
साधु—३८४
सान—३२४
साभवि—६२६
सामकुमार—६३६
सामकुम्वारु—६४६
सामहण—२७९, ५७७
सामहराज—६९५
सामि—१२, १५०
सामिउ—२१, ४६१
सामिकुमार—६७३
सामिणि—१०६, ४२०
सामी—१६६, २६४, ३५३, ४०७, ६९४
सामुहे—५६१
सायर—१६, १५२, ४७५
सायरह—३७४
सार—६०, ९४, १२८, १५९, ३१२, ३६७, ३७५, ४००, ४३५, ५०५, ६२०, ६३९, ६४५
सारंगपाणि—२६, ५१७
सारगपःणि—६३
सारंगमणि—७७
सारथि—५८, ५९, ४८५, ५०७, ५०९
सारथी—४८६
सारद—१, २, ३
सारिउ—१५५
सारी—६५
सारु—५, ११, ३९, १३४, १३६, ३४५, ३७८, ३८०, ४४८, ४७१, ६०३, ६८४, ७००
सावयलोय—६९६
सासउ—६७१
सासण—५
सासु—१२

साहुण—२१
साहस—१६२, १६८, २०८, २५३, २६७, २७३, ३४६, ४२७, ४५८, ५६८, ५४६, ५५६,
सिउ—४६०, ५४६, ५४८, ६३७
सिखव—२१७
सिगली—३७३
सिगिरि—४८२, ५५६
सितू—४१०
सिधि—६६६
सिद्धि—२३१
सिगा—६४४
सिगार—३०
सिगारु—३५७
सिंघ—१३८, १६५, १८१, १८२, ३१७, ४४८, ४५१
सिघरहु—१६४, १६८, १७४, १८३
सिघासरा—२६, ५६६
सिघासरगु—२०३, ३६६, ५६२
सिदुरु—३४६
सिधु—१६६
सिंहु—१७४, ४५०, ४६०
सियालु—४८४
सिर—२३, ३३३, २५०, २५६, २७२, २८६, ३६३, ३७८, ३८२, ४१६, ४२१, ४२६, ४२६, ५६०, ५६२, ५७०, ५८२, ५८३, ६५६
सिरि—३४५
सिल—२५८
सिला—३५, १२४, १२५, १२६, १३१, १३२, १५५, २३०, २४४, २५६
सिव—१८३
सिहवार—५७६
सिहु—११२, ११६, १६४, १६५, २१०, २४५, ३२०, ४१४, ५८८, ५८६
सीउ—१६०
सीस्यउ—४५३, ५२२
सीझइ—६५३, ६६२
सीतल—६
सीहार—३७५
सीषउ—४१६
सीया—२७५
सीलम्वंत—६१४
सीस—१, ६२
सीसु—८२, ६४३
सीहद्वार—४४२, ५६१
सीहद्वारु—४३५,
सीहवारि—६३७
सीहिरिण—१६६
सीहु—१६६
सुग्रइ—२०
सुग्रठे—३५८
सुइ—५८८
सुइन—७१
सुइरी—३६४, ४०१
सुख—६१, १११
सुखहु—६८२
सुखासरा—१०२
सुखु—६२६
सुगराइ—४८६
सुगमु—४८६
सुगुरगु—१८३
सुघंगु—३१६

सुजन—५७३
सुजाणु—५०
सुझइ—७१
सुठु—१२
सुण्कार—८७
सुण्यउ—४१७
सुणइ—३८४, ६६३,
सुणहु—२७१
सुणि—२६५, ४५८, ६६४
सुणिउ—१३७, २६५, ६६४
सुणिव—६६४
सुणे—४२६
सुणेइ—६७६
सुणो—६२३
सुण्यो—३७६
सुतारि—५५
सुदंसणु—१४, २७४
सुदिन—४२६
सुधणु—६६५
सुधाकारणी—१६३
सुधि—६८, १४४, १४८, १५७, १६६
सुन्दरि—३२, ४१, ३१२, ४२१
सुनीर—३६८
सुपनखां—२७५
सुपवित्त—१२
सुपासु—८
सुप्रिंतरु—६७६
सुपियार—६१५
सुपियारु—१३६, ७७३
सुभ—१६३
सुभइया—४५६
सुभ बरिसणी - १६३
सुभान—६२२
सुभानकुवर—६२१
सुभानु—६१४, ६७३
सुभानुकुवरं—६१६
सुमु—५०७
सुमति—८
सुमिरो—४१८, ४८८, ६३५
सुयण—५६१
सुर—१८३, २०५, २३०, ५३८, ५६५, ५६६, ६००, ६०३, ६१३, ६६६, ६६८, ६६३, ६६६
सुर्ग—१४६
सुरंगिनि—५४१
सुरजनुहु—२७८
सुरवेउ—२१६
सुरनारि—५०
सुरयणि—५५२
सुरभवण—६७७
सुरयणु—६६१
सुररिंदु—६६४
सुरलोइ—२३२
सुरसुंदरि—४१, ४३, ४५, ४८
सुरिंदु—६६१
सुरेस्वर—६६२
सुवंव—५१६
सुवरीयउ—२७८
सुवास—६६३
सुविचार—१८
सुविघु—६
सुसपालु—४५
सुहइ—२६४
सुहड—७०, १७५, १७६, ४७५, ५४३, ५५६, ५५८, ६७८
सुहडनि—४८०

सुहवनु—४८६
सुहड—४७७, ४६८
सुहए—४८७, ४६६
सुहवंसए—२७४
सुहमाली—२२७
सुहल—५३६
सुहाइ—३२६
सुहिनाल—२७१
सूके—१६१
सूझइ—२३, ६८, १७३, ५०३, ६०२
सुणिउ—५१४, ५६६
सूब—२०
सुंबारे—१४३
सूरि—६५७
सूक—१६८
सूली—६४३
सूवर—२१६
सूवा—८७
सूहो—१२०
सूहड—३५७
सेखए—२३४
सेठि—२७१, २७२
सेरी—२७२
सेत—४, १०३
सेती—६४५
सेना—५०१
सेनाकरि—२६०
सेनाकरी—२०४
संभउ—८
सेम्बहि—२३१
सेल—४७६
सेव—२८, ६२, २११, ४४५, ५८८, ६१३, ६६६
सेवा—२१५
सेस—५०६
सेसपाल—४४, ६६, ७१, ७४, ७५, ७६, ७७, ७६, ८३, ६२७
सेसे—११६
सैइ—८०
सैन—२८८, ५५७
सैना—५०३
सोइ—३५, ३८, ४२, ४३, ४७, १०५, १०७, ११२, ११४, ११८, १२४, १३१, १७०, १८८, १६०, १६६, १६६, २१३, २१५, २१८, २२४, २३५, २४०, २५०, २५२, ३३५, ३३८, ३४६, ३६४, ४०६, ४१५, ४२४, ४३१, ४६७, ५३४, ५६६, ५६८, ६०४, ६०६, ६२५
सोउ—१०७, ५२१
सोखइ—२७०
सोखणी—१६३, ३६५
सोतउ—२७२
सोनो—३०१
सोप्यो—२६६
सोभ—५५५
सोभे—५६३
सोरठ—१४, १४६, २४२, ५१६
सोलह—८०, १६१, २२६, २३१, २३३
सोलहउ—६
सोला—१८३, १८६, १६२, ५४८
सोले—६३२
सोवत—१२८

सोहइ—४२, ५२, १०३, २३४, ३१६, ६०८
सोहउ—६८७
सोहि—३०३
सोहहि—१७, ४६७, ४६७
स्तुति—६६८
स्मरि—४६१, ४६३
स्यंघरउ—१८४
स्यंघरथ—५४७
स्यंघराउ—१८४
स्वर्ग—६८६, ६६७
स्वर्ग—५६४
स्वाति—१२
स्वामि—६३५
स्वामी—४, ६५, ११८, १४७, १४८ ५६५, ५६७, ६२३
स्याउ—५०५
स्याली—३४

ह

हइ—८७, ६३, २२५, ३२७, ४०६, ४४६, ४७१, ४८०, ५६३
हइवर—२६१
हउ—१५४, १२८, १६६, २६३, २७३, ३००, ३२८, ३७०, ३८०, ४१७, ४६४, ४७३, ५३६, ६००, ६२३, ६६७, ६७८, ६६२, ७०१
हकराउ—३७६
हकारउ—३७६
हकारि—५८, ११६, १२०, २५३, ३४०, ५७५, १७७, ६१६
हडइ—५०६
हडई—५३२
हडह—२७५
हडि—१५४, २६७, ४१३, ४१४
हडिलइ—६७
हडी—५०८, ५१२
हडे—५७६
हणइ—५१
हणउ—६२
हणवंत—३५३
हणे—६४७
हत्थ—२०६
हति—१२४
हथलेवो—८८
हथलेवउ—५८५, ६५६
हथियार—३५४
हथियारु—४६७, ४७१, ४७६
हंस—३
हंसगमिणि—४२
हम—४१०, ४११, ४२५, ४३७
हमइ—६५०
हमारउ—१८५, ३०६
हमारी—११३, ३०८
हमारे—२८६
हमि—२७, १४३, १४४, ३८४, ४४२, ६४१, ६४२
हम्बु—२४८
हय—४८२, ५०४, ५२६, ५२६, ५३२, ५५६, ६४५
हय—५४, २३६
हयवर—५००
हया—२७१, २७२
हर—१२७, ४५८, ६६३
हरइ—६

हरउ—१४२
हरण—७
हरण्यो—१८६
हरसिउ—३२०
हरि—३६, ६६, ११६, १४३, १६२, ३४४, ४५८, ४८०, ५०६, ५१६, ५४७, ६५०, ६७३
हरिउ—१२७
हरिवेउ—१०७, ५१३
हरिनंदण—३०३
हरिनंदनु—३२२
हरिराउ—२३, ६२, ७६, ४६३, ४६४, ५६०, ५७३
हरिलइ—७६,
हरिलयउ—१४७
हरिवंसइ—१२
हरिव्यो—२८८
हरिसय—१६६
हरी—१२१, ४७२, ६७८, ६८२
हरीलइ—६६
हरु—३१४
हरे—६५५
हरेइ—६
हल—४६७
हलउ—६४
हलहर—५५, ११६, ३३४, ४४४, ४३६, ४४१, ४४७, ४५२, ४६१, ४७२, ४६७, ६६१,
हलहरु—५६, ८६, १४३, ४४६
हलहरु—५६, १४३, ४४६
हलहल—६६५, ६७१, ६७२
हलहलु—६४, ५५८
हलाबाहु—७८
हलिउ—४७४
हल्लिउ—४७४
हली—३५१
हलु—४५०
हलुवइ—६६७
हवइ—४२१
हसइ—१०७
हसाइ—३७३
हसि—६५, ६७, १००, १४६, ४४४, ५१२, ५१५, ५४६, ६२२, ६५१, ६५२,
हसिउ—५५१
हस्ती—१६१
हहउ—३६
हहि—२२८
हहु—३८०
हाइ—१०६
हाक—४६२, ५०६, ५२७, ५३७
हाकइ—४६१
हाकि—७८, १६०, १६६, २६१
हाकी—४६५
हाट—६४४
हाडी—३८८
हाथ—६, २५, ३१, ५२, ६२, ११७, १२५, १३१, १४६, १४८, १५५, १७२, १६६, २०२, २०६, २२२, २३४, २८०, २६६, ३०६, ३४३, ३७७, ४१७, ४२२, ४६६, ४६७, ५०६, ५२०, ५३१, ५३३, ५३५, ५४०, ६४४, ६४६, ६४८, ६७३

हाथइ—२११, २३५
हाथि—७७, ८२, २१३, २४६
हाथु—३८७
हार—६०३
हारइ—११२, ११३
हारसु—६०४
हारि—२६२, ६१६
हारिउ—१८२, ५१४
हारी—४१६
हारु—२३४, ५६६, ६००, ६०१, ६०४, ६०६, ६०६, ६१०
हारैं—६१७
हालइ—५०६
हासउ—३७३
हासी—२६१, ३३७, ४२२
हाहाकार—५०१
हिंस—३२४
हिय—१४०
हिय अलोक—१६३
हियइ—१६६
हियह—६०१
हियउ—१४१, २६५, ३४२, ४७६, ६२६, ६७८
हिवस—५१६
हीएह—४०६
हीरा—१७८, ७०१
हीरगु—६३४
हीयउ—२४६, ५५१, ६३०
हीयरा—१६०
हुइ—११, १२४, १७१, १७३, २००, ४२२, ५३३, ६४४
हुतासरा—२५३
हुती—३५०
हुते—६३६
हुतौ—२६६
हुरि—८५
हुवो—१३५
हेम—२६०, ३०१, ६२६, ६५६
हैवर—१८०, ४७५, ४६२
होइ—१, ६, ७, ३५, ४०, ४३, ५८, १०४, १०७, १०६, ११२, ११४, ११७, १३१, १६८, १७६, १८३, १८६, १६०, १६२, १६६, २०२, २१५, २२४, २३२, २३५, २४०, २४३, २४८, २५०, २६७, २७८, ३१०, ३३५, ३३८, ३३६, ३६४, ३६५, ३८३, ३६१, ४०६, ४१५, ४२७, ४४४, ४६४, ४७८, ४८१, ५०५, ५११, ५१३, ५१४, ५३५, ५३६, ५५३, ५५५, ५८६, ६०४, ६०७, ६३३, ६७०, ६७४, ६८४, ६६७, ६६६
होइहि—१६२
होउ—१३, ५७३
होरा—५६८
होहि—७४

शुद्धाशुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१०	३	रुिक्मणी	रुक्मिणी
१४	१	रूक्मिणी	,,
१४	३	राद्उराइ	जादउराइ
२२	१	रुक्मणि	रुक्मिणी
२२	१०	रूक्मिणी	,,
२४	६	नारयण	नारायण
३१	७	रूक्मिणी	रुक्मिणी
३४	६	निंम्पल	निंम्यल
५५	१	प्रद्यम्न	प्रद्युम्न
६०	२	दग्धंति	दग्धन्ति
६६	३	गुण	गुर
६७	५	आवास	अवास
७३	३	वृक्ष	वृक्षों
७५	६	मगल	मंगल
६०	१	प्राप्त सकने	प्राप्त कर सकने
६१	६	रुक्मणि	रुक्मिणी
६२	६	,,	,,
६३	५	,,	,,
६३	६	,,	,,
६४	६	,,	,,
६६	५	दाउ	दोउ
१२०	१	रूक्मिणि	रुक्मिणी
१२०	१०	जामंवती	जामवती
१२३	६	भानहि	सुभानहि
१२४	१	रुक्मिणि	रुक्मिणी
१२६	१	डाम	डोम
१३५	५	रुक्मिणि	रुक्मिणी
१४२	७	अठरहवें	अठारहवें
१५०	२२	भयकर	भयंकर

१५१	१७	दुख	दु:ख
१५१	१८	दुख	दु:ख
१५२	६	नेत्रों	नेत्रों
१५३	८	सहेलयो	सहेलियों
१५४	१	पहिल	पहिले
१५४	६	के	का
१५४	२३	प्रद्यम्न	प्रद्युम्न
१७०	२३	विधाओं	विद्याओं
१८५	१६	रुप धारण बनाकर	रूप धारण कर
१९२	२०	के	से
१९२	२०	समा	सभा
२१४	५	रुपचन्द	रूपचन्द
२१४	८	बहुरुपिणी	बहुरूपिणी
२१४	२४	रुपचन्द	रूपचन्द
२१५	७	,,	,,
२१५	१६	,,	,,
२१५	१९	,,	,,
२२०	२६	अभ्यपंतये	अभ्यंतर

वीर सेवा मन्दिर

पुस्तकालय

काल नं० २८१ गुप्त

लेखक गुप्त माताप्रसाद

शीर्षक प्रद्युम्नचरित

खण्ड ______ क्रम संख्या ४८०८